पुस्तक 2

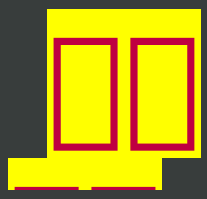

सूर्य का पुत्र

केविन मिसल

Table of Contents

□□□□□□ □□□

□□□□□□

□□□□ □□ □□□ □□□□□□□

□□□ □□

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
□□□ □□
47
48
49
50
51
52
53
54
55

56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
स्वीकृतियाँ
कॉपीराइट

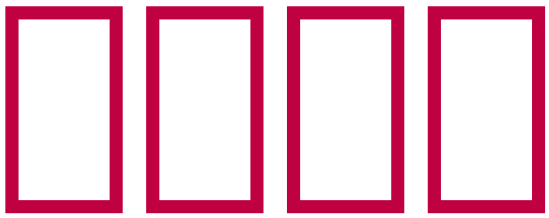

□□□□□□ 2

□□□□

□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□ □□□□

London · New York · Sydney · Toronto · New Delhi

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]: [redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

□□□ □□

1

अंगराज कर्ण के पिता अधिरथ को पता था कि उनकी मृत्यु निकट है।
वह अपने जीवन में पहले ही बहुत कुछ खो चुका था। उसने अपना राज्य, कुछ समय के लिए अपना बेटा, अपनी पत्नी और सारथी बनकर अपना स्वाभिमान खो दिया था।
लेकिन कोई नहीं।
यह उस वजह से नहीं था।
ऐसा इसलिए था क्योंकि उसकी आंखों की पुतलियों के ठीक बगल में एक ओब्सीडियन ब्लेड रखा हुआ था, और वह फर्श पर एक तितली की तरह फैला हुआ लेटा था, जबकि एक विशालकाय आदमी उसकी छाती को धक्का दे रहा था।
"आप क्या चाहते हैं?"
हत्यारों ने एक शब्द भी नहीं बोला। वे बाज की तरह उस पर नज़र रखे हुए थे। और वे आम हत्यारों जैसे नहीं थे। नहीं। वे शायद किसी दूसरी दुनिया से आए थे। उनके शरीर पर अजगर के आकार के बड़े-बड़े टैटू बने हुए थे, और उनकी गर्दन पर इंसानी हड्डियों से बना एक बड़ा रस्मों वाला हार था। उनकी आँखें तेंदुए जैसी थीं, और उनका शरीर आम आदमी से कहीं ज़्यादा बड़ा था।
अधिरथ को यह एहसास हुआ कि जब कोई अपनी मौत के इतने करीब होता है, तो वह अपने हत्यारे की पेचीदगियों पर ध्यान नहीं देता, बल्कि अपने जीवन के पछतावों को याद करता है।
उनकी इच्छा थी कि वे अपने पुत्रों के साथ वहाँ होते। एक पुत्र संन्यासी बन गया, शोन। दूसरा पुत्र अपनी पत्नी के साथ अपने राज्य का शासक बन गया। अपनी पत्नी राधा के निधन के बाद, वे कर्ण के साथ रहने लगे, ताकि उसके करीब रह सकें, और कभी-कभी शिकार पर जाते थे। वे एक खरगोश या शायद कभी-कभी एक छोटा खरगोश लेकर आते थे। रसोइयों और सहायकों का एक दल उनके पीछे-पीछे चलता था। लेकिन आज, इन हत्यारों, इन दरिंदों ने उसके आसपास के सभी लोगों की हत्या कर दी थी।

घने जंगलों का वह घना जंगल, जो अंधेरे में डूबा हुआ था, उसके पिछले जीवन के कर्मों में डूबा हुआ, गहरे लाल रंग का प्रतीत हो रहा था।
“कौन…” उसने खांसते हुए कहा, “तुम कौन हो…?”
एक और हत्यारा प्रकट हुआ, जो दिखने में पहले वाले जैसा ही था, लेकिन उसकी त्वचा का रंग गहरा था। वह घुटनों के बल बैठ गया और धरती को निगलने वाले खून से उसने अधिरथ का चेहरा पोंछा।
उस क्षण, उसे अपना पूरा जीवन आँखों के सामने से गुज़रता हुआ दिखाई दिया। उसने देखा जब उसने और राधा ने कर्ण को टोकरी में पाया था। उसने देखा कि कैसे धृतशास्त्र के चरणों में गिरकर अपनी जान बचाने की विनती करते समय उसका अहंकार चूर-चूर हो गया था। उसने वे वर्ष देखे जब वह अपने पुत्र के पास नहीं रहा था, और फिर उससे मिलकर उसे दोबारा फटकार लगाई थी। और उसने अपने पुत्र को एक ऐसे राज्य में वीर की तरह शासन करते देखा, जहाँ अनेकों ने उसका अपमान किया था।
और वह मुस्कुराया।
क्योंकि वह अपनी पत्नी से मिलने ही वाला था। क्योंकि उसने सचमुच वह उपलब्धि हासिल कर ली थी, जो बहुत कम पिता हासिल कर पाते हैं।
वह अपने बेटे को एक आदमी बनते हुए देख सका।
हत्यारा खिलखिलाया, अधीरथ के चेहरे के पास सांस छोड़ते हुए बोला… “हम…एक…संदेश…हैं।”

2

आज वह माँ नहीं थी। आज वह एक रानी थी।
शनाया को कभी नहीं पता था कि रानी बनना एक और नौकरी की तरह होगा।
यह सुनने में तो शानदार लगता है, और कभी-कभार आप पार्टियों में जाती हैं जहाँ लोग आपको नोटिस करते हैं। लेकिन इसके अलावा, अंगा जैसे राजशाही राज्य को चलाना ज़्यादातर उबाऊ कामों से भरा था। प्रशासनिक ढाँचे को व्यवस्थित करने से लेकर, दुश्मन जासूसों का पता लगाने और सहयोगियों को उपहार देकर और दावतों में आमंत्रित करके उन्हें खुश रखने तक। कुछ समय बाद, यह सब बेहद थका देने वाला हो जाता है, और पति के न होने से वह बिल्कुल अकेली महसूस करती थी।
कर्ण, बेशक, एक बुरा साथी नहीं था। लेकिन जब उसने उसे राज्य सौंपा, तो उसने उसे सूचित किया कि वह अनुपस्थित रहेगा, क्योंकि उसकी निष्ठा सुयोधन के प्रति थी। वह अंग का हिस्सा नहीं होगा, बल्कि केवल उसका चेहरा होगा। उस समय तो शनाया ने इसे सकारात्मक भाव से स्वीकार किया था, लेकिन अब हालात और भी मुश्किल होते जा रहे थे। खासकर अब जब वह अपने तीसरे बच्चे की गर्भवती थी, और लगभग सात सप्ताह बीत चुके थे।
हर सूर्योदय के समय, वह एक सभा आयोजित करती है, जिसके दौरान वह अपने सिंहासन कक्ष में एक छोटी अदालत की सुनवाई करती है, जहां राज्य के लोग, मंत्री और सैनिक, अपहरणकर्ताओं की बात सुनते हैं और शनाया एक ऐसा फैसला सुनाती है जो उचित हो और राज्य के लोगों द्वारा भी स्वीकार्य हो।
और वह इसमें अच्छी थी। काफी अच्छी।
लेकिन आज नहीं।
आज वह डरी हुई थी। उसने अदालत की सुनवाई के लिए आने वाले लोगों की सूची देखी थी, और अभियोजित लोगों में से एक ऐसा व्यक्ति था जिसे वह जानती थी।
मुझे वासु की याद आती है।

शनाया एस्सोस द्वीप की एक साधारण यूनानी लड़की थी, जिसे उसके पिता यहाँ ले आए थे। कर्ण से उसकी शादी प्रेम पर आधारित नहीं होनी थी, लेकिन वे एक-दूसरे के प्यार में पड़ गए। यह सच था कि देश के अन्य हिस्सों में उसकी अन्य पत्नियाँ भी थीं, लेकिन उनके बीच संबंध मुख्य रूप से वैवाहिक और व्यापारिक थे।
उसके लिए, वही एकमात्र थी। और उम्मीद है कि यह कभी नहीं बदलेगा।
एक युवा एल्बिनो लड़का कटघरे में आया, धुंधली सुबह में स्टील के बादल की तरह सफेद; उसकी आँखें लाल थीं और होंठ फटे हुए थे। उसने एक अलंकृत पोशाक पहनी हुई थी, उसके हाथ सामने से बंधे हुए थे, उसका चेहरा गंभीर था और मुँह भींचा हुआ था।
शनाया घबराकर सिंहासन पर बैठी, करवटें बदलती रही। शाही अंगरक्षकों ने उसकी बेचैनी देखी और इसके बारे में पूछा, जिसे उसने टाल दिया। उसने महीनों से उस एल्बिनो को नहीं देखा था।
“महामहिम,” कानून मंत्री ने पुकारा, जिसका पेट उससे कहीं अधिक बड़ा था, और जिसकी दोहरी ठुड्डी और चिकनी आँखें मेंढकों को भी शर्मिंदा कर देतीं, “हम आपको वृषकेतु से मिलवाते हैं। एक दुष्ट दरिंदा, एक नंबर का उपद्रवी।” वृषकेतु अविचल और कठोर बने रहे।
“मुझे यकीन है कि आपने उसकी हरकतों के बारे में सुना होगा, लेकिन हमने उसे ढूंढ निकाला और रेगिस्तान से घसीटकर यहाँ ले आए, जहाँ वह डाकुओं की तरह अपने गिरोह के साथ छिपा हुआ था। वह इधर-उधर भटक रहा था, और हम अंगा के लोग बहुत खुश हैं कि एक भयानक, बेईमान…”
“मैं समझ गई, उग्रा,” शनाया ने चाबुक चलाते हुए कहा। “आरोप जारी रखो।” विधि मंत्री ने प्रसन्नतापूर्वक ठहाका लगाया। “जैसा कि आप जानते हैं, इंद्रप्रस्थ के राजा युधिष्ठिर ने,” उन्होंने आँखें घुमाईं, मानो यह कहना उनके लिए अनिवार्य था, “अपने पुरोहित के कहने पर अश्वमेध यज्ञ किया था, जिसने इसकी अनुशंसा की थी। जैसा कि आप जानते हैं, घोड़ा अपने कुछ सैनिकों के साथ विभिन्न स्थानों पर गया, और जिन्होंने भी उसे रोकने का साहस किया, उन्हें राजा युधिष्ठिर के भाइयों और सहयोगियों द्वारा दी गई भयंकर चुनौतियों का सामना करना पड़ा।”

उसके बाद, उनके पास अपनी ज़मीनें थीं, और बहुत खून बहाया गया। उन्होंने अंगा का अपमान करने की हिम्मत नहीं की, ऐसी दिखावटी रस्मों से। वे दूर रहे, हे मेरी देवी, और सूर्यपुत्र कर्ण, सूर्यपुत्र की कृपा से…
“उग्रा, बोलते रहो। हमें प्रभावित करने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम पहले से ही मंत्रालय में कई चुटकुलों का निशाना बनकर हमें प्रभावित कर चुके हो।” उसने तीखे लहजे में कहा।
उग्र शर्मिंदा हो गया, जबकि बाकी सब हंसने लगे, लेकिन केवल वृषकेतु ही शांत बना रहा।
“खैर, वृषकेतु, जो इस भूमि का नागरिक है, हमारी सरकार की जानकारी के बिना युधिष्ठिर का साथ देने लगा और उसका सहयोगी बन गया। हालाँकि वह भली-भांति जानता था कि इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा और हम कभी भी युधिष्ठिर के सहयोगी बनने के लिए सहमत नहीं होंगे, फिर भी वह गुप्त रूप से उसके लिए अभियान चलाता रहा।” उग्र ने थूकते हुए कहा। “और सबसे बुरी बात यह है कि उसने एक अभियान जीत लिया। चंद्रवंश वंश के राजा अनुशाल्व, जो एक महान सहयोगी और चंद्रकला के संरक्षक थे, उन्हें इसी व्यक्ति ने पराजित कर मार डाला!” उसने उस शांत स्वभाव के गोरे व्यक्ति की ओर इशारा किया, जिसके चेहरे पर अब एक धूर्त मुस्कान थी। “उसने न सिर्फ हमारे दुश्मनों का साथ दिया, बल्कि हमारे सहयोगी को भी मार डाला और हमारे देश के बाकी सहयोगी भी चिंतित होने लगे हैं। उन्हें लगता है कि अंगा अपने नागरिकों को संभाल नहीं सकता। हे मेरी देवी, अंगा पर कृपा कीजिए और उसे सबसे भयानक सजा दीजिए, ताकि उसे…” वह वृषकेतु के करीब आया, उसे सूंघते हुए बोला, “उसकी करनी का फल मिले… हे घिनौने, घिनौने, कुरूप प्राणी, हे पतित।” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
शनाया ने पलकें झपकाईं, वह जो महसूस करना चाहती थी, उसे महसूस नहीं कर पा रही थी। उसने वृषकेतु को देखा और अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं, अपने गाउन को कसकर पकड़ लिया, जबकि उसका मुकुट उसके सिर पर भारी लग रहा था और उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था।
“क्या तुम्हें कुछ कहना है, बेटा?” उसने पूछा। “तुम पर ऐसे अपराधों का आरोप है जिनकी सज़ा मौत है। क्या तुम्हें ज़रा भी पछतावा है, ज़रा भी अफ़सोस है?”
वृषकेतु स्थिर खड़ा रहा, पलकें झपकाता रहा, एक शब्द भी नहीं बोला।

वह जानती थी क्यों। वह उसे बहुत अच्छी तरह जानती थी। वह विद्रोही था।
हमेशा से। बचपन से ही।
“मैं तुम्हें फिर से मौत की सजा सुनाती हूँ।” उसने घोषणा की, जिससे विजयी स्वर में हंगामा मच गया, और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे।
क्योंकि उसने अभी-अभी अपने आदमियों को अपने बेटे को मारने का आदेश दिया था।

3

उन्होंने उसे राजा का हत्यारा कहा।
लेकिन उनके कई नाम थे।
जन्म से ही उसका वजन अधिक था, वह अपनी माँ पर बोझ था और आसमान की ओर एक दर्द भरी पुकार जैसा था, मानो हवा का एक घना झोंका हो। बचपन में वह सबसे ज्यादा खाता था और अपने भाइयों से भी ज्यादा लंबा हो गया था। उसकी बाइसेप्स उसकी उम्र के किसी भी व्यक्ति से दोगुनी थीं और उसकी गठीली जांघें उसे किसी को भी, यहाँ तक कि सबसे बड़े आदमियों को भी, ज़मीन से उठा लेने की ताकत देती थीं। वह सात फुट लंबा एक विशालकाय व्यक्ति बन गया और उसे शक्तिशाली और महान कहा जाता था।
उनकी असली पहचान हमेशा से ही मोटे पेट वाले व्यक्ति के रूप में थी, क्योंकि वे इतना अधिक खाते थे और फिर भी अपने साथियों की तुलना में अपेक्षाकृत पतले रहते थे।
उनका नाम वृकोदरा था।
जब युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ के लिए उन्हें पूर्व में भूमि जीतने के लिए भेजा गया, तो कई लोग दबे पांव खड़े हुए, कई घिर गए और कई ने उनका विरोध किया। युधिष्ठिर के सभी राजा-रानी, राजकुमार और निर्धन लोगों के सिर कुचले गए। वह खोपड़ी या उनके सिर काट देते थे। कहते थे कि वह तरबूज की तरह आंखें फोड़ने में माहिर थे। कहते थे कि वह प्रकृति की शक्ति थे और हाथी भी उन्हें कुचल नहीं सकता था।
उन्होंने बहुत सी बातें कहीं, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं, क्योंकि वे ज्यादा समय तक जीवित नहीं रहे।
लेकिन मल्लराष्ट्र के राजा भगवंत चतुर थे। कम से कम बाकी लोगों से तो बेहतर ही थे। जब वृकोदरा की सेना उनके राज्य की ओर बढ़ने लगी, तो उन्हें पता चल गया कि उनकी मृत्यु निश्चित है। उनका राज्य छोटा और सुव्यवस्थित

था, जो उनके खेत के पीछे उगने वाले घने चीड़ के जंगलों पर निर्भर था। उनका जीवन शांत था और उन्हें स्त्रियों में विशेष रुचि थी।
इतने बड़े शासक को तो वृकोदरा और युधिष्ठिर की शक्ति के आगे झुकना ही पड़ेगा, और यह कहना गलत नहीं होगा कि भगवंत भी ऐसा ही करेंगे। यही समझदारी भरा कदम है।
लेकिन इसमें एक पेंच था।
जब भगवंत राजकुमार थे और वृकोदरा भी राजकुमार थे, तब भगवंत और वृकोदरा के बीच कुछ कहा-सुनी हुई थी।
भगवंत ने सोचा, शायद उसे याद न हो। वैसे भी, यह कोई बड़ी बात नहीं थी।
लेकिन क्या मुझे जोखिम लेना चाहिए?
और इस प्रश्न का उत्तर जीवित रहकर ही खोजना बेहतर था, बजाय इसके कि अपना भाग्य वृकोदरा के हाथों में सौंप दिया जाए।
लेकिन उसने बीच का रास्ता चुना। उसने मो छू नदी के लुटेरों को भारी मात्रा में सोना देकर अपने अपहरण का नाटक रचा, ताकि लगे कि वह उनकी बात मानने पर विवश है। असल में, उसे अपने राज्य से दूर, सुदूर भूमि में छोड़ा जाना था, जहाँ वह एकांत जीवन व्यतीत करे। उसने खुद को एक टूटे-फूटे खजाने के बक्से में बंद कर लिया, जो इतना बड़ा था कि उसमें मरोड़कर उसे किसी निर्जन स्वर्ग में ले जाया जा सके।
वह खुश था। आखिरकार वह इस भयानक… भयानक… नियति से मुक्त हो गया था। अब वह जी सकता था। वह छिपकर जी सकता था। राजा जैसा शानदार जीवन तो नहीं, लेकिन फिर भी काफी था। उसे बस तय स्थान पर छोड़ दिया जाएगा और वहाँ से उसे एक गुप्त ठिकाने पर ले जाया जाएगा। वह आज़ाद होगा… आज़ाद…
और खजाने का संदूक नदी के बीचोंबीच खुल गया।
उसने राहत की सांस लेते हुए गहरी सांस ली।
"क्या हम पहुँच गए हैं?" उसने अपने से काफी लंबे कद वाले समुद्री डाकू से पूछा।
"जी हां, मेरे स्वामी, हम तट पर पहुंच रहे हैं।"
“शाबाश, शाबाश,” भगवंत हँसते हुए मुस्कुराया। “बहुत बढ़िया काम किया तुम लोगों ने। यकीन नहीं होता कि मैं इतने लंबे समय से तुम लोगों से चोरी, तस्करी और लूटपाट के लिए लड़ता रहा, जबकि मुझे तुम्हें खरीद लेना चाहिए था। तुम लोग हर बात पर बिक जाते हो, यहाँ तक कि अपने दुश्मनों की मदद करने

पर भी।” वह इस विचार पर हँस पड़ा। “यह सफ़र बहुत आरामदायक तो नहीं है,” उसने बहती नदी और उस लकड़ी की नाव की ओर देखा जिस पर उसे ले जाया जा रहा था। उसने कुछ खास वजहों से आम लोगों के कपड़े पहने थे, और सोना व गाउन अपने शाही कमरों में ही छोड़ आया था।
जैसे ही वह बाहर आया, उसने देखा कि वह तट के करीब था, गाड़ी खड़ी थी और जाने के लिए तैयार था। लेकिन कुछ गड़बड़ थी। ऐसा लग रहा था जैसे...
वह उसी जगह लौट आया था जहाँ से वह गया था। वह असमंजस से कांपने लगा, क्योंकि दोनों समुद्री डाकू उसे प्रसन्नतापूर्वक देख रहे थे, और वह असमंजस में ही रहा, जब तक कि उसकी नज़र युधिष्ठिर के प्रतीक की सेना पर नहीं पड़ी - एक हाथी का झंडा, और बीच में, एक आदमी ज़मीन पर बैठा रेत से खेल रहा था, मानो किसी चीज़ का इंतज़ार कर रहा हो, उसका सिर झुका हुआ था।
उसके पीछे सभी हाथी और घुड़सवार सेना विश्राम कर रहे थे—मानो वृकोदरा की पूरी सेना, हजारों सैनिक और दल, राज्य में आने के बजाय, नदी के किनारे प्रकट हो गए हों।
बीच में खड़े व्यक्ति ने कवच नहीं पहना था, बस एक सुनहरी धोती पहनी थी जिस पर नीले और काले निशान उसके पेट और छाती पर फैले हुए थे, मानो सम्मान का प्रतीक हों। उसकी कमर पर एक बेल्ट लटकी हुई थी, जिस पर उन राजाओं की खोपड़ियाँ टंगी थीं जिन्हें उसने पूर्व की विजय के दौरान मारा होगा। धूल भरी सड़कों के कारण उसकी आँखें काली-भूरी हो गई थीं, उसकी त्वचा काँसे रंग की थी और उसके गोल-मटोल चेहरे के आधे से ज़्यादा हिस्से पर बड़ी-बड़ी दाढ़ी थी।
दूर से देखने पर कोई कहेगा कि वह एक सुंदर आदमी था, लेकिन उसके चेहरे पर एक लुटेरे और हत्यारे की क्रूरता झलकती थी।
वह रेत से खेल रहा था, थोड़ी सी रेत अपने हाथ में लेकर फिर उसे फिसलने देता था।
भगवंत को यह अहसास हुआ कि समुद्री लुटेरों को वृकोदरा ने रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया है। वह आश्चर्यचकित था और सोच रहा था कि वृकोदरा को यह बात कैसे पता चली।
तुरंत ही वह रेत पर गिर पड़ा और वृकोदरा के पास रोने लगा। “मैंने राज्य त्याग दिया है। यह आपका है। बस मुझे जीने दीजिए। कृपया।”
वृकोदरा ने कुछ नहीं कहा, जबकि राजा उसके बगल में सिसक रहा था।

“मुझे नहीं पता कि तुम मुझसे क्या चाहते हो। मैं किसी तरह की धमकी नहीं देने वाला। मुझे इस खूनी राज्य की भी परवाह नहीं है। यह उस शाही वंश से विरासत में मिला है जिसका मैं हिस्सा हूँ। कृपया…कृपया मुझे अकेला छोड़ दो।” वह रुका, जबकि वृकोदरा बिना पलक झपकाए सुनता रहा, उसकी ओर देखने के बजाय रेत को घूरता रहा। “मैं…मैं…” वह सैनिकों, घुड़सवारों से गिड़गिड़ाने लगा, “कृपया, कृपया मुझे बचा लो…मैंने कुछ नहीं किया। मेरे पास कुछ नहीं है। मेरे पास कोई धन-दौलत नहीं है। मेरे पास देने के लिए सोना नहीं है। सब कुछ महल में है। ले लो। सब कुछ ले लो। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। मेरा जीवन मेरे लिए दुनिया के खूनी प्रलोभनों से कहीं अधिक कीमती है।” फिर वृकोदरा ने गरजते हुए और अपने आस-पास के शरीरों को हिलाते हुए कहा: “यह सोचकर आश्चर्य होता है कि सब कुछ छोड़कर गरीब बनकर जीवन बिताने क्यों जाया जाए? जब तक कि… स्वर्ग न हो।”
भगवंत का खून जम गया। जी हाँ। उनका एक महल था, जो एकांत में छिपा हुआ था। उनकी कई पत्नियाँ भी वहीं थीं। कम लोग, और अधिक विलासिता, पहाड़ों की गोद में, कोहरे में, अदृश्य और भव्य। वे हमेशा से अपने सेवानिवृत्ति के वर्ष वहीं बिताना चाहते थे, और अंततः उन्हें राजा के प्रशासनिक कर्तव्यों को छोड़ने का एक कारण मिल गया था। वे अपने दिवंगत पिता द्वारा थोपे गए कर्तव्यों से मुक्त हो सकते थे।
“तुम राज्य पर कब्जा कर सकते थे। लेकिन तुम अपनी सेना यहाँ क्यों लाए…?” भगवंत ने अपनी मृत्यु निकट समझते हुए पूछा। “सिर्फ मुझ पर हमला करने के लिए? सिर्फ मुझ पर हमला करने के लिए इतने सारे सैनिक क्यों?” “नहीं,” उसने सिर हिलाया, जैसे ही वृकोदरा खड़ा हुआ और अपनी धोती के पीछे से रेत पोंछते हुए बोला, “वे यहाँ एक राजा को रोते हुए देखने आए हैं।” भगवंत ने गौर किया कि वह एक विशालकाय व्यक्ति था; वैभव और मनगढ़ंत कहानियों से दूर, वह मनुष्यों के बीच एक देवता के समान था, उसके लंबे घुंघराले बाल थे और उसका सीना चौड़ा था।
उसने भगवंत की गर्दन पकड़कर उसे ज़मीन पर पटक दिया। पूर्व राजा के शरीर में तेज़ दर्द हुआ, उसे लगा जैसे उसके कुछ अंग टूट गए हों। उसने जल्दी से भागने की कोशिश की, लेकिन उसका पैर पीछे खींच लिया गया और उसे फिर से ज़मीन पर पटक दिया गया।
“क्यों? मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ?”

“क्योंकि…” वृकोदरा ने उसका चेहरा पकड़कर उसे नींबू की तरह निचोड़ना शुरू कर दिया, “क्योंकि बहुत समय पहले तुमने मेरा मजाक उड़ाया था, मेरे वजन का, मेरी लंबाई का, और मेरे भाइयों के अलावा किसी को भी मेरा मजाक उड़ाने का अधिकार नहीं है।”
और वृकोदरा ने उसकी छाती पर मुक्का मारा, अपनी मुट्ठी को हृदय के आर-पार करते हुए, धड़कते हुए अंग को बाहर खींच लिया, उसके हाथ लाल चांदी से लथपथ थे, और भगवंत की आंखें कुछ ही सेकंड में बेजान हो गईं।
उसने हृदय को आकाश की ओर उठाया और सभी लोग जोर-जोर से मंत्रोच्चार करने लगे, सभी लोग खुशी से चिल्लाने लगे, ढोल बजने लगे और आकाश में कौवे कांव-कांव करने लगे, जबकि पृष्ठभूमि में गरज सुनाई दे रही थी।
उसने अपना नाम सुना।
नहीं। वह नाम नहीं जो उन्हें बचपन में दिया गया था। बल्कि वह नाम जो उन्होंने पूर्व की विजय के दौरान अर्जित किया था।
“राजा का वध करने वाला!” उन्होंने ज़ोर से ताली बजाई और घोषणा की। “राजा का वध करने वाला भीमा!”

4

वे एक विशाल जंगल के भीतर, सुनसान सड़क पर चलते रहे, जब तक कि वे तारों से रहित आकाश में केवल बिंदुओं के रूप में दिखाई देने लगे।
“कितना समय बीत गया?” मित्र डेन्यूब ने पूछा।
“एक हफ्ता बीत गया है,” कर्ण के सबसे बड़े पुत्र अधिरथ के पोते सत्यसेना ने जवाब दिया, “और दादाजी अब तक लौट आए होंगे। ऐसा लगता है जैसे उनके साथ कुछ हुआ होगा।”
“समझ में आता है।” डेन्यूब ने सिर हिलाया, मानो उसे परवाह हो।
वह अक्सर नशे में रहता था और सत्यसेना के करीबी दोस्तों में से एक था। वे जुआ खेलते, महिलाओं को रिझाते और शायद ज़रूरत पड़ने पर छुप-छुपकर शराबखानों में दावतें करते थे। दानूब सत्यसेना जितना कुख्यात नहीं था, जो कर्ण के हर उस गुण के बिल्कुल विपरीत था। एक तरह का विद्रोही, नियमों को तोड़ने वाला, घोर नास्तिक, और फिर भी अंग के सिंहासन के प्रति पूर्णतः वफादार।
“तुम्हारे भाई के बारे में सुना,” डेन्यूब ने कहा, “यह तो बहुत बड़ा अन्याय है।”
"मैं सहमत हूं।"
घने, गहरे जंगल में उनके घोड़े दर्द से कराहते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, जहां आसमान आग की लपटों जैसा दिखने लगा था।
"क्या आप परवाह करते हैं?"
"नहीं।"
“अरे, रहने दो, तुम लोग करते हो। तुम लोग बाल-बाल बचे थे।” उसे हिचकी आई। "नहीं।" सत्यसेन ने सिर हिलाया।
“मुझे याद है एक बार तुम दोनों बालकनी के पास खेल रहे थे, और उसने तुम्हें धक्का दिया था, है ना? राज्य वगैरह से जुड़ी कोई बात थी। वह अंगा का सिंहासन खुद लेना चाहता था।”

"नहीं।"
"तब क्या हुआ?"
"लेकिन उसकी त्वचा और बाकी शरीर को देखकर दुख होता है। वह किसी राक्षस जैसा दिखता है।"
सत्यसेना ने कुछ नहीं कहा। बचपन से ही उसने अपने भाई के बारे में सुना था कि वह किसी राक्षस जैसा दिखता है, किसी भद्दे से टुकड़े जैसा। त्वचा की इस समस्या के कारण सत्यसेना को अपने भाई पर तरस आता था, शर्म भी आती थी, जब तक कि उसने राजतंत्र के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर दिया। ये छोटी-छोटी बातें थीं। पांडवों के बच्चों के साथ बहुत समय बिताना, राजतंत्र के बारे में बातें करना। वह पहले तो मुग्ध था, जब तक कि वह अर्जुन के अंधकारमय स्वरूप के करीब नहीं आ गया। वह विशेष रूप से धनुर्धर अर्जुन के करीब था, जो आखिरकार उनके पिता का प्रतिद्वंद्वी था, और उनमें बहुत कुछ समान था।
अब उसने अपने भाई के प्रति घृणा प्रकट कर दी थी। हालांकि, उसने इसे अपने चेहरे पर ज़ाहिर नहीं होने दिया। उसने बस मुस्कुराने की कोशिश की।
उसे बस यही आश्चर्य होता था कि अगर उसके भाई को त्वचा की समस्या न होती, तो वह सत्यसेना जैसा दिखता। सुंदर, मासूम चेहरा, उभरी हुई गाल की हड्डियाँ, काँवे जैसी त्वचा और कंधे तक लंबे बाल। दुर्भाग्य से, उसमें अपने पिता या सत्यसेना जैसी धनुर्विद्या नहीं थी, जो स्वयं भी एक उत्कृष्ट धनुर्विद् थे। नहीं। वृषकेतु तलवारबाज़ी में अधिक कुशल था, लेकिन वह अपनी सेहत के अनुसार एक प्रतिभाशाली योद्धा था।
“तुम्हें क्या लगता है तुम्हारे दादाजी के साथ क्या हुआ होगा? क्या तुम्हें लगता है कि यह जंगली सूअर का हमला था? या फिर नागाओं का हमला था?” सत्यसेना ने कहा, "मैं कुछ भी सोचना नहीं चाहता।"
किसी ने उसे अपने दादाजी को खोजने के लिए नहीं कहा था, लेकिन उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह उनसे बहुत प्यार करता था। शायद वही एकमात्र व्यक्ति थे जिनसे वह सचमुच प्यार करता था। और वे अचानक गायब हो गए। उसकी माँ शांत थी, उसने कहा कि सब ठीक है। उसके पिता हमेशा की तरह अनुपस्थित थे, शायद सुयोधन चाचा के साथ घूमने गए होंगे। इसलिए, किसी को बिना बताए, और अत्यधिक चिंता के कारण, वह अपने दोस्त के साथ अपने दादाजी को खोजने निकल पड़ा। अगर उसकी माँ को पता चल जाता कि वह राज्य छोड़कर अकेला चला गया है,

बिना सैनिकों के, तो वह जानता था कि उसकी माँ उसे फांसी पर लटका देगी, क्योंकि एक राजा के बेटे को इस तरह इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए।
और उस योजना का क्या हुआ?
“क्या योजना है?”
भीमा को बदनाम करने के बारे में।
सत्यसेना चुप थे।
तब तक, डेन्यूब ने अपनी बोतल उठा ली थी और मादक पेय का एक घूंट पी रहा था। "तुम्हें योजना पता है। वह मनोवैज्ञानिक युद्ध जिसके बारे में तुम कहते हो कि तुम लड़ रहे थे।"
“क्या योजना?” उसने अनजान बनने का नाटक किया।
“तुम पूरे देश में झूठी अफवाहें और गपशप फैलाते थे। लोगों को किराए पर लेकर ये बातें फैलाते थे कि वो बड़ा डरपोक है, माँ का लाडला है, उसके वजन और सबके खाने को चट कर जाने पर मजाक बनाते थे। तुम उसके बारे में ये सारी अफवाहें और मनगढ़ंत कहानियां गढ़ते थे और लोग उन्हें फैलाते थे ताकि उसे गुस्सा आए। तुम एक और काम करते थे…” वो हिचकी लेते हुए बोला, थोड़ा नशे में, “उसके कार्टून बनाते थे, उसे और मोटा दिखाते थे, और इन तस्वीरों को पोस्टर बनाकर उसकी बदनामी करते थे, उसका मजाक उड़ाते थे। तुम उससे इसलिए नाराज थे क्योंकि पूरे यज्ञ में अंगा के साथियों का पतन हो गया था, और तुम उस बड़े आदमी, उस दानव से अपना मीठा बदला लेना चाहते थे।”
सत्यसेना ने अपने जबड़े भींच लिए। पकड़े बिना काम निपटाने का यह एक अच्छा तरीका था, और इसके लिए बस थोड़े से पैसे की जरूरत थी।
वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ उसे सूखा खून, कतार में लगी लाशें, और इधर-उधर बिखरे घोड़े और हाथी दिखाई देने लगे। उनसे सड़े हुए मांस की बदबू आ रही थी, और मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। उसने बदबू से बचने के लिए अपने मुँह पर दुपट्टा बाँध लिया और एक ऐसे शव को देखा जो उसे जाना-पहचाना सा लग रहा था। और, बेशक, जब उसे इस बात का भयानक और भयावह अहसास हुआ, तो उसने पाया कि वह कोई और नहीं बल्कि उसका दादा था।
उसने अपना सिर खुजाया, और उसका दिल उसके लिए रोने को तड़प रहा था। लेकिन अचानक उसने देखा कि उसके दादाजी की आंखें निकाल ली गई थीं। दरअसल, सभी शवों की आंखें निकाल ली गई थीं, मानो उन्हें संग्रहणीय वस्तुओं की तरह निकाल लिया गया हो।

“यह तो बहुत भयानक है,” डेन्यूब एक कोने में जाकर उल्टी करने लगा, “भगवान के नाम पर भला ऐसा कौन करेगा?”
बेशक, हत्यारे। और वो भी एक खास तरह के।
सत्यसेना ने कुछ पल के लिए शव को देखा, इस उम्मीद में कि शायद उसमें कोई हलचल हो, लेकिन काफी देर से वह उसी स्थिति में था। और उसे अपने दादाजी के लिए बहुत दुख हुआ, कितनी दर्दनाक मौत थी!
मुझे वापस जाकर मां को इसके बारे में बताना होगा।
लेकिन डेन्यूब झाड़ियों में उल्टी कर रहा था, और इसी बीच उसने पूछा, "सिर्फ तुम ही क्यों? मैं क्यों नहीं?"
“क्योंकि तुम बहुत ज्यादा बोलते हो, बहुत कुछ याद रखते हो, और मैं ज्यादा बोलने वालों को बर्दाश्त नहीं कर सकता,” सत्यसेना ने खंजर निकालते हुए कहा और पीछे से उसकी रीढ़ की हड्डी में वार कर दिया। दानूब अपनी ही उल्टी पर गिर पड़ा, और सत्यसेना ने उसे पलटा, जबकि दानूब रो रहा था, सत्यसेना उसकी आंखें निकालने लगा, ताकि ऐसा लगे कि वह पूरे दल के साथ मर गया। “मैंने भीम के खिलाफ जो किया… उसके बारे में नशे में या जल्दबाजी में कभी बात नहीं करनी चाहिए, वरना… युद्ध होगा, और बहुत भयानक युद्ध होगा, और मैं अपने पिता को नाराज नहीं कर सकता।”
लेकिन अब वह एक शव से बात कर रहा था, क्योंकि सत्यसेना ने ऑपरेशन पूरा कर लिया था और उसके कपड़ों पर खून लगा हुआ था।
“तुम गलत थे,” उसने अपने चेहरे से खून पोंछते हुए कहा। “मुझे बालकनी से वृषकेतु ने नहीं धक्का दिया था। मैंने खुद ही ऐसा किया था, इसलिए सारा दोष उसी पर आता है।”

5

हर इंसान को अपने जीवन में एक बार पागलपन का सामना करना पड़ता है।
आमतौर पर, इसके साथ प्रेम की सरल अवधारणा जुड़ी होती है।
और इस तरह सुयोधन को कलिंग की राजकुमारी, चित्रगंडा की पुत्री से प्रेम हो गया। जब राजकुमारी ने उसे ठुकरा दिया, क्योंकि उसके पिता उसे नहीं चाहते थे, तो सुयोधन ने वही किया जो उसे करना पड़ा।
उसने उसका अपहरण कर लिया।
ओह, यह तो एक सरल योजना थी।
उसे ले जाओ और फिर यह सुनिश्चित करो कि वह उससे प्यार करने लगे।
सब कुछ योजना के अनुसार हुआ। वह व्यापार मार्गों पर चर्चा करने के लिए महल में आया था, लेकिन उसने पिछले दरवाजे का इस्तेमाल किया और शासक की बेटी को बंधक बना लिया।
उसने रथ भी चुरा लिया। यह शाही व्यवहार के बिल्कुल विपरीत था। और जैसे ही सैनिक और पहरेदार उसकी ओर बढ़े, वह ऐन मौके पर भागने में कामयाब हो गया। उसके प्रिय मित्र ने संयोगवश शाही कक्ष के दरवाजे खोल दिए और वह सड़क पर आ गया।
सुयोधन रथ को बाजार के बीचोंबीच से तेज गति से ले जा रहा था, उसके पीछे भानुमति रस्सी से बंधी हुई थी। "क्या तुम पागल हो गए हो? क्या कर रहे हो?" वह चिल्लाई।
“मैं अपना प्यार ज़ाहिर कर रहा हूँ!” सुयोधन ने चिल्लाकर जवाब दिया।
“यह कैसा प्रेम है?”
“तुम उन दूसरे चाहने वालों के बारे में बहुत ज्यादा सोच रही थी जो तुम्हें रिझाने की कोशिश कर रहे थे। मैं ऐसा होने नहीं दे सकता था।” उसने चिल्लाकर जवाब दिया।
वे एक संकरी गली में प्रवेश कर चुके थे, और अब किसी भी समय गार्ड उनका पीछा करना शुरू कर सकते थे।

मेरे पिता यही चाहते थे।
मुझे पता है! और मुझे पता है कि तुम मुझे चाहते हो!
“पहले! अभी नहीं, मूर्ख। तुम कलिंग राज्य में अपराधी हो।”
वह मुड़ा और उसके चेहरे पर एक धूर्त मुस्कान थी। "लेकिन मैं राजा हूँ और हस्तिनापुर के सिंहासन का उत्तराधिकारी हूँ, राजाओं का राजा हूँ और तुम मेरे साथ सुखमय जीवन व्यतीत करोगी, मैं तुम्हें यह आश्वासन दे सकता हूँ।" उसने आंखें घुमाईं और पीछे की ओर झुक गई, उसके भूरे बाल लहरा रहे थे, उसकी सांवली त्वचा बेहद खूबसूरत थी। भानुमति एक ऐसी स्त्री थी जिस पर कोई भी फिदा हो सकता था। सुयोधन के जीवन में कई स्त्रियां थीं, लेकिन कोई भी उसके भीतर उस तरह की आग नहीं जगा सकी, जैसी भानुमति ने जगाई थी।
जैसे ही वे चौराहे पर पहुँचे, एक घोड़ा प्रकट हुआ, जिसके ऊपर एक धनुर्धारी बैठा था, और सुयोधन समझ गया कि यह शादी के प्रस्ताव देने वालों में से एक था।
"कलिंग के कानून के अनुसार, रुक जाओ वरना मैं तुम्हें गोली मार दूंगा।" सुयोधन ने अपनी छाती पीटते हुए कहा, "गोली चलाओ!" और अपना कवच उतार दिया। "मुझे किसी बात का डर नहीं है।"
वह युवक तीर चलाने ही वाला था कि तभी एक दूसरा तीर उसे लगा और वह घोड़े से गिर पड़ा, उसके कंधे में असहनीय दर्द हो रहा था।
सुयोधन ने इमारतों की ओर देखा, और वहाँ, धोती पहने, एक साधारण पीली शॉल ओढ़े, लहराते बालों और सुनहरी त्वचा के साथ, खड़ा था...
कर्ण।
अपने धनुष और बाण को पकड़े हुए।
वह कूदा और रथ के बगल में उतरा, फिर सुयोधन की मदद से खुद को ऊपर खींच लिया।
दोनों दोस्तों ने हाथ मिलाया।
“आप अपनी पत्नी के सामने बहुत बहादुरी दिखा रहे थे।” कर्ण हँसते हुए भानुमति की ओर देखने लगा। “मेरी पत्नी।”
मुझे पता था कि तुम वहाँ हो।
“हाँ, हाँ। और अगर मैं नहीं होता तो?”
मुझे नहीं लगता कि मेरे जीवन में कभी ऐसी स्थिति आएगी।

कर्ण मुस्कुराया, तभी चारों ओर से और सैनिक आते दिखाई दिए। “तुम आराम से बैठो। मैं तुम्हारे लिए रथ चलाऊंगा।”
और उसने लगाम कसकर पकड़ ली, जबकि सुयोधन पीछे बैठा था और भानुमती को देखकर मुस्कुरा रहा था, जो मन ही मन उसे घूर रही थी। वे बाज़ारों से दूर, हरे-भरे चरागाहों की ओर बढ़ने लगे। उसे पता था कि आगे एक छोटी झील है जिसे पार करके वे पल भर में राज्य से बाहर निकल सकते हैं। दर्जनों दूल्हों, उनके सैनिकों और उनके साथियों का पीछा करते हुए वे तीर चला रहे थे, कुल्हाड़ी फेंक रहे थे और न जाने क्या-क्या कर रहे थे।
घोड़े तेज़ी से भागे। अचानक कर्ण भैंसों के एक झुंड को गुस्से में एक जगह इकट्ठा देखकर खड़ा हो गया और उसने उन्हें बांधने वाली रस्सी पर तीर चलाया। तुरंत दरवाजा खुल गया और भैंसें अपनी पूरी ताकत लगाकर भाग निकलीं। कर्ण ने अपनी गति बढ़ा दी और भैंसों को अपने पीछे रखते हुए आगे बढ़ने लगा ताकि प्रेम प्रस्ताव देने वालों को रोका जा सके।
"अच्छा काम, मेरे सुता!" सुयोधन हँसा।
“मैं तुम्हें मार डालूंगा!” कर्ण हंसते हुए बोला। “तुम हमें अपराधी बना रहे हो और हम मूर्खों की तरह व्यवहार कर रहे हैं।”
“हम तो प्यार में डूबे पुरुषों की तरह व्यवहार कर रहे हैं!” सुयोधन ने भानुमति की ओर देखा, जिसने अविश्वास में अपना सिर हिला दिया।
वे आगे बढ़े और भैंसों को अपने दुश्मनों का सफाया करने के लिए छोड़ दिया। जब वे झील के पास पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि उनके सामने धोती और पगड़ी पहने एक आदमी खड़ा है। उसकी मूंछें थीं और हाथ में तलवार थी।
मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा! तुम मेरी पत्नी को मुझसे छीन नहीं सकते!
“अरे बाप रे,” भानुमति ने सिर हिलाते हुए कहा, “मेरे पिता तो उसे ही सबसे ज्यादा पसंद करते थे।”
“तो मुझे ये काम करने दो।” सुयोधन खड़ा हो गया।
“अरे, चुप रहो! बैठ जाओ। मुझे करने दो,” कर्ण ने कहा। लेकिन बात इससे कहीं ज़्यादा गहरी थी। सुयोधन को याद नहीं था कि यह राजकुमार वही था जो सुयोधन के तालाब में फिसलकर गिरने पर हँसा था, और राजसूय यज्ञ के दौरान सभी पांडव भी हँसे थे। वह अपमानित और शर्मिंदा था और कर्ण उस पल को कभी नहीं भूल सकता

था, अपने दोस्त को रोते हुए देखना, इतने ऊँचे पद पर होते हुए भी उसे तुच्छ समझा जाना। उसे उसे उसकी औकात दिखानी ही थी।
लेकिन वह मेरे जीवन का प्यार है।
“कोई बात नहीं। लेकिन मैं तुम्हारा दोस्त हूँ और मुझे इस मामले को संभालना होगा।”
कर्ण ने उसे पीछे धकेल दिया और स्वयं खड़े होकर सामने वाले शत्रु की ओर बढ़े। वह शत्रु तलवार लहराते हुए उनके करीब आया, जिसे कर्ण ने रोक दिया और एक बाण निकालकर उनकी पीठ में घोंप दिया। कर्ण ने उसे घूंसे मारकर जमीन पर गिरा दिया और वह शत्रु दर्द से चीख उठा।
“मेरे दोस्त की औरत पर कभी नजर मत डालना!” उसने कहा।
“अच्छा काम किया,” सुयोधन ने कहा। “लेकिन मैं इससे बेहतर कर सकता था।” कर्ण ने अपनी आँखें घुमाईं।
“क्या अब हमें क्षितिज की ओर बढ़ना चाहिए, महाराज?” कर्ण ने पूछा।
"बिल्कुल।"
कर्ण ने घोड़ों की लगाम खींची और आगे बढ़ा। जैसे ही प्रेमी उठने की कोशिश करने लगा, कर्ण ने अपने पैर के एक झटके से उसे मारा। वह लुढ़क कर तालाब में गिर गया।
यह जानकर खुशी हुई कि जीवन में कर्म का फल मिलता है।

6

जब वह आठ साल की थी, तब उसे सपनों पर विश्वास था।
जब वह बारह साल की हुई, तो वे सपने ही वो चीजें बन गए जिनसे वह भागना चाहती थी।
यूनानियों में भविष्यवाणियों की एक अवधारणा प्रचलित थी, और शनाया के पिता, जिनमें यूनानी वंश था, का दृढ़ विश्वास था कि उनकी बेटी भविष्य देख सकती है। कम से कम उसका एक अंश तो देख ही सकती है। अपनी माता की मृत्यु से पचास सूर्यास्त पहले, शनाया ने मायावी परिदृश्य में भविष्य देखा था।
यह बात उसे सताती रही, और वह इससे भागती रही, छिपती रही। उसने सपने देखना बंद कर दिया। अच्छी नींद के लिए उसने अफीम का सेवन शुरू कर दिया। लेकिन गर्भवती होने पर उसे यह सब छोड़ना पड़ा। यहां तक कि उसके पति को भी उसकी इस लत के बारे में पता नहीं था। कुछ वर्षों तक सब कुछ ठीक रहा।
जब तक कि…यह फिर से नहीं हुआ।
उसे वे चीज़ें फिर से दिखने लगीं। उसने एक झील देखी। एक ऐसी झील जिसका रंग गहरा, मनमोहक लाल था, और जो भी उसमें कदम रखता, वह जलकर राख हो जाता और धीरे-धीरे समय की राख में मिल जाता। और उसने एक ऐसा भयानक नरसंहार देखा, जिसे उसका दिमाग समझ नहीं पा रहा था।
बिल्कुल श्मशान घाट वाले की तरह।
वह चेहरे पर दुपट्टा डाले, एक हाथ पेट पर रखे, लाशों से भरे उस विशाल भूमिगत परिसर में घूम रही थी, जहाँ कठोर, पथरीली शिलाओं पर लाशें कतार में रखी थीं। बदबू भयानक थी, और वातावरण उससे भी बदतर था। ऐसा लग रहा था मानो वह भूतों के बीच चल रही हो।
उसके पीछे उसका न्याय मंत्री उग्रा था, साथ ही सांवली त्वचा वाला शव संरक्षक मेनेंडर भी था, जो स्वयं यूनानी मूल का था और कैप्टन आर्किमिडीज के दल से था, जिसे उसके पिता ने शहर में विश्वसनीय संपर्क स्थापित करने के लिए भेजा था, जो पीठ पीछे वार करने के लिए कुख्यात था।

मुझे खेद है, महोदया। यह…
“हे भगवान!” उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा, “यह किसने किया?”
और वह उस एक शव के पास गई जिसे वह अपने जीवन में कभी नहीं देखना चाहती थी।
कर्ण के पिता।
Adhirath.
वह मुरझाया हुआ, सूखा हुआ, लगभग पीला और भयानक दिख रहा था... किसी गिरे हुए राजा की तरह। "वह बहुत दुखी होगा," उसने धीरे से कहा। "उसे पता नहीं चलना चाहिए।"
“हम उनके शव को संरक्षित करके रखेंगे, ताकि जब भगवान कर्ण प्रकट हों तो हम उनका अंतिम संस्कार कर सकें। क्या कबूतरों को भेज दिया गया है?” उग्रा ने मेनेंडर से पूछा।
“नहीं।” उसने सिर हिलाया। “उसे पता नहीं चलना चाहिए।”
"आपका क्या मतलब है?"
“उसे खुद पता चल जाएगा कि वह कब तैयार है। पहले उसे वापस लौटने दो।”
उसने एक फैसला लिया। वह सोचने लगी कि उसका क्या होगा। यह सोचकर वह डर गई, एकदम सहम गई।
"क्या आपको लगता है कि यह बुद्धिमानी है, मेरी महिला?"
“किसी को उसके पिता की मृत्यु की खबर देना कभी भी बुद्धिमानी नहीं होती,” उसने जवाब दिया। “और उन्हें एक खून से लथपथ कबूतर के ऊपर यह खबर देना, उससे भी बुरा है।”
उसने अपना सिर हिलाया और उसकी आँखों में देखा, कितनी सफाई से उनमें से भावहीनता मिटा दी गई थी।
"किसने किया यह?"
“मेरी एक राय है।” मेनांडर ने बीच में थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा। वह व्यक्ति गोरा था, उसकी हरी आँखें थीं और चेहरा मासूमियत भरा था। शायद कभी वह बहुत सुंदर रहा होगा, लेकिन इतनी सारी मौतों को झेलने के कारण उसका शरीर और चेहरा थक चुका था।
“बताइए तो सही,” उग्रा ने कहा।
“ओह, मुझे डर लग रहा है।” वह कांप उठा। “मुझे लगता है कि ये महारोग हैं।” “महा क्या…” शनाया असमंजस में थी, जबकि उग्रा डर के मारे खांसने लगा।

"असंभव।"
"कार्यप्रणाली वही है," मेनांडर ने कहा। "और मैं इस देश में आए यूनानी यात्रियों के दिशानिर्देशों का पालन करता हूं।"
लेकिन वे मर चुके हैं। विलुप्त हो चुके हैं। उन्होंने आपस में लड़कर खुद को शुद्ध कर लिया।
“महारग कौन हैं?” शनाया ने सीधे-सीधे पूछा।
“नागा जनजाति का एक आदिम रूप। जहाँ नागा लोग कोबरा की पूजा करते हैं, वहीं महारोगा लोग अजगर की पूजा करते हैं,” उग्रा ने कहा। “लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। वे भयानक, विनाशकारी और पूरी तरह से मनगढ़ंत थे। मिथक। नागाओं द्वारा शायद देशवासियों को डराने के लिए सुनाई गई मनगढ़ंत कहानियाँ। उन्हें वर्षों से नहीं देखा गया है।”
"वे आंखें क्यों निकाल लेते हैं?" शनाया ने मेनांडर से पूछा।
“एक निशानी, मेरी महिला,” उसने कहा। “अपने सरदार को यह दिखाने के लिए कि उन्होंने वह एक चीज़ हासिल कर ली है जो उन्हें परलोक प्राप्त करने में मदद करेगी। उनका मानना है कि परलोक में आँखों को सबसे कीमती अंग माना जाता है और उनकी रक्षा की जानी चाहिए। लेकिन अगर आप उन्हें निकाल लें... तो उनके पास देखने के लिए कुछ नहीं बचेगा।”
उसने सिर हिलाया, यह सोचते हुए कि वे नकली हैं या सचमुच असली। "क्या आपके पास उनके बारे में कोई जानकारी है?"
“कोई विश्वसनीय जानकारी नहीं है। अलग-अलग स्रोत अलग-अलग बातें कहते हैं।”
“हाँ,” उग्रा ने फिर कहा, “एक ने कहा, ‘उनके सिर नहीं थे; दूसरे ने कहा, उनके पैर नहीं थे; एक ने कहा, वे अपने सिर के पीछे से देख सकते थे; दूसरे ने कहा, वे रात में चाँद निकलने पर अजगर बन जाते थे।”
शनाया ने जबड़े भींच लिए, यह सोचकर कि आगे क्या करना है। “सभी को दफना दो और अंतिम संस्कार कर दो। जहाँ तक मेरे ससुर की बात है, मैं तुम्हें जानकारी देती रहूँगी। मैं महारोगों के बारे में जानना चाहती हूँ, क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानती हो जो इस बारे में जानता हो?”
मेनांडर ने कहा, "किसी ने बातों-बातों में जिक्र किया था कि शायद उसने उन्हें अपने युद्ध अभियानों के दौरान देखा था। हम कभी-कभी बात करते हैं।" "कौन?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

7

वृषकेतु को जब तक याद था, वह हमेशा से यही चाहता था कि अंग अपने पिता से मुक्त हो जाए।
आम लोगों की तकलीफें उसे परेशान करती थीं। उसे याद था कि कर बहुत भारी थे और गठबंधन खूनी थे। हताशा में उसके पिता ने नायकों को शत्रु और शत्रुओं को नायक बना दिया था। खजाना खाली था और पड़ोसी राज्यों, विशेषकर हस्तिनापुर और उसके पिता के मित्र सुयोधन का उन पर भारी कर्ज था। वृषकेतु बचपन में अपने गुरु से प्रभावित था, जिन्होंने उसे बताया था कि अंग का अस्तित्व कुछ ही वर्षों में समाप्त हो जाएगा और धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा। उसे देश के सर्वोच्च शासकों, सच्चे उत्तराधिकारियों पर निर्भर रहना होगा। वे जो धर्म के पक्ष में लड़ते हैं, जो हिंसा का रास्ता नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं, बल्कि तभी चुनते हैं जब वही एकमात्र उपाय बचता है।
वृषकेतु ने अपने गुरु से बहुत कुछ सीखा। उनके लंबे बाल और नीली आँखें थीं, और उनका चेहरा पन्ना की तरह चमकता था। उनकी नाक नुकीली थी और वे लंबा चोगा पहनते थे। यह स्पष्ट नहीं था कि वे पुरुष थे या स्त्री, लेकिन वृषकेतु के लिए वे एक रत्न थे।
अगर वह उसके जीवन में न आया होता, तो वह कभी जीवित न रह पाता। कभी अपनी आँखें न खोल पाता।
फिर वह पांडवों से मिला, उनसे बातचीत की, गुप्त रूप से उनसे गठबंधन किया और जरूरत पड़ने पर उनकी सहायता करने का वचन दिया—और उन्होंने वास्तव में अंग के सहयोगियों को हराने के लिए उनकी मदद की। वह अपने साथ कुछ विद्रोहियों को लेकर गया और हत्यारों की तरह उन सहयोगियों पर हमला किया, रात में उनकी गर्दनें काट डालीं या उनके सरदारों को नाक से लटका दिया। उसे आश्चर्य हुआ कि उस शिक्षक का क्या हुआ होगा।

एक दिन, उसने उससे मिलना बंद कर दिया। शायद उसकी माँ ने उसे इसलिए मरवा दिया क्योंकि वह उसके दिमाग में कुछ भरता था। लेकिन यह कोई कभी नहीं जान पाएगा, क्योंकि वृषकेतु ने उसका शव कभी नहीं देखा।
वह पूछना चाहता था, लेकिन जवाब छिपे हुए थे, और उसने इसके लिए अपनी माँ को दोषी ठहराया। एक समय वे बहुत करीब थे, लेकिन अब नहीं।
“तुम यहाँ किसलिए हो?” उसके साथी कैदी ने पूछा।
“राजद्रोह के लिए।” उसने जवाब दिया।
"हाँ, वैसे तो हम सब हैं ही, है ना?"
“तुम्हें इसका मतलब नहीं पता, है ना? ‘राजद्रोह’ शब्द का मतलब?”
“अरे यार, तुम्हें क्या लगता है कि मैं इस जेल में क्यों हूँ?” उसने हंसते हुए कहा।
वृषकेतु मन ही मन मुस्कुराया। बचपन से ही वह परिवार में सबसे छोटा और लाचार था। त्वचा रोग के कारण उसे पारिवारिक राजनीति से दूर रखा गया था। उसे सिंहासन का उत्तराधिकारी माना जाता था, या शायद वह भी नहीं। और उसके जीवन का एकमात्र सहारा, एकमात्र आशा की किरण, उसके गुरु ही थे।
उसे अपना नाम याद नहीं आ रहा था।
वह अक्सर सोचता था कि क्या फांसी पर लटककर उसकी मौत से उसके पिता रोएंगे? क्या उन्हें परवाह भी होगी? जब वह अपना रास्ता बनाने के लिए घर छोड़कर गया था, तब उसके पिता ने उसे त्याग दिया था। उसके पिता ने कहा था, "अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं खुद उसकी कमर तोड़ दूंगा।" और अब वह यहाँ नहीं था, अपने सपनों को सच होते देखने के लिए।
वह शांति से इंतजार करता रहा, जैसे ही सूरज निकला, भूरे रंग के लबादे में एक आकृति प्रकट हुई। उसने सोचा कि उसकी मृत्यु साक्षात आ गई है, क्योंकि उसने कहा: "वृष्णि?"
वृषकेतु ने जैसे-जैसे आगे बढ़ा, उसे अपना बचपन का नाम सुनाई दिया और उसने फुसफुसाते हुए जवाब दिया: "मेनांडर?"
उसने पीला चेहरा देखा और मुस्कुरा उठा। उसे शव संरक्षक बहुत पसंद था। बचपन में वह मेनांडर के साथ घूमता था और शव को विघटित करना, उसे संरक्षित करना और दफनाकर उसका अंतिम संस्कार करना सीखता था। मेनांडर पूरे श्मशान घाट का प्रबंधन करता था।
“क्या बात है? तुम यहाँ क्यों हो?”

"आपकी मदद करने के लिए।"
"किस तरह से?"
मुझे महारोगों के बारे में जानना है।
उसने हैरानी से अपनी भौंहें नीचे कर लीं। "आपको उनके बारे में जानने की क्या ज़रूरत है?"
यह एक प्रासंगिक मामला है।
वृषकेतु ने अपने होंठ सिकोड़ते हुए पूछा, "तुम्हें क्या लगता है कि मुझे उनके बारे में कैसे पता है?"
"क्योंकि तुमने उन्हें देखा था, है ना? मैंने तुम्हारी माँ को बताया था कि तुमने मेरा ज़िक्र किया था, लेकिन असल में तुम्हारी अलगाववादी सेना ही उस सराय में मज़ेदार बातचीत कर रही थी जिसे मैंने छुपकर सुना था।"
“अरे, वे मूर्ख! वे अभी तक पकड़े नहीं गए हैं, है ना?”
“नहीं, ऐसा नहीं हुआ है।” मेनांडर ने सिर हिलाया। “और मैंने तुम्हारे माता-पिता को इस पूरी खूनी घटना के बारे में, अलगाववादियों के अभी भी जीवित होने के बारे में न बताने का अपना वादा निभाया।”
"अगर मैं नहीं कर सकता, तो किसी को करना चाहिए।"
फिर भी, मुझे लगता है कि यह बलिदान मूर्खतापूर्ण है।
"मैं उनका नेता हूं, और एक संगठन के प्रमुख के रूप में सेवा को प्राथमिकता दी जाती है।"
"पुजारी बनने का विकल्प हमेशा मौजूद था।"
“और सूर्य की उस चरमपंथी और भयानक परिषद में शामिल हो जाऊं? नहीं, बहुत-बहुत धन्यवाद।” उन्होंने सिर हिलाया। “वे खूनी कमीने हैं, जो भगवान सूर्य के चिन्ह का चोला ओढ़कर अपने कठोर नियमों और सिद्धांतों से लोगों के दिमाग पर राज करते हैं।”
मेनेंडर ने अपने जबड़े भींच लिए और पीछे हटते हुए अपना सिर हिलाया। कर्ण के युवा पुत्र के शांत होने से पहले कुछ देर का सन्नाटा छा गया।
वृषकेतु ने आह भरी। “महारोग…हाँ, मैंने उन्हें देखा। वास्तव में उनमें से कई थे। मैंने उनके जैसे किसी को नहीं देखा। उन्होंने अपने शरीर पर काला रंग लगाया हुआ था और वे धुआँ उगलने वाले काले घोड़ों पर सवार थे। मैंने उन्हें दूर से देखा और फिर भी मुझे ठंडक महसूस हुई। मुझे पता नहीं था कि वे महारोग हैं, जब तक कि मेरे दल के एक लड़के ने मुझे नहीं बताया। उनके पास

अजगर का चिन्ह था और वे बहुत सारे थे। मैंने उन्हें रेगिस्तान के पास देखा।”
“तो, लगभग इसी समय की बात है, अधिरथ…” उसने बोलना शुरू किया और फिर थोड़ा लड़खड़ा गया। “दिलचस्प। अब सब कुछ ठीक बैठ रहा है। क्या वे धोखेबाज हो सकते हैं?”
“मैंने उनके बारे में केवल गुरु केशवा से ही कहानियां सुनी हैं,” उन्होंने अपने गुरु के बारे में बात करते हुए कहा, “काश मैं कह पाता कि वे महज़ धोखेबाज़ हैं। लेकिन वे लकड़बग्घे की तरह चलते हैं, और वे इतने क्रूर और डरावने हैं कि उन्हें धोखेबाज़ कहना नामुमकिन है। लेकिन मैं वही कह सकता हूं जो मैंने देखा है। और मैं उनके बारे में केवल वही जानता हूं जो हमने पढ़ा है।”
मेनांडर ने सिर हिलाया। "मैं मृतकों का आदमी हूँ, वृष्णि, और मुझे आशा है कि परलोक में तुमसे मुलाकात होगी।"
“आपसे मिलकर अच्छा लगा,” वृषकेतु ने कहा।
और जब वह वापस जा रहा था, तो वृषकेतु केवल यही सोच रहा था कि क्या वह अच्छी तरह से छिपा हुआ था या नहीं।
उसने झूठ बोला था, यह तथ्य ही अपने आप में ही काफी है।
यह तथ्य ही अपने आप में महत्वपूर्ण है कि उन्होंने ही महारोगों को आंगन क्षेत्र में प्रवेश करने में सहायता की थी।

8

दुनिया का सबसे ताकतवर आदमी सिर्फ एक ही चीज से डरता था, और वो भी सिर्फ एक ही चीज से।
लेकिन उसने अपने डर को सबके सामने ज़ाहिर नहीं किया था। वृकोदरा ने अपने जीवन में सब कुछ देखा था। रक्तपात, ज़हर, अंधकार, अपनों की मृत्यु और परित्याग। उसने सब कुछ सहन किया था और उसे कई नामों से पुकारा गया था।
वह एक साथ खुद खा रहा था और अपने गिद्ध को खिला रहा था, जबकि उसकी सेना के अन्य सदस्य उसके चारों ओर घेरा बनाकर शिविर लगा रहे थे। वे एक छोटी टीम थे, लेकिन बेहद कारगर। वे आते, झटपट सफाई करते और सब कुछ नष्ट कर देते, और फिर अगले शिविर के लिए निकल जाते।
वे युद्धों, लड़ाइयों, उड़ते हुए अंगों और धड़ों के बारे में बात कर रहे थे। उन्हें कोई पछतावा नहीं था। उन्हें कोई अपराधबोध नहीं था। वे एक मिशन पर निकले हुए लोग थे। और वे वृकोदरा की पसंदीदा नीति का पालन कर रहे थे: जब आप इंसानों को मार रहे हों तो मुर्गियों को गिनना शुरू न करें।
इसका जो भी अर्थ रहा हो, वह उसे बहुत पहले ही भूल चुका था। उन्होंने राजवंशों के बारे में और चर्चा की, और यह भी कि कौन किस पर विजय प्राप्त करेगा। कुछ लोगों का कहना था कि युद्ध होने वाला है।
वृकोदरा कद में बड़े थे, लेकिन शांत स्वभाव के थे। वे केवल आवश्यकता पड़ने पर ही बोलते थे। लेकिन वे हमेशा अपने साथियों के साथ बैठते और भोजन करते थे। उनके लिए यह विश्वास दिलाना महत्वपूर्ण था कि वे अपने बड़े भाई युधिष्ठिर की तरह राजा या शासक नहीं थे।
“कमांडर, आप हस्तिनापुर पर घेराबंदी करने की योजना कब बना रहे हैं?” किसी ने पूछा।
और अंगा के बारे में क्या?

वृकोदरा चुप था। वह एक सैनिक था, विचारक नहीं। कम से कम उसके भाई ने तो यही कहा था। इससे पहले कि वह जवाब दे पाता और अपने साथियों को बता पाता, उसने एक सैनिक को अपनी ओर दौड़ते हुए देखा।
“कमांडर,” वह बुरी तरह हांफते हुए बोला, “आपसे मिलने के लिए एक दल आया है। एक महत्वपूर्ण दल।”
वृकोदरा खड़ा हुआ, लेकिन कई दिनों बाद पहली बार अपने तम्बू के दूसरी ओर खड़े तीन जले हुए शवों को देखकर उसके पैर कांपने लगे। एक अजीब सी घबराहट और डर ने उसे जकड़ लिया...
यह महज एक कल्पना थी।
उसने इसे अनसुना कर दिया और उसे ले जा रहे सिपाही की ओर बढ़ गया। गिद्ध उसके पीछे-पीछे आकाश की ओर उड़ता हुआ गया और फिर वृकोदरा के चारों ओर चक्कर लगाने लगा।
वे पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए, जहाँ चट्टान से घने जंगल और दूर स्थित राज्य और महल दिखाई देते थे। वे पूर्व दिशा में कहीं थे।
वृकोदरा पास आया। दो आदमी धातु के कवच में थे, और उनके बीच में एक आदमी था जिसने लाल रंग का लबादा ओढ़ा हुआ था।
"भाई," वृकोदरा ने उसकी लंबाई देखकर ही पहचान लिया कि वह कौन है।
"आप कैसे हैं?" लबादा ओढ़े हुए व्यक्ति ने पूछा।
मुझे यह आनंद किस कारण से मिला?
"मेरे सबसे बड़े समर्थक को निश्चित रूप से दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने का अधिकार है, खासकर पिछली करारी हार के बाद।"
“जी हां,” वृकोदरा ने विजयी भाव से कहा। “मैंने अपने राज्य के सबसे अधिक झंडे फहराए हैं।”
“मैं समझता हूँ, और मुझे पता है,” नकाबपोश आकृति ने कहा। “हालाँकि अब दशार्णों, यादव साम्राज्य पर आक्रमण करने का समय आ गया है।”
वृकोदरा ने अपने जबड़े भींच लिए। “आम तौर पर, इस तरह की खबर के लिए मुझे एक पत्र मिलता है। व्यक्तिगत मुलाकात की मांग क्यों कर रहे हो? मुझे यकीन है कि यह महज़ आपकी ओर से विजय का उपहार नहीं है, बल्कि इससे कहीं बढ़कर है।”
मुझे ऐसी खबरें मिल रही हैं कि आपकी सेना आपको उन राज्यों पर हमला करने के लिए प्रभावित कर रही है जो राजसूय यज्ञ का हिस्सा नहीं हैं।

और क्या ऐसा ही नहीं होना चाहिए?
"यह उससे कहीं अधिक जटिल है।"
वृकोदरा हँस पड़ा। “भाई, मेरी सेना में तुम्हारे जासूस हैं, जो तुम्हें गलत जानकारी देते हैं। क्या हम आपस में पर्याप्त संवाद नहीं करते?” "आँखें और कान हर जगह होने चाहिए।"
वृकोदरा को गहरा दुख हुआ, लेकिन वह अपने भाई के सामने अपना नरम दिल नहीं दिखाना चाहता था। उसने अपनी त्वचा पर ज़हर के निशान को छूते हुए कहा, “मैं अंगा के बारे में सोच रहा था। यह अभी कमज़ोर है। कर्ण दुर्योधन के साथ व्यस्त है। उसकी चिड़चिड़ी, गर्भवती पत्नी इसे कसकर पकड़े रहने के लिए संघर्ष कर रही है। हम तुरंत उनके लकड़ी उत्पादन का काम संभाल सकते हैं।” “मैं जानता हूँ कि तुम अंगा पर हमला क्यों करना चाहते हो। यह पेशेवर मामला नहीं है। यह व्यक्तिगत मामला है। राजनेता बनने की कोशिश मत करो, बड़े आदमी,” नकाबपोश शख्स ने कहा। “क्योंकि तुम राजनेता नहीं हो। तुम एक जाहिल हो। और तुम्हें इसी तरह व्यवहार करना चाहिए।” उसने कड़े शब्दों में कहा। “अपने आदमियों को इकट्ठा करो और दशर्णों पर हमला करो। मैं उन्हें पूरी तरह से मिटा देना चाहता हूँ।”
"अंगा क्यों नहीं?"
“यह सुयोधन के बहुत करीब है और जब हम मजबूत हो रहे हों तो हम उसे नाराज नहीं कर सकते। जब हम अपनी पूरी ताकत पर होंगे, तभी हम हमला करेंगे।”
आदेश देने के बाद, लबादा ओढ़े हुए व्यक्ति ने अपने दो अंगरक्षकों के साथ वहाँ से जाना शुरू किया, तभी वृकोदरा ने मुड़कर कहा—
"अगर मैं न सुनूं तो क्या होगा?"
"माफ़ करें?"
“मैं सिंहासन की सेवा करता हूँ, उसी सिंहासन की जिसकी रक्षा भीष्म पितामह करते हैं। हे धर्म, आप सिंहासन पर विराजमान हैं।” उन्होंने उन्हें उनके बचपन के नाम से पुकारा। “अगर आप नहीं, तो शायद एक दिन मैं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि मुझे आपकी बात सुननी चाहिए। मुझे अपने लोगों की बात सुननी चाहिए।”
लबादा ओढ़े उस व्यक्ति ने आह भरी और एक पहरेदार से आग पैदा करने वाले रसायन से युक्त छड़ी देने को कहा। उसने पत्थर को नीचे से रगड़ा और चटकने की आवाज़ को छड़ी से टकराने दिया, जिससे आग भड़क उठी।

किसी के लिए तो यह महज बच्चों का खेल हो सकता है, लेकिन वृकोदरा के लिए... वह अचंभित और भ्रमित होकर जमीन पर गिर पड़ा।
लबादा ओढ़े उस शख्स ने छड़ी ज़मीन पर फेंक दी, और वृकोदरा ने देखा कि उसके चारों ओर पेट्रोल छिड़का गया था, जिससे आग का एक घेरा बन गया था। वह रोने लगा। उसकी आवाज़ कर्कश हो गई और उसका शरीर कमज़ोर पड़ गया। जले हुए परिवार की तस्वीरें... उसे सताने लगीं।
"अगर आप नहीं चाहतीं कि आपके आदमी आपको उस सबसे बुरे तरीके से, सबसे कमजोर स्थिति में देखें, और आप चाहती हैं कि आपके आदमी आपकी कमजोरी के बारे में जानें, तो जैसा मैं कहता हूं वैसा करो," नकाबपोश व्यक्ति ने कहा। वृकोदरा रोया और सिर हिलाया, मानो खुद को लपेटकर, बच्चे की तरह अपनी छाती से लिपट गया हो।
एक बच्चा…
और लबादा ओढ़े हुए उस व्यक्ति ने उसे उसी हालत में छोड़ दिया, आग को बुझने दिया, और परिवार के जले हुए शरीर फिर से उस अग्नि-वृत्त के भीतर प्रकट हुए, और उन्होंने वृकोदरा को गले लगा लिया, जैसा कि उन्होंने कहा था...
“तुमने हमें जला दिया, बड़े आदमी। तुमने हमें जला दिया।”

9

सत्यसेना कुछ भयानक करने वाला था। अपने सबसे अच्छे दोस्त की हत्या से भी बदतर कुछ।
वह अंगा शहर के कोने में स्थित सूर्य मंदिर के प्रांगण में सावधानीपूर्वक आगे बढ़ा, जो पीतल, सोने और चांदी से निर्मित था और भव्यता से खड़ा था। इसमें बड़े-बड़े बरामदे और पुजारियों और श्रद्धालुओं के लिए घुमावदार रास्ते थे। यह एक बहती नदी के किनारे स्थित था।
उसे याद था कि वह यहाँ दौड़ता-भागता, दूसरी दासियों के साथ खेलता था। उसके पिता उसे यहाँ लाते थे और उसे सूर्य देव के सात घोड़ों की मूर्तियों के बारे में बताते थे। फिर दो देवियों की मूर्तियाँ भी थीं जो बहुत ऊँची थीं, लेकिन सूर्य देव की मूर्ति जितनी ऊँची नहीं थीं।
यह सूर्य परिषद का घर था, जो एक धार्मिक संगठन था जो शहर की आस्था की रक्षा करता था, जो यह सुनिश्चित करता था कि लोगों के बीच भी धर्म कायम रहे। सत्यसेना विशाल हॉल की ओर बढ़े, जहाँ उन्होंने परिषद के पुरोहितों को देखा। वे सभी पीले रंग के वस्त्र पहने हुए थे, जिनके पीछे सूर्य का चिन्ह बना हुआ था। वे पूरी तरह से गंजे थे, और उन्होंने सत्यसेना को सिर हिलाकर अभिवादन किया, जिसके जवाब में सत्यसेना ने भी सिर हिलाकर अभिवादन किया। जब भी वह निराश या तनावग्रस्त होते थे, तो शांति पाने के लिए यहाँ आते थे। शहर का शोरगुल भरा जीवन हमेशा सुकून देने वाला नहीं होता था, खासकर सत्यसेना जैसे राजा के पुत्र के लिए, जो हमेशा लोगों की भीड़ से घिरे रहते थे।
उस विशाल सभागार में जहाँ पुजारी बैंगन और अन्य प्रकार के पकवानों का भोज कर रहे थे, उन्होंने पुजारियों की सेवा कर रहे एक व्यक्ति को देखा। वे उसके पास गए और बोले: “गुरु अष्टार, मुझे आपसे कुछ बात करनी है।”
“मैं सेवा कर रहा हूँ, मेरे बच्चे, क्या तुम नहीं देख रहे हो?”
मुझे पता है। मैं इंतजार करूंगा। क्षमा करें।

उन्हें पसीना आ रहा था, दिल लगभग कांप रहा था। अष्टार ने अवश्य ही महसूस किया होगा कि उनमें कुछ गड़बड़ है। भोजन परोसने के बाद, अष्टार ने पानी दिया और फिर सत्यसेना को पीछे के कमरे में आने का इशारा किया, जहाँ मुख्य पुजारी का कक्ष स्थित था।
उसके पीछे दरवाजे बंद हो गए और सत्यसेना ने सबसे पहले कहा: "मैंने अपने दोस्त को मार डाला।"
“मैं समझ गया।” अष्टर ने सिर हिलाया। “और आप ऐसा क्यों करेंगे?”
उसने मुख्य पुजारी की ओर देखा, उसकी आँखें धूसर पर्वत की चोटी की तरह कठोर थीं, चेहरा कोमल था और आवाज कमल के फूलों से भी अधिक मधुर थी। वह कुबड़ा होकर बैठा था, शायद बचपन से चले आ रहे पीठ दर्द के कारण।
मुझे डर था कि वह हमारी हरकतों की चुगली कर देगा।
और हम क्या करने वाले हैं?
"राजसूय यज्ञ और भीम के अभियान के महत्व को नष्ट करने के लिए, लोगों के बीच अफवाहें फैलाना।"
“हां। और आपके दोस्त को पता था?”
"हाँ।"
"जब हमने स्पष्ट रूप से इस बारे में बात न करने का फैसला किया," अष्टर ने कहा, और उसने धातु से बनी एक लाठी निकाली और तुरंत उसकी पीठ पर वार किया। वह जमीन पर गिर पड़ा। सत्यसेना के मुंह से खून निकला और वह रोने लगा।
जब विदेशी पूरब और पश्चिम से हमारी भूमि पर आए, तो उन्होंने हमारे धर्म पर हमला किया।
पीठ पर एक और थप्पड़।
“हम भाग गए। मेरे माता-पिता की हत्या कर दी गई। हमारे गाँव जला दिए गए।
हम सूर्य के शांतिप्रिय प्राणी थे, और उन विदेशियों ने हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया।”
एक और थप्पड़।
"आपके पिता ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण समय पर हमें गोद लिया, हमें घर, आश्रय और भोजन दिया।"
“तो, जब उनकी पत्नी गर्भवती थीं और संकट के दौर से गुज़र रही थीं, तब मैं उनकी मदद के लिए आया। वे खुश हुए और उन्होंने मुझे तुम्हारी सुरक्षा का ज़िम्मा सौंप दिया,” अष्टार ने कहा। “मैं तुम्हारा पुजारी नहीं हूँ। मैं

तुम्हारा पिता नहीं हूँ। मैं तुम्हारा रक्षक हूँ।” उन्होंने सत्यसेना के पास छड़ी लाते हुए कहा, “और तुम्हें आम तौर पर जीवन की बातों पर चुप रहना चाहिए।”
“मुझे पता है।” सत्यसेना के शरीर से खून बह रहा था। “मालिक, मैं क्षमा चाहता हूँ। आपने मुझे जो दंड दिया है, मैं उसका पात्र हूँ।”
“पर जो होना था वो हो चुका है,” अष्टर ने कहा। “और मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिए कुछ करो, प्रायश्चित के रूप में।”
"क्या?"
अष्टर ने छड़ी एक तरफ रख दी और कुर्सी की ओर बढ़ गया। “जब कोई राजा शासन करता है, एक अच्छा राजा, तो यह शहर के लिए अच्छा होता है। लेकिन जब रानी शासन करती है, तो यह केवल उसके लिए अच्छा होता है। तुम्हारी माँ, अपनी तमाम खूबियों के बावजूद, हमारे समाज के लिए, हमारे आदर्शों के लिए, तुम्हारे पिता की हर मान्यता के लिए खतरा बन सकती है। वह एक विदेशी है, वह इस देश की नहीं है।” उसकी नाक के नथुने फूल गए। “और यद्यपि वह रानी है और हम सभी उसकी परवाह करते हैं, उसके फैसले… समाज के लिए फायदेमंद नहीं हो सकते।” सत्यसेना जानता था कि वह रानी का विरोध करने के लिए कुछ ऐसा करना चाहता था जो लापरवाह और घिनौना हो और जिससे रानी को वास्तव में गुस्सा आए।
तो आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?
अष्टार खड़े होकर बोला, "अपने भाई को सिर कलम होने से बचाओ," और सत्यसेना के अपने भाई को मरते हुए देखने के एकमात्र सच्चे सपने को तोड़ते हुए बोला, "और तुमने जो किया है उसके लिए पश्चाताप करो।"

10

बहुत समय बाद कर्ण ने मृत्यु का स्वप्न देखा।
और यह ऐसी मौत नहीं थी जिसका सपना देखकर वह गर्व महसूस कर सके। यह वह मौत नहीं थी जिसकी उसने कभी कल्पना की थी।
उसने अपने हाथों को देखा, उन पर धूल और खून लगा हुआ था। उसने चारों ओर देखा कि वह कहाँ है। धूल भरे, अंधेरे मैदानों में जहाँ उसका रथ फंसा हुआ था, और वह उसे बाहर निकालने की कोशिश कर रहा था, भागने की कोशिश कर रहा था, जबकि तीर उसकी ओर लगातार बरस रहे थे। रथ चलाने वाले ने उससे कहा, "सब खत्म हो गया है।"
और उसने यह देखने के लिए ऊपर देखा कि वह कौन है।
उनके पिता।
उसके चेहरे की बनावट वही थी, वही युवापन वाली विशेषताएं, वही आत्मविश्वास, वही चंचल आंखें और वही रहस्यमय चेहरा।
“क्या खत्म हो गया?”
वे तुम्हारे लिए आ रहे हैं।
“नहीं। वे ऐसा नहीं करेंगे। मैं इससे पहले खुद को बचा लूंगा।”
“नहीं बेटा। वे आ रहे हैं और तुम हमेशा के लिए छिप नहीं सकते।”
"नहीं।"
रथ को बाहर खींचने के लिए उसने और ज़ोर लगाया, अपनी पूरी कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तभी एक तीर उसके बगल में आकर रुका और उसके कंधे पर लगा। अपने पिता को बचाने की कोशिश में वह रेंगकर दूर हट गया, क्योंकि और तीर उसकी ओर तेज़ी से आ रहे थे। उसने उन्हें अपनी छाती पर खाया और महसूस किया कि उसने कवच नहीं पहना था। असल में, उसके शरीर पर कुछ भी नहीं था।
वह खून से लथपथ जमीन पर गिर पड़ा, जबकि उसका हत्यारा एक परछाई की तरह उसके ऊपर मंडरा रहा था।
यह तो साक्षात मृत्यु थी।

तभी वह पसीने और निराशा से तरबतर होकर जाग उठा, उसकी छाती तेजी से ऊपर-नीचे हो रही थी, वही चिंता जो उसे वर्षों पहले मौत के करीब ले आई थी, फिर से लौट आई और वह सोचने लगा कि ऐसा क्यों हो रहा है।
वह हस्तिनापुर के पास एक आरामदायक किले में था, जहाँ वे यात्रा कर रहे थे। उसके पास एक पलंग और एक कंबल था। उसके पास हर तरह की सुविधा मौजूद थी, फिर भी उसे लग रहा था कि पर्याप्त नहीं है। उसे लग रहा था कि कुछ गलत हुआ है जिसे उसे सुधारना चाहिए था।
दरवाजे पर दस्तक हुई थी।
आधी रात का समय था, फिर भी उसे बाहर के खतरे का कोई डर नहीं था। उसने दरवाजा खोला तो सामने एक सैनिक खड़ा था, जिसने बताया कि उसे उसके राजा सुयोधन ने बुलाया है।
कर्ण को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर क्या बात है, लेकिन उसने अपना गाउन पहना और जल्दी से नीचे भागा। क्या भानुमती भाग गई थी? वे यहाँ विश्राम करने आए थे, हस्तिनापुर जा रहे थे जहाँ वह उससे विवाह करने वाला था। एक अपहृत स्त्री। बड़ों को यह बताने का यह एक अच्छा तरीका था कि सुयोधन वही करेगा जो उसके दिल में होगा। कर्ण जानता था कि इसके पीछे यह भी कारण था कि वह हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ में बँटे उस राज्य में सभी को चिढ़ाना चाहता था, और कुछ मूर्खतापूर्ण काम करके अपने पिता को परेशान करना चाहता था।
और कर्ण, अपने सच्चे मित्र होने के नाते, अपने साथी की सभी इच्छाओं और ख्वाहिशों को मान लेता था।
वह गलियारे की ओर बढ़ा और किले के मुख्य हॉल में पहुँचा, जहाँ उसने काले वस्त्र पहने दो व्यक्तियों के सामने सुयोधन को घुटनों के बल बैठा, बाहें पीछे बांधे, सिसकते हुए देखा। सुयोधन ने अपनी बाहें क्रॉस कर रखी थीं, उसका शरीर गठीला और पसीने से तर लग रहा था, उसकी मूंछें अनोखी थीं। उसने केवल धोती पहनी हुई थी और उसकी बांह पर रुद्राक्ष बंधा हुआ था। पहरेदार उन दोनों व्यक्तियों को घेरे हुए थे, और तब कर्ण को एहसास हुआ कि वे नाग हैं, क्योंकि उनके गले में कोबरा के आकार का ताबीज लटका हुआ था।
"इस का अर्थ क्या है?"

“वे शहर के बाहरी इलाके में घूम रहे थे जब उन्हें पकड़ा गया,” सुयोधन ने कहा। “मुझे लगता है कि वे हत्यारे हैं, जिन्हें हमें मारने के लिए भेजा गया था।”
और वे क्या कहते हैं?
“ऐसा नहीं है।” सुयोधन हँसते हुए बोला। “जैसे कि उन खूनी नागों के मुँह से निकली बातों पर विश्वास किया जा सकता है।”
वे कमजोर, कुपोषित और लगभग मृत्यु के कगार पर लग रहे थे।
“तुम किले के आसपास क्या कर रहे थे?” कर्ण ने पूछा। “क्योंकि…क्योंकि…गुरुजी…हमें भूख लगी थी और हमने सोचा कि अगर हम ऐसा करते तो…”
“चोर!” सुयोधन ने व्यंग्यपूर्वक उत्तर दिया। “बेशक। नागों से मैं और क्या उम्मीद कर सकता हूँ? चोरी, डकैती। वे तो बस बहिष्कृत और नीच जाति के लोग हैं।”
कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। उसे पूरा यकीन था कि सुयोधन को यह एहसास नहीं था कि कर्ण स्वयं भी नीच कुल का और समाज से बहिष्कृत था। शायद वह भूल गया था कि उसका मित्र नागों के समान ही था।
“हमें…हमें…भोजन की…जरूरत है। कृपया…हमें नुकसान न पहुंचाएं,” नागाओं में से एक ने कहा।
"तुम्हारी हत्या कर दी जाएगी।"
“हमारे पास जानकारी है!” दूसरे ने कहा, और पहले वाले ने उसे चुप कराने की कोशिश की।
“तुम्हारा क्या मतलब है?” कर्ण ने पूछा।
“हे कर्ण देव, आपके बारे में हमने बहुत बड़ी-बड़ी कहानियां सुनी हैं और आपके बारे में और भी बड़ी-बड़ी कहानियां जानते हैं। हमें पता है कि हाल ही में क्या हुआ था।”
और फिर क्या हुआ?
“तुम्हारे पिता की हत्या महारोगियों में से एक ने की थी।”
एक पल के लिए वह असमंजस और स्तब्ध रह गया, मानो वह बेकाबू हो गया हो। वह उनकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहता था, लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि इसमें कुछ सच्चाई जरूर है।

सुयोधन ने नागों को थप्पड़ मारा। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस स्थिति से बचने के लिए ऐसे झूठ बोलने की?"
"हम सच बोलती हे।"
“महारोगे वंश का कोई अस्तित्व नहीं है। वे तो बीते युग की कहानियां हैं।”
“वे लौट आए हैं,” अपना बचाव करते हुए पहले नागा ने कहा। “और वे एक क्रूर इरादे से लौटे हैं। हमें नहीं पता कि उनका इरादा क्या है। हमें भी अफवाहें सुनने को मिलती हैं। हम उनका हिस्सा नहीं हैं। हम हिंसा से दूर रहते हैं।” सुयोधन ने कर्ण की ओर देखा। "उनकी बातों पर विश्वास मत करो, मेरे मित्र।" लेकिन कर्ण थम सा गया, मानो समय थम गया हो, मानो कोई भयानक घटना उसके सामने से गुज़र गई हो। "शनाया ने मुझे बता दिया होता..." उसने मन ही मन बुदबुदाया।
“उन पर विश्वास मत करो,” सुयोधन ने तीखे स्वर में कहा। “वे झूठे हैं। और वे चोर हैं। उन्हें अनदेखा करो। उन्हें दंड मिलेगा।” उसने पहरेदारों को उन पर हमला करने का आदेश दिया, और तलवार के एक ही झटके में एक पहरेदार नाग की गर्दन काटने ही वाला था।
लेकिन किसी चीज ने उसे रोक दिया।
और वह कोई और नहीं बल्कि कर्ण था, जिसने अपने हाथ से तलवार को रोक दिया था, नागों के लिए अपनी हथेली से खून बहाते हुए।
“नहीं।” उसने सुयोधन को झट से जवाब दिया। “उन्हें जाने दो।”
“क्यों?” सुयोधन ने क्रोध से पूछा। “तुम तुच्छ लोगों के लिए खून बहाते हो।”
कर्ण ने कुछ नहीं कहा, बस तलवार को पीछे धकेलते हुए बोला, “अगर तुम मुझे मित्र मानते हो, तो आज रात के लिए उन्हें भोजन और आश्रय दे दो। और कल उन्हें आज़ाद कर देना। नहीं तो जंगली जानवर उन्हें खा जाएंगे।”
और उसने अपनी कई सोने की अंगूठियों में से एक अंगूठी निकाली और उसे नागों को दे दिया।
"जब आपको अगली बार भोजन की आवश्यकता हो, तब इसका उपयोग करें।"
फिर कर्ण खड़ा हुआ और कमरे से बाहर चला गया, सुयोधन को अवाक छोड़कर, जो बाहर जाते समय भ्रमित, दुखी, क्रोधित था, लेकिन सबसे बढ़कर—
दृढ़ निश्चय वाला।

वह अपने पिता के साथ क्या हुआ, यह जानने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

11

वृषकेतु मरने के लिए तैयार था।
वह जानता था कि वह दिन निकट है, और सूर्य अनुकूल नहीं था, क्योंकि गरज सुनाई दे रही थी और आकाश से बादल बरस रहे थे, बारिश की बूँदें रुक-रुक कर आ रही थीं और लोग जोर-जोर से शोर मचा रहे थे।
वह मरने के लिए तैयार था क्योंकि वह जानता था कि अंत निकट है। उसके सारे कर्म, उसके सारे कार्य इसी क्षण की ओर ले जा रहे थे। जितने दिन उसने विद्रोह किया था, और सिंहासन के विरुद्ध लिए गए सभी महत्वपूर्ण निर्णय। वृषकेतु किसी कारणवश उस व्यक्ति को सचमुच परेशान करना चाहता था; इससे उसे खुशी मिलती थी।
उसके हाथ लकड़ी की रस्सी से बंधे हुए थे, और वह अपने चारों ओर एक दर्जन गार्डों के साथ उस सुनसान, अंधेरे गलियारे में घूम रहा था, जबकि भीड़ का शोर गूंज रहा था।
लकड़ी का दरवाजा खुला और उसने खुद को एक क्रोधित भीड़ के बीच पाया, जो उसे गालियां दे रही थी और उस पर सड़े हुए फल, अंडे और न जाने क्या-क्या फेंक रही थी। लेकिन उसने अपना चेहरा गंभीर बनाए रखा और उसकी आंखें हमेशा की तरह काली थीं।
“पतित!” किसी ने चिल्लाकर कहा।
“यह एक भयानक घिनौना कृत्य है।” एक अन्य व्यक्ति ने बीच में ही आपत्ति जताते हुए कहा।
वृषकेतु अडिग रहा, उसकी निगाहें सामने, फांसी के तख्ते पर टिकी थीं, जहां काले मुखौटे में एक जल्लाद उसका इंतजार कर रहा था, हाथ में एक तीतर था।
उसका सिर समेत उसकी गर्दन काट दी जाने वाली थी।
लेकिन जैसे ही वह चबूतरे की ओर बढ़ा और बारिश और तेज हो गई, एक आदमी सामने आया, जो उस पर सामने से हमला करने के लिए तैयार था।
गार्ड हैरान रह गए।

वृषकेतु ने अपना बचाव करने के लिए पीछे मुड़ा, लेकिन हत्यारा उस पर झपट पड़ा।
इससे पहले कि वह वृषकेतु को कोई नुकसान पहुंचा पाता, पहरेदारों ने उसे पकड़ लिया और उसे तुरंत वहां से ले जाया गया।
वृषकेतु घटनाक्रम के इस मोड़ से व्याकुल था, लेकिन अब उसके हाथ में कुछ था। वह चीज़ उसे उस तथाकथित हत्यारे ने सौंपी थी, जिसे पहरेदारों ने पकड़कर गायब कर दिया था।
एक चाकू।

उग्रा, एक अनाड़ी मसखरे की तरह, कई नौकरों, दासियों और पहरेदारों को पीछे छोड़ते हुए रानी के अध्ययन कक्ष की ओर बढ़ा। जैसे ही वह बड़े कक्ष के द्वार के पास पहुँचा, उसने शव संरक्षक मेनांडर को तनाव में इधर-उधर टहलते हुए देखा।
“महाराज कहाँ हैं?” उसने पूछा। “आप यहाँ क्या कर रहे हैं? आपको तो शवों के ढेर पर होना चाहिए था।”
मेनांडर ने अपनी मनमोहक आँखों से ऊपर देखा, वह अभी भी फटे-पुराने लबादे को ओढ़े हुए था। "आज वह थोड़ी अस्वस्थ है।"
और क्या वह एक गद्दार के सिर कलम किए जाने के इस भव्य आयोजन को देखने से चूक जाएगी?
"तुम उसके बेटे की बात कर रहे हो," मेनांडर ने उसे सावधानीपूर्वक चेतावनी दी।
“ज़रूर। क्या आपको लगता है…कि वह जानबूझकर इसे देखने से चूक रही है?”
“हो सकता है वो झूठ बोल रही हो।” मेनांडर ने कंधे उचकाते हुए कहा। “लेकिन फिर, उसे खांसी आ रही थी और जुकाम भी था। मैं भी भीख का ही इंतज़ार कर रहा हूँ।”
उग्र गुर्राया। मन ही मन वह चाहता था कि रानी कष्ट सहे और अपने पुत्र को मरते हुए देखे। उसने वृषकेतु के विरुद्ध एक लंबा-चौड़ा बयान तैयार कर रखा

था, जिसमें उसे कर्ण और शन्य का मिश्रित वंशज और पतित बताया गया था। और अब वह रानी के चेहरे पर पीड़ा का भाव नहीं देख पाएगा।
"अच्छा, उसे बता देना, हमें उसकी कमी खलेगी।"
"बेशक, मैं ऐसा करूंगा," मेनांडर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।
"हालांकि इससे भी इस सवाल का जवाब नहीं मिलता कि आप यहां क्यों हैं।"
"वह उस श्मशान घाट में बेहोश हो गई जहां हम महारोगा हमले का अध्ययन कर रहे थे।"
उग्रा ने धीमी आवाज़ में गुर्राया और अपने रास्ते चला गया, जबकि मेनांडर सोच रहा था कि क्या उसका झूठ पकड़ा गया है।
उसने रानी के कक्ष का दरवाजा खोला और एक खाली कमरा देखा।
अपने बेटे के सिर कलम किए जाने के दिन ही रानी गायब हो गई थी।
और मेनांडर ने पूरी उम्मीद के साथ यह दुआ की कि वह आत्महत्या न कर ले।
अन्यथा, अगला नंबर उसका ही होता।

वृषकेतु आसन पर हिलने लगा, उसकी हथेलियों में चाकू कसकर पकड़ा हुआ था।
सामने गुस्से में भरी भीड़ चिल्ला रही थी, जबकि वह दूर अंग के सहयोगी राजाओं और रानियों को देख रहा था। वे सभी उसकी मृत्यु देखने आए थे, निर्वासित परिवारों और उनके उन मित्रों में से, जो उन राज्यों से थे जिन्हें उसने अपने कब्जे में लेने में मदद की थी।
लेकिन उसे अपनी माँ दिखाई नहीं दी, और वह असमंजस में पड़ गया। क्या उसकी माँ का मातृत्व भाव अचानक जाग उठा था? कैसे? यह असंभव लग रहा था क्योंकि वह हमेशा से एक बुरी औरत, एक बुरी माँ रही है, हमेशा सत्यसेना का पक्ष लेती रही है, और वृषकेतु की त्वचा की इस हालत के लिए भी वही ज़िम्मेदार है। अगर उसने वृषकेतु और उसकी त्वचा का ध्यान रखा होता, तो यह नौबत नहीं आती। उसने अपनी माँ को दोषी ठहराया, हालाँकि इस बात का कोई सबूत नहीं था कि यह उसकी गलती थी।
जल्लाद ने कहा, "घुटने टेक दो," और उसे जमीन पर धकेल दिया।

वृषकेतु ने ऊपर देखते हुए कहा, "आपने मुझे ज्यादा विकल्प नहीं दिया, है ना?"
"चुप रहो, गद्दार।"
और उसने उसे खंभे पर हाथ रखने को कहा। उसके आस-पास के लोग उत्साह से ताली बजाने और शोर मचाने लगे। वृषकेतु भी अपने भाई को देखना चाहता था, लेकिन वह भी वहाँ नहीं था, मानो हवा में गायब हो गया हो।
मेरा परिवार कहाँ है? क्या वर्षों तक मुझे मानसिक और भावनात्मक रूप से उपेक्षित करने के बाद आखिरकार उनमें विवेक जागृत हो गया है? उसने सोचा। तेज धार वाला चाकू उसकी गर्दन के पास था, और वृषकेतु की धड़कन अचानक रुक गई थी, क्योंकि वह चुपके से अपने हाथ में मौजूद छोटे चाकू से रस्सी काट रहा था। तथाकथित हत्यारा शायद वृषकेतु के विद्रोही गठबंधन का ही कोई सदस्य था, या शायद कोई हमदर्द सहयोगी। खैर, उसने उसे जीवनदान दिया था और उसे इसका इस्तेमाल करना ही था।
लेकिन उसे बचने का कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। अगर वह खुद को आज़ाद करके भीड़ में कूद भी जाता, तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते, और सिर कट जाना भी उसके लिए चीर-फाड़ से कहीं बेहतर लगता।
जैसे ही छुरी उसके सिर को धड़ से अलग करने के लिए ऊपर उठी, उसने अपने सामने चमक, पानी और अपने पूरे जीवन का प्रतिबिंब देखा...
और भीड़ तितर-बितर हो गई। तुरहियों की आवाज़ सुनाई दी, और फिर घोड़े दिखाई दिए। जल्लाद रुक गया, घबराया हुआ सा लग रहा था, क्योंकि तीरों की बौछार उसकी छाती पर हो रही थी, और वह गिर पड़ा।
काले नकाबपोश व्यक्तियों के साथ और भी घोड़े प्रकट हुए, जिन्होंने पहरेदारों को मार डाला और भीड़ में अफरा-तफरी मचा दी। जो लोग पीछे हट गए और विद्रोह करने लगे, उन पर आग के तीर चलाए गए।
मौका देखकर वृषकेतु ने कमजोर रस्सी के कुंडे को तोड़ दिया और अपना सिर खंभे से बाहर खींच लिया।
सभी मंत्रियों, सहयोगी राजाओं और रानियों ने अपने रक्षकों को आगे भेजकर जवाब दिया, जबकि वृषकेतु की अलगाववादी सेना ने जवाबी हमला किया। वृषकेतु मुस्कुराया। वे किसी न किसी तरह चुपके से अंदर घुस आए होंगे और वृषकेतु की मदद करने का तरीका ढूंढ लिया होगा।
वह कूदकर जमीन पर लोटने लगा और पास में पड़े ब्लेड को पकड़ लिया।

जब आसपास के लोग अफरा-तफरी में भागने लगे, तभी राज्य का एक सिपाही प्रकट हुआ। वहां खूब धक्का-मुक्की और हाथापाई हुई।
वृषकेतु ने अपनी ओर आती तलवार को रोक दिया और सैनिक के सीने पर वार किया, लेकिन सैनिक ने मानो कुछ हुआ ही न हो। वृषकेतु ने तलवार वापस खींच ली, लेकिन तब तक सैनिक ने उसके हाथ-पैर पकड़ लिए थे और उन पर हमला कर दिया, जिससे उसे खरोंचें आ गईं।
वृषकेतु दर्द से कराह उठा, जब सैनिक के सीने पर तीरों की बौछार हुई और वह गिर पड़ा। वृषकेतु लंगड़ाते हुए उठा, फिर उसने ऊपर देखा कि तीरंदाज कौन है, और उसने अपने एक और रक्षक को घोड़े पर सवार देखा, जिसने उसकी मदद के लिए अपना हाथ बढ़ाया था।
वृषकेतु ऊपर चढ़ गया, और वह व्यक्ति तबाही और विपत्ति के बीच से होकर गुजरा, पीछे मलबा और लाशें छोड़ता हुआ। वे शहर की टेढ़ी-मेढ़ी और घुमावदार सड़कों से होते हुए उस द्वार तक पहुँचे, जिसे द्वारपाल बंद कर रहे थे।
लेकिन घोड़ा इतनी तेज़ी से भागा कि द्वारपाल खुद ही भ्रमित हो गए।
वृषकेतु ने उस व्यक्ति को कसकर पकड़ लिया, उसका दिमाग उससे पूछना चाहता था कि वह अलगाववादी सेना से कौन है।
और जब वह राज्य से कई गज दूर पहुंचा, तो घोड़ा रुक गया।
वृषकेतु घोड़े से उतरे और ऊपर उस व्यक्ति की ओर, अपने उद्धारकर्ता की ओर देखा।
“भागो!” उस व्यक्ति ने कहा। “पूरब की ओर। तुम्हारे दल के बाकी सदस्य वहाँ तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।”
"आप कौन हैं?"
वह आंखें देख सकता था। और वे जानी-पहचानी थीं। उस व्यक्ति ने जो लबादा पहना था वह ढीला और बेमेल था।
“भागो।” जानी-पहचानी आवाज फिर सुनाई दी।
और हवा चली, जिससे फन खुल गया और उसके रक्षक का चेहरा प्रकट हो गया।
लेकिन दुर्भाग्य से, वृषकेतु उसे देख नहीं सका, क्योंकि वह आकृति अंधेरे में गायब हो गई और एक बिंदु की तरह धुंधली हो गई।
काश उसे पता होता कि जिस चेहरे और आवाज ने उसे बचाया था, वह कोई और नहीं बल्कि उसकी अपनी माँ थी।

12

सत्यसेना को पता था कि वह पहले ही देर हो चुका है।
जब तक वह वृषकेतु की सहायता के लिए पहुंचा, तब तक उसे अपनी अलगाववादी सेना से मदद मिल चुकी थी, जिन्होंने अपने नेता के लिए प्राणों की आहुति दे दी थी। सत्यसेना ने सोचा, यह विद्रोहियों के एक समूह का निस्वार्थ कार्य था!
समय पर न पहुँचने का उसे अफसोस था, हालाँकि उसकी मजबूरी का एक विशेष कारण था। वह अपने प्रेमी की बाहों में ही कमरे में देर तक सो गया था। जब तक वह तैयार होकर निकलने ही वाला था, तब तक उसे खबर मिली कि जल्लाद तैयार है और फिर दंगे भड़क उठे।
सत्यसेना जानता था कि शायद अष्टार खुश होगा। भले ही यह काम उसने नहीं किया था।
कुछ हद तक अपराधबोध से मुक्त होकर वह अपनी प्रेमिका के पास लौट गया, जो एक व्यापारी के घर में रहती थी। पर व्यापारी कभी घर पर नहीं रहता था और न ही उसे अपनी पत्नी की परवाह थी। वह जानता था कि रोमा का सत्यसेना के साथ नाजायज संबंध है, पर राजा का पुत्र होने के कारण वह कुछ कर नहीं सकता था, वरना उसका व्यापार प्रभावित हो जाता। लेकिन सत्यसेना बंधा हुआ था, क्योंकि रोमा विवाहित थी। और अगर वह अलग भी हो जाती, तो भी वह उसके साथ नहीं रह सकती थी। समाज की नजर में इसे गैरकानूनी और अन्यायपूर्ण माना जाता।
सत्यसेना ने उसके साथ एक और दिन बिताया, वे दोनों नग्न अवस्था में लेटे रहे, खिड़की से आती धूप को देखते रहे, जो उनके काँच जैसे शरीर पर पड़ रही थी। वह उससे उम्र में बड़ी थी, लेकिन वे एक ही व्यक्ति की तरह जुड़े हुए थे।
"आप क्या सोच रहे हैं?"
"हो सकता है मैंने कुछ गलत किया हो।"

"क्या?"
रोमा बेहद खूबसूरत लग रही थी। वह इस देश की नहीं थी, और सांवली, अनोखी सुंदरता वाली थी। सत्यसेना के लिए वह एक रहस्य थी, और वह जानता था कि जैसे- जैसे वह उसके बारे में और अधिक जानेगा, उसका आकर्षण कम होता जाएगा। इसलिए उन्होंने शब्दों को एक टोकरी में डाल दिया, और अपने शरीर को ही बोलने दिया। "हो सकता है मैंने किसी को मार डाला हो।"
“तुम एक राजकुमार हो। तुम बहुत से लोगों को मारते हो और बच निकलते हो। क्या यह संतोषजनक नहीं है?”
लेकिन मुझे डर लग रहा है।
"जिनमें से?"
पश्चाताप न करने का, दंड न मिलने का।
"आप किसके बारे में बात कर रहे हैं?"
“सूर्य की परिषद,” उसने कहा। “उन्होंने मुझे पश्चाताप के तौर पर एक काम सौंपा था, लेकिन मैं असफल रहा क्योंकि हम नशे में थे और रात भर के प्रेम प्रसंग के बाद देर तक सोए रहे। मुझे एक काम पूरा करना था, और मैं उसमें नाकाम रहा।”
"वे तो बस एक मामूली परिषद हैं, मेरी जान।"
सत्यसेना ने मुड़कर उसका मुंह पकड़ लिया और उसकी ठुड्डी को कसकर पकड़ लिया। “नहीं, वे नहीं हैं।” उसके शब्दों में ज़हर था। “उन्होंने मुझे तब बचाया जब मैं मर सकता था। उन्होंने मुझे बचपन में संभाला। अगर वे न होते तो मैं आज तुम्हारे साथ नहीं होता।”
“ठीक है, मैं समझ गई।” वह थोड़ी सी डरी हुई सी पीछे हट गई।
सत्यसेना ने उल्लेखनीय निराशा के साथ कहा, "मास्टर अष्टार एक सख्त, सरल व्यक्ति हैं, लेकिन वे सिद्धांतों वाले व्यक्ति हैं और मैं उनके आदेशों का पालन करता रहा हूं।"
"मुझे उम्मीद है कि तुम उसके बगल में ही मरोगे, क्योंकि मैं सो रहा हूँ।" उसने उसकी ओर पीठ फेर ली और आँखें बंद कर लीं। सत्यसेना उसे देखता रहा और उसे एहसास हुआ कि वह उसके प्रति थोड़ा असभ्य व्यवहार कर रहा था, इसलिए उसने उसे पीछे से गले लगा लिया। "सूर्य की परिषद के बारे में मैं काफी भावुक हो जाता हूँ।"
वह रुक गई। हिचकिचा रही थी।

"मुझे बताओ क्या?"
“उनकी वजह से हम शादी नहीं कर सकते,” उसने कहा। “उनकी वजह से मैं अपने बेवकूफ पति को छोड़ नहीं सकती।”
सत्यसेना ने अपने जबड़े भींच लिए। ये बुनियादी नियम सूर्य परिषद द्वारा निर्धारित किए गए थे। विच्छेदित महिलाओं या विधवाओं को पुनर्विवाह करने की अनुमति नहीं थी, बल्कि उन्हें निर्वासन में भेज दिया जाता था या इससे भी बदतर... यदि उनके पति की मृत्यु हो गई हो तो उन्हें मृत्युदंड दिया जाता था।
मैंने इस बारे में मास्टर अष्टार से बात की है, लेकिन वे अड़े हुए हैं। उम्मीद है, मैं उनका मन बदल पाऊंगा और हम वही करेंगे जो हमें अंततः करना है। इसलिए चिंता मत करो।
“ठीक है। और भी नियम हैं, ऐसे नियम जिन पर राजकुमार होने के नाते आपका ध्यान नहीं जाता। सूर्य की परिषद काफी अव्यवस्थित हो सकती है, हालांकि मैं आपको बचाने के लिए उनका आभारी हूं।”
सत्यसेना ने उसे कसकर गले लगा लिया। “मुझे पूरा यकीन है, जब तक तुम्हारे जैसे लोग उनके बारे में बोलते रहेंगे, विद्रोह करते रहेंगे, तब तक सब ठीक रहेगा।”
और वे दोनों शांति से सो गए।

अष्टर दिखने में कोई खास आकर्षक नहीं था, लेकिन वह हमेशा से कुबड़ा नहीं था... एक समय की बात है, हमले से पहले, खून-खराबे से पहले, और उस पिंजरे से पहले जहाँ उसे बांधकर और मुंह बंद करके जंगली जानवर की तरह बिना भोजन के रखा गया था, जहाँ उसकी पीठ की हालत और खराब हो गई और वह अपने ही एक भयानक रूप में बदल गया। तब से, उसने सूर्य के प्रकाश में जीने के तरीके को अपना लिया। वह अपने रूप-रंग के प्रति बिल्कुल बेपरवाह हो गया था, अपने अंदर के उस राक्षस को वह अब और नहीं भूलता था।

जब उसने अपनी परछाई और अपना शरीर देखा, तो वह वास्तव में अपनी अस्वस्थता देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसकी आँखें सिकुड़ती जा रही थीं और परछाइयाँ उसके सामने नाच रही थीं, जबकि आग उसके सामने सुलगती जा रही थी।
“वह ऐसा नहीं कर सका, गुरुजी,” उसके बगल में बैठे एक पुजारी ने कहा।
“जी हां। कारण क्या था?”
"यह वही महिला है।"
अष्टार ठंडी दीवार के सामने खड़ा था, लोहे की मशाल से सटा हुआ। आखिरकार, यह उसका कमरा था, और यह एक खाली कमरा था, जिसमें किसी भी प्रकार का भौतिक सुख नहीं था।
“तो फिर उसे किसने बचाया?” उसने पूछा।
"संभवतः वह अलगाववादी विद्रोहियों में से एक है।"
“कितने लोग पकड़े गए हैं?”
"उनमें से कुछ की मौत हो गई और जो पकड़े गए उन्हें आपके निर्देशों के अनुसार यहां लाया गया है।"
क्या रानी ने आपत्ति जताई?
“हां। उसने किया। वे गद्दार थे और वे मरने के लायक थे।”
अष्टर मुस्कुराया और खड़ा हो गया, मानो परछाई उस निर्जन कमरे से बाहर निकल गई हो। वह पुजारी के साथ-साथ छोटे से कक्ष से बाहर निकला और धार्मिक स्थल के मुख्य केंद्र की ओर गया, जहाँ एक देवी का मंदिर था। वह नीचे झुका और तीनों अलगाववादी विद्रोहियों को देखा, जो बुरी तरह घायल थे, उनके हाथ-पैर ज़ख्मी थे और आँखें थकी हुई और भयभीत थीं। उन्हें न तो बांधा गया था और न ही उनके मुंह पर पट्टी बांधी गई थी, क्योंकि शहर के सैनिक उनकी सुरक्षा कर रहे थे।
“मेरे बच्चों, तुम यहाँ आज़ाद हो। एक समय तुम समुद्री डाकू और अपराधी थे, और अब तुम इस धरती के बच्चे और ईश्वर के बच्चे बनोगे,” अष्टार ने कहा। “यहाँ तुम्हें दूसरा मौका दिया जा रहा है। मैंने तुम्हारी रानी से विनती की है कि मुझे तुम्हें मारने के बजाय तुम्हारा पुनर्वास करने की अनुमति दें। तुमने राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया, लेकिन कोई बात नहीं, जब तक तुम अपने ईश्वर के विरुद्ध नहीं जाते। सूर्यदेव की किरणें हमारे ऊपर हैं, उनका सम्मान करो और तुम मुक्त हो जाओगे।”

तीनों विद्रोही तुरंत रोते हुए उसके पैर छूने के लिए दौड़ पड़े। अष्टार जैसे उदार व्यक्ति ने उन्हें मौत के मुंह से बचा लिया था।
“हालांकि, एक दीक्षा संस्कार करना होगा। कुछ ऐसा जो हमारे देवता आपसे चाहते हैं।”
तीनों विद्रोही आदेश की प्रतीक्षा में उत्सुकता से ऊपर देखने लगे। “अच्छा,” अष्टर ने कहा। “चिंता मत करो, तुम भगवान सूर्य की आज्ञा का पालन कर रहे हो।”

सत्यसेना गहरी नींद में सो रहा था, वह आजकल खुश था इसलिए उसे बुरे सपने नहीं आ रहे थे। वह रोमा और खुद का एक आदर्श सपना देख रहा था, जिसमें वे साथ खेतों में दौड़ रहे थे, एक-दूसरे को चूम रहे थे, अपने बच्चों को गोद में लिए हुए थे, एक प्यार भरा परिवार। वह रोमा के लिए बहुत कुछ करने को तैयार था। वह किसी न किसी तरह परिषद को मना ही लेता।
उसका चेहरा घूम गया, और उसे अपने चारों ओर कुछ चिपचिपा, कुछ गीला सा महसूस हुआ। आँखें बंद किए हुए ही उसने अपनी उंगलियों से बिस्तर की चादर पर हाथ फेरना शुरू किया, और उसे रोमा का शरीर मिला, जो पूरी तरह से काला और गीला था, मानो खून से लथपथ कोई तालाब हो। उसकी आँखें खुलीं, और उसका शरीर सदमे से भर उठा, जब उसने देखा कि रोमा को सीने पर कई बार चाकू से वार किया गया था, और उसका गला भी कटा हुआ था।
और खून।
यह हर जगह था।
उसके हाथ में एक चाकू था, एक ऐसा चाकू जो उसने पहले कभी नहीं देखा था।
उसका नंगा शरीर खून से लथपथ था।
और उसके सामने, दीवार पर, रोमा लोगों के खून से, यह स्पष्ट और दृढ़ विश्वास के साथ लिखा हुआ था:
यह तुमने किया।

13

वृकोदरा उस उल्लू को देखता रहा जो उसे देख रहा था, जबकि एक मरते हुए राज्य की राख अपनी अंतिम सांस ले रही थी।
वह हाथ में गदा लिए, युद्ध में लहूलुहान खड़ा था, जबकि उसका कवच दलदली पानी और अपने शिकारों के खून से भीगा हुआ था। उसने अपने चारों ओर नज़र घुमाई और सैनिकों और पीड़ितों की लाशों का वीरान मैदान देखा।
वह दशारण के राज्य पर विजय प्राप्त करने में सक्षम था और वह अपने सामने बंधे और मुंह पर पट्टी बांधे हुए मंत्रियों, सरदारों और नगर रक्षकों को देख रहा था, जब वह युधिष्ठिर के राज्य का झंडा फहराने के बारे में सोच रहा था।
पिछली घटना के बाद से उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी, क्योंकि उसके भाई ने उसके डर और कमजोरी का फायदा उठाया था। उसे उस सदमे का अकेले सामना करना पड़ा, जब तक आग बुझ नहीं गई और वह एक बच्चे की तरह सिसकते हुए, उस धरती से लिपटा रहा, जिसे वह बहुत प्यार करता था।
उसके आदमी किले के चारों ओर तैनात थे, उन्होंने खुद को सत्ता हथियाने वालों के रूप में स्थापित कर लिया था, युधिष्ठिर की सेना के आने और वहां अपना ठिकाना बनाने की प्रतीक्षा कर रहे थे, संभवतः यहां एक क्षत्रप नियुक्त करने की भी।
लेकिन उससे पहले उसे एक काम पूरा करना था।
“तुम्हारा राजा कहाँ है?” उसने पूछा।
उनमें से किसी ने कुछ नहीं कहा। और वृकोदरा बिना जवाब दिए जाने वाला नहीं था। उसका गिद्ध ऊपर आकाश में चक्कर लगा रहा था, और उसने सीटी बजाई, जिससे गिद्ध ने झपट्टा मारा और एक आदमी का कान नोंच डाला। वह आदमी चीखता हुआ खून से लथपथ जमीन पर गिर पड़ा।
“अगला नंबर किसी और का होगा। तुम्हारा राजा कहाँ है?” उसने फिर पूछा। “यह आसान होगा।”

उसे या तो राजा को मारना था या उसे अपने अधीन करना था। वह महल में घुस गया था और उसने सीढ़ियाँ, दीवारें और छतें तोड़ दी थीं। लेकिन किसी राज्य को पंगु बनाने के लिए राजा की हत्या करना आवश्यक होता है।
तब भी किसी ने जवाब नहीं दिया।
उसने अपना गदा आगे बढ़ाया, शहर के एक रईस को पकड़ लिया और उसके सिर पर वार करने ही वाला था कि तभी उसने सुना...
तुम एक जाहिल हो!
यह बात एक महिला ने कही थी।
"तुम क्रूर और घिनौने हो और तुम सबसे बुरी मौत के हकदार हो।"
वृकोदरा कुछ देर के लिए रुक गया, मानो उन शब्दों से उसे पीड़ा होने लगी हो।
"तुम अपने उस घिनौने भाई की बात सुनने के अलावा कुछ नहीं करते, जिसे वह भयानक मौत मिलेगी जिसका वह हकदार है।"
“एक सच्ची स्त्री की तरह बोल रही हो।” वृकोदरा ने अपने हाथ में पकड़े हुए आदमी को उछाला, स्त्री के पास पहुँचा और उसकी गर्दन पकड़ ली। उसके हाथ पीछे थे, और वह चीखने के अलावा कुछ नहीं कर सकी। “तुम्हारे अंदर लड़ने का जज़्बा है। मुझे यह पसंद है। तुम मेरी सेना के लिए उपयोगी हो सकती हो।” "क्यों?"
"अगर आप सत्ता में बैठे लोगों को अपमानित कर सकते हैं, तो आप किसी को भी अपमानित कर सकते हैं।"
और उसने सीटी बजाकर गिद्ध को इशारा किया, जो नीचे आया और तुरंत दूसरे आदमी की आँखों पर झपटा। महिला सदमे से चीख पड़ी।
फिर उसने उस महिला को अपने पहरेदारों की ओर धकेल दिया, जो उसे वहाँ से घसीटकर ले गए, “इसे कैद करो, इसे हमारी तरह अच्छा खाना-कपड़ा दो। मैं इसे योद्धा बनने का प्रशिक्षण देने जा रहा हूँ।”
वृकोदरा मैदान में इधर-उधर घूम रहा था, तभी उसने अपने दाहिने हाथ के सेनापति को नुकीली दाढ़ी और विषैली आँखों, गोरी त्वचा और करीने से तेल लगे काले बालों के साथ एक तलवार पकड़े हुए प्रकट होते देखा।
“अब आपको इनसे परेशान होने की जरूरत नहीं है। मुझे पता है राजा कहां है, मुखिया। मेरे पीछे आइए,” पुक्कूसाती ने किले की पूरी तलाशी लेने के बाद लौटते हुए कहा।

वृकोदरा ने बस सिर हिलाया और अपने अंगरक्षकों को इशारा किया। धनुष उठाए गए और सभी मंत्रियों, सरदारों और जनता की ओर तीर चलाए गए। वृकोदरा पुक्कुसती के पीछे-पीछे चल रहे थे, जो उनसे काफी छोटे और कद में छोटे थे। उन्हें लगभग बौना कहा जा सकता था। वृकोदरा उनसे बहुत समय पहले, अपने कई विजय अभियानों में से एक के दौरान मिले थे, और वे उनके लिए उपयोगी साबित हुए थे क्योंकि उनमें वह गुण था जो दूसरों में नहीं था: दृढ़ निश्चय। "खैर, यह तो मजेदार बात है कि तुम्हारे भाई ने तुम्हें यहाँ भेजा है।"
वे सीढ़ियों से ऊपर चढ़ रहे थे और एक विशाल लोहे के टावर की ओर बढ़ रहे थे, जो आकाश के हृदय तक जाता था। उनके सैनिक हर कोने पर तैनात थे और वे सभी वृकोदरा को प्रणाम कर रहे थे।
"इसमें मज़ाक क्या है?" उसने रूखे स्वर में पूछा।
"क्योंकि ऐसा लगता है जैसे वह तुम्हें किसी मूर्खतापूर्ण काम के लिए भेज रहा हो।"
वृकोदरा ने आंखें घुमाईं। मन ही मन सोचा, "अब तो पता चला तुमने अपने अध्ययन कक्ष में क्या-क्या खोजा?"
“कुछ खास नहीं। किताबों से पता चलता है कि खजाना कर्ज में डूबा हुआ है, फसलें खराब हुई हैं, और इन इलाकों में अपराधियों के अलावा कुछ भी खास नहीं है। अगर आप एक घंटे के लिए भी यहां से बाहर निकलें, तो आपको डाकू इधर-उधर लूटपाट करते नज़र आएंगे। दशहरा बहुत बुरी हालत में था, और आपने एक तरह से उन्हें मौत के मुंह से बचा लिया।”
"मेरा भाई मुझे इतनी भयानक जगह पर क्यों भेजेगा?"
“तुम्हें पता होना चाहिए, वह तुम्हारा भाई है। क्या वह ऐसा इसलिए कर रहा है क्योंकि इससे साम्राज्य को कोई रणनीतिक लाभ है या तुम्हें लगता है कि वह चाहता है कि तुम अपनी ताकत का प्रदर्शन करने में व्यस्त रहो जबकि वह बेहतर राज्य पर कब्जा करने की सर्वोच्च उपलब्धि हासिल कर ले?”
युधिष्ठिर योद्धा नहीं हैं।
"लेकिन मैंने सुना है कि वह युद्ध की तैयारी कर रहा है।"
मैं उसका सेनापति हूँ।
“और फिर भी तुम यहाँ गंदगी बीन रहे हो। तुममें और उन डाकुओं में कोई खास फर्क नहीं है।” वह हँस पड़ा।

वे लोग ऊपर की ओर चक्कर लगाते हुए चढ़ गए, और वृकोदरा, एक सम्मानित छात्र की तरह, पुक्कासती की बातों को ध्यान से सुन रहा था, जो एक गुरु की तरह लगन से बोल रही थी।
“आपको उन जमीनों को लूटना चाहिए जो राजशाही के लिए मूल्यवान हों। ऐसा कुछ जो मददगार साबित हो।”
"मैं देख सकता हूँ कि तुम अंगा की ओर इशारा कर रहे हो।"
“क्यों नहीं?” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “उसके पास खूब पैसा है, कोई कर्ज नहीं है और सबसे अच्छी बात—लकड़ी का भंडार है। उससे जहाज बनाकर पड़ोसी द्वीपों पर हमला किया जा सकता है। उस राज्य के हाथ में बहुत शक्ति है। साथ ही, अपने भाई को भी नाराज़ किया जा सकता है। ये तो बस एक अतिरिक्त फायदा है।” वह हँस पड़ा।
“क्या हम पहुँच गए हैं?”
पुक्कासती ने सिर हिलाया, तभी वृकोदरा ने सांस लेने के लिए थोड़ी देर रुककर एक दरवाजा देखा और वहां एक पहरेदार को मृत पाया। पुक्कासती ने दरवाजा खोला और वृकोदरा ने कमरे में एक पालना देखा, जिसमें दासियां और बच्चा दोनों मृत पड़े थे।
“राजा कहाँ है?”
"यह बच्चा है।"
वृकोदरा के शरीर में एक सिहरन दौड़ गई।
"नहीं।"
“हाँ।” उसने सिर हिलाया। “उसके पिता की पेचिश से असमय मृत्यु हो गई थी और बच्चे की एक निश्चित उम्र तक देखभाल की जानी थी, उसके बाद उसका राज्याभिषेक होना था। लेकिन लगता है, उसकी देखभाल करने वाली नर्सों ने उसे ज़हर दे दिया, ताकि हम जैसे लोग उसे पकड़ न सकें।”
मैं कभी किसी बच्चे को नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा।
पुक्कासती ने कहा, “मुझे पता है। फिर भी ऐसा हुआ है। क्या तुम्हारे भाई ने तुम्हें यह नहीं बताया था कि इस राज्य पर बाल राजा का शासन है? अगर ऐसा होता तो हम कभी हमला नहीं करते।”
उसने मुझे धोखा दिया।
उसने मेरा इस्तेमाल किया।
वृकोदरा ने निराशा और विश्वासघात का अनुभव करते हुए माथे पर शिकन डाली।

“बच्चे का विधिवत अंतिम संस्कार करो।” यह कहते हुए उसने सिर हिलाया और गुस्से में बाहर निकल गया।
"आप कहां जा रहे हैं?"
अपने भाई से मिलने के लिए।

14

वह छुपकर चली।
वह बहुत से लोगों के लिए बहुत मायने रखती थी। लेकिन रात के अंधेरे में, चमकते चाँद और तारों की रोशनी में, जो उस भयावह आकाश में जगमगा रहे थे, वह अपने शब्दों को अपने सीने से लगाए बैठी रही। बगीचे में रैकून घूम रहे थे और तेज़ हवा में पत्ते फड़फड़ा रहे थे।
शनाया का रहस्य एक ऐसी बात थी जिसे उसने अपने तक ही सीमित रखा था, क्योंकि वह एक अनजान देश में थी, ऐसे अजनबियों के बीच जो उसे समझ नहीं पाते थे। हालाँकि वह ग्रीक दुनिया की कठोर परिस्थितियों से भागकर आई थी, भरतवर्ष ने उसके और उसके पिता तथा अन्य आयोनियनों के प्रति दयालुता दिखाई थी। लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि उसने खुद को भी पीछे छोड़ दिया था। वहाँ एक विशाल झाड़ीदार भूलभुलैया थी जिससे होकर वह गुजरी, उसके हाथों में एक मोमबत्ती नाच रही थी, जिसकी रोशनी उसके चेहरे पर टिमटिमा रही थी, क्योंकि वह अपने कढ़ाईदार कपड़े के हुड के नीचे छिपी हुई थी।
दूर से देखने पर झाड़ियों से बना यह भूलभुलैया बागवानों और पौधपालकों की अद्भुत रचना प्रतीत होता था। लेकिन इसके भीतर सच्चाई और छिपा हुआ रूप था। वह भूलभुलैया में अपना रास्ता जानती थी, झाड़ियों के बीच से होते हुए वह बीच में जाकर उस चीज़ को ढूंढने लगी जिसके लिए वह आई थी।
गरज के देवता, संरक्षक देवता ज़्यूस की एक मूर्ति।
वह घुटनों के बल बैठ गई और प्रार्थना करने लगी। सूर्य की पूजा करने वाले राज्य के लिए, वह किसी दूसरे देवता की पूजा कर रही थी, और परिषद की नज़र में इसे ईशनिंदा माना जाता था। यहाँ धर्म की स्वतंत्रता को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं किया जाता था।
प्रार्थना करते हुए वह सोच रही थी कि अलगाववादी सेना के तीनों विद्रोहियों को अष्टार ने क्यों पकड़ा था। उसे उस कुबड़े से कभी अच्छा महसूस नहीं हुआ। वह उस पर ताने मारता, हँसता, बनावटी मुस्कान दिखाता और

हँसता था, लेकिन उसके बारे में कुछ ऐसा था जो उसे बेचैन कर देता था, जिसे वह ठीक से समझ नहीं पा रही थी।
“मैंने रानी के रूप में अपने कर्तव्यों का उल्लंघन किया और माँ बन गई,” उसने अपनी आदर्श से कहा। “इसके लिए मुझे कोई पछतावा या अपराधबोध नहीं है। एक महिला के लिए सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह माँ हो, इससे पहले कि वह कुछ और हो।”
उसने फुसफुसाते हुए खुद को सही ठहराया, तभी उसे अपने पीछे सरसराहट सुनाई दी। उसे समझ नहीं आया कि यह क्या था, और वह अपनी प्रार्थना जारी रखती रही। उसकी आँखें बंद थीं...
तभी एक और सरसराहट सुनाई दी।
वह चुपचाप इंतजार करती रही।
उसने एक शब्द भी नहीं कहा, और फिर अचानक झाड़ियों से एक आदमी तलवार हाथ में लिए हुए प्रकट हुआ, जो उस पर हमला करने के लिए तैयार था।
वह हिली, अपने पिता की म्यान से कटार निकाली और बड़ी सटीकता से हत्यारे की गर्दन पर वार किया। वह तड़पते हुए शव के पास गई और चाकू निकाल लिया। जैसे ही उसने शव का चेहरा खोलकर उसकी पहचान उजागर करने की कोशिश शुरू की... और भी हत्यारे प्रकट हुए।
उसे पता था कि उसके पास पर्याप्त हथियार नहीं हैं, इसलिए उसने हमले से बचते हुए ज़मीन पर लुढ़ककर तेज़ी से झाड़ियों में छुप गई। फिर उसने तेज़ी से मुड़कर भूलभुलैया के दूसरी तरफ पहुँच गई, उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं। उसने एक सीटी सुनी और समझ गई कि हत्यारे आपस में संवाद करने के लिए सीटी बजा रहे हैं। उसने गहरी साँस ली, झाड़ी का सहारा लिया और शांत रही, खून से सना खंजर उसकी छाती पर टिका हुआ था।
पहले कर्ण के पिता अधिरथ, और अब मैं।
कोई अंगा के शाही परिवार के खिलाफ हत्या की साजिश रच रहा है।
लेकिन कौन?
क्यों?
वह जानती थी कि देश भर में उसके दुश्मन हैं, लेकिन इतने सारे हत्यारे, राज्य के आसपास, उसके महल के चारों ओर...
यह तो पक्का अंदरूनी मामला है।

वृषकेतु तो हो ही नहीं सकता। उसे तो राज्य से निकाल दिया गया था। कोई और मंत्री, रईस या फिर कोई व्यापारी भी हो सकता है। कर बहुत भारी थे। उन्होंने पहरेदारों को रिश्वत दी होगी, तभी तो हत्यारों को अंदर आने दिया गया। लेकिन फिर कोई ऐसा व्यक्ति भी हो जिसकी पहुंच महारोगों तक हो...
वह अपनी पीठ उसकी ओर किए हुए, उसे ढूंढ रहे एक हत्यारे के पास गई और उसकी गर्दन पकड़कर उसे काट डाला, जिससे खून उसके शरीर पर भी फैल गया। जब उसने उसका चेहरा देखा, तो उसे उम्मीद थी कि वह कोई महारोगा होगा...
उसने एक आदमी को देखा। एक साधारण सा आदमी। बस एक पहरेदार।
तो महारोग उसे मारने के लिए यहाँ नहीं आए हैं। ज़ाहिर है, वे ऐसा कर भी नहीं सकते। अगर वे राज्य में मौजूद भी हैं, तो हर कोई उनकी मौजूदगी के बारे में जान जाएगा।
जैसे ही वह तेजी से दूसरी तरफ बढ़ी, उसका हाथ पकड़ लिया गया और एक तीर उसके बालों के पास से निकल गया, लेकिन उसे झाड़ियों में खींच लिया गया और वह दूसरे हत्यारे से बच निकलने में कामयाब रही, और अपने मजबूत, ऊंचे गालों वाले, लंबे बालों वाले पति के पास पहुंच गई, जिसकी आंखें जैतून जैसी और नाक किसी देवता जैसी थी।
“वासु,” उसने आह भरी। “तुम वापस आ गए।”
"शांत।"
कर्ण ने उसका हाथ पकड़ा और उसे बाहर निकलने के रास्ते की ओर ले गया। वह दबे पांव, बिल्ली की तरह फुर्ती से उसके पीछे-पीछे चली। जब वे बाहर निकले, तो वहाँ एक हत्यारा खड़ा था। कर्ण ने अपने धनुष-बाण से उसके सिर में तीर मारा और फिर बाहर निकल गया। अचानक एक दूसरे हत्यारे ने शनाया को पकड़ लिया और ज़मीन पर पटक दिया।
कर्ण ने अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल करते हुए धनुष से उस आदमी को नीचे गिरा दिया और उसका सिर फोड़ दिया। फिर उसने शनाया को पकड़कर उठा लिया। "आप कैसे हैं?"
उसने उसके पेट को छुआ।
"मैं ठीक हूँ।"
वह उसे धीरे-धीरे उठाकर झाड़ियों के भूलभुलैया से दूर ले गया। "क्या हो रहा है?" उसने पूछा।

शनाया उसकी आँखों में कंपन महसूस कर सकती थी। "मुझे नहीं पता। लेकिन कोई हम पर हमले का आदेश दे रहा है।"
“मेरे पिता?”
उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। "तुम्हें पता है?"
“चोरों के एक गिरोह से, हाँ। मैं गुप्त पहचान के साथ शहर में घूमता रहा, इसलिए बहुत कम लोगों को पता चला कि मैं लौट आया हूँ। तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?” उसकी आवाज़ में दर्द था।
मुझे माफ करना। मैं ऐसा करना चाहता था, लेकिन तुम सुयोधन के साथ थे। मैं नहीं चाहता था कि तुम्हारा ध्यान भटके।
“और वृषकेतु भाग गया।”
"हाँ।"
“और तुम्हारे पीछे हत्यारे लगे हुए हैं,” कर्ण ने सिर हिलाते हुए कहा। “अष्टार ने मुझे सब कुछ बता दिया है।”
वह सांप।
वे मुख्य द्वार पर पहुँचे, तभी महल के सैनिकों ने उसे देखा और तुरंत उसकी मदद के लिए दौड़ पड़े। कर्ण ने आखिरी बार कुछ ऐसा कहा, जिससे उसे उस गिरने से भी ज्यादा दर्द हुआ जो उसने अभी-अभी झेला था।
“तुम्हारे बारे में मेरी सोच गलत थी,” उसने कहा। “तुम अब इस राज्य पर शासन नहीं कर सकते। तुम अब उसके राज्य पर शासन करने के योग्य नहीं हो।”

15

वृषकेतु भ्रमों और सपनों के एक उन्मादी भंवर में फंसा हुआ था, वह सूअर की तरह पसीने से तरबतर होकर जागा।
वह घने जंगल में, झाड़ियों और पत्तों के बीच था। कुछ तंबू लगे हुए थे और रात में आग जल रही थी। उसके पैर में ज़ख्म था, जिससे उसे दर्द हो रहा था और वह लंगड़ाकर चल रहा था। झील के पास पहुँचते ही उसने अपने ज़ख्मों पर लगी पट्टी खोली और पानी पर टिमटिमाती चाँदनी को निहारा। उसकी इच्छा थी कि वह किसी शांत जगह पर हो। उसकी इच्छा थी कि वह कहीं और हो।
एक चीज़ थी जो वह हमेशा से करना चाहता था। वह मवेशी पालक बनना चाहता था। ईश्वर के प्रिय पशुओं की देखभाल करना चाहता था। वह एक खेत का मालिक बनना चाहता था और अपने बैलगाड़ियों से पास के गाँव जाना चाहता था। वह कभी भी खर्चीली, दिखावटी जीवनशैली नहीं चाहता था, बल्कि एक शांत जीवन जीना चाहता था।
हमले को कुछ दिन बीत चुके थे और वे अब भी यह तय कर रहे थे कि उनका अगला कदम क्या होना चाहिए। कुछ अलगाववादी विद्रोहियों को पकड़कर जेल में डाल दिया गया, कुछ को सूर्य परिषद के हवाले कर दिया गया और कुछ को खूनी मौत का सामना करना पड़ा। उसने अपने साथ बचे हुए लोगों को फटकार लगाई कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था - उसे बचाना - लेकिन उसके विद्रोही समूह के लोग उसे नेता और भगवान की तरह मानते थे। उनका मानना था कि एक को बचाने के लिए दर्जनों को मारना बेहतर है, क्योंकि वह हजारों को प्रेरित करेगा।
वह झील के किनारे बैठा रहा, तभी उसकी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी। एक नाव दिखाई दी, जिसके आगे एक मशाल लटकी हुई थी, और मशाल की रोशनी दो खड़े व्यक्तियों पर पड़ रही थी, जबकि नाविक नाव को किनारे की ओर ले जा रहा था। वृषकेतु चौंक गया, और उसने तलवार की म्यान की ओर हाथ बढ़ाया, जिसमें कोई धार नहीं थी, और उसने तुरंत खुद को कोसा।

आगे चल रहा व्यक्ति नाव से नीचे उतरा और नाविक को कुछ सिक्के दिए, जबकि दूसरी व्यक्ति, पन्ना जैसी आंखों वाली एक लड़की, पहले वाले के पीछे-पीछे चली गई।
“तुम कौन हो?” वृषकेतु लगभग लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ, लेकिन कार्रवाई के लिए तैयार था।
उस व्यक्ति ने अपना हुड हटाया, जिससे उसका सुंदर चेहरा सामने आया, लेकिन उसमें एक कांच की आंख और चेहरे के ऊपरी दाहिने हिस्से से नीचे तक फैला एक निशान था, साथ ही लंबे बाल और तराशी हुई ठोड़ी भी थी।
“बभरु,” उसने अपने साथी से कहा, “यह तो वाकई चौंकाने वाली बात थी।”
"मुझे लगता है कि आपको मेरा कबूतर नहीं मिला है।"
"नहीं।"
“तुम्हारे आदेश देने वालों ने तुम्हारे ठिकाने की जानकारी मुझसे साझा करके बहुत अच्छा काम किया।” उसने मुस्कुराते हुए कहा, तभी वृषकेतु आगे आया और उसे गले लगा लिया।
बभ्रु, वृषकेतु और उसके अलगाववादी विद्रोहियों का एक अजीब दोस्त था। वह उनका लुटेरा, चोर, जासूस और हथियार सप्लायर भी था। उसकी मुलाकात वृषकेतु से युधिष्ठिर के सैनिकों के ज़रिए हुई थी, जब दोनों ने मदीरा का सेवन ज़्यादा कर लिया था और यहीं से उनकी दोस्ती शुरू हुई। वह खुद को स्वतंत्र मानता था और उसने पांडवों के लिए भी छोटे-मोटे काम किए थे, देश की सामंती व्यवस्थाओं से लड़ने वालों की मदद की थी, क्योंकि वह किसी भगवान, किसी संस्कृति, किसी राज्य में विश्वास नहीं करता था। उसे सिर्फ खुद पर विश्वास था।
और वही व्यक्ति था जिसने वृषकेतु से पूछा था कि क्या महारोग उस क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं।
“मेरे दादाजी की हत्या महारोगों ने की थी,” वृषकेतु ने कहा। “यह अत्यंत दुःख की बात है। यदि मुझे उनके बुरे इरादों का पता होता, तो मैं उन्हें कभी भी राज्य में गुप्त रूप से प्रवेश नहीं देता।”
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, “अरे चुप रहो, ये सब अफवाहें हैं। जो महारोग अंदर आए थे, वे शांति और एकांत चाहते थे। तुम उनसे मिले थे। तुमने उन्हें देखा था। वे एक अभागे समलैंगिक जोड़े थे, जो इसलिए भाग गए थे क्योंकि उनके धर्म में उनके प्रेम की अनुमति नहीं थी। तुम उनके चरित्र पर भरोसा कर सकते

हो, और तुम जानते हो कि मैं कभी झूठ नहीं बोलता। मुझे यकीन है कि तुम्हारे दादाजी की हत्या किसी और ने की होगी। लेकिन महारोगों ने नहीं, इस बात का भी मुझे पूरा यकीन है।”
वृषकेतु उस पर विश्वास करना चाहता था, फिर भी कुछ ऐसा था जिसके बारे में वह निश्चित नहीं था।
“उनकी प्रतिष्ठा उनसे पहले ही फैली हुई है। वे एक मिथक थे, लेकिन अब वे वास्तविकता बन गए हैं।”
“मेरे दोस्त, सभी मिथक वास्तविकता पर आधारित होते हैं। तुम्हें यह पता होना चाहिए।” वह मुस्कुराया और मुंह को हल्का सा मरोड़ा, जैसे कुछ चबा रहा हो, शायद पान के पत्ते। “मैं तुम्हारे दादाजी की मौत की जांच करूंगा और उम्मीद है कि अपराधी को ढूंढ लूंगा, लेकिन तुम कैसे हो? तुम्हें जिंदा देखकर अच्छा लगा।”
मैं ठीक हूँ। मैं अब धर्मराज के आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
“और तुम्हें इंतज़ार करना ही पड़ेगा।” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “जब से उसने अपना वो खूनी साम्राज्य चलाना शुरू किया है, तब से वो काफी व्यस्त है। तुम्हारी माँ तो तुम्हें अगवा करना चाहती थी, है ना?”
वृषकेतु ने लड़की की ओर देखते हुए सिर हिलाया।
“अरे, मेरी गलती! ये तृप्ति है, मेरी सहयोगी और सहकर्मी। आजकल मेरे पास बहुत काम है, इसलिए वो समय-समय पर मेरी मदद करती है।”
"मेरा मानना है कि कारोबार बढ़ रहा है।"
वह मुस्कुराया। "जब आप किसी चीज़ में अच्छे होते हैं, तो व्यवसाय निश्चित रूप से बढ़ता है, और यही वह कारण है जिसके लिए मैं यहां हूं।" "क्यों?"
मुझे पूरा यकीन है कि तुम अपनी मां के दिल में छुरा घोंपना चाहते हो। वृषकेतु ने आह भरी। रानी के रूप में उसने जो कुछ किया, उसके लिए उसके मन में कोई घृणा नहीं थी, लेकिन एक चुभन जरूर थी। वह चाहता था कि कुछ ऐसा हो जाए जिससे उसका अंत हो जाए और उससे हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाए। अब कोई समस्या नहीं। वह अपने पिता को भी छुरा घोंपना चाहता था। उसके माता-पिता के प्रति उसकी घृणा इतनी गहरी थी कि उसके घुटने कांपने लगते थे। वह उस समय को याद करता जब उसका जन्म हुआ था और उसके माता-पिता ने उसे लगभग चालीस रातों

और चालीस दिनों तक सिर्फ उसके रंग-रूप के कारण त्याग दिया था। गुरु केशव ने बचपन में ही उससे इस बारे में बात की थी, उसे सच्चाई बताई थी।
और जब तक आप धर्मराज की सहमति की प्रतीक्षा कर रहे हैं, मेरे पास एक प्रस्ताव है।
"यह क्या है?"
"क्या आप अक्सर सोचते हैं कि वह अंगा पर हमला क्यों नहीं करता?"
वृषकेतु ने सिर हिलाया। "क्योंकि उसे अपनी सेना को मुक्त कराने के लिए राज्य के चारों ओर के पेड़ों को काटना पड़ेगा और यही इस भूमि का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है।"
उन्होंने सिर हिलाया। “अरे नहीं, यह तो बस अफवाहें हैं। असली बात तो यह है कि जब इंद्रप्रस्थ की स्थापना हुई थी, तब यह भूमि नागों की थी, सही कहा ना?”
"हाँ, यही अफवाह है।"
"नरसंहार हुआ था, वे यही कहते हैं।"
“लोग रातोंरात गायब हो गए।” वृषकेतु ने यह सुना था।
“अब मुझे जो पता चला है, उससे यह स्पष्ट है कि तुम्हारे पिता कर्ण को इसके बारे में जानकारी थी। दरअसल, उन्होंने उन पर नज़र रखी थी। नागों को उनकी ज़मीनों से पूरी तरह मिटा दिया गया, संभवतः उनकी हत्या भी कर दी गई। हमें नहीं पता। और लोगों को परवाह भी नहीं है, क्योंकि वे हमारे लिए कुछ भी मायने नहीं रखते, है ना?” वह हँसा। “आदिवासी। बहिष्कृत। छी। हालाँकि जब उन्हें मिटाया गया, तो कहा जाता है कि धर्मराज ने उनकी मणि, उनके मंदिर को, एक तरह की विजय लूट के रूप में चुरा लिया था।”
“ठीक है?” वृषकेतु ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं, उन्हें आश्चर्य हुआ कि युधिष्ठिर जैसा महान व्यक्ति ऐसा करेगा।
“तुम्हारे पिता और तुम्हारे चाचा सुयोधन ने धर्मराज से वह मंदिर चुरा लिया था और उसे फिरौती के तौर पर इस्तेमाल किया था। धर्मराज हमला नहीं करेंगे, क्योंकि अगर उन्होंने ऐसा किया, तो तुम्हारे पिता नागों और उनके कबीले के सरदारों को सबूत के तौर पर वह मंदिर दिखा देंगे, और धर्मराज पर एक भयंकर युद्ध का खतरा मंडराएगा। इतना ही नहीं, हमें क्या पता, इतने बड़े पैमाने पर नरसंहार करने के लिए उन्हें जेल भी हो सकती है। जब तक वह

हस्तिनापुर के महाराजा नहीं बन जाते, तब तक वह सबको यह बात नहीं बता सकते, और तब तक वह चुप रहना चाहते हैं।”
"ठीक है, तो इसमें मेरी क्या भूमिका है?"
“तुम यहाँ आकर हमारे धर्मराज की मदद करोगे।” वह मुस्कुराया। “उनकी नज़रों में अच्छा बने रहो। तुम उनकी ताकत छीन लोगे। मणि ढूंढो और उसे धर्मराज को लौटा दो, फिर उन्हें अंगा पर हमला करने का पूरा अधिकार होगा। कोई रोक-टोक नहीं, जिससे अंततः तुम अभियान का नेतृत्व करोगे और अपनी माँ को मार डालोगे।”
वृषकेतु ने अपने जबड़े भींच लिए। "इसमें तुम्हारा क्या फायदा है?"
उसने मासूमियत से उसकी ओर देखा। “युद्ध से मुनाफाखोरी। अगर धर्मराज अंगा पर हमला करता है, तो सारे हथियार मैं ही मुहैया कराऊंगा। मुझे यकीन है कि उसे बहुत सारे हथियारों की ज़रूरत पड़ेगी। और दुर्भाग्य से, वही मेरा इकलौता ग्राहक है।”
"तो, बात पैसों की है?"
“हां।” उसकी आंखों में चमक आ गई।
"क्या धर्मराज को पता है कि मैं यह उनके लिए करने वाला हूँ?"
"जहां तक मेरा सवाल है, वह चाहता है कि तुम चुपचाप रहो।"
“हां, उसने मुझसे संपर्क नहीं किया है। मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता है कि क्या वह इस बात से निराश है कि मैं मूर्ख की तरह पकड़ा गया।”
“पता लगाने का सिर्फ एक ही तरीका है। उसे यह उपहार देकर मिलो, और तुम फिर से उसकी नजरों में अच्छे बन जाओगे।”
वृषकेतु ने हाथ जोड़कर फिर से उस लड़की की ओर देखा। अपनी चमकीली हरी आँखों और आकर्षक मुद्रा के साथ, वह उसे बाज की तरह देख रही थी। “आप जिस नरसंहार की बात कर रहे हैं… ये सब अफवाहें थीं। मणि, सब कुछ। तो आपको कैसे पता कि फिरौती है, मणि है, और मेरे पिता धर्मराज से चोरी कर रहे हैं?” “खैर, दुर्भाग्य से, ये अफवाहें नहीं हैं,” बभरु ने कहा। “क्योंकि मुझे पता है कि मणि चुराने वाला चोर कहाँ रहता है।”

16

वृकोदरा ने दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ना शुरू किया।
वह लंबे सींगों वाले बैल पर सवार था, उसके विशाल शरीर से एक गदा लटक रही थी, और वह धुंध भरे परिदृश्य में चल रहा था। धुंध ने उसकी दृष्टि को लगभग पूरी तरह ढक लिया था, लेकिन उसके चारों ओर सैनिक थे, जो उसे रास्ता दिखा रहे थे। वह खच्चर पर सवार बौनी पुक्कासती के साथ चल रहा था, मानो वह अपने से तिगुने आकार के वृकोदरा की छोटी परी हो।
क्या आपने अपना मन बना लिया है?
“हां।” वृकोदरा ने उत्तर दिया।
कोहरा छटा और उसने खुद को अंगा राज्य से कुछ ही मील दूर एक सूखे, सुनसान बंजर इलाके में पाया, लेकिन वहां जानवरों के बंजर शव पड़े थे, जिनके चारों ओर गिद्ध मंडरा रहे थे।
वहाँ उसे दो आदमी अपने घोड़ों के साथ उसका इंतज़ार करते मिले। वह उन्हें पहचानता नहीं था, लेकिन वह यह भी जानता था कि वे वहाँ क्यों थे।
उन्हें इस स्थान पर बुलाया गया था।
स्वयं वृकोदरा द्वारा।
“रुको।” उसने अपने सैनिकों को पुकारा, जो उसके आदेश पर रुक गए, लेकिन वह अडिग रहा और आगे बढ़ा, फिर अपने बाइसन से नीचे उतरा, उसका गदा अभी भी उसके पास था।
वह कोहरे में सिसकते हुए दोनों सैनिकों के पास आया। सैनिकों ने हाथी के कंधों पर झंडा थामे रखा, वही झंडा जिसे वृकोदरा अपने सिंहासन और अपने राजा के लिए धरती पर गाड़ता था।
“हे भगवान वृकोदरा,” दोनों सैनिकों ने झुककर कहा, “आपसे सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई।”

उसने उनकी ओर देखा, वे दुर्बल और कवचधारी थे, उनकी तलवारें उनकी छाती से सटी हुई थीं, मानो वे वृकोदरा से भयभीत हों, मानो तलवारें आसानी से उसके शरीर में भेद देंगी।
“अपने राजा को बता दो, दूतों, मैं अंगा जा रहा हूँ और वहाँ से उसका सिंहासन लेकर लौटूँगा, जिस पर मैं शासन करूँगा।”
“धर्मराज, भगवान वृकोदर, आपके इरादे को जानते हैं।”
जासूस। उसके साथियों के बीच जासूस।
उसने अपने साथियों के साथ मिलकर अंगा को पतन की योजना बनाने का फैसला किया था, लेकिन उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि कोई उसके भाई को कबूतर भेज रहा होगा।
“उसने हमें पीछे हटने को कहा है। अंगा को अकेला छोड़ देने को कहा है।” एक सैनिक ने कहा।
एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "उनका मानना है कि इसमें बहुत कूटनीति शामिल है जिसमें वे नहीं पड़ना चाहते, और फिलहाल अंगा को सुरक्षित रखना जरूरी है।" “जब उसने मुझे पूरब में अपने लिए राज्य जीतने भेजा था, तब उसने किसी खास इलाके का ज़िक्र नहीं किया था। और अब, अचानक, सबसे फ़ायदेमंद इलाका, वो इलाका जिससे राजमहल को फ़ायदा होगा—वो उसे नहीं चाहता। मैं इसे बकवास समझता हूँ। वो कुछ छुपा रहा है, और मुझे परवाह नहीं कि वो क्या है। मैं सिंहासन की सेवा करता हूँ, उस तुच्छ आदमी की नहीं जो उस पर बैठा है,” वृकोदरा ने कहा।
“इस ग्रंथ में उन्होंने राज्य के बारे में और भी निर्देश दिए हैं,” दूत ने इसे बाहर निकालते हुए कहा।
वृकोदरा ने उस ग्रंथ को देखा लेकिन उसे छुआ नहीं। “मैं केवल अपने आदेश पर अंगा को अपने अधीन लूंगा और वह हस्तिनापुर के नहीं बल्कि इंद्रप्रस्थ के शासन के अधीन होगा।”
“हे भगवान वृकोदरा, आपको यह समझना होगा कि हमारे पास धर्मराज को इसकी सूचना देने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।”
मुझे पता है। और मैं ऐसा नहीं चाहता। क्योंकि वह मुझे रोकने के लिए सेनाएं वापस भेज देगा।
उसने एक दूत को पकड़कर उसकी गर्दन तोड़ दी। वह दूसरे दूत को पकड़ने गया, जो उसकी पकड़ से बच निकला, लेकिन उसने अपने गदा से उसकी पीठ तोड़ दी, जिससे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

“[illegible]”

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

17

जब भी सत्यसेना का मन उथल-पुथल में होता था, तो वह हमेशा अपने पहले प्यार - तलवारबाजी - की ओर मुड़ जाता था।
वह अकेले में इसका अभ्यास करता, अपना गुस्सा निकालता, उसे शांत करता। लेकिन उस दिन इससे कोई फायदा नहीं हो रहा था, क्योंकि जब भी वह किसी आसन में होता, उसका मन रोमा और उसके कटे हुए शव की ओर चला जाता। यह बात उसे अंदर तक झकझोर कर रख रही थी। सूर्य की परिषद के लोगों ने ऐसा किया था, और हालांकि उसका गुस्सा बेकाबू था, लेकिन वह कुछ भी करने में असमर्थ था। न केवल एक राजकुमार के रूप में, बल्कि सूर्य के शिष्य के रूप में भी। उन्होंने ही उसे ऐसा बनाया था, उन्होंने ही उसे बचपन में सबसे कठोर सर्दियों का सामना करवाया था। और उन्होंने जो कुछ भी किया—शायद, उन्होंने अच्छे के लिए ही किया।
उसके मन में सबको मार डालने का भयानक मंजर उभरने लगा था। अपनी सत्ता को चुनौती देने का भी। यह साबित करने का कि वह सचमुच एक राजा है। उसके सामने रखी लकड़ी की कठपुतली स्थिर खड़ी थी, जैसे ही उसने उसे चीर-फाड़ कर टुकड़े- टुकड़े कर दिया। पसीने से तरबतर होकर वह लेटा था, उसकी मांसपेशियां तन गई थीं, उसकी पतली दाढ़ी पसीने से चिपचिपी थी, कानों में चूड़ियां लटक रही थीं, सीना भारी था और उसके पेट की मांसपेशियां छह से आठ के आकार में उभरी हुई थीं।
वह देखने में सुंदर तो नहीं था, लेकिन अविश्वसनीय स्वभाव का था। आकर्षक व्यक्तित्व वाला और अपने एल्बिनो भाई के विपरीत एक चुस्त-दुरुस्त इंसान था, जो विनम्र, छोटा और बेहद बदरंग था।
“महान व्यक्ति को क्रोध का प्रयोग अंतिम उपाय के रूप में करना चाहिए।” तलवारों के कमरे में एक जानी-पहचानी आवाज गूंजी।

सत्यसेना ने मुड़कर देखा कि कौन है; एक जानी-पहचानी सी आवाज़ आई, और फिर एक मुस्कान, जब उसने अपने पिता को धोती और सीने पर शेरवानी ओढ़े हुए अंदर आते देखा। उसे पता ही नहीं था कि उसके पिता वापस आ गए हैं।
“तुम्हें पता है यह बात तुम्हें किसने बताई?” कर्ण ने पूछा।
"आप।"
और आपको पता है मुझे यह किसने बताया?
"कौन?"
“Dronacharya.”
“वह गुरु जिसने तुम्हें बाहर निकाल दिया।”
वह चबूतरे पर चढ़े और अपनी चप्पलें उतार दीं। “सच है, वह एक क्रूर व्यक्ति था और हमारे बीच मतभेद थे। इससे भी बुरा, मैं लंबे समय से उससे प्यार करता था, और मैंने प्यार में आकर कुछ किया। हमेशा याद रखना, व्यावहारिकता ही सबसे महत्वपूर्ण है। भावनात्मक रूप से लिया गया कोई भी निर्णय एक सुखद मृत्यु की ओर ले जाता है।”
“तुम महीनों तक गायब रहे और अब मुझसे बात करने के लिए वापस आ गए हो?”
मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही थी, मेरे बेटे।
“ज़रूर।” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “पिछली बार जब मैं तुमसे मिला था, तब तुमने मुझे भेड़ियों के सामने फेंक दिया था।”
"आपको जंगली जानवरों से लड़ने का प्रशिक्षण देने के लिए, दूसरे शब्दों में कहें तो।"
सत्यसेना मुस्कुराया। "तलवार उठाओ। मैं देखना चाहता हूँ कि अब तुम कैसा प्रदर्शन करते हो।"
“ज़रूर, मेरे बेटे।”
उसने पास पड़ी तलवार उठा ली।
“क्या आप माँ से मिले?”
उनकी आवाज में गंभीरता आ गई। "हां, मैंने किया। मैंने उनसे आराम करने के लिए कहा है।"
"आपका क्या मतलब है?"
"मैं उसकी गर्भावस्था पूरी होने तक खेत में ही बैठा रहूंगा।"
तो तुम चाचा सुयोधन के पास वापस नहीं जा रहे हो?

कर्ण बिजली की तरह तेज़ी से आया और सत्यसेना के गाल पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा, जिससे वह ज़मीन पर गिर पड़ा। “जल्दी करो, मेरे बेटे। जल्दी करो।” सत्यसेना ने जमीन पर थूका। "तुम गधे हो, पिता जी।"
“तुम राजा से बात कर रहे हो।” उसने उसकी पसलियों पर लात मारी और वह लुढ़क गया। “और तुम्हें इसका सम्मान करना चाहिए।”
धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए सत्यसेना आगे की ओर कूदा और कर्ण पर हमला करने के लिए झपटा, लेकिन कर्ण ने तलवार से उसके हमले को रोक दिया।
“मैं इस हथियार के लिए लोकप्रिय नहीं हूँ, फिर भी मैं तुम्हें हरा रहा हूँ। तुम्हें तीरंदाजी सीखनी चाहिए थी, जैसा कि मैंने तुमसे कहा था।” उनकी तलवारें टकराईं, तभी सत्यसेना ने उग्र स्वर में कहा: "मुझे तीरंदाजी कायरों का खेल लगती है।"
"हाँ, क्योंकि आपके लिए रणनीतिकार होने की तुलना में क्रूर होना अधिक महत्वपूर्ण है।"
उसने सत्यसेना को नीचे धकेल दिया।
सत्यसेना ने कर्ण के पैर पकड़कर उसके अंगूठे को काट लिया। कर्ण गुर्राया और उसकी नाक पर लात मारी, जिससे खून बहने लगा। खून की धारा बहते देख सत्यसेना ने उसका चेहरा पकड़ लिया।
“तुम्हें युद्ध के नियमों का पालन करना चाहिए और काटना इसका हिस्सा नहीं है।” उसने सिर हिलाया। “तुम्हें अभी बहुत कुछ सीखना है।”
"आपको शायद मुझे सिखाने के लिए यहां होना चाहिए, ताकि आपके जाने के बाद मैं इस राज्य का नेतृत्व कर सकूं।"
“तुम्हें क्या लगता है कि मैं क्यों जा रहा हूँ?” उसने घूरते हुए पूछा। “और तुम्हें क्या लगता है कि तुम नेतृत्व करोगे? तुमने अब तक साहस का एक भी उदाहरण नहीं दिखाया है।”
सत्यसेना ने आह भरी। “मैं सबसे बड़ी हूँ। उस सिंहासन पर बैठने का अधिकार मेरी माँ से कहीं अधिक है।”
"चुप रहो। तुम कुत्तों के हो।"
"क्या सोच कर तुम यह कह रहे हो?"
“तुमने तो पहले ही एक शादीशुदा औरत के साथ संबंध बना लिए। मैं तुम्हारी इन हरकतों को जानता हूँ, सत्या।” उसने निराशा में सिर हिलाया। “शायद अपनी

उम्र की कोई लड़की ढूंढ लो, किसी छोटे राज्य की राजकुमारी, जिसके साथ हम साझेदारी करके अपना साम्राज्य बढ़ा सकें।”
उसका खून बहना जारी था, और उसे अपने मुंह में खून का स्वाद आ रहा था, लेकिन वह डर के मारे वहीं खड़ा रहा, क्योंकि उसे यह एहसास नहीं था कि उसके पिता को रोमा लोगों के बारे में पता था।
“तुम्हारे दादा मर चुके हैं, तुम्हारा गद्दार भाई भाग गया है, और तुम सारी ज़िम्मेदारियों से भागकर मज़े कर रहे हो। रोमांटिक बनो, पर मूर्ख मत बनो।” कर्ण गुर्राया। “मैं चाहता हूँ कि तुम एक छोटा सा दल लेकर साम्राज्य के बाहरी इलाके में जाओ। मुझे यकीन है, तुम्हारी माँ पर हुए जानलेवा हमले के पीछे भी उनका ही हाथ होगा। महारोगों के संभावित ठिकाने का पता लगाओ। या क्या वे सचमुच महारोग हैं? मुझे उनके बारे में जानकारी चाहिए, ताकि हम उसके अनुसार कार्रवाई कर सकें। अगर महारोग लौट आए हैं, और मिथक सच हैं, तो हमारे सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हो जाएगी। नाग उठ खड़े होंगे, और हमारे पास खुद को बचाने के लिए कुछ भी नहीं होगा… सिवाय…” वह कुछ याद करके रुका। “हाँ, बस यही एक चीज़ है।”
“तुम नागों से इतना क्यों डरते हो?”
“मुझे डर से ज़्यादा गुस्सा आ रहा है,” उसने कहा। “लेकिन प्राचीन काल में, नाग ही जल पर अधिकार रखते थे, इससे पहले कि मनुष्य उस पर कब्ज़ा कर लें। वे जल की पूजा करते थे, और मनुष्य उसका उपयोग अपने नितंब धोने के लिए करने लगे। नाग मनुष्य से घृणा करते थे, और उनकी संख्या कम होने के कारण, शायद इसलिए कि उनकी स्त्रियों को संतान प्राप्ति से पहले ही मार दिया गया था, वे हमेशा से मनुष्यों, नागरिकों के प्रति द्वेष रखते आए हैं। और पौराणिक कथाओं के अनुसार, महारोग मनुष्य के विरुद्ध विद्रोह करते थे। वे हिंसक थे, विभिन्न प्रकार के जीव और जानवर थे, जिनमें अजगर का खून था या कुछ और।” उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। “हमें उनके बारे में और अधिक जानने की ज़रूरत है, और तुम उस दल का नेतृत्व करो, और एक बार तो मुझे किसी बात में गलत साबित करो। अपने भाई जैसा मत बनो।”
इतना कहकर कर्ण वहां से चला गया, और उसने पानी मंगवाया और अपना चेहरा तब तक धोता रहा जब तक कटोरे का पानी लाल नहीं हो गया। तभी उसे अपने पिता द्वारा नागों और पानी के बारे में बताई गई बात याद आ गई। उसने अपने खून से सने दांत दिखाते हुए मुस्कुराया और अपने भ्रमग्रस्त मन में सोचने लगा:

[illegible]

18

"तुम मुझे कहां ले जा रहे हो?"
“सत्य की ओर।”
जब मेनांडर और शनाया घने जंगलों और आपस में गुंथी झाड़ियों के बीच से गुज़र रहे थे, तब मेनांडर ने शनाया को यही जवाब दिया। शनाया कभी इस राज्य का हिस्सा नहीं रही थी, और हालाँकि यह महल की सीमाओं से बाहर था, फिर भी जंगल में रहना उसे सुरक्षित महसूस करा रहा था, और रानी के रूप में अपने थका देने वाले और बंधे हुए जीवन से दूर रहना उसे सुकून दे रहा था।
मेनांडर ने वही भूरा, मटमैला चोगा ओढ़ा हुआ था, सिर पर एक हुड था जिससे उसके कांटेदार बाल ढके हुए थे। वह एक थकी हुई और ठहाके लगाती घोड़ी पर सवार था। शनाया भी उसके पीछे-पीछे हुड पहने चल रही थी, जिससे उसका रूप-रंग धोखे जैसा था और उसे देखते ही पहचानना मुश्किल था। क्योंकि वहाँ कट्टरपंथी और षड्यंत्रकारी उसका इंतज़ार कर रहे थे, जो उसे जान से मार देना चाहते थे। शनाया जानती थी कि वह एक अच्छी रानी नहीं है। वह सोचती थी कि वह रानी बन सकती है, लेकिन वह इस भूमि की नहीं थी, यहाँ के रीति-रिवाजों से अनभिज्ञ थी, और शहर की रक्षा करने वाले धार्मिक संगठन द्वारा उससे नफरत की जाती थी। इससे भी बुरा यह था कि वह एक कुशल कूटनीतिज्ञ नहीं, बल्कि एक योद्धा थी, जो वयस्क होने पर भी खट्टी रोटी और सड़ी हुई शराब खाकर अपना गुजारा करती थी। उसके पिता बचपन में उसकी देखभाल करते थे, और हालाँकि वह उन कई बेटियों में से एक थी जिन्हें उन्होंने साझेदारी और विस्तार के उद्देश्यों से अलग-अलग लोगों को सौंप दिया था, फिर भी वह उससे बहुत करीब थे। उसमें एक जुझारू भावना थी जो उनके अन्य बच्चों में नहीं दिखती थी। हिंसा और वहाँ के नेतृत्व के प्रति अवज्ञा के कारण उन्हें बहुत समय पहले अपने देश से बहिष्कृत कर दिया गया था, और यहाँ धनवान बनने के लिए उन्होंने ज़मीनी स्तर से मेहनत शुरू की।

लेकिन उनके शासनकाल में कई समस्याएं थीं, क्योंकि अन्य यूनानी भी थे, विशेषकर आयोनियन वंश का कल्यावन, जो यहाँ के कई राज्यों के निकट था। उसे 'काला यूनानी' कहा जाता था, क्योंकि वह कच्चे जामुन की तरह काला था। कल्यावन पूरे यूनानी समुदाय के लिए एक खतरा, अत्याचारी और भयानक दुष्ट था, जब तक कि द्वारका के भगवान कृष्ण ने उसे पराजित नहीं कर दिया। उसे एक गुफा में फंसाकर जिंदा जला दिया गया। उसके बाद, यूनानी धीरे-धीरे और दर्दनाक मौत मरने लगे और उनकी संख्या घटती चली गई। शनाया विवाहित होने के कारण कर्ण की कृपा से इतने लंबे समय तक जीवित रही। अन्यथा, उसका भी शिकार किया जाता या इससे भी बुरा, उसे जलाकर राख कर दिया जाता। राज्य विदेशी प्रकृति के शत्रु थे। और उसने सोचा कि उसके पिता सुरक्षित रहेंगे, बेशक। वह बुद्धिमान थे। उन्होंने उसे एक लाल रिबन दिया था जिसे वह हमेशा अपने साथ रखती थी, एक पायल की तरह उसके टखने पर बंधा हुआ। और यह एक अप्रोधवासी का प्रतीक था, सुरक्षा और प्रेम का प्रतीक।
जब भी वह निराश होती, वह उसे देखती, जैसे पिछले हफ्ते जब कर्ण ने उससे रिश्ता तोड़ लिया था। लेकिन वह जानती थी कि यह दुख के कारण था। वह अंदर से टूट चुका था।
“मैंने तुम्हारे पिता से संपर्क स्थापित करने में कामयाबी हासिल कर ली थी। वह मेरे पत्रों का जवाब नहीं दे रहे थे, और यहां तक कि तुम्हारे पत्रों का भी नहीं, जिन्हें तुम चुपके से मेरे माध्यम से भेजा करती थी,” उसने कहा। उसे याद आया कि उसने उससे एक एहसान मांगा था। संक्षेप में, जरासंध के विरुद्ध युद्ध के दौरान उसके पिता ने अंतिम क्षण में कर्ण के साथ विश्वासघात किया था। हालाँकि उसने शनाया और उससे अपने विवाह के प्रति सम्मान के कारण कुछ नहीं किया था, कर्ण ने हमेशा मन में द्वेष रखा और यह सुनिश्चित किया कि शनाया या उसके बच्चे कभी अपने दादा से न मिल सकें। हालांकि, वह उसे बहुत याद करती थी और अक्सर मेनांडर के ज़रिए चिट्ठियाँ भेजा करती थी, और शुरू में उसे जवाब भी मिलते थे, लेकिन हाल ही में ऐसा होना बंद हो गया। कुछ महीने पहले चिट्ठियाँ आनी बंद हो गईं और वह डर गई, उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहीं सब ठीक तो नहीं है।
“जब तक मुझे सच्चाई का पता नहीं चला,” उसने कहा। “जरासंध की मृत्यु के बाद, उसके साथ हुआ समझौता भी खत्म हो गया। तुम्हारे पिता कुछ वर्षों तक अपने दल के साथ रहे, लेकिन इस भूमि में विदेशियों को हमेशा उत्पीड़न का

सामना करना पड़ा है, खासकर उन लोगों को जो राजपरिवार का हिस्सा नहीं बनते,” उसने उससे कहा। “और मुझे चिंता होने लगी थी, इसलिए मैंने अपने कुछ दूतों को जंगल में भेजा, इस उम्मीद में कि वे केवल हड्डियाँ और मांस ही वापस न लाएँ, और बदले में मुझे जो मिला वह भयानक था।”
जब तक मैं वहाँ पहुँचा, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।
“तुम्हारा क्या मतलब है?” उसकी छाती भारी हो गई।
वह एक खुले मैदान के चारों ओर चक्कर लगाते हुए पहुँची, जहाँ हरियाली मुरझाई हुई थी और पेड़-पौधे न तो हिल रहे थे और न ही कुछ बोल रहे थे। बल्कि, वे भय से इधर-उधर घूम रहे थे, क्योंकि सामने एक नग्न व्यक्ति पड़ा था, जिसकी पसलियाँ और हड्डियाँ दुबली-पतली थीं, लंबे, भूरे रंग के बाल थे, और वह जंजीरों में जकड़ा हुआ एक विशाल पेड़ के तने से सटा हुआ था। उस व्यक्ति की आँतें बाहर निकल रही थीं और चारों ओर खून फैला हुआ था। शव एक बूढ़े व्यक्ति का था और सड़ रहा था, मानो उसे बहुत समय पहले वहाँ छोड़ दिया गया हो, कीड़े अपना पेट भर चुके थे और गिद्ध भी बचा-खुचा मांस नोच चुके थे। उसे यहाँ यातनाएँ दी गईं।
शनाया अपनी घोड़ी से कूदी और उसकी ओर दौड़ी, लेकिन मेनांडर ने उसे पकड़ लिया और उसे पीछे खींच लिया।
उन्होंने कहा, “मुझे पहले उसे ले जाना होगा, उसकी सफाई करनी होगी और उसके बाद आपको उससे मिलना चाहिए। अन्यथा, हमें नहीं पता कि आपको इससे कौन-कौन से संक्रमण हो सकते हैं।”
"यह वह नहीं हो सकता।"
“हाँ,” उन्होंने कहा। “मैंने जाँच कर ली है।”
“बाकी लोग कहाँ हैं? उसके आदमी कहाँ हैं?”
“मर गया,” मेनांडर ने कहा। “या तो वे उसे वहीं छोड़ गए, या फिर वे खुद मर गए।”
शनाया अपने आंसू नहीं रोक पाई और जमीन पर गिर पड़ी, जबकि मेनेंडर ने उसे कसकर अपने सीने से लगा लिया।
"कोई बात नहीं। सब ठीक हो जाएगा। वह...अब वह बेहतर स्थिति में है।"
“मुझे उसका ख्याल रखना चाहिए था।” वह बच्चे की तरह रोने लगी। “मुझे उसे अपने बच्चों से मिलने देना चाहिए था। वह हमेशा उनसे मिलना चाहता था।” "कोई बात नहीं, सब ठीक है, कोई दिक्कत नहीं है।"

शनाया ने गुस्से से उसकी ओर देखा। "कौन था वो?"
“यह कौन हो सकता है, मेरी महिला? मुझे यह यहाँ तब मिला जब मैंने उसे पहले पाया था।”
शनाया ने उसके हाथ में मौजूद कंगन को देखा, और वह सूर्य के प्रतीक वाला कंगन था।
और वह जानती थी कि यह किसका है।
कर्ण।

19

कर्ण जानता था कि क्या करना है।
पश्चाताप करने के लिए।
प्रायश्चित करने के लिए।
भूल जाने के लिए।
और क्षमा प्राप्त करना।
लेकिन जब वह अष्टार के पास गया था, तो उसका यही इरादा था। उसने उनसे विनती की थी कि उन्हें कारण बताएं—कि उनके पिता को उनसे क्यों छीन लिया गया, उनका साम्राज्य उनके चारों ओर क्यों बिखर गया और उनका परिवार क्यों टूट गया। अब उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। वे अपने मित्र सुयोधन से मिलना चाहते थे और उन्होंने एक पत्र भी भेजा था, लेकिन निराशा का दर्द उनके सीने पर एक बड़े पत्थर की तरह भारी पड़ रहा था। वे इस भावना से मुक्ति पाना चाहते थे।
वह सूर्य देव की विशाल प्रतिमा के सामने घुटने टेककर बैठा था, चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था और बीच-बीच में गरज सुनाई दे रही थी। जिस रास्ते पर वह बैठा था, उसके दोनों ओर मशालें जल रही थीं, और पीले वस्त्र पहने पुजारी एक ऐसा भजन गा रहे थे जिसे वह समझ नहीं पा रहा था। इस सभा के बनने से पहले, कुछ भी वैसा नहीं था जैसा अब दिखता है। सूर्य देव का मंदिर तो था, लेकिन तब इतना भव्य नहीं था जितना अब है।
अष्टर ठीक उसके सामने खड़ा था, हाथ में कटोरा लिए उसे नीचे की ओर देख रहा था।
उन्होंने कहा, "वह गुस्से में है। वह तुमसे गुस्से में है।"
"क्यों?"
क्योंकि तुम सुनते नहीं हो।
"आपका क्या मतलब है?"
सूर्य का रक्त पियो।

उसने तरल पदार्थ से भरा कटोरा नीचे लाया और उसे कर्ण के होठों के पास रख दिया।
इसे पी लो। और तुम्हें अपना जवाब मिल जाएगा। और तुम पश्चाताप कर लोगे।
कर्ण ने सिर हिलाया और एक लंबी घूंट ली।
"इसे खत्म करें।"
यह खट्टा था। गंदा था। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ गड़बड़ है।
लेकिन उसे ऐसा करना ही पड़ा।
"अच्छा।"
“उसकी बात सुनो। उसे महसूस करो। उसे अपना हिस्सा बना लो।”
वह मेरा ही एक हिस्सा है।
नहीं, उसने तुम्हें छोड़ दिया है।
और उसने विद्रोह में, उस आदमी को गलत साबित करने के लिए घूंट-घूंट करके पी। ऐसा करते हुए, एक पल के लिए उसे कुछ नहीं हुआ, लेकिन उसके सिर में एक अजीब सी बेचैनी होने लगी, उसे चक्कर आने लगे, वह भ्रमित और बेहोश सा हो गया। वह और घुटने नहीं टेक सका और ज़मीन पर गिर पड़ा, बड़बड़ाने लगा। उसका दिमाग चकराने लगा और जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो उसने खुद को चट्टान के किनारे पर पाया।
सबसे दूर, एकांत स्थान।
उसके सामने एक राज्य दिखाई दिया, जो अंगा की भूमि से काफी मिलता-जुलता था, लेकिन वह नष्ट हो चुका था, टूट चुका था और तबाह हो गया था। जब उसने अपने कुबड़े साथी अष्टार को अपने बगल में खड़ा देखा, तो वह व्याकुल और भ्रमित हो गया।
“इतने लंबे समय से, तुम अपनी माँ की खातिर राज्य को वापस पाने के लिए लड़ती रही हो, उनकी उस प्रतिज्ञा को निभाने के लिए कि अंगा हमेशा तुम्हारा ही रहेगा, तुम ही असली वारिस हो, और फिर भी यह अंदर से ही नष्ट होता जा रहा है,” उन्होंने कहा। “जब तुम इसके लिए कुछ नहीं करोगी, तो तुम्हारी इस प्रिय भूमि का यही हाल होगा। जर्जर। खंडित। हज़ार टुकड़ों में बिखरा हुआ।” जैसे ही वह चट्टान से भागा, दृश्य बदलने लगा और वह एक गाँव में पहुँच गया, जहाँ एक झोपड़ी थी। जब उसने झोपड़ी के अंदर झाँका तो उसे अपनी पत्नी शनाया और एक अनजान से दिखने वाला यूनानी व्यक्ति मिला। वे अंतरंग अवस्था में थे।

“तुम्हारी पत्नी तुम्हारी पीठ पीछे किसी और के साथ संबंध रखती है। तुम्हारा तीसरा बच्चा तुम्हारा नहीं है। वास्तव में, तुम्हारे कोई भी बच्चे तुम्हारे नहीं हैं। सूर्य का पुत्र ऐसे पतित, निराशाजनक बच्चे पैदा नहीं करेगा, फिर भी वह निर्दयता से ऐसे बच्चे पैदा करती है जो सब वंशानुगत और घृणित हैं।”
“नहीं, यह सच नहीं है। मेरे बच्चे मेरे हैं। उनकी नाक मुझसे मिलती है। वे मुझसे…”
“लेकिन फिर भी वे सूर्य के बच्चों की तरह व्यवहार नहीं करते, है ना?” उन्होंने पूछा।
कर्ण सदमे में था, उसकी आंखों के नीचे काले घेरे और गहरे होने लगे, और उसके चेहरे पर भयावह वास्तविकता के भाव उभर आए। "मेरे बच्चे...नहीं...ऐसा नहीं हो सकता..."
और वह मुड़कर जंगल की ओर भागा, और अचानक आकाश के एक सफेद गोले के सामने आ पहुँचा, जहाँ उसने एक विशाल धातुई प्राणी को देखा, जिसका सिर मुकुट जैसा था और उस पर सूर्य का चिन्ह खुदा हुआ था। वह प्राणी उसे पकड़े हुए था, उसे ऊपर उठा रहा था, उसकी आँखें बिजली से चमक रही थीं और उसका चेहरा चौड़ा खुला हुआ था।
पृष्ठभूमि में अष्टार की आवाज गूंज रही थी।
“उसे अंदर आने दो। उसे अपना माध्यम बनने दो और उस राज्य को पुनः प्राप्त करो जिसके तुम हकदार हो।”
कर्ण ने भागने की कोशिश की। उसने धक्का देकर दूर करने की कोशिश की।
"आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?"
"उसे तुम्हें खाने दो।"
और उस धातु के आदमी ने उसे निगल लिया, और जब वह उसके मुँह में दाखिल हुआ तो वह अँधेरे के भंवर में फँस गया, नीचे गिर रहा था, लेकिन मरा नहीं। वह इस गिरने को रोकना चाहता था, लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता था। उसे अपने चारों ओर अलग-अलग छवियाँ घूमती हुई दिखाई दीं, उसके जीवन के अलग-अलग दृश्य फिर से सामने आ रहे थे—कैसे उसे बचपन में त्याग दिया गया, सूत के रूप में उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, सारथी के बेटे के रूप में, अपनी माँ की मृत्यु के बारे में पता चलना, जरासंध को ढूँढ़ना और जीत हासिल करना, शनाया से मिलना और सुयोधन में एक लंबे समय से खोई हुई दोस्ती को फिर से पाना...

उसने सब कुछ देखा।
उसकी आंखों के सामने उसकी जिंदगी की एक झलक सी आ गई। और उसने सोचा कि वह मर जाएगा, और शायद उसके अंदर का दर्द भी गायब हो जाएगा।
लेकिन वह पसीने से तरबतर और भ्रमित अवस्था में जागा।
“तुमने क्या देखा? क्या तुमने मेरी आवाज़ सुनी?” अष्टार ने मुस्कुराते हुए पूछा।
“तुमने मुझे क्या दिया?”
“सत्य का पेय। क्या आपने सत्य देखा?”
“मैंने बहुत कुछ देखा।” उसने अपना सिर हिलाया। “मुझे समझ नहीं आ रहा कि किस पर विश्वास करूं।”
“जो तुम देखते और सुनते हो, उस पर विश्वास करो,” अष्टार ने कहा। “भगवान सूर्य कभी झूठ नहीं बोलते। तुम्हारा राज्य नष्ट होने से बचाने के लिए, तुम्हें वही करना होगा जो उन्होंने तुमसे करने को कहा है।” “लेकिन…लेकिन…” उसने सिर हिलाते हुए कहा, “मैंने कुछ ऐसा देख लिया जो मुझे कभी नहीं देखना चाहिए था। मुझे नहीं पता। क्या मुझे देखना चाहिए? वह क्या है?” वह सिसक रहा था।
और वो क्या होगा? आपने क्या देखा?
कर्ण भयभीत होकर पलकें झपकाते हुए अगले कुछ शब्द बोला: "मैंने खुद को शनाया का गला घोंटते हुए देखा।"

20

“क्या हम सही रास्ते पर हैं?” उन्होंने पूछा।
वृषकेतु काफी देर से तृप्ति को निहार रहा था। तृप्ति ने दूरबीन पकड़ी हुई थी और सामने उठती लहरों को देख रही थी। वे एक ऊबड़-खाबड़ मैदान पर थे और दूर से उन्हें एक नदी दिखाई दे रही थी जो तेज हवाओं और ऊंची लहरों के साथ बह रही थी। वे अकेले थे, धूप से भरे आसमान के नीचे, बभ्रु के बताए चोर को ढूंढने की उम्मीद में।
“मुझे नहीं लगता कि निर्देशांक सही थे। हम इस भीषण धूप में हैं और यहाँ कुछ भी नहीं है। और हमें बताया गया था कि यह…” वह रुक गया, क्योंकि उसने देखा कि तृप्ति ने उसकी तरफ देखा तक नहीं।
वह काफी समय से उसके साथ यात्रा कर रहा था, और वह अक्सर बहुत कम बोलती थी, और उसे परवाह भी बहुत कम थी, लेकिन एक ऐसी कहानी थी जिसके बारे में वह निश्चित नहीं था। कुछ ऐसा जो उसके भीतर छिपा हुआ था, सबके सामने होते हुए भी।
वह एक अनोखी सुंदरता थी, ऐसी सुंदरता जिसे बहुत कम लोग देख पाते हैं, और जिसे कुछ ही लोग पा सकते हैं। वह हवा, हवाओं और आकाश का हिस्सा थी, और संसार उसके पैरों तले नहीं था। वह शब्दों को हथियार नहीं बनाती थी, बल्कि अपने कर्मों को। उसकी आँखें बहुत कुछ कहती थीं, मानो एक उल्लू अनंत दृष्टि से उसकी आँखों में देख रही हों, पलकें झपका रही हों। वृषकेतु कभी किसी कम बोलने वाली स्त्री पर मोहित नहीं हुआ था, लेकिन वह यहाँ थी, और कुछ उसे उसकी ओर खींच रहा था। उसके भीतर कुछ उथल-पुथल मच गई, और वह अपने उद्देश्य को भूलकर शायद एक ऐसा जीवन जीना चाहता था जिसकी आशा कुछ ही लोग कर सकते हैं।
लेकिन वृषकेतु को अपने मिशन पर ध्यान केंद्रित करना था। आखिरकार, वह काफी समय से इस पर काम कर रहा था।
“वहाँ,” उसने अपनी चमकती हुई आवाज़ में कहा। “वहाँ कोई है।”

वृषकेतु ने उससे दूरबीन छीन ली और एक आदमी को देखा, जो संभवतः मछलियों से भरी बाल्टियाँ लिए नाव में रख रहा था। वहाँ कुछ और नावें भी थीं, जो संभवतः आसपास के ग्रामीणों की थीं, और वे दुकान से बंधी हुई थीं।
“क्या आपको लगता है कि यह वही है?”
“यह वही है,” उसने पूरे विश्वास के साथ कहा।
"आपको कैसे मालूम?"
"क्योंकि मैंने ही सबसे पहले उसे ढूंढा था।"
"तो क्या योजना है?"
"यातना।"
वे उसकी ओर बढ़ने लगे, क्योंकि वह अपनी नाव तैयार कर रहा था।
नहीं, नहीं, मेरा मतलब है, सचमुच क्या?
“यातना।” वह रुकी और फिर से बोली, इस बार धीरे-धीरे, मानो वृषकेतु ने पहली बार में उसकी बात सुनी ही न हो।
"क्या आप गंभीर हैं?"
मुझे लगा था कि आप उनसे विनम्रतापूर्वक पूछेंगे।
"हम जो करते हैं उसमें दयालुता नाम की कोई चीज नहीं है।"
वह अपने हाथों में मुड़ी हुई कटार लिए चलने लगी, उसका मुंह एक कसकर बंधे लाल कपड़े से ढका हुआ था, उसकी आंखें बेजान थीं, उसका शरीर सांप की तरह फुर्ती से चल रहा था...
जब उस आदमी ने पीछे मुड़कर उनकी ओर देखा।
और वह तुरंत अपनी नाव की ओर दौड़ा और उसे पानी में धकेल दिया।
“अरे वाह, अब तो वो भाग रहा है। हमें इसे और बेहतर तरीके से करना चाहिए था। मुझे चोरों से सौदेबाजी करना आता है…”
और जब तृप्ति दूसरी नाव की ओर गई तो उसकी आवाज धीमी हो गई।
"मेरी सहायता करो!"
वह चिल्लाई, और वृषकेतु को समझ आ गया कि वह किस मुसीबत में फंसने जा रहा है। जैसे ही नाव नदी में आगे बढ़ी, वह उसमें कूद गई, जबकि आगे बैठा चोर धारा के विपरीत दिशा में तेज़ी से चप्पू चला रहा था।
“यह अच्छा विचार नहीं है। यह एक बड़ी नदी में जाकर मिलता है, और वह नदी सुरक्षित नहीं है।”
"कूदो!" वह लगभग फुफकारते हुए उस पर चिल्लाई।

उसने डर के मारे ऐसा किया।
वह उसके पीछे भागते हुए नाव चलाने लगी।
“वह तुम्हें कैसे जानता है? वह तुम्हें जानता था, इसीलिए वह डरा हुआ था।
क्या तुमने पहले उससे संपर्क किया था?”
मैंने उसे पहले ही पकड़ने की कोशिश की थी।
“यह तो संक्रामक नहीं है! यह तो किसी को इतना डरा देगा कि उसकी जान निकल जाएगी।” वह रुका। “तुम्हें क्या लगता है कि यह योजना उसे कैसे रोक पाएगी?” क्योंकि अब तुम मेरे साथ हो।
“मैं चोर नहीं हूँ, भगवान!” उसने अपना सिर हिलाया, यह महसूस करते हुए कि यह कितना बेतुका बयान था।
वे नाव के पीछे दौड़ रहे थे और आगे बढ़ रहे थे, तभी वृषकेतु उस पर चिल्लाने लगा और उसे नाव चलाना बंद करने के लिए कहने लगा ताकि वे बात कर सकें। लेकिन तब तक दाढ़ी और कम घने बालों वाला चोर इधर-उधर भाग रहा था। नावें आपस में टकराने लगीं, लगभग एक-दूसरे के बगल में...
तभी एक विशाल लहर ने नाव को आगे धकेल दिया, जिससे दोनों लगभग बेकाबू होकर घूमने लगे। तृप्ति दूसरी तरफ गिर पड़ी, तभी वृषकेतु ने उसकी कमर पकड़कर उसे वापस ऊपर खींच लिया। तृप्ति गुर्राई और दूसरी नाव पर कूदने की कोशिश की, लेकिन चोर ने उन्हें धक्का देकर दूर कर दिया और नाव को और भी तेज़ी से चलाने लगा।
वे उसके करीब पहुँचने ही वाले थे कि वृषकेतु ने नीचे की ओर बहने वाली भयानक धारा को देखा जो उन्हें बुरी तरह से हिला देने वाली थी।
और वह एक तरफ पड़े लट्ठों से टकराकर गिर पड़ा। उसने खुद को संभाला, लेकिन तभी उसने देखा कि नदी एक झरने में तब्दील हो रही है। चोर ने भी यह देखा और डर के मारे नाव से कूदकर तैरने की कोशिश करने लगा, लेकिन धारा इतनी तेज़ थी कि वह भाग नहीं सका।
और वे दोनों गिर पड़े। उनकी नावें और उनके शरीर पानी के बड़े पोखर में गिरते ही चकनाचूर हो गए। वृषकेतु को लगा मानो उसका पूरा जीवन उसे घूर रहा हो, जब वह मलबे से बाहर निकला और तैरता हुआ जीवन के किसी भी संकेत की ओर बढ़ा। तब तक उसने देखा कि तृप्ति ने चोर को पकड़ लिया था और उसे चट्टानों से सटाकर लात-घूंसे मार रही थी, जबकि वह अपनी जान की भीख मांग रहा था। वृषकेतु ने आगे बढ़कर उसे धक्का देकर दूर कर दिया।

“मैं इसे यहाँ से संभाल लेता हूँ,” उसने कहा। “तुम भाग क्यों गए?” उसने चोर से पूछा।
आँखों में भय लिए चोर ने उत्तर दिया, "मुझे लगा कि तुम हत्यारे हो जो मुझे मारना चाहते हो।"
"कोई तुम्हें क्यों मारना चाहेगा?"
मैंने अपने जीवन में बहुत सारे बुरे काम किए हैं।
"और अब आप क्या करते हैं?"
मैं शिकार करता हूँ और मृत पशुओं के अवशेष इकट्ठा करता हूँ।
“दिलचस्प,” वृषकेतु ने कहा।
“तुम कौन हो? तुम मुझे क्यों चोट पहुँचाना चाहते हो?”
“हम आपकी मदद चाहते हैं, ताकि आप वह चीज़ ढूंढ सकें जो आपने बहुत समय पहले चुराई थी,” उसने कहा। “और बदले में, हम आपको खाना और कपड़े दे सकते हैं जिनकी आपको सख्त ज़रूरत है, और हां, पैसे भी।”
वह कुछ देर तक असमंजस में उसे देखता रहा। "सचमुच?"
“जी हां,” वृषकेतु ने उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा, जबकि तृप्ति ने बस अपनी आंखें घुमाईं। “तुम्हारा नाम क्या है?”
“जारा,” उसने कहना शुरू किया, “जारा शिकारी।”

21

सत्यसेना अपनी मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहे थे।
या कम से कम उसे ऐसा ही लगा।
महारोगा परिवार के ठिकाने का पता लगाने के लिए एक जासूस की तरह काम करना काफी नीरस था। इसके बजाय, अपने दादा के हत्यारों का सिर लाना कहीं बेहतर होता। उसके पिता उससे प्रभावित होते। वे उसे बधाई देते, शायद उसके सिर पर हाथ फेरते और उसे गले लगाते। वह जानता था कि उसके दादा की मृत्यु के बाद उसके पिता का दिल टूट गया था।
उन्हें कई सुराग मिले और उन्होंने पूछताछ की, तब जाकर उन्हें महारोगा हमलावरों के अंतिम ठिकाने का पता चला। जिन लोगों से उन्होंने बात की, वे सभी डरे हुए थे, एक रोते हुए बच्चे की तरह सहमे हुए थे। उन्होंने बताया कि उन्होंने महारोगाओं की आँखों में मौत देखी थी, उनकी आत्माओं में तेज धार वाले ब्लेड थे और उनसे लाशों की दुर्गंध आ रही थी।
सत्यसेना इतना अहंकारी था कि उसे विश्वास था कि ये सब मनगढ़ंत कहानियां हैं, जिन्हें उसने अपने साथ जुड़े संशयवाद और आध्यात्मिकता को छिपाने के लिए गढ़ा और गढ़ा था।
जब तक उसे इसके बारे में पता चला, आसमान में भीषण तूफान आ चुका था और दूर से बर्फीला तूफान दिखाई देने लगा था। हवा चल रही थी, कोहरा छाया हुआ था और रुक-रुक कर बारिश हो रही थी, तभी उसके साथ उसके बारह सैनिकों का दल आगे गुफाओं की ओर बढ़ गया।
ये वही गुफाएं थीं जहां महारोगों को आखिरी बार देखा गया था, लेकिन सत्यसेना को उसके दल ने चेतावनी दी थी—
"यह पर्वतीय निवासियों का क्षेत्र है, अंधकार के उपासकों का, जो छाया में रहते हैं।"
उसने पर्वतीय निवासियों के बारे में सुना था, एक ऐसा समुदाय जो तकनीकी रूप से कभी तरक्की नहीं कर पाया, कूड़ा बीनने वालों की तरह जीवन यापन करता

था, सड़ा हुआ खाना खाता था, और शायद नरभक्षण भी करता था। वे पिसाख थे! और वे उन लोगों से आए थे जिन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था, जो अंतर्विवाह, व्यभिचार और विश्वासघात से पैदा हुए थे। पर्वतीय निवासी क्रूर, निर्मम और बेहद खूनी थे। उन्हें डाकू भी माना जाता था, क्योंकि वे कभी-कभार कारवां चुरा लेते थे, पैसे या सोने के लिए नहीं, बल्कि मांस और हड्डियों के लिए।
“महारोगा लोग यहाँ, पिसाख की भूमि पर क्यों आए?” एक अन्य दल के सदस्य ने पूछा। “वे तो जिंदा ही खा लिए जाते।”
“अगर उनकी त्वचा भी हमारी ही तरह की हो,” दूसरे ने ठहाका लगाते हुए कहा, मानो यह कोई हंसी-मजाक की बात हो। “मैंने सुना है कि उनके शरीर से ज़हर निकलता है, और जो भी उनकी त्वचा को काटता है, उसकी तुरंत मौत हो जाती है। उन्हें दूर से ही मार देना चाहिए।”
“ये सब तुमने कहाँ से सुना, बच्चों? अपनी माँ की सोने से पहले सुनाई जाने वाली कहानियों से।” सत्यसेना हँसे। “पहाड़ों पर रहने वाले लोग मूर्ख हैं, बेवकूफ हैं, रोशनी से डरते हैं। बस उन्हें तलवारें और आग दिखा दो, वे भाग जाएँगे।” हालाँकि वह उनसे कभी मिले नहीं थे। उन्होंने सिर्फ कहानियाँ सुनी थीं, लेकिन उनके शिक्षक उन्हें इस दुनिया में हर तरह की बुराई से लड़ने के बारे में सिखाया करते थे।
“ये आते कहां से हैं? ये तो बस यूं ही इन पहाड़ों में बस गए हैं। भगवान कर्ण को इसके बारे में कुछ करना चाहिए।” दल के एक सदस्य ने कहा।
सत्यसेना ने जवाब दिया, "बिल्कुल, हमें उन्हें मिटा देना चाहिए, गंदगी को हटा देना चाहिए।"
“नहीं, वह ऐसा नहीं करता,” एक अन्य बुजुर्ग सैनिक ने कहा, “क्योंकि वह उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता। पिसाच समुदाय बुरे फैसलों का नतीजा है, और यह उनकी गलती नहीं है कि उनके पूर्वजों ने भयानक प्रथाएँ स्थापित कीं, जिसके कारण उनकी संतानें भी उनका अनुसरण करने लगीं। हालाँकि कई लोग पशु मांस खाते हैं, लेकिन जो लोग मानव मांस खाते हैं, अगर पकड़े जाते हैं, तो अंगा देश में उन पर मुकदमा चलाया जाता है और उन्हें मौत की सजा दी जाती है। लेकिन वे चालाक हैं, और हमें उनके बारे में ज्यादा पता नहीं चलता।”

सत्यसेना ने इसके बाद ज्यादा कुछ नहीं कहा। उन्हें इतिहास की पूरी जानकारी नहीं थी, क्योंकि अब कोई जीवित व्यक्ति नहीं बचा था जो इसके बारे में बता सके।
जैसे-जैसे हवाएं तेज होती गईं, उन्होंने अपनी घोड़ियों को गुफा के अंदर रोक दिया और अपनी तलवारें निकालकर आगे बढ़ गए।
सत्यसेना को संदेह हो रहा था। उन्हें यह विश्वास करना मुश्किल हो रहा था कि वहाँ लोग होंगे। एक बड़े लट्ठे पर आग जलाई गई और वे सावधानी से आगे बढ़े, क्योंकि गुफाओं से पानी रिस रहा था और टपक-टपक की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
सत्यसेना ने अपने दल से फुसफुसाते हुए कहा, "अगर हालात और भी बदतर हो जाते हैं, तो हम तब तक आराम करने के लिए कोई जगह ढूंढ लेंगे, जब तक कि बर्फीला तूफान खत्म नहीं हो जाता।"
वे सब एकमत से सहमत हो गए। वे आगे बढ़ते रहे, यह समझते हुए कि यह एक जटिल गुफा थी जो कई रास्तों और खुले स्थानों में खुलती थी। वे आगे बढ़े, और उन्हें दीवारों, छतों और ज़मीन पर सूखा खून दिखाई दिया।
"महामहिम, आपको कुछ अवश्य देखना चाहिए।"
सत्यसेना अपने सिपाही की ओर बढ़ा और मशाल की रोशनी में उसने जो कुछ दिखाया, उसे ध्यान से देखा। वहाँ उसे खून से बनी अजीबोगरीब चित्रकारी दिखाई दी, जो शायद किसी कहानी को दर्शाने वाले प्रतीक थे।
"पिसाख जनजाति के लोग भाषा का अभाव होने के कारण चित्रों के माध्यम से बोलते हैं, और मैं यहाँ जो देख रहा हूँ वह एक कहानी के अलावा कुछ नहीं है।" दो आदमियों के प्रतीक प्रकट हुए, लोगों का एक समूह इकट्ठा हुआ, फिर लड़ाई शुरू हो गई, जिसमें उस समूह के लोग मारे जा रहे थे और वे दोनों आदमी उनकी लाशों पर खुशी मना रहे थे। सत्यसेना की आँखें चौड़ी हो गईं, क्योंकि उन दोनों आदमियों के चेहरे सफेद चाक से रंगे हुए थे और उन पर साँप बने हुए थे। ऐसा लग रहा था कि और भी चित्र बने हुए थे, लेकिन वे मिट गए थे या उन्हें बनाने वाले ने अधूरा छोड़ दिया था। यह एक संदेश जैसा लग रहा था।
“महामहिम, यहाँ आइए।” एक आवाज़ गूंजी।
सत्यसेना ने आवाज का पीछा किया और उसने उसी सैनिक को यह कहते हुए सुना:

“महाराज, आपको यहाँ पिशाच के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है,” उन्होंने कहा। “महारोग यहाँ विश्राम करने आए होंगे, और पिशाच ने हमला कर दिया होगा…”
और सत्यसेना को इसका कारण समझ आ गया। क्योंकि, जो सामने था उसे देखकर उनकी रूह कांप उठी।
लगभग दर्जनों लाशें, सभी पिसाख की लाशें, मल-मूत्र की दुर्गंध से लथपथ।
सभी का वध कर दिया गया।
सब मर गए।
महारोगियों ने वह घिनौना काम कर दिया था, जो सत्यसेना के पिता कभी नहीं कर सकते थे।

22

एक समय ऐसा था जब पूरा परिवार एक साथ बैठकर खाना खाता था। वे पंद्रह सूर्यास्त के भीतर समय निकालकर एक साथ भोजन करते थे।
लेकिन कर्ण को यह दिखने लगा कि वृषकेतु ने अपना वादा तोड़ दिया है और परिवार के साथ विश्वासघात किया है, और सत्यसेना इतना मूर्ख था कि उसने आगे कार्रवाई नहीं की।
और उस रात, वहाँ केवल शनाया और कर्ण ही थे।
वे एक-दूसरे के आमने-सामने बैठे थे, तभी उनके लिए भोजन और स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जाने लगे। कर्ण उसे निहार रहा था, वह पहले की तरह ही सुंदर लग रही थी। बहुत समय पहले हालात अलग थे, जब उनका विवाह हुआ था और कर्ण ने अंगा को जीत लिया था और उसे उसे सौंप दिया था।
और उसने कई वर्षों तक शासन किया, और इस दौरान कई मौतें हुईं, और बहुत कुछ घटित हुआ।
“अब आपको कैसा लग रहा है?” उसने पूछा।
“मैं बहुत डर गई थी,” उसने कहा।
"के बारे में?"
"कि तुम मुझसे नफरत करते हो।"
"मैं तुमसे नफरत नहीं करता, शनाया।"
शनाया उसे घोर घृणा से देख रही थी और उसकी आँखों में इतना कुछ चल रहा था कि कर्ण उसे समझ नहीं पा रहा था।
“क्या तुम मुझे कुछ बताना चाहते हो?” उसने पूछा।
“कुछ नहीं।” उसने उससे नज़रें हटाते हुए आगे पूछा: “क्या आपको मेरे पिता याद हैं?”
"वही जिसने मुझे धोखा दिया, बिल्कुल।"
"उसने जीवित रहने के लिए वही किया जो उसे करना पड़ा।"

“बिल्कुल। उसने यही किया था। इतने सालों बाद आप उसे सही नहीं ठहरा सकते।”
“मुझे नहीं पता। बस…क्या आपको पता है कि वह कहाँ है?”
कर्ण ने सिर हिलाया। “तुम क्या कर रहे थे? तुम्हारी बेवफाई की अफवाहें चल रही हैं।”
"अरे वाह, आप तो सीधे मुद्दे पर आ गए।"
“क्या यह मेरा बच्चा है?” कर्ण ने पूछा।
शनाया ने गुस्से से थूकते हुए कहा, "तुम एक घटिया आदमी हो, तुम्हें पता है ना, मुझसे ऐसी बकवास बातें पूछ रहे हो।"
मुझे पूछना ही पड़ेगा, है ना?
और यही सवाल तुम अपनी पत्नी से पूछो। मैं तो हमेशा वफादार रहा हूँ, जबकि तुम दूसरी तरफ पत्नियाँ चुराते फिरते हो।
“Suyodhan liked her.”
“और तुमने उसका अपहरण कर लिया? तुम तो बड़े राजा हो! ये सब बकवास काम तुम्हें शोभा नहीं देते।”
कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। "मैंने अपने दोस्त के लिए वही किया जो मुझे करना था।"
“हाँ, तुम उसके लिए सब कुछ करती हो, अपने परिवार के लिए नहीं। अगर तुमने अपने बच्चों को थोड़ा समय दिया होता, तो वे तुम्हारे और हमारे खिलाफ नहीं होते।”
सत्यसेना ठीक है। वह बस एक मूर्ख है।
“मैं बिल्कुल यही तो कह रही हूँ, वासु! तुम बचपन से ही ऐसी बातें करते हो। अपने बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार मत करो।”
“मैंने उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा मेरे साथ किया गया था। मुझे त्याग दिया गया, फेंक दिया गया, फिर भी मैं खड़ा रहा। मेरे बच्चों को अपने फैसले लेने की पूरी आजादी थी, और उन्होंने वही किया,” उन्होंने कहा। “उनके फैसले घटिया थे, इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।”
“वे फैसले भले ही गलत हों, लेकिन आपको उनके साथ रहना होगा। वे आपके बच्चे हैं, और अब उनमें से एक आपकी मौत की साजिश रच रहा है और दूसरा शायद उस योजना को अंजाम देने में गलती कर बैठेगा।”

शनाया गुस्से में कुछ कहने ही वाली थी, उसकी आँखों में निराशा की आग भड़क रही थी, लेकिन उसने खुद को रोकते हुए कहा, "मुझे तुम्हें कुछ बताना है।" "क्या?"
“मुझे तुम्हारे साथ एक और बच्चा पैदा करने से डर लगता है। मुझे समझ नहीं आता कि उसका क्या होगा। मैं बहुत डरी हुई हूँ। और मैं तुम्हारे बारे में कुछ ऐसी बातें जान रही हूँ, जो तुमने मुझसे छिपा रखी हैं।”
तुम भी छिप गए हो।
खाना उनके सामने आ गया। फिर स्वाद चखने वाले आए और कर्ण की थाली से एक निवाला लिया। उसे चबाया और फिर सहमति में सिर हिलाया।
"तुम कब से अपने लिए नमूने रखने लगे हो?"
"जबसे हमने हत्याएं शुरू की हैं।"
टेबल के दूसरी तरफ एक व्यक्ति आया और उसने शनाया के खाने की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन शनाया ने आपत्ति जताई।
मैं भय में जीना नहीं चाहता।
“मुझे अपने बच्चे की चिंता है। उसे इसका स्वाद चखने दो। राज्य में किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।” कर्ण की आवाज़ आदेश जैसी लग रही थी।
उसने उसकी ओर देखा और फिर चालाकी से सिर हिलाया, उसके बाद उसने खाने के पास आने दिया। उसने खाना चबाया, और एक पल के लिए कुछ नहीं हुआ, लेकिन फिर उसे खांसी आने लगी, और खांसी... धीरे-धीरे उसकी आंखें लाल हो गईं, उसकी त्वचा बैंगनी हो गई और वह जमीन पर गिर पड़ा।
नौकर आए और तुरंत कमरे को खाली करा दिया, जबकि कर्ण और शनाया भय से एक-दूसरे को देखने लगे।
“मैंने तुमसे कहा था,” कर्ण ने कहा। “बाहर कोई है जो तुम्हारी हत्या करने की कोशिश कर रहा है। क्यों? ऐसा क्यों है?”
नौकर घबरा गए, एक ने कहा: “महाराज और महाराज, जो खाना हमने आपको दिया था… गलती से हमने बदल दिया। वह थाली आपकी थी।” उसने कर्ण की ओर देखा।
कर्ण ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "मेरे भोजन तक किसकी पहुँच थी?"
“कोई नहीं, महाराज। सिर्फ़ रसोइये। और वे सब लंबे समय से आपके लिए खाना बना रहे हैं। इसलिए हमें शक है…” नौकर उलझन और चिंता में डूबा हुआ लग रहा था। “लेकिन हमने कुछ देखा था। कुछ गड़बड़ थी। उस खास व्यक्ति का महल की

रसोई में आना समझ से बाहर था, लेकिन हमने ध्यान नहीं दिया, पर अब जब आप मुझसे इस तरह पूछ रहे हैं, महाराज, तो मुझे शक होने लगा है।”
"कौन था?"
उसी क्षण एक परिचित व्यक्ति अंदर आया और अपने पुराने मित्र को देखकर कर्ण का चेहरा खुशी से चमक उठा।
“मैं रसोई में था,” सुयोधन ने कहा। “मैं ही था।”

23

वृकोदरा चट्टान से अंग राज्य को देख रहा था, और उसे अपनी शक्तिशाली मुट्ठी के नीचे जला देने के लिए तैयार था।
और वह हंस पड़ा।
वह उत्साहित था। यह एक निर्जन भूभाग के बीचोंबीच स्थित था, जहाँ विशाल पर्वतों जैसे ऊँचे-ऊँचे जंगल थे, जो इस संसार के देवताओं के समान प्रतीत होते थे। वृकोदरा के हाथ में खच्चर की हड्डियों से जड़ा हुआ दूरबीन था। वह स्पष्ट और तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहा था, उसकी पीठ पर लाल रंग का लबादा था, उसके पैर नंगे थे, कमर पर केवल एक लंगोटी थी और सोने की तरह चमकता हुआ कवच था। उसकी दाढ़ी छँटी हुई थी, जिसे उसने स्वयं छुरी से काटा था, और उसके बाल लंबे थे। वह पर्वतों के समान ही लंबा और ऊँचा खड़ा था, और अपने मुँह में भोजन चबा रहा था, मानो युद्ध से उत्पन्न होने वाले उत्साह से जूझ रहा हो। उसने पीछे मुड़कर अपनी सेना को देखा और पाया कि वे सभी अपनी तलवारों को सान पर तेज कर रहे थे, धनुष और बाणों की जाँच कर रहे थे, आवश्यक कवच पहने हुए थे, भोजन कर रहे थे और बकरी का दूध पी रहे थे, साथ ही जोश और ऊर्जा से भरे हुए थे। उसके चारों ओर की लाल मिट्टी धूल भरी और खून से लथपथ रेगिस्तान की तरह बिखरी हुई थी। वहाँ घोड़े, खच्चर, कुत्ते और हाथी थे, सभी जीवित थे, और हजारों सैनिक थे, सभी अपने लाल लबादे पहने हुए थे।
उसने बौने को छोटे-छोटे कदमों से उसकी ओर दौड़ते हुए देखा, और फिर पूछा, "क्या आपके पास समय है?"
मेरे पास दुनिया का सारा समय है।
आप किस चीज को निहार रहे हैं?
“नीचे की दुनिया।” वृकोदरा मुस्कुराया। “मैं उस तबाही को लेकर उत्साहित हूँ जो होने वाली है।”
“हाँ, वैसे तो अंगान सेना हमसे दस गुना बड़ी है। आप उनसे लड़ने की क्या योजना बना रहे हैं?”

“हम बेरहम हैं और हम किसी नियम का पालन नहीं करते। उन्होंने मेरे जैसा दरिंदा कभी नहीं देखा,” वृकोदरा ने कहा।
“फिर भी मैं गठबंधन बनाने की कोशिश कर रहा हूँ। तुम्हारे भाई की सेनाएँ समय पर नहीं पहुँच पाएँगी, और मुझे उम्मीद है कि मैं कुछ भाड़े के सैनिकों के साथ गाँवों और कस्बों के आसपास हमला कर सकूँगा, ताकि हमें कुछ मदद मिल सके,” पुक्कासती ने थकी हुई मुस्कान के साथ कहा।
वृकोदरा ने अपनी नाक फुला ली। "जो करना है करो, मेरे मित्र, लेकिन याद रखना, मैं कर्ण का सिर फोड़ दूंगा।"
“मैंने आपसे कभी नहीं पूछा कि आप उससे नफरत क्यों करते हैं, और खासकर अंगा से नफरत क्यों करते हैं। आर्थिक और राजनीतिक कारणों के अलावा, आपके यहां आने का एक अकाट्य कारण है।”
वृकोदरा ने कुछ और कहने के बारे में सोचा। "काफी समय हो गया है।"
“अच्छा। तो मेरे बताने के बाद तुम मुझे बताना। मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ खबर है।”
"मुझे बताओ।"
मेरे साथ चलो।
वृकोदरा ने वैसा ही किया और बौने के पीछे-पीछे एक बड़े तम्बू की ओर चल पड़ा।
“मुझे इस बात से बहुत गुस्सा आ रहा था कि हमारे खिलाफ आपके भाइयों तक किस तरह की बातें पहुंच रही थीं और मैं अक्सर सोचता था कि ऐसा कैसे हो रहा है। कौन बोल रहा था? मुखबिर कौन था? और मैंने अपनी जांच शुरू की। मैंने भी जासूस होने का नाटक करना शुरू कर दिया, और संयोग से मुझे वह व्यक्ति मिल गया, वह अपराधी जो धर्मराज को हमारे बारे में जानकारी दे रहा था।”
वे तम्बू में दाखिल हुए तो उन्होंने देखा कि वह आदमी घुटनों के बल बैठा हुआ था, उसके हाथ-पैर बंधे हुए थे, वह नग्न था और उसका चेहरा हर कोने से झुलसा हुआ था।
"कौन है ये?"
पुक्कासती ने कहा, "पैदल सेना का एक सिपाही, कई सैनिकों में से एक। मैंने उसे संदेशवाहकों को पत्र पहुंचाते हुए पाया।"
वृकोदरा ने उस आदमी को देखा, जिसे पुक्कासती और उसके आदमियों ने बेरहमी से पीटा था। वृकोदरा को इस पर बहुत बुरा लगा। उसने बहुत पहले अपनी सेना

बनाई थी, इन आदमियों को चुन-चुनकर, ताकि वे कभी उसका विश्वासघात न करें।
उसकी सेना का नाम 'क्रूर सेना' था, और उसमें सर्वश्रेष्ठ योद्धा होते थे।
उन्हें आम नागरिकों में से भर्ती नहीं किया गया था। वे पहलवान, योद्धा, कैदी और हत्यारे थे। उन्होंने 'क्रूर सेना' के प्रति निष्ठा की शपथ ली थी।
और फिर उनकी चमड़ी पर गर्म लोहे से हाथी का चिन्ह अंकित किया गया था। “तुम्हें पता है, मैंने यह रेजिमेंट मुख्य रूप से इसलिए शुरू की थी क्योंकि मुझे हमारी कंपनी के सैनिकों के साहस और बहादुरी पर भरोसा नहीं था,” उसने पुक्कासती से कहा। “हमारे राजसी सैनिक। वे कमज़ोर थे। वे थके हुए थे। उन्हें ठीक से खाना नहीं मिलता था। जब मैंने ब्रूट कंपनी शुरू की, तो मैंने सबको बेहतरीन भुना हुआ मांस खिलाया, उन्हें बेहतरीन कपड़े दिए और बेहतरीन औरतें मुहैया कराईं। वे राजाओं की तरह रहते और खाते थे, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि वे सबसे बेहतरीन थे, और इसीलिए राज्यों को जीतने के मामले में हमारा रिकॉर्ड सबसे ऊंचा है। छोटी सेना के साथ, हमने कम नुकसान उठाया है और ज़्यादा हासिल किया है। और जब मैं अपने ही आदमी को बिकते हुए देखता हूँ…पता नहीं…तो मुझे बहुत दुख होता है।”
उसने नीचे उस सिपाही की ओर देखा जिसके मुंह में कपड़ा ठूंसा हुआ था, और उसने उसे बाहर खींच लिया। वह आदमी बुरी तरह पसीना बहा रहा था, हांफ रहा था और तुरंत माफी मांगने लगा।
“तुमने ऐसा क्यों किया?” उसने पूछा। “धर्मराज ने ऐसा क्या दिया जो मैंने नहीं दिया? तुम मेरे साथ यशमय जीवन व्यतीत करते थे, तो फिर ऐसा क्या था?” वह बोल नहीं पा रहा था, तभी वृकोदरा ने देखा कि उसकी जीभ नहीं है, इसलिए वह केवल रो रहा था और सिसक रहा था।
“उसकी जीभ कब चली गई?” वृकोदरा ने पुक्कसती से पूछा।
"बचपन में, ऐसा लगता है, यही मुझे कुछ लोगों से बात करने के बाद पता चला।" “अजीब बात है,” वृकोदरा ने कहा। “एक सैनिक और पैदल सेना के जवान के रूप में, मैं कभी किसी अपंग या गूंगे व्यक्ति को भर्ती नहीं करूंगा। इससे मुझे आश्चर्य होता है कि उसकी भर्ती को किसने मंजूरी दी?”
पुक्कासती ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैं और अधिक जांच कर सकती हूं।"
“उसे वापस भेज दो,” उसने कहा, उस सैनिक के प्रति क्षमा भाव रखते हुए जो केवल अपना कर्तव्य निभा रहा था। “और उसके हाथ में एक पत्र दे दो ताकि वह उसे मेरे भाई तक पहुंचा सके।”

आप इसमें क्या लिखवाना चाहते हैं?
वृकोदरा ने आगे अपनी सेना को देखा और मुस्कुराते हुए कहा, “उसे बता देना कि मैं उसका राज्य जीतने नहीं आया हूँ। मैं कर्ण का सिर फोड़ने आया हूँ। बदला लेने के लिए। अपने लिए।”

24

वृषकेतु को जरा पर भरोसा नहीं था।
लेकिन उसके पास चोर और लुटेरे का पीछा करने के अलावा कोई चारा नहीं था। जरा से सौ मरे हुए सूअरों जैसी बदबू आ रही थी और वह बार-बार थूकता था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसने सालों से स्नान नहीं किया था, और यहाँ तक कि उसे सवारी के लिए दी गई घोड़ी भी उसके बैठने से असहज हो रही थी।
“क्या हम उस पर भरोसा कर सकते हैं?” वृषकेतु ने तृप्ति से फुसफुसाते हुए पूछा।
“तुम ही बताओ। तुमने मुझे उसे पीटने नहीं दिया।”
वृषकेतु ने सिर हिलाया। गलत व्यक्ति से पूछ रहे हो।
"तुम्हें सबको पीटना इतना पसंद क्यों है?"
"क्योंकि वह इसके लायक है। उसने एक नरसंहार करने वाले सनकी के असली सबूतों को छिपाकर एक घिनौना काम किया है और तुम्हारे पिता ने भी इसमें हिस्सा लिया है।"
"इससे पहले कि हम इस निष्कर्ष पर पहुंचें कि मेरे पिता एक बुरे इंसान हैं, क्या हम उनसे बात कर सकते हैं?"
जरा सीटी बजा रही थी, जैसे ही वे घनी हरियाली के बीच से एक खुले मैदान से दूसरे खुले मैदान की ओर बढ़े, उन्हें पास की घाटी से आती हुई संगीत की आवाज़ सुनाई दी। गौरैया चहचहा रही थीं और तितलियाँ आकाश में मंडरा रही थीं। यह अंगा का सुंदर दक्षिणी भाग था, जहाँ लकड़ी के जंगल समाप्त होते थे और विभिन्न प्रकार के पेड़ दिखाई देने लगते थे। अंगा हमेशा से देश का एक सुंदर हिस्सा रहा है, लेकिन दुर्भाग्य से, नौसेना उत्पादन के कारण वनों के नष्ट होने से अंगा का एक बड़ा हिस्सा शुष्क हो गया, जहाँ तूफान और धूल भरे मैदान हैं।
"हम कहाँ जा रहे हैं?"
"उस जगह पर जहां मैंने मणि को छिपाया था।"

“क्या बात है?” वृषकेतु ने पूछा।
आपको यह जानने की जरूरत नहीं है। आपको बस इतना पता होना चाहिए कि मणि कहाँ है।
मैं जानना चाहता हूँ कि क्या हुआ था।
उसने अपना सिर हिलाया और ज़मीन पर थूका। “मैं एक निषाद हूँ, मनुष्यों की दुनिया से बाहर, पशुओं की दुनिया में। मैं भोजन के लिए पेड़ काटता और जानवरों का शिकार करता था। मैं एक साधारण व्यक्ति था। लेकिन फिर परिस्थितियों ने मुझे चोर बनने पर मजबूर कर दिया। जीवित रहने के लिए, मैंने चोरी की, अपहरण किया और मनुष्यों की दुनिया से बाहर रहने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी, जब तक कि राज्य के लोग सूर्य के चिन्ह के साथ प्रकट नहीं हुए और मुझसे मदद नहीं मांगी। उन्होंने कहा कि भगवान कर्ण को मेरी मदद चाहिए और वे चाहते थे कि मैं हस्तिनापुर से कुछ चुराऊं, और यह काम चुपके से करना था। मैं इस कला में निपुण था, इसलिए मैंने यह घिनौना काम किया। मैं जो चुराया था, उसे यहाँ ले आया।”
लेकिन क्या आपको पता था कि आप क्या चुरा रहे थे?
“जी हाँ। भगवान कर्ण को पता था कि उन्हें क्या चाहिए और क्यों चाहिए। मणि ही नाग जाति का एकमात्र प्रमाण है, जिससे पता चलता है कि कुरु वंश के लोगों ने नागों का नरसंहार किया था। हर नाग वंश की अपनी एक मणि होती है जिसकी वे पूजा करते हैं, और यह अविनाशी है, और अपने आप में अनूठी है। हर नाग वंश इसकी विशिष्टता और इसके स्रोत के बारे में जानता है। अगर उन लोगों के पास वह मणि है, तो इसका मतलब है कि वे हिंसा के पीछे हैं—क्योंकि नाग वंश और नाग सरदार कभी भी मणि को नहीं सौंपेंगे, क्योंकि यह भगवान विष्णु के शेषनाग की है। अगर यह प्रमाण नागों को सौंप दिया गया, तो एक भयंकर युद्ध होगा, एक ऐसा युद्ध जो सर्वनाशकारी होगा। भगवान कर्ण ने इसे क्यों चुराया, यह मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था।”
वृषकेतु के मन में एक विचार था। कर्ण इसे चारा बनाना चाहता था, और इसे सौंपने के बजाय, एक सभ्य व्यक्ति होने के नाते, उसने इसे अपने राज्य में छिपाकर रखा ताकि कर्ण इसे फिरौती के रूप में इस्तेमाल कर सके। वृषकेतु चाहता था कि काश उसे कुछ पल ऐसे मिलते जब वह अपने पिता का सम्मान कर पाता, लेकिन ऐसा कोई अवसर नहीं था, और उसने कभी उन्हें ऐसे मौके नहीं दिए।
वे उस जगह पर पहुँच गए जहाँ उसे होना चाहिए था।

"जहां तक मुझे याद है, मणि यहीं पर, इन ऊंचे पेड़ों के आगे स्थित है। मैं यहां इसकी देखभाल के लिए अक्सर आता रहता हूं, और इसकी अच्छी तरह से रखवाली की जाती है," जरा ने कहा।
वृषकेतु घोड़ी से उतरा और झाड़ियों में से देखते हुए आगे बढ़ा, तभी उसे ठीक सामने एक छोटी सी झोपड़ी दिखाई दी। उसमें एक परिवार रहता था। एक पुरुष, एक स्त्री और एक बच्चा, वे बाहर खाना पका रहे थे और हंसते-खेलते आनंद ले रहे थे।
“यह बात समझ में नहीं आती। ये तो बस एक साधारण किसान परिवार है,” वृषकेतु ने कहा।
"कुंआ…"
लेकिन जरा कुछ समझा पाता, उससे पहले ही तृप्ति झाड़ियों से होकर गुजरी और अपने खंजर से परिवार पर झपट पड़ी। वे क्षण भर के लिए भयभीत हो गए। वृषकेतु तुरंत उसके पीछे भागा ताकि वह बेचारे को नुकसान न पहुंचाए, क्योंकि उसे समझ आ गया था कि जरा कोई घिनौना खेल खेल रहा है।
“मणि कहाँ है?” तृप्ति ने हाथ में कटार पकड़े हुए पूछा। “मुझे दे दो।” किसान असमंजस में था, अपने परिवार को बचाने की कोशिश कर रहा था, और जो कुछ अभी-अभी घटित हुआ था उससे भयभीत था।
वह गुर्राई, "मुझे दे दो!"
वृषकेतु ने उससे कटार छीन ली, लेकिन तृप्ति ने उसका विरोध किया और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। उस हाथापाई में वृषकेतु ने कुछ देखा। किसान के हाथ से एक और चाकू निकला और उसने तृप्ति पर वार किया। यहाँ तक कि बच्चा भी चाकू लेकर वृषकेतु पर झपटा, उस पर हमला करने के लिए तैयार था, लेकिन वृषकेतु ने उसे लात मारकर ज़मीन पर गिरा दिया। वहीं पत्नी ने पास पड़ा घड़ा उठाया और उसके माथे पर मारने की कोशिश की। वे कुशल योद्धा थे। बच्चा झोपड़ी के अंदर भागा और धनुष लेकर तृप्ति पर तीर चलाया, लेकिन वृषकेतु बीच में कूद गया और तीर अपने शरीर पर खा लिया। किसी कारणवश, वह हर बार तृप्ति की रक्षा करना चाहता था।
उसने तीर निकाला और तुरंत उस आदमी पर फेंक दिया, जिसकी आंख में तीर लग गया। औरत ने उसे फिर से बॉयलर से मारने की कोशिश की और उस पर गुर्राने लगी, लेकिन तब तक तृप्ति ने खंजर उसके शरीर में घुसा दिया था। बच्चे ने अपनी नाक

फुलाई और फिर से धनुष चलाने की कोशिश की, लेकिन तभी जरा उसके पीछे आ गया और उसे पत्थर से मारकर गिरा दिया।
"वह बहुत ही परेशान करने वाला बच्चा है," उसने frowning हुए कहा।
“तो यह क्या था?” वृषकेतु घायल अवस्था में खड़ा हो गया, जबकि तृप्ति, जिसे चाकू से वार किया गया था, उसके कंधे से खून बह रहा था।
“खुलेआम भेस बदलकर रहना। अगर वे असली पहरेदार तैनात करते हैं, तो ऐसा लगता है कि झोपड़ी में कुछ छिपा हुआ है। लेकिन जब यह सिर्फ एक किसान परिवार है, तो कुछ भी नहीं। यह सिर्फ एक परिवार है,” जरा ने कहा। “जब मैं पहली बार यहाँ आया था तो मैं भी उलझन में था, लेकिन वे प्रशिक्षित सैनिक थे, यहाँ तक कि वह छोटा बच्चा भी।”
जरा के मार्गदर्शन में वृषकेतु लंगड़ाते हुए कुटिया के अंदर मणि के दर्शन करने गया। लेकिन अंदर उसने जो देखा वह आश्चर्यजनक था, क्योंकि उसे वहाँ…
कुछ नहीं।
“क्या यह मजाक है?” तृप्ति ने पूछा।
"ज़रा सब्र रखो," जारा ने कहा और घुटनों के बल बैठकर फर्श पर बने छोटे से डिब्बे को खोला, जो किसी भूमिगत सुरंग जैसा लग रहा था।
वे अंधेरे इलाके और एक छोटी सी गुफा में उतरने लगे, जब तक कि उन्हें गुफा के अंत में प्रकाश दिखाई नहीं दिया। वृषकेतु और तृप्ति दोनों ही दर्द से कराहते हुए बड़ी मुश्किल से आगे बढ़ रहे थे, और अंत में उन्हें वह मिल गया जिसके लिए वे आए थे।
मणि।
लेकिन नीलमणि पत्थर की अपेक्षा के विपरीत, वृषकेतु ने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जिसके बाल बिखरे हुए थे, वह दीवार से जंजीरों से बंधा हुआ था, कोने में भोजन रखा था, उसका शरीर गठीला था और उस पर घावों के निशान थे। उस व्यक्ति ने ऊपर देखा और वृषकेतु ने उसका माथा देखा।
उस पर एक मैनीक्योर बना हुआ था।
वह जानता था कि वह कौन था। उसने उसे बहुत समय पहले दरबारों में देखा था, यज्ञों और राजसी आयोजनों में भी देखा था, और उसका नाम उसके हृदय में फुसफुसाहट की तरह निकला।
“अश्वत्थामा।”

25

सत्यसेना ठंडे, धूल भरे रेगिस्तान में वापस लौट रहा था, इस उम्मीद में कि वह सही समय पर राज्य के द्वार तक पहुंच जाएगा।
आकाश और भी नीला हो गया था, और रेगिस्तान अंधेरे में डूबा हुआ था, जिससे उसकी रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन और झनझनाहट सी दौड़ गई। लेकिन उसे यकीन नहीं था कि जो उसने देखा था, उसी ने उसे घुटनों पर ला दिया था। वह महारोगाओं के साथ हुए पूरे घटनाक्रम पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। दो विद्रोही जानवर कैसे ऐसे नरभक्षी लोगों की आजीविका को भ्रष्ट कर सकते थे, लूट सकते थे और नष्ट कर सकते थे? वे ऐसा कैसे कर पाए? यह असंभव लग रहा था, और फिर उसके साथियों ने यह मनगढ़ंत कहानियां गढ़नी शुरू कर दीं कि महारोगा शायद इंसान नहीं हैं।
सत्यसेना ने उन्हें चुप रहने को कहा था, इसलिए नहीं कि वह उनसे सहमत होने लगा था, बल्कि इसलिए कि वह डरा हुआ था। वह उन बच्चों में से एक था जो सात साल की उम्र तक माँ का दूध पीना चाहता था।
वह समय से पहले ही परिपक्व हो गया था, लेकिन दिल से बच्चा था। वह विद्रोही भी था और हर चीज़ से लड़ना चाहता था, लेकिन कार्रवाई करने में डरपोक था। जब वह ऊंचे रेगिस्तान में घोड़े पर सवार होकर जा रहा था, तो उसने ऊपर देखा और एक गिद्ध को उनके ऊपर मंडराते हुए पाया। सत्यसेना एक पल के लिए असमंजस में पड़ गया, तभी एक तीर उसके कानों के पास से गुजरा और उसके एक साथी के सिर पर जा लगा।
तीरों की बौछार के बीच वह सिपाही और बाकी सिपाही ज़मीन पर गिर पड़े। डर से कांपते घोड़े ने सत्यसेना को नीचे गिरा दिया और वह ठंडी रेत पर जा गिरे। घोड़े हिनहिनाने लगे और सत्यसेना घबराए हुए और असमंजस में थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अभी-अभी क्या हुआ है। उन्होंने बाकी सिपाहियों को देखा, जिनमें से अधिकतर मृत थे, जबकि कुछ ने अपनी ढालें उठा रखी थीं।

सत्यसेना ने भी अपनी रक्षा के लिए अपनी ढाल को कसकर पकड़ लिया और आगे आने वाले तीरों का इंतजार करने लगा।
“कौन है?” उसने चिल्लाकर पूछा, लेकिन रेगिस्तान के नीले-से अंधेरे में वह दुश्मन को देख नहीं पाया।
सत्यसेना हांफते हुए बचे हुए चालक दल के साथियों के करीब पहुंची।
“यह बुरा है। यह सचमुच बहुत बुरा है।” उनमें से एक ने कहा।
"शांत हो जाएं।"
सत्यसेना ज़मीन पर लड़खड़ाया और रेत पर शरीर टिकाकर आगे बढ़ने लगा, ताकि दुश्मन की नज़र से बच सके। वह आगे बढ़ता रहा, उसके साथी उसके पीछे-पीछे फुसफुसाते हुए उसका हौसला बढ़ाते रहे:
“महारोगे समुदाय को पता चल गया है कि हमने उनका नरसंहार देखा है। वे कोई गवाह नहीं छोड़ना चाहते और इसलिए हमें मारना चाहते हैं। मुझे नहीं पता… मैं डरा हुआ हूँ।”
सत्यसेना भय से दबी आवाज़ में गुर्राया, फिर गुस्से में आकर उसने अपने सिपाही को चुप कराने के लिए एक थप्पड़ मारा। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, सत्यसेना को दूर से एक भयानक दृश्य दिखाई दिया। कुछ मायनों में भव्य भी। रेगिस्तान के किनारे, जहाँ चाँद उगता था और ज़मीन खत्म होती थी, वहाँ एक भैंस खड़ी थी और उस पर एक लंबा-चौड़ा आदमी बैठा था, जिसके हाथ में गदा थी। उसके बगल में अर्धवृत्त बनाकर तीरंदाज खड़े थे। सभी धनुषों से सत्यसेना निशाना साधे खड़े थे। भैंस पर सवार वह आदमी उनकी ओर बढ़ा जबकि सत्यसेना अपने सैनिकों के साथ वहीं रुके रहे।
“मेरी रक्षा करो! मेरी रक्षा करो, तुम छोटे सूअरों!” उसने एक सैनिक को लात मारी, जो अपने राजकुमार की रक्षा के लिए अपनी तलवार लेकर खड़ा हो गया, और भैंस जैसे दिखने वाला वह आदमी उसकी ओर दौड़ा और उसे अपने गदा से मारा, जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो गया।
सत्यसेना ने दूसरे सैनिक को घटनास्थल से भागते हुए देखा, लेकिन धनुषों की मार उस पर पड़ी और वह कुछ ही गज की दूरी पर गिरकर मर गया। सत्यसेना एक लाश की तरह जमीन पर पड़ा रहा, इस उम्मीद में कि शायद उसे कोई पहचान न पाए।
लेकिन भैंसों पर सवार वह आदमी उठा और अपनी गदा लहराते हुए उसकी ओर बढ़ा।
“छोटे लड़के, अपना शानदार चेहरा दिखाओ,” उन्होंने कहा।

सत्यसेना भय से पंगु हो गया था, ठीक से हिल भी नहीं पा रहा था, लेकिन भैंसों वाले आदमी ने उसे पलटकर उसका चेहरा देखा, फिर उसे हवा में उठा लिया। वह विशालकाय के सामने बौने जैसा छोटा लग रहा था। सत्यसेना ने उसके चेहरे और उसके राजसी, क्रूर नैन-नक्श को देखा। उसने उस आदमी को कई रथ दौड़ और तलवारबाजी के मुकाबलों में देखा था, जहाँ वह अक्सर सबसे खतरनाक जानवरों को भी मार गिराता था।
वह जानता था कि वह कौन है।
“देखो तो यहाँ कौन है।” वृकोदरा ने अपने टूटे हुए दांत दिखाते हुए मुस्कुराते हुए कहा। “सुता का अपना बेटा है, है ना? मेरी किस्मत! और मैंने सोचा था कि मैं सिर्फ एक काफिले पर हमला कर रहा हूँ, ताकि राज्य की योजनाओं के बारे में कुछ जानकारी हासिल कर सकूँ।”
सत्यसेना ने लड़ने और पीछे धकेलने की कोशिश की, लेकिन फिर उसने हार मान ली, क्योंकि वृकोदरा लगातार मुस्कुराता रहा। “तुम ही तो असली हो, है ना? दूसरा तो हमारी सेवा करता है। तुम्हारे पिता के शत्रुओं की सेवा करता है। तुम्हारा इरादा क्या है?”
मैं सिंहासन के प्रति बेवफा नहीं होऊंगा।
“ये तो तुम्हारी मूर्खता है। मैं उस सिंहासन को चकनाचूर कर दूंगा। इसलिए बेहतर होगा कि तुम मेरी मदद करो, वरना अपने लोहे के सिंहासन की राख खानी पड़ेगी।” वह मुस्कुराया।
सत्यसेना ने अपने होंठ चाटे, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसने महान भीम की कहानियाँ सुनी थीं। वह नंगे हाथों से खोपड़ियाँ कुचल सकता था, केवल अपनी उंगलियों से रीढ़ की हड्डियाँ तोड़ सकता था, और उसकी एक नज़र ही किसी को हज़ारों देवताओं का भय दिलाने के लिए काफी थी।
“आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?” उसने डरते हुए पूछा।
“कुछ नहीं।” वह मुस्कुराया।
लेकिन यह बिल्कुल भी मामूली बात नहीं थी।
यह कभी भी शून्य नहीं था।

26

कर्ण अपने मित्र के आने से बहुत प्रसन्न था। लेकिन साथ ही वह चिंतित भी था, यह सोचकर कि उसका मित्र ऐसा क्या चाहता है जिसके लिए उसे अंगा में आना पड़ा।
रात्रि भोज के दौरान हुए पूरे घटनाक्रम के बाद, कर्ण सुयोधन को टहलने के लिए बाहर ले गया, और वे महल के बगीचों में टहलते हुए चुपचाप विचार-विमर्श करते रहे।
“आप सोच रहे होंगे कि मैं रसोई में क्यों हूँ?” उसने पूछा।
“क्या तुम मुझे जहर देने की कोशिश कर रहे थे?” कर्ण ने कहा।
“काश ऐसा होता! तब तो तुम मुझे परेशान करना बंद कर देते।” वह हँस पड़ा। “लेकिन नहीं, बात कुछ और थी। मुझे शाही परिवार के मुखिया पर जानलेवा हमलों की खबरें सुनने को मिल रही थीं।”
"हाँ।"
“और मैं अक्सर यह मानता था कि किसी को मारने का सबसे अच्छा तरीका उसे जहर देना है, इसलिए मैं रसोई का अनौपचारिक निरीक्षण करने गया, लेकिन मुझे वह बिल्कुल ठीक लगी। वहाँ उचित सुरक्षा व्यवस्था थी, सब कुछ व्यवस्थित था। रसोइये अपने काम के प्रति समर्पित और वफादार थे। सब कुछ एकदम बढ़िया लग रहा था।”
और फिर भी, खाने में जहर था।
उन्होंने सिर हिलाया। “हाँ, इससे मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसा क्यों हुआ। इतनी सारी जाँच के बाद भी। इसका मतलब है कि खाना रसोई से बाहर निकलने के बाद जाँच की गई।”
"वास्तव में।"
“तो शायद किसी नौकर ने मारा होगा,” उसके हाथ में सोने की छड़ी थी और चेहरे को ढकने के लिए एक हुड था। “या शायद कोई दासी, या सफाईकर्मी। कोई भी हो सकता है।”

“क्या तुम यहाँ जासूस बनने आए हो?” कर्ण हँसते हुए बोला। “क्योंकि तुम तो बड़े ही जिज्ञासु लगते हो।”
"मुझे अपने दोस्त की जान की चिंता तो है ही," उसने सिर हिलाते हुए कहा। “भले ही तुमने कई मौकों पर मेरी जान खतरे में डाली हो?” कर्ण मुस्कुराया।
"हाँ बिल्कुल।"
क्या आपने महारोगों के बारे में सुना है?
“बिल्कुल। जाहिर तौर पर, वे लौट आए हैं,” सुयोधन ने कहा। “लेकिन फिर, हमारे आदमी नागा बस्तियों की तलाशी लेने गए थे, और वे ऐसे व्यवहार कर रहे हैं जैसे वहां कुछ है ही नहीं।”
कर्ण ने सिर हिलाया। “मुझे लग रहा है कि कुछ गड़बड़ है। मुझे लग रहा है कि नाग झूठ बोल रहे हैं।”
“हो सकता है। ये लोग स्वभाव से ही घृणित रहे हैं, इन्होंने समझदारी और सभ्यता की जगह हिंसा और अत्याचार को चुना है।” सुयोधन ने धीमी आवाज़ में कहा। उसे ऐसे लोगों से घृणा थी। “मुझे अब भी लगता है कि ये सब मनगढ़ंत कहानियाँ हैं और जिन महारोगों को हत्याओं का दोषी माना जा रहा है, वे असल में महारोग नहीं बल्कि उनके नक़ल थे। ये नागों की पुरुषों को डराने की कोशिश भी हो सकती है। तुम्हें पता है ना कि महारोगों का ये डर कैसे शुरू हुआ था?”
कर्ण ने अपने होंठ सिकोड़े और ना में सिर हिलाया।
“हाँ, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे पुरुषों में भय पैदा करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नागों का निर्माण किया, जो उन्हीं के हिंसक, भयानक और भयंकर रूप थे, जिनका खून विष से लथपथ होता था, जिनके चेहरे उनके शिकारों की राख से सफेद हो जाते थे और अजगर उनके सेनापति होते थे। उनका उद्देश्य पुरुषों को डराना था, और कई लोग डर भी गए,” सुयोधन ने कहा। “लेकिन कई लोगों ने इस दिखावे को पहचान लिया और उनकी ज़मीनों पर कब्ज़ा कर लिया, और उनकी वनस्पति को नष्ट कर दिया। कहा जाता है कि महारोग तब लौटेंगे जब नाग पृथ्वी के भंडार से मुक्त हो जाएँगे, जब वे खतरे में होंगे। मुझे नहीं पता। मुझे इन सब पर संदेह है। यह किसी बूढ़ी औरत की मनगढ़ंत कहानी लगती है।” वह मुस्कुराया।
“शायद। तुम यहाँ क्यों हो?” उसने पूछा।

क्योंकि मुझे आपकी मदद की जरूरत है।
“Bhanumati ran away?” He smirked.
सुयोधन ने उसके कंधे पर हल्के से घूंसा मारा। “नहीं, लेकिन जो समझौता हुआ था, उससे मैं पूरी तरह से असहमत हूँ। मैं नहीं चाहता कि युधिष्ठिर इंद्रप्रस्थ का राजा बने। वह भूमि मेरी भी है, और उसे मुझे देनी ही होगी। जिस तरह से वह अश्वमेध साधना कर रहा है, जल्द ही उसके अधीन अधिकांश राज्य आ जाएँगे, और इंद्रप्रस्थ हस्तिनापुर से भी अधिक विशाल और व्यापारिक हो जाएगा, और तब वह निश्चित रूप से मुझ पर आक्रमण करेगा। उस समय उसे नैतिकता की कोई परवाह नहीं होगी।”
“धर्मराज कभी झूठ नहीं बोलते।” कर्ण ने इस कथन को दोहराया, जिसकी गूंज पूरे कुरु वंश में सुनाई दी। युधिष्ठिर ने कभी झूठ नहीं बोला, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं था कि वे हमेशा सच बोलते थे।
“मुझे पता है, लेकिन सब कुछ हो चुका है। हम अब उनसे लड़ नहीं सकते। यह समझौते का हिस्सा था।”
“शायद। लेकिन…एक तरीका है।” वह मुस्कुराया। “वह हमें दे सकता है।”
और यह कैसे काम करेगा?
“आप जानते हैं कि वह जुआरी है, उसका पूरा गिरोह जुआरी है। मेरा सुझाव है कि हम उसे बातचीत की मेज पर लाएं और उसके साम्राज्य पर दांव लगाएं।”
“और हम शर्त लगाएंगे?”
“हमें ऐसा करने की जरूरत नहीं है। हम जीतेंगे,” सुयोधन ने पूरे विश्वास के साथ कहा।
“यह कैसे काम करेगा?”
“मैं गांधार के एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ, जिसके पास ऐसे पासे हैं जो उसका साथ देंगे। लेकिन हमें उन्हें अभी लाना होगा, और हमें अभी हमला करना होगा।”
कर्ण ने अपनी नाक फुला ली, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह दुविधा में था, और वे दोनों एक फव्वारे के पास रुक गए थे। “मैं तुम्हें कभी ना नहीं कहूंगा, सुयोधन। लेकिन मुझे इस योजना से पीछे हटना पड़ेगा।”
उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "क्यों?"
"मेरे पास यहाँ बहुत काम है। और मैं आपके साथ कुछ भी शुरू करने से पहले उस पर काम करना चाहूँगा।

सुयोधन ने अपने जबड़े भींचे और सिर हिलाया। "मैं अपने एक भाई को तुम्हारी जगह का शासक बना सकता हूँ, और तुम मेरे साथ आ जाओ।"
“मुझे राज्य खोने का डर नहीं है। मुझे अपने परिवार का डर है।” कर्ण ने आह भरी। “मुझे डर है कि मैं एक अच्छा पति, अच्छा पिता या अच्छा राजा नहीं बन पाया। और मुझे इस पर काम करना होगा। हो सकता है कि माता-पिता बनने और विवाह को लेकर मेरे विचार थोड़े अटपटे हों, लेकिन मुझे उन्हें सुलझाना होगा। एक बार जब मैं ऐसा कर लूँगा, तो मैं निश्चित रूप से तुम्हारे पास लौट आऊँगा और हम योजना को अंजाम देंगे। लेकिन अगर तुम इंतज़ार नहीं कर सकतीं, तो मैं समझूँगा और तुम जो चाहो वो करने के लिए स्वतंत्र हो।”
सुयोधन ने बड़े ही प्यार से उसकी पीठ थपथपाई। “मैं तुम्हारे बिना यह नहीं कर सकता, मेरे प्यारे दोस्त। दुर्भाग्य से, तुम ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हो जो मेरे विचारों की परवाह करते हो।”
और वे दोनों हंस पड़े।
“मैं इंतजार करूंगा,” सुयोधन ने गंभीरता से कहा। “लेकिन अगर आपको किसी भी तरह की मदद की जरूरत हो, चाहे वो कोई भी मदद हो…”
“मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। मेरे पास पूर्व में सबसे बड़ी सेना है। मेरे पास भोजन है और मनोरंजन के सारे साधन मौजूद हैं। इसलिए, धन्यवाद। मुझे आपकी मदद की ज़रूरत नहीं है। हस्तिनापुर वापस जाइए और मेरा इंतज़ार कीजिए।”
“याद रखना, अगर तुम खतरे में हो, तो मैं तुम्हारे साथ हूँगा।” उसने अपने दोस्त को गले लगाया। “भले ही तुम मुझे न बुलाओ, मैं आऊँगा। मेरी नज़र तुम पर है, मेरे प्यारे दोस्त।”
और वे एक-दूसरे को गले लगाते, मुस्कुराते रहे और कर्ण को लंबे समय बाद अपने दिल में सचमुच खुशी का एहसास हुआ।

27

शनाया जानती थी कि उसका पीछा किया जा रहा है।
सुयोधन के लौटने और फिर चले जाने के बीच, शनाया को चुपके से बाहर निकलने और मेनांडर से मिलने का समय मिल गया, क्योंकि वह उनसे एक ज़रूरी बातचीत करना चाहती थी। लेकिन जब तक वह एक नकाब के नीचे छिपकर, अपने थोड़े से दिख रहे गर्भवती पेट के साथ, भागने में कामयाब हुई, तब तक शनाया ने देखा कि अष्टार के भूरे रंग के लबादे पहने अनुयायी आसपास ही थे। और जिधर भी वह मुड़ती, वे वहीं मौजूद थे।
शनाया जानती थी कि अष्टार ने उसे बुरी तरह फंसा लिया है। असल में, अष्टार उसे कभी पसंद नहीं करता था। उसे देश के मूल निवासियों के प्रति एक अजीब सा आकर्षण था, और वह विदेशियों से नफरत करता था, जो उसी की तरह के लोग थे।
वह बाज़ार की ओर बढ़ी जहाँ लोगों की भारी भीड़ थी, सभी चिल्ला रहे थे, हंस रहे थे और मोलभाव कर रहे थे, और जैसे ही वह मुड़ी, उसने देखा कि दो नकाबपोश अनुयायी तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे, यह कोशिश करते हुए कि उसे पता न चले कि उसका पीछा किया जा रहा है।
क्या इसके पीछे कर्ण का हाथ था?
लेकिन फिर उन्हें कैसे पता चलेगा कि वह भाग निकली है? वह पिछली बार की तरह ही चुपके से निकल गई थी, जब उसने अपने बेटे की रक्षा करने की कोशिश की थी।
बाज़ार खत्म होते ही उसने सड़कों का जाल देखा और मुड़कर देखा। दीवार से सटकर खड़ी होकर वह उनकी प्रतिक्रिया देखने का इंतज़ार करने लगी। उसने झाँककर देखा तो पाया कि उसके पीछे चलने वाले लोग बेपरवाही से दूर जा रहे थे, मानो वे उसका पीछा ही न कर रहे हों। वह असमंजस में पड़ गई। एक पल के लिए उसने सोचा...
नहीं।
वह अत्यधिक चिंतित थी। उसने अपने चेहरे से पसीना पोंछा और गहरी सांस ली।

मैं क्या बन गई हूँ? उसने खुद से पूछा।
वह उस स्थान की ओर गई जहाँ मिलन स्थल तय था, यानी शहर के बाहरी इलाके में स्थित श्मशान घाट की ओर। उसने स्थानीय गाड़ी ली और चारों ओर शहर का नज़ारा देखा। गरीबी कम थी और भिखारी भी उतने नहीं थे। सैनिक हर चौराहे पर पैदल चल रहे थे, व्यापारी अपने कपड़े या मिठाइयाँ बेच रहे थे। हथियार बनाने के कारखाने थे। रईसों की गाड़ियाँ थीं, और कलाकार सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे थे, या तो गा रहे थे या बंदर के साथ खेल रहे थे और लोगों को तरह-तरह के करतब दिखा रहे थे। यह ऊर्जा से भरपूर राज्य था, जिसमें चौड़ी सड़कें, ऊँचे-ऊँचे घर और हमेशा बढ़ती चहल-पहल थी।
वह श्मशान घाट पहुंची और सावधानीपूर्वक तहखाने में प्रवेश कर भूमिगत गुफा में उतर गई, जहां उसने मेनांडर को एक शव को अंत्येशी को भेजने के लिए तैयार करते हुए देखा।
मैं चाहता हूं कि हम रुक जाएं।
“और क्या रोकूँ?” वह पीछे मुड़ा। उसने दस्ताने पहने हुए थे और वह अपने काम में व्यस्त था।
हमारी योजनाओं को रोकें।
“तो फिर तुम इतनी दूर क्यों आए? मुझे ये बताने के लिए।” उसने दस्ताने उतारकर हाथ पोंछे। “तुम्हें अपने पिता की मौत का बदला लेना होगा। और अब तुम डर रहे हो, उनकी जान पर हुए एक हमले के बाद। अगर उस मूर्ख नौकर ने गड़बड़ न की होती, तो वो मर जाते।”
उसने अपने जबड़े भींच लिए। मेनांडर ने उसके खाने में ज़हर मिलाया था, और उससे उसकी मौत होनी थी, न कि खाने का स्वाद चखने वाले की।
शनाया आगे बढ़ी और उसने उस शव को देखा जिस पर वह काम कर रहा था, और वह उसे कुछ-कुछ जाना-पहचाना सा लगा।
उन्होंने कहा, “मुझे आश्चर्य हुआ कि एक सर्वर इतनी भयानक गलती कैसे कर सकता है। हमें कुछ और योजना बनानी होगी।”
फिर उसे समझ आया कि शव जाना-पहचाना क्यों लग रहा था। आखिर यह उसी वेटर का शव था जिसने खाना गलत तरीके से परोसा था। उसने मेनांडर को शव तैयार करते हुए देखा।
“उनका निधन कैसे हुआ? वे तो बहुत जवान थे।”

“किसी ने उसे ज़हर दे दिया,” उसने कहा और उसे उसका नीला पड़ा पेट और गला दिखाया। “अंगा में इंसानी ज़िंदगी एक अजीबोगरीब सफर बन गई है। जिसे मरना था वो ज़िंदा है और जिसे ज़िंदा होना चाहिए था वो मर चुका है।”
शनाया को ऐसा लग रहा था कि किसी न किसी कारण से इसमें उसकी कोई भूमिका है। उसे इस बारे में बहुत स्पष्ट अंतर्ज्ञान था, लेकिन आखिर ऐसा क्यों होगा?
मैं कुछ सोच लूंगा।
"मेनांडर, बात खत्म। मैं अब और कुछ नहीं सुनना चाहता।"
“उसने तुम्हारे पिता की हत्या की। उसने तुम्हारे इकलौते पिता की हत्या की और तुमसे छिप गया।”
“हाँ, और मैं…मुझे सोचने के लिए समय चाहिए। जब मैंने पहली बार ऐसा होने दिया तो मेरा ध्यान भटक गया था, मेरी भावनाएँ मुझ पर हावी हो गईं थीं, लेकिन मैं कोई भी निर्णय लेने से पहले अपने पिता की मृत्यु की पूरी तरह से जाँच करवाना चाहती हूँ, और तब भी यह मृत्युदंड नहीं होगा, बल्कि हत्या के आरोप में एक राजा को कारावास होगा,” उसने दृढ़ता से कहा।
मेनांडर के अंदर एक चिड़चिड़ापन छिपा हुआ था जिसे वह काफी समय से छुपा रहा था। "ठीक है, महाराज। आप आदेश दीजिए, मैं आज्ञा का पालन करूंगा।" शनाया ने गले में अटके एक गूदे को निगलते हुए सिर हिलाया। श्मशान घाट से निकलते समय मेनांडर से बात करते हुए, उसके मन में बस एक ही बात खटक रही थी— आखिर उसने ऐसा क्या किया था, जो उसके स्वभाव के अनुरूप था, लेकिन जिसे उसने मेनांडर से छिपा रखा था।
यह वेटर नहीं था जिसने व्यंजन इधर-उधर किए, बल्कि वह खुद थी जिसने विषैला व्यंजन तब लिया जब उसे परोसा गया था।
वह नहीं चाहती थी कि कर्ण की मृत्यु हो।
वह इस बात को समझ ही नहीं पा रही थी कि उसकी जीवन संगिनी इस दुनिया से चली जाए।

28

कर्ण तेज तुरही की आवाज सुनकर जाग उठा।
लड़ाई के बाद वह शनाया से अलग कमरे में सो रहा था, लेकिन दासियों के ज़रिए उस पर नज़र रख रहा था। लेकिन ये सींग बहुत तेज़ और कर्कश आवाज़ कर रहे थे। पसीने से तरबतर होकर वह दरवाज़े की ओर भागा, और दरवाज़े पर सेनापति अगस्त्य खड़ा था, जो राजरक्षकों की देखभाल करता था और असल में कर्ण का दाहिना हाथ था।
"क्या हो रहा है?"
"महामहिम, आपको इसे स्वयं देखना चाहिए।"
कर्ण ने क्रोध में आह भरी।
"वे अचानक कहीं से आ गए, राज्य के शुष्क क्षेत्र से घोड़े पर सवार होकर आए और उन्होंने हमला करना शुरू कर दिया।"
कर्ण ऊपर की ओर बढ़ा, सभी सैनिक तेजी से अंदर आ रहे थे, बिगुल बज रहे थे, शहर में ढोल की आवाज से सब जाग उठे थे। कर्ण छप्पर से छत पर पहुंचा जहां और सैनिक उसका इंतजार कर रहे थे। अगस्त्य ने दूरबीन कर्ण को सौंप दी और आगे का दृश्य देखने लगा।
“यह कौन सा झंडा है?”
“यही तो बात है महोदय, उनके पास कोई झंडा नहीं है। उनके पास बस लाल रंग के लबादे हैं।”
कर्ण ने धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए कहा, "क्रूर टोली।" उसने स्वयं से फुसफुसाते हुए कहा और दूरबीन से देखा तो पाया कि राज्य के निकट स्थित सभी निगरानी मीनारें जलकर राख हो चुकी थीं, नष्ट हो चुकी थीं और खाली पड़ी थीं। उन्होंने कहा, "यह भीमा है।"
कमांडर अगस्त्य को तुरंत थोड़ी चिंता हुई और उनके माथे पर शिकन आ गई। "महाराज, लेकिन इंद्रप्रस्थ हम पर हमला नहीं कर सकता।"

“मुझे पता है।” कर्ण ने उस मणि के बारे में सोचा जिसे वह फिरौती के तौर पर इस्तेमाल कर रहा था। “लेकिन मुझे लगता है कि धर्मराज हताश हैं।”
उसने दोबारा दूरबीन से देखा और पाया कि सेना, राज्य से कुछ ही गज की दूरी पर तैनात थी, अपने तंबू लगा रही थी, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे एक बड़े समूह में एक साथ मिलकर काम कर रहे थे, और राज्य के मुख्य प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर रहे थे।
“हमें क्या करना चाहिए, महाराज?”
“हाथियों और घुड़सवारों को तैयार करो और राज्य के सभी द्वारों पर घेराबंदी कर दो। सभी महिलाओं और बच्चों को महल के अंदर ले आओ, किसी को भी नुकसान न होने दो। हम चुप रहेंगे और उन्हें रेगिस्तान में मरने देंगे।” उसने घोषणा की।

वृकोदरा अपने द्वारा मचाई गई तबाही को देख नहीं पा रहा था, इसलिए उसने उसे अनदेखा कर दिया और अपने गिद्ध द्वारा बड़े चाव से लाई गई मछली खाने में मग्न हो गया। वह अपने तंबू के पास घुटनों के बल बैठा, जानवर की तरह खा रहा था। उसके सभी सैनिक खुश थे कि वे आसानी से मीनारों को नष्ट करने में सफल रहे और कर्ण का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। वह जानता था कि अब उसे कर्ण के अपनी सेना के साथ आने का इंतजार करना होगा। एक सुरक्षित राज्य से लड़ना व्यर्थ था। उसमें घुसपैठ करना मुश्किल होगा, इसलिए बेहतर यही होगा कि पहले उसे बाहर निकाला जाए।
उसके सामने घायल और बंधा हुआ सत्यसेना था, जो उसका छोटा पुत्र था। उसका रूप-रंग और बोलने का तरीका हास्यास्पद लग रहा था। वृकोदरा को कर्ण पर थोड़ी दया आई कि उसने ऐसे कमजोर पुत्र को जन्म दिया। वृकोदरा की कई पत्नियाँ थीं, लेकिन अब तक उनकी कोई संतान नहीं थी, और वह नहीं चाहते थे कि उनकी संतान ऐसी भयानक हो। उन्हें एक देवता चाहिए था, और ऐसा व्यक्ति चाहिए था जिसके साथ वे काम कर सकें।
आपकी योजना क्या है?

"क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे इस दयनीय राज्य पर हमला क्यों करना चाहता हूँ?"
"हमारे व्यापार, हमारे विनिर्माण और लकड़ी के हमारे संसाधनों के कारण।" “आह!” उसने ऊबते हुए मछली का मांस नोंचते हुए कहा, “ये सब बातें मेरे भाई, धर्मराज के लिए मायने रखती हैं, लेकिन मेरे लिए ये सब बकवास है। बिलकुल बेतुकी बात है।”
"ओर भला क्या?"
“बहुत समय पहले, तुम्हारे पिताजी मेरे साथ पढ़ते थे। मुझे उनसे कोई समस्या नहीं थी, लेकिन उनकी संगत से परेशानी थी। सच कहूँ तो, वो थोड़े बदतमीज़ थे,” उन्होंने कहा। “लेकिन तुम्हें पता है, मैं थोड़ा दबंग हूँ और किसी की बदतमीज़ी बर्दाश्त नहीं करता, इसलिए मैं उन्हें तंग करता था, परेशान करता था, यहाँ तक कि उन्हें चोट भी पहुँचाता था। मुझे बहुत मज़ा आता था। जब तक…” वो मुस्कुराए। “फिर एक दिन, खाना खाते समय, मुझे ज़हर लग गया, मुझे उल्टी हुई, मैं बीमार पड़ गया और शहर के सारे भीक्षक भी कुछ नहीं कर पाए। मुझे बहुत दर्द हो रहा था। फिर भी मैं बच गया, जैसे कोई गिद्ध।” उन्होंने अपने दोस्त पक्षी को थोड़ा मांस दिया। “अब, मुझे सच में लगा कि मुझे कुछ भयानक हो गया है, क्योंकि बचपन में कभी-कभार खराब फल खा ही लेते हैं, और फिर पता चलता है कि नहीं… ये मेरी गलती नहीं थी। ये तुम्हारे पिताजी की गलती थी।”
सत्यसेना ने हैरानी से अपनी निगाहें सिकोड़ लीं।
“दुर्योधन की मदद करने के लिए, कर्ण को संयोगवश हमारे गुरुकुल के पास स्थित नाग बस्ती से विष मिल गया था, क्योंकि वह उनसे बहुत मित्र था, और दुर्योधन ने वह विष मुझे सौंप दिया। उन दोनों ने मिलकर खून-खराबा किया। मुझे यह बात बहुत बाद में पता चली।”
"कैसे?"
“हर तरह से।” वह हँस पड़ा। “लेकिन मुझे इतना पता है कि उसने ये किया। वो मेरी जान के पीछे पड़ा था। मैं बहुत शर्मिंदा था। मुझे उल्टी आ रही थी और हर जगह दस्त हो रहे थे, और सारे बच्चे मेरा मज़ाक उड़ा रहे थे। वो शर्मिंदगी, वो अपमान, वो दर्द… ओह, वो तो कुछ और ही था। अंगा को वापस पाना, अपने पिता को हराना, उसके सबसे अच्छे दोस्त पर हमला करके दुर्योधन को सचमुच गुस्सा दिलाना, तभी मुझे चैन की नींद आएगी।”

सत्यसेना चौंक गया। "क्या आप अब भी इतनी कड़वाहट रखते हैं?"
“जब आप जीवन भर राजा की तरह जीते रहे हों, और फिर दो लोग आकर आपको ऐसा महसूस न कराएं, तो आपको कुछ करना ही होगा। मैं अपना बदला जरूर लूंगा। चाहे जैसे भी हो।”
सत्यसेना चुप था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उस समय क्या कहे, और वृकोदरा यह बात समझ सकता था।
इस सबमें मेरी क्या भूमिका है?
इससे पहले कि वह जवाब दे पाता, दो सैनिक प्रकट हुए और उनमें से एक ने कहा, "कमांडर, उनका महल से बाहर निकलने का कोई इरादा नहीं है।"
"बहुत बढ़िया, मैं उन्हें एक कारण दे दूंगा।"

कर्ण चुपचाप छत पर खड़ा था, जबकि युद्ध की योजनाएँ आकार लेने लगी थीं, बैठकें चल रही थीं, सेनाओं का आवंटन किया जा रहा था, पशुधन और राशन की जाँच की जा रही थी कि क्या वे पर्याप्त होंगे या उन्हें अपने सहयोगियों से मदद की आवश्यकता होगी।
“अच्छी बात यह है,” उसने अगस्त्य से कहा, “वे एक छोटी सेना हैं और अगर हम सीधे बल प्रयोग करें तो उन्हें आसानी से हराया जा सकता है।”
“पर वे तो दुष्ट हैं, महाराज। हमारे सैनिक तो अभी-अभी प्रशिक्षित हुए हैं, किसानों और व्यापारियों के बच्चे हैं। भीमा के नेतृत्व वाला यह गिरोह तो… लुटेरे और पागल हैं।”
कर्ण ने अपना पसीना पोंछा। "उम्मीद है कि वह कुछ भी पागलपन भरा काम न करे। बस यही उम्मीद है।"
फिर कर्ण ने दूरबीन से देखा और उसे वही बात पता चली जिसके बारे में वे सब इतनी उत्सुकता से बात कर रहे थे। कर्ण ने देखा कि एक हाथी दरवाजे की ओर बढ़ रहा था, और उस विशाल दांत वाले हाथी के ऊपर भीम बैठा हुआ था, जो ज़ोर-ज़ोर से हंस रहा था। उसके हाथ में गदा थी और उसका गिद्ध ऊपर उड़ रहा था।

लेकिन कर्ण को समझ आ गया कि वह इतना जीवंत क्यों दिख रहा था, क्योंकि हाथी की सूंड के ठीक बगल में, उससे बंधा हुआ, वह रो रहा था और विलाप कर रहा था...
वह उनका बेटा था।
सत्यसेना।

29

वृषकेतु ने अश्वत्थामा को सारा भोजन हड़पते हुए देखा, जबकि वे आग के चारों ओर घेरा बनाकर बैठे थे और झाड़ियों तथा ऊंचे पेड़ों की छतरी के नीचे छिपे हुए थे।
आकाश से पानी टपक रहा था और हवा भी जोर-जोर से चल रही थी।
वृषकेतु ने अश्वत्थामा के बारे में काफी कुछ सुना था और दूर से ही सही, उन्हें अच्छी तरह जानता भी था। वह अपने पिता के साथ विभिन्न समारोहों के लिए हस्तिनापुर आता था और अश्वत्थामा भी वहाँ मौजूद होता था। अश्वत्थामा वृषकेतु से उम्र में बड़ा था और उसके पिता द्वारा जीते गए एक स्थानीय राज्य का राजा भी था। वृषकेतु ने उसके बारे में यही सुना था कि वह बिगड़ा हुआ बच्चा था। उसे अपने पिता से सब कुछ मिलता था और उपलब्ध हर पद के लिए उसी का चयन होता था, साथ ही उसे हर तरह की रियायतें दी जाती थीं।
वृषकेतु को ईर्ष्या होती थी क्योंकि वह हमेशा खुद को हाशिये पर महसूस करता था। उसने जीवन भर समाज से स्वीकृति पाने की कोशिश की थी, और यही वह व्यक्ति था जिसने सब कुछ हासिल कर लिया था। इसी बात ने वृषकेतु को सोचने पर मजबूर कर दिया—
उसके पिता ने एक आदमी का अपहरण कर उसे अपने राज्य परिसर में कैद रखा था। यह एक गंभीर अपराध था।
"क्या अब आप हमें बताएंगे?" तृप्ति ने लंबे मौन के बाद पूछा।
जारा अपने नाखून चबा रहा था, उसे इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। जहाँ तक उसे पता था, उसका काम पूरा हो चुका था और वह यहाँ गपशप करने आया था।
“क्या बताऊं?” अश्वत्थामा ने अपनी भौंहें उठाते हुए पूछा।
“हम पत्थर लेने आए थे, और हमें एक इंसान मिल गया। तो मुझे लगता है कि हम यहीं से शुरुआत कर सकते हैं?” वृषकेतु ने पूछा।
“पत्थर।” उसने माथे की ओर इशारा करते हुए कहा। “यहीं पर है।”

वृषकेतु ने अपने माथे पर मौजूद निशान का अध्ययन किया और वहां के गड्ढे को महसूस किया, फिर उस पर एक चमकता हुआ पत्थर रख दिया।
“तुम्हें यह कैसे मिला?” तृप्ति ने पूछा। “नागों के लिए, मणि सबसे पवित्र वस्तु है। वे इसे त्यागने से पहले स्वयं को मार डालेंगे।” अश्वत्थामा ने सिर हिलाया। "मुझे इसके बारे में पता है। मैं उनके साथ था।"
आपका मतलब क्या है?
उसने खाना खत्म किया। “मैं तुम्हें क्यों बताऊँ, कर्ण के पुत्र? तुम तो बस एक अपहरणकर्ता की औलाद हो। मुझे क्या पता, तुम अपने पिता की कोई चाल या रणनीति हो सकते हो, ताकि और जानकारी हासिल कर सको।”
“उसे इसकी क्या आवश्यकता होगी?” वृषकेतु ने पूछा।
“उसने यही किया था, है ना? उसने मुझे इस आदमी के ज़रिए अगवा किया था।” उसने जरा की ओर इशारा करते हुए उसे घूरकर कहा। “ताकि शक किसी और पर न जाए, बल्कि एक ठेकेदार पर ही जाए। उसके आदमियों ने मुझसे सवाल पूछे, मुझे पीटा, मुझे यातनाएं दीं, ताकि वे खांडव जंगल के बारे में और जानकारी हासिल कर सकें।”
“खंडवा?” तृप्ति ने अपनी भौंहें उठाईं। उसका मुंह अभी भी लाल रंग के मफलर से ढका हुआ था।
अश्वत्थामा ने कहा, “जो अब इंद्रप्रस्थ है, वह कभी एक हरा-भरा, सुंदर जंगल हुआ करता था, जो खेलों, आशाओं, बच्चों और महिलाओं से भरा हुआ था। वहां एक सभ्यता शांतिपूर्वक निवास करती थी।”
वह खांडवों के बारे में क्यों जानना चाहता था?
“इसका इस्तेमाल धर्मराज पर इस बात का आरोप लगाने के लिए किया गया कि उन्होंने ऐसे नरसंहार को होने दिया,” अश्वत्थामा ने कहा। “वह उनकी छवि धूमिल करना चाहता था। उनके जीवन से धर्म शब्द को मिटाना चाहता था। लेकिन उसे सबूत चाहिए थे और मैंने उसे कोई सबूत नहीं दिया।” वह हँस पड़ा।
इस सबमें आपकी क्या भूमिका है?
अश्वत्थामा ने याद करते हुए कहा, "मुझे ही वहां जाकर घिनौना काम करने को कहा गया था। सेना को बुलाओ, जंगल जला दो। यही योजना थी।"
“तो क्या पांडवों को पता था कि वे क्या कर रहे हैं?”

“वे जानते थे कि यहाँ कभी एक सभ्यता मौजूद थी, लेकिन यह इतने लंबे समय पहले की बात थी कि यह कोई पक्की बात नहीं थी। लेकिन हमें तुरंत कार्रवाई करनी थी, इसलिए मैंने काम पूरा किया, तभी मुझे पता चला कि वहाँ लोग थे। तो हम अंदर गए, उन्हें बचाने की कोशिश की, और मैंने कई लोगों को बचाया। उनमें से एक ने मुझे यह मणि दी, जिसे मुझे दूसरी बस्ती तक पहुँचाना था। मैंने अपराधबोध के कारण इसे अपना कर्तव्य मान लिया और पांडवों के पास गया और उनसे कहा कि मैं वही करूँगा जो मुझसे कहा जाएगा। लेकिन जब उन्हें पता चला कि उन्होंने हताशा और अज्ञानता के कारण एक पूरी सभ्यता का नरसंहार कर दिया है, तो उन्होंने तुरंत मुझे रोकने और ऐसा न करने के लिए मनाने की कोशिश की,” उन्होंने सोचते हुए कहा। “उन्होंने मुझे उपहार, भोजन, मदीरा, सब कुछ दिया। मेरे पिता भी उनके पक्ष में थे, और मुझसे कह रहे थे कि मैं यह मणि किसी को न दूं, वरना नागों को पता चल जाएगा कि क्या हुआ है। मैं तब तक चुप रही जब तक मुझसे और बर्दाश्त नहीं हुआ, और मुझे उस नाग की छवि दिखाई देने लगी जिसने यह मणि देने का वादा किया था और मैं चुपके से निकलने के लिए तैयार थी, तभी जरा के साथ वह पूरी घटना घटी।”
अश्वत्थामा गुर्राया। उसने तुरंत जरा पर हमला कर दिया, मानो अभी-अभी खाए गए फलों और सब्जियों से मिली ऊर्जा ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया हो। वह आग के पास जरा का गला घोंटने लगा, तभी वृषकेतु आया और उसने उसे धक्का दिया।
“मैं बहुत समय से झगड़े रोकने की कोशिश कर रहा हूँ।” वृषकेतु ने सिर हिलाया। “शांत हो जाओ, तुम दोनों। बस करो। हम सब एक ही पक्ष में हैं।” अश्वत्थामा ने आह भरी। “मेरा मिशन विफल हो गया है। और दो राज्यों ने मुझे खिलौने की तरह इस्तेमाल किया है।”
“मुझे तुम्हें धर्मराज के पास वापस पहुँचाने का दायित्व सौंपा गया है,” वृषकेतु ने कहा। “मैं उन्हें स्वयं समझाऊँगा कि तुम्हारी यात्रा पूरी होनी चाहिए, लेकिन कृपया, तुम्हें हमारे साथ चलना होगा।”
अश्वत्थामा ने वृषकेतु की ओर देखा और कहा, “तुम एक मोहरे हो, एक स्वामी का खेल खेल रहे हो। हम सब हैं। खेल का स्वामी तो बस बाहर है, और हम सब उसकी बांसुरी की धुन पर नाच रहे हैं।”
और आगे लड़ने के बजाय, वह फिसलकर दूसरी तरफ भाग गया।

वृषकेतु दहाड़ते हुए उसके पीछे दौड़ा, वहीं तृप्ति भी जरा को पीछे छोड़ते हुए तेजी से भागी। तृप्ति ने अपने थैले से एक रस्सी निकाली और उसे अश्वत्थामा के पैरों में बांधकर उसे खींचकर जमीन पर पटक दिया। उसने अश्वत्थामा को बुरी तरह जकड़ लिया, जबकि वह कराहता और चिल्लाता रहा। वृषकेतु ने तृप्ति से कहा, जो उसका मुंह बंद कर रही थी, “मुझे बुरा लग रहा है। एक कारागार से दूसरे कारागार में। वह तो बस सही काम करना चाहता है।” “वह ऐसा कर सकता है, बशर्ते हम उसे धर्मराज के हवाले कर दें। एक बार जब हम हाथियों के शहर के उन द्वारों में प्रवेश कर लेंगे, तो वह हमारे लिए हर द्वार खोलने की कुंजी होगा।”
अश्वत्थामा का मुंह कपड़े से बांध दिया गया था, लेकिन वृषकेतु ने उसे खोलकर थूकते हुए कहा: "तुम्हें जरा भी अंदाजा नहीं है कि तुम क्या कर रहे हो।"
लेकिन इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, तृप्ति ने उसे चुप करा दिया।
“चलो चलते हैं,” उसने कहा।
वृषकेतु ने देखा कि एक लड़की उसे घसीट रही है; वह उससे लगभग दुगना था, लेकिन लड़की ने उसे आसानी से खींच लिया। जब तक वे पहुँचे, जरा जा चुका था और कहीं दिखाई नहीं दे रहा था।
और हां, उनके कपड़ों के साथ-साथ उनका खाना भी चोरी हो गया था।
वृषकेतु ने कहा, “ये कहावत बिल्कुल सच है। चोर से दोस्ती करोगे तो चोरी का शिकार हो जाओगे।”

30

कर्ण ने स्वयं को तैयार किया।
उसका सहायक प्रकट हुआ और उसने उसे सोने का कवच पहनाया, जन्म से ही उसके कुंडल उसके शरीर पर सुशोभित थे, उसके सिर पर मुकुट रखा गया, उसकी कमर पर लाल धोती लपेटी गई और साथ ही सूर्य के चिन्ह वाला एक बड़ा कमरबंद भी बांधा गया। उसके दस्ताने पहनाए गए और उसने अपने हाथों को कसते हुए महसूस किया, उसके जूते पैरों में कसकर बांधे गए और उसके कानों में काजल लगाया गया।
वह पूरी शान-शौकत के साथ बाहर जाने के लिए तैयार हो रहा था, और जैसे ही वह निकला, उसने महलों के सामने लगे तम्बू में एक परिचित आकृति को प्रवेश करते देखा।
उनकी पत्नी के बारे में।
वह फूट-फूट कर रो रही थी, पूरी तरह टूट चुकी थी। कर्ण ने आँखें घुमाईं।
युद्ध के मैदान में जाकर भयानक भीम से लड़ने से पहले वह यही नहीं चाहता था।
“तुम्हारी योजना क्या है?” उसने लाल आँखों से पूछा।
शहर की महिलाओं का ख्याल रखना।
“ऐसा व्यवहार मत करो। मैं तुम्हारी योजना जानना चाहती हूँ। मैं लंबे समय तक रानी रही हूँ, अब मुझे शहर की वेश्याओं में से एक की तरह मत समझो।” कर्ण ने अपने धनुष और पीठ पर टंगे तरकश को कसकर पकड़ लिया। “शनाया, इतना घबराओ मत। मैं अपने बेटे को वापस लाऊंगा।”
मुझे संदेह है। आप उनसे लंबे समय से निराश हैं।
उसने अपनी नाक फुला ली। वह यही सुनना नहीं चाहता था। "ठीक है, मैं नहीं करूँगा। उसे सड़ने दो। वैसे भी वह किसी काम का नहीं है।"
तुरंत ही उसने अपने नाखूनों को हथियार बनाकर उस पर हमला कर दिया, उसके गालों पर खरोंचें मारीं जिससे खून बहने लगा। उसने उसे बांह से पकड़कर नीचे पटक दिया।

“बस करो, औरत! तुम पागल हो गई हो!” उसने अपने चेहरे से खून पोंछा और महसूस किया कि उसने उसे घायल कर दिया है।
“मेरे बेटे को मरने मत दो। तुमने एक को मार डाला! अब दूसरे को मत मरने दो।”
मैंने दूसरे के साथ कुछ नहीं किया। हमारे खिलाफ जाना उसका अपना फैसला था।
“तुमने दूसरे राज्यों के दुष्टों को उसके दिमाग को भ्रष्ट करने दिया। काश तुम वहाँ होते, न कि हमेशा अनुपस्थित रहते, तो वह तुम्हारा आदर और सम्मान करता।”
कर्ण ने अपने जबड़े कसे और सिर हिलाया। "शानया, तुम अब उस स्त्री की धुंधली सी छवि बनकर रह गई हो जिससे मैं कभी प्यार करता था।"
और उसका चेहरा चीख से विकृत हो गया। वह उसे अंदर छोड़कर चला गया, चीखें और तेज हो गईं, और वह कोसने लगी: "तुम नरक में जाओगे! तुम नरक में जाओगे!" कर्ण ने अपने होंठ सिकोड़ लिए और सभी को अनसुना करते हुए तंबुओं के बीच से चलना शुरू किया। वह रथ की ओर बढ़ा, जहाँ सेनापति अगस्त्य प्रतीक्षा कर रहे थे।
“महामहिम, आप अकेले जा रहे हैं?”
“हां। वह भी अकेला है। मैं उससे लड़ सकता हूं।”
अगस्त्य प्रभावित होने के बजाय अधिक भयभीत दिखाई दिए। "तो जाइए महाराज। जाइए।"
कर्ण ने लगाम थामी और युद्धक्षेत्र की ओर चल पड़ा। खाइयों को पार करते हुए वह सूखे मैदानों में पहुँचा, जहाँ उसने हाथी और उस पर बैठे व्यक्ति को अपना इंतज़ार करते देखा। तीन घोड़ों वाला रथ रेगिस्तान में तेज़ी से आगे बढ़ता हुआ अपने गंतव्य तक पहुँचा। उसने अपना हथियार नहीं निकाला था। उसने अपने बेटे को हाथी की सूंड से बंधा हुआ देखा, जिसके होंठ फटे हुए थे और गर्म हवाओं के थप्पड़ों से वह बेहोश हो गया था। वह बुरी तरह घायल और प्रताड़ित था। और ऊपर से भीम उस पर मुस्कुरा रहा था।
"आखिरकार तुम आ ही गए। मुझे खुशी है कि योजना कामयाब रही।"
“ये तो गंदी चाल है,” कर्ण ने कहा। “तुमने मेरे बेटे को इसमें क्यों घसीटा?” उसने हाथ में धनुष पकड़े हुए चिल्लाकर कहा।

“क्या वह तुम्हारा बेटा है?” भीमा ने बेमन से देखा। “मुझे पता नहीं था।
ओह!”
कर्ण ने अपना चेहरा पोंछा। "उसे जाने दो और मुझसे सीधे निपटो।"
“मुझे ऐसा नहीं लगता।” वह हँस पड़ा। “मैं उसे बिल्कुल नहीं छोड़ूँगा। असल में, अब जब मैं तुम्हें देख रहा हूँ, तो तुम थोड़ी चिंतित लग रही हो। तुम्हारी आँखों के नीचे झुर्रियाँ हैं। तुम थकी हुई लग रही हो। पिछली बार जब मैंने तुम्हें देखा था, तो वह स्वयंवर में था, है ना? जहाँ तुम द्रौपदी का हाथ थामने गई थी और असफल हो गई थी जब उसने खुलेआम घोषणा कर दी थी कि वह किसी सूत से विवाह नहीं करेगी। अजीब बात है, है ना?”
कर्ण को यह सब अच्छी तरह याद था, लेकिन वह उन यादों को याद नहीं करना चाहता था। द्रौपदी उसके जीवन का प्रेम थी, लेकिन उसने उसका दिल एक बार नहीं, बल्कि कई बार तोड़ा था।
“क्या धर्मराज ने तुम्हें नहीं बताया कि तुम हम पर हमला नहीं कर सकते? हमारा उनके साथ समझौता है,” कर्ण ने कहा।
“मुझे पता है।” उसने सिर हिलाया। “इसीलिए उसने कहा था—‘अगर तुम उस पर हमला करने जाओ, तो उसका सिर ज़रूर लेकर आना।’ और मैं वही करूंगा।”
कर्ण हँस पड़ा। मूर्ख! उसे पता नहीं कि मेरे पास क्या है। इसीलिए तो वह हम सब में सबसे बलवान था। लेकिन युधिष्ठिर का ऐसा अनाड़ीपन भरा कदम उठाना आश्चर्यजनक था।
फिर भी, सौदा हो चुका था। और अब वह इसका फायदा उठा सकता था। और उस पर क्या कहर बरपा होगा, यह तो केवल युधिष्ठिर ही जानते थे। बेवकूफी भरा कदम। लेकिन फिलहाल कर्ण को अपने बेटे पर ध्यान देना था। जिसे उसे बचाना था। “हम यह कैसे करेंगे? आमने-सामने की लड़ाई से।”
“छी!” भीमा ने सिर हिलाया। “अगर तुम चाहो तो अपने बेटे को ले जाओ। मतलब उसे खुद ही अपना ख्याल रखना होगा, लेकिन कल शाम को मैं उसे अपनी शर्तों पर जाने दूंगा।”
“तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? ये खेल क्यों खेल रहे हो? बस हम पर हमला करो और बात खत्म करो।”
“नहीं, नहीं, ये तो बहुत आसान हो जाएगा,” भीमा ने जवाब दिया। “मैं इसे मज़ेदार बनाना चाहता हूँ। यही वो राज्य है जहाँ मैं अपना झंडा फहराना चाहूँगा, और उम्मीद है कि तुम्हारे दिल में भी।”

कर्ण ने कुछ नहीं कहा। "कल मिलते हैं।"
फिर उसने अपना रथ मोड़ा और अपनी बस्ती की ओर वापस चल पड़ा, जहाँ खाइयाँ खुल गईं, घुड़सवार सेना ने उसका स्वागत किया और वह खुले मैदान में उतर गया। सभी सैनिक, सहायक, कुली और सेवक उसे देख रहे थे, जब वह अगस्त्य के पास पहुँचा, जिसने एक बार फिर उसके सामने सिर झुकाया।
"महामहिम, कोई नई जानकारी है?"
“एक छोटा दल तैयार करो और पीछे जंगल की ओर निकलो, मणि को खोजो और उसे मेरे पास ले आओ,” कर्ण ने मुड़कर हाथी और उस पर बैठे आदमी को जाते हुए देखते हुए कहा। “अगर वह गंदी चाल चलना चाहेगा, तो मैं भी चलूँगा।”

31

शनाया काफी समय से बेहाल थी, और जब मेनांडर ने आकर उसे राज्य में घटी हर बात बताई, तब तक उसकी हालत और भी खराब हो चुकी थी।
अपनी घोड़ी, अंगरक्षकों और दासियों को साथ लेकर वह महल के द्वार से बाहर निकली, जहाँ एक सुंदर झील स्थित थी। मेनांदर भी उसके पीछे-पीछे बैरकों से होते हुए चल रहा था। शनाया यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि कर्ण का क्या हुआ होगा और वह क्रोध से उबल रही थी। वह ऐसा महसूस नहीं करना चाहती थी, लेकिन यह सब दबा हुआ क्रोध था। उसे डर था कि सत्यसेना भीम के हाथों मारा जाएगा, क्योंकि उसने उसके बारे में कहानियां सुनी थीं। वह उस क्रूर राक्षस से कभी नहीं मिली थी, लेकिन वह जानती थी कि उसके और कर्ण के बीच कभी अच्छे संबंध नहीं थे, और इससे उनके बीच और अधिक समस्याएं पैदा होंगी। सत्यसेना लड़ाई में मारा जाएगा, और शनाया जानती थी कि कर्ण को अपने राज्य से पहले अपने पुत्र को चुनना होगा।
लेकिन उसे इस बात पर गहरा संदेह था।
शहर पहुँचकर, झील के पास उसने लगभग सौ महिलाओं को देखा, सभी नग्न अवस्था में, हाथों में कोड़े लिए खुद को कोड़े मार रही थीं, जिससे उनका शरीर लाल और खून से लथपथ हो गया था। वे रो रही थीं, क्योंकि उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया जा रहा था। परिषद के अनुयायी उन पर नज़र रख रहे थे, उनके धनुष तैयार थे, जबकि महिलाएं खुद को चोट पहुँचा रही थीं।
“अष्टार समाज के निचले तबके की सभी स्त्रियों को नीचे ले आया और उनसे कपड़े उतरवाकर खुद को कोड़े लगवाए,” मेनांडर ने मुंह के कोने से कहा। “भगवान सूर्य की दृष्टि में इसे प्रायश्चित का एक तरीका माना जाता है, क्योंकि हमने उन्हें नाराज किया है और इसी कारण यह खूनी युद्ध हम पर आ पड़ा है। अगर स्त्रियां खुद को तब तक पीटती रहें जब तक वे थककर मर न जाएं, तो युद्ध समाप्त हो जाएगा। महाराज, भगवान कर्ण इसी तरह के विकृत तर्क का समर्थन करते हैं।”

शनाया ने अपने पति के विरुद्ध कुछ नहीं कहा, बल्कि अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे जाकर सभी महिलाओं को कंबल ओढ़ा दें। जैसे ही उन्होंने उसका आदेश माना, परिषद के अनुयायी आ गए और जल्द ही दंगा भड़क उठा, वे सब आपस में लड़ने लगे। इस अफरा-तफरी में महिलाएं किसी तरह बच निकलीं—उन्होंने खुद को कंबलों से ढक लिया, कुछ ने अपने शरीर पर लगी जलन को शांत करने के लिए पानी में डुबकी लगाई, जबकि कुछ भाग गईं।
शनाया अपनी घोड़ी पर सवार होकर ऊपर से सब कुछ देख रही थी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि शहर बाहर और अंदर दोनों तरफ से इतनी भयंकर आग में जल रहा है। आंतरिक कलह के साथ-साथ बाहरी शत्रु भी मौजूद थे। वे हर तरफ से घिरे हुए थे।
“मुझे कुछ बताओ,” उसने कहा। “क्या कर्ण को इसके बारे में पता था?”
मेनांडर ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे यकीन है कि राजा को अपने निर्वाचन क्षेत्र में जो कुछ भी होता है, उसकी पूरी जानकारी होती है।" शनाया ने अपने जबड़े भींच लिए। राजा के रूप में उसकी योग्यता ने उस पर उसके भरोसे को डगमगाना शुरू कर दिया था। वह न केवल एक अच्छा पिता और पति नहीं था, बल्कि एक अच्छा राजा भी नहीं था। जल्द ही दंगा थम गया क्योंकि अनुयायियों ने प्रशिक्षित पहरेदारों का मुकाबला न कर पाने के कारण हार मान ली और तितर-बितर होने लगे। सौभाग्य से, ज्यादा खून नहीं बहा, बस कुछ लोगों की नाकें टूट गईं।
"महामहिम, क्या मैं कुछ बोल सकता हूँ?"
"आप कर सकते हैं।"
मेरे पास आपकी समस्या का समाधान है।
और आपको कैसे पता चला कि मेरी समस्या क्या है?
“तुम चाहती हो कि तुम्हारा पति तुम्हारी बात सुने, है ना? वो सब कुछ तुम्हारी पीठ पीछे करता है, और मुझे पता है कि तुम्हारा उस पर भरोसा डगमगा रहा है,” उसने बड़ी सहजता से कहा। “मेरा सुझाव है कि तुम उसके पैसों की जाँच करो और उसे उसके पैसों से पकड़ लो।”
आप ऐसा कैसे करने का इरादा रखते हैं?
“खजाने की घेराबंदी,” उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा। “हम युद्ध के लिए इस्तेमाल होने वाले धन पर कब्ज़ा कर लेंगे। तब राजा को हम दोनों से बात करनी पड़ेगी, और हम कुछ भी मांग सकते हैं, जैसे कि—वह अपने अहंकार की बजाय

आपके बेटे पर ध्यान दे, है ना? युद्ध जीतने के लिए उसे सत्यसेना को बचाना होगा।”
वह इसे हर हाल में करेगा।
“क्या आपको ऐसा लगता है? क्या आप भूल गई हैं, मेरी देवी, कि वृषकेतु को आपके हाथों से उसी ने वध करवाया था, जबकि वह अपने मित्र के साथ समय बिता रहा था?” उसने पूछा। “उसने अपने परिवार से ज़्यादा अपने सहयोगियों के बारे में सोचा। उसने अपने ससुर की हत्या की। उसने अपने पुत्र की मृत्यु का आदेश दिया। और अब, जहाँ तक हमें पता है, महारोगों को ढूँढ़ने के लिए सत्यसेना को व्यर्थ भेजना, उसे शत्रुओं के हाथों फँसाने की एक चाल थी। उसे ज़रूर पता चला होगा कि भीम आ रहा है, और उसने वही किया जो ज़रूरी था।”
"वो ऐसा क्यों करेगा?"
“क्योंकि वह एक दुष्ट व्यक्ति है, हमारे जैसे लोगों का निर्दयी शत्रु है।” मेनांडर ने सिर हिलाया। “खैर, आप जो भी फैसला लें, याद रखें, आपके पास मोलभाव करने का मौका होना चाहिए।”
आप इसे कैसे करने का इरादा रखते हैं?
“तुम्हारे पिता के मित्र थे और मैं एक ऐसे समूह को जानता हूँ जो हमारी मदद कर सकता है। वे आज रात चुपके से प्रवेश करेंगे और तुम्हारे लिए खजाने की बागडोर संभाल लेंगे। हमें बस राज्य के द्वार में प्रवेश करने का रास्ता चाहिए, और मुझे पता है कि मुख्य द्वार पर हर तरह की गड़बड़ी के कारण पहरा है, इसलिए हमें पीछे के द्वार की ज़रूरत है। और सैनिकों के प्रवेश द्वार की चाबियाँ तुम्हारे पास हैं।”
एक रानी होने के नाते, उनके पास चाबियां थीं, जो उनके अध्ययन कक्ष में सुरक्षित रूप से रखी हुई थीं, और उन्हें किसी ने छुआ तक नहीं था।
मुझे नहीं पता कि यह इतना अच्छा विचार है या नहीं।
“क्या हमारे पास कोई विकल्प है? आपके बेटे की जान खतरे में है। अधिरथ की मृत्यु के बाद, आपके पति सचमुच पागल हो गए हैं। सूर्य परिषद जैसे मूर्खों की बात सुनकर ऐसी बेतुकी हरकतें कर रहे हैं।” मेनांडर ने आह भरी। “अंततः, यह आपका ही फैसला है, मेरी पत्नी।”
शनाया ने गहरी सांस ली, और कर्ण के साथ बिताया उसका पूरा जीवन उसकी आंखों के सामने कौंध गया। अब वह अपने पति को एक अलग नजरिए से देखने लगी थी। बेशक,

वह अब पहले जैसा इंसान नहीं रहा था, लेकिन क्या वह वाकई उतना ही भयानक था जितना उसे दिखाया जा रहा था?
शायद नहीं।
लेकिन उसका दिमाग भटक गया था। और उसे काबू में करना जरूरी था। भले ही इसके लिए उसकी पत्नी को ही यह करना पड़े।
“मैं तुम्हें चाबी दिलवा दूंगी,” उसने कहा। “करो।”

32

सत्यसेना को नंगा कर दिया गया, और भीम की शर्तों पर उसे रिहा कर दिया गया। ठंडे पानी से ग्रसित होकर उसने खुद को अपमानित महसूस किया और वह असमंजस में पड़ गया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ क्या हो रहा है। वह अपमानित और टूटा हुआ महसूस कर रहा था, असहाय अवस्था में पड़ा हुआ था, जबकि भीम की पूरी सेना उसके नग्न शरीर को देख रही थी और उस पर हंस रही थी और उसका उपहास कर रही थी। उसके शरीर पर अतीत में हुए घावों के निशान थे।
उसे कमर पर लंगोटी और लोहे का मुखौटा पहनाया गया, जिसके आगे जाली लगी थी और जो हेलमेट का काम करता था। वह बार-बार पूछता रहा कि उसके साथ क्या होने वाला है।
सूरज डूब चुका था, और उसे ले जाने का समय आ गया था। उसके हाथ में एक तलवार थमा दी गई, एक कमजोर सी तलवार, मानो वे चाहते हों कि वह जिससे भी लड़ने वाला हो, हार जाए।
जब सैनिक उसे वेशभूषा पहना रहे थे, तभी एक बौना उसके साथ आने के लिए वहाँ पहुँच गया। मैदान के बीचोंबीच, भीम अपने लिए रखे गए सिंहासन पर बैठा प्रतीक्षा कर रहा था। दूसरी ओर, वह अपने पिता की सेना को उस बेचारे बालक की प्रतीक्षा करते हुए देख सकता था।
उसे बौने व्यक्ति ने खींच लिया, जो एक छोटी घोड़ी पर बैठा था।
“आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ,” बौने ने कहा। “आखिरकार, यह एक क्रूर लोगों का समूह है और मैं तो बिल्कुल भी क्रूर नहीं हूँ, है ना? आपको आश्चर्य हो रहा होगा।”
"चुप रहो, नीच।"
"तुम्हें पता है, यह हास्यास्पद है कि तुम्हारे आजादी की जंजीरें मेरे हाथ में होने के बावजूद तुम मेरा अपमान करते हो।"
“बौने तो अंतर्विवाही होते हैं, है ना?”

“और तुम भी मिश्रित नस्ल के हो। एक यूनानी महिला और एक भारतवर्षी पुरुष के पुत्र,” बौने ने कहा। “जानते हो, पूरी ज़िंदगी मुझे निराशाजनक कहकर मज़ाक उड़ाया गया है। मैं अनाथ पैदा हुआ था, या कम से कम मुझे यही बताया गया था। मुझे लगता है कि मेरे माता-पिता ने मुझे सड़कों पर छोड़ दिया था क्योंकि उन्हें मेरे कद में कुछ गड़बड़ लगी थी। कम से कम दुनिया ने तो मुझे यही यकीन दिलाया है। लेकिन मैं विनोदी स्वभाव का था। शब्दों के जादू से मैं स्थानीय राजा के सामने पहुँच गया, जो मेरे व्यवहार और बोलने के तरीके से बहुत खुश थे। जब भी राजा उदास होते, मैं उन्हें हँसा देता था। मैं लगभग उनकी पत्नी जैसा बन गया था, क्योंकि मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो उन्हें हँसा सकता था। यह सचमुच दयनीय था। लेकिन इससे मुझे एक आलीशान जीवन मिला। उन्होंने मुझे रहने के लिए कमरे, बेहतरीन औरतें और खाने के लिए सबसे अच्छा खाना दिया। एक बिगड़े हुए इंसान के लिए, मैं काफी भाग्यशाली था। लेकिन फिर एक समय ऐसा आया जब मेरे चुटकुले और मेरा हास्य खत्म होने लगा, क्योंकि मैं ज़्यादातर समय नशे में रहता था, और गुस्से और उमंग में आकर मैं राज्य और राजा के बारे में चुटकुले सुनाता था। मैं दूसरों को हँसाते- सुनाते थक गया था। खुश। मैं कब खुश होऊंगा? धोखेबाज होना तो वाकई एक मजेदार काम है, आप जानते हैं।
सत्यसेना बौने की बुद्धिमत्तापूर्ण बातों को ध्यान से सुन रहा था। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसकी अपनी यात्रा एक अंतर्विवाही व्यक्ति की यात्रा से इतनी मिलती-जुलती होगी।
सत्यसेना ने कहा, "मैंने सुना है कि अगर स्त्री का कर्म खराब हो तो बौने बच्चे पैदा होते हैं।"
“शायद। मैंने अपनी माँ को कभी नहीं जाना। और जानते हो उसके बाद क्या हुआ? राजा मेरे द्वारा उन पर किए जाने वाले मज़ाकों से तंग आ गया। उसने आखिरी मज़ाक के बाद मुझे फाँसी देने की योजना बनाई, लेकिन मुझे पता चल गया इसलिए मैंने मज़ाक पूरा नहीं किया, और वह असमंजस में रह गया। वह मज़ाक उसे सताता रहा…”
और वे चलते रहे, उस अखाड़े के करीब पहुँच गए जहाँ सत्यसेना को सौंपा जाना था।
“जब तक उसने पूछा नहीं, तब तक तो ठीक था। उसने कहा, मैं तुम्हें ज़िंदा रहने देता, लेकिन बदले में तुम्हें चुटकुला पूरा करना होगा।” बौना

मुस्कुराया। “मुझे पता था कि वह मुझे ज़िंदा नहीं रहने देगा, लेकिन देखो, मैं समय बिता रहा था। क्योंकि इस सब के दौरान, मैं स्थानीय राजा के दुश्मन से गठबंधन करने में कामयाब हो गया और मैंने कहा, “मैं तुम्हें पीपल के पेड़ के नीचे चुटकुला सुनाऊंगा।” वह वहाँ गया, उसे ज़रा भी पता नहीं था कि उसके दुश्मन पीपल के पेड़ के पास उसका इंतज़ार कर रहे थे और उसकी सबके सामने हत्या कर दी गई। दुश्मन ने मुझे अपनी कंपनी में नौकरी की पेशकश की, कहा कि मैं बहुत बुद्धिमान हूँ और उसे मेरे जैसे दिमाग की ज़रूरत है। उसके पास पहले से ही बहुत सारे क्रूर लोग हैं। वह दुश्मन कोई और नहीं बल्कि महान भीम थे, और मैं उनका जीवनदान देता हूँ।”
“क्या…क्या…” सत्यसेना प्यास से बेहाल और चिढ़ गया था। “मज़ाक क्या था?”
“मुझे नहीं पता,” बौने ने कहा। “मुझे भी अंत नहीं पता था।”
तो इस कहानी का मकसद क्या था?
उस अंतर्विवाही ने ठहाका लगाया। “कहानी का सार यह है कि आप सचमुच किसी को सस्पेंस से मार सकते हैं। इसलिए इन शब्दों को याद रखना, बेटा, तुम्हें इस सलाह की आवश्यकता पड़ सकती है, अगर तुम बच गए तो।”
उसे अखाड़े में धकेल दिया गया, उसकी जंजीरें खोल दी गईं, और वह केंद्र में था, तभी उसने भीम की मोहक आंखें देखीं, जो उसे बीच में जाने का निर्देश दे रहा था।
“जाओ, जाओ। कुछ नहीं होने वाला।”
लेकिन सत्यसेना को संदेह था। उसके पास एक कमजोर तलवार थी, और वह अपने पिता की ओर बढ़ा, जो प्रतीक्षा कर रहे थे और चिंतित थे।
"चलो, और तेज़, और तेज़।"
सत्यसेना धीरे-धीरे चलने की कोशिश कर रहा था, अपनी परिधीय दृष्टि से आसपास की हर हलचल को निहार रहा था, लेकिन वह एक खाली रेगिस्तान था। कुछ देर चलने के बाद उसने देखा कि कुछ भी नहीं हो रहा है। वह जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ने लगा, तभी भीमा ने ज़ोर से सीटी बजाई।
सीटी की आवाज सुनते ही अंधेरे से अचानक एक विशाल गिद्ध प्रकट हुआ और सत्यसेना के कंधे पर पंजे मारकर उसकी त्वचा को खरोंच दिया। सत्यसेना जमीन पर बुरी तरह गिर पड़ा और खुद को बचाने के लिए उसने अपनी तलवार घुमाई, लेकिन गिद्ध उड़ गया।

एक और सीटी की आवाज सुनाई दी, और गिद्ध फिर से नीचे की ओर झपटा, और इस बार उसने उसके बालों को नोंच डाला, जिससे उसके चेहरे से खून बहने लगा।
सत्यसेना सिसकते हुए अपने पिता की ओर दौड़ा और एक शिशु की तरह जमीन पर लेटकर सिकुड़ गया।
सत्यसेना ने अपने पीछे से हंसी की एक जोरदार आवाज सुनी, वह जानता था कि भीम ही ताली बजा रहा था और जो कुछ हो रहा था उसे देखकर हंस रहा था।
“एक कायर का बेटा, ज़ाहिर है, कायर ही होगा!” उसने ज़ोर से चिल्लाते हुए सबको शर्मिंदा कर दिया, यहाँ तक कि उन पहरेदारों और सैनिकों को भी जिन्होंने अंगा के राजकुमार को एक गिद्ध से डरते हुए देखा।
एक पक्षी।
सत्यसेना ने अभी-अभी हुई घटना को समझते हुए आह भरी और अपने पिता की ओर देखा, और उनकी आँखों में देखा।
वे कठोर, निर्मम और निर्दयी थे।
लेकिन सबसे ज़्यादा…
वे निराश थे।

33

वृषकेतु के सामने एक लंबी यात्रा थी, और यह पहले से ही काफी कठिन साबित हो चुकी थी।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। वह हालात के अनुसार चल रहा था, हस्तिनापुर के सरदारों को खुश करने की कोशिश कर रहा था, इस बात से अनभिज्ञ था कि वे खुश होंगे या नहीं, या उससे भी ज्यादा, क्या उन्हें प्रभावित करना उचित भी है।
वह अपने घोड़े पर सवार था, तृप्ति पीछे बैठी थी, जबकि अश्वत्थामा घोड़े की पूंछ के पास बंधा हुआ और मुंह पर पट्टी बांधे हुए था, ताकि वह और कोई बकवास न कर सके।
तृप्ति हमेशा की तरह चुप था, उनके पास न तो खाने के लिए कुछ था और न ही बदलने के लिए नए कपड़े, और उन्हें जल्द ही कहीं आराम करना था। अब जब उसने इस बारे में सोचा, तो उसे जरा को नहीं बचाना चाहिए था, और वृषकेतु बस यही सोच रहा था कि शिकारी और चोर के रूप में जरा का जीवन आगे क्या लेकर आएगा। दिन-रात जंगल से गुज़रते हुए, कोहरे से घिरे इलाकों में अंगा के बाहरी इलाके की ओर बढ़ते हुए, उसे आगे बढ़ने में केवल गुरु केशव के शब्दों ने ही मदद की, जिन्होंने बचपन में उसकी मदद की थी। जब हर कोई उसे हतोत्साहित कर रहा था और उसकी त्वचा के रंग के कारण उसे एक कोने में धकेल रहा था, तब गुरु केशव ने उससे कहा था: “जीवन में तुम्हें चोट लगेगी और तुम टूट जाओगे, लेकिन हमेशा याद रखना, सही का चुनाव करना, और वही चुनना जो तुम्हें सही लगे।” मुझे कैसे पता चलेगा कि क्या सही है?
“हम सब जानते हैं।” उस आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा, और उसकी मुस्कान बेहद प्यारी और सुकून देने वाली थी। “हम बस इस पर आगे बढ़ना नहीं चाहते।” वृषकेतु ने गुरु केशव से प्राप्त ज्ञान और उससे मिले मार्गदर्शन के बारे में सोचा, जिसने उन्हें धर्म का मार्ग चुनने के लिए प्रेरित किया, जबकि उनके अनुसार उनके पिता धर्म का पालन नहीं करते थे। उनके पिता

परिस्थितियों की व्यावहारिकता के बजाय अपनी भावनाओं का अनुसरण करते थे।
सही मार्ग पर चलने के बजाय वे अपने मित्र के सुझावों पर चलते थे। इसी कारण वृषकेतु को अपने पिता से मतभेद होने लगे थे।
लेकिन एक घटना ऐसी हुई थी जिसने उसे सचमुच झकझोर दिया था, और तब से वह अपने पिता से नफरत करने लगा था।
वह अपने पीछे नींद में तृप्ति को फुसफुसाते हुए सुन सकता था। “माँ…पा…नहीं…नहीं।” उसकी आवाज़ में डर था, जिसे पहचानना मुश्किल था।
वृषकेतु रुक गया, उसे भी नींद आ रही थी और वह घोड़े पर से अपना नियंत्रण लगभग खो बैठा, जिससे अश्वत्थामा ज़मीन पर लुढ़क गया। अश्वत्थामा खर्राटे भी ले रहा था, और गिरते ही वह चिल्लाने और गुस्से से घूरने लगा।
“ठीक है, शांत हो जाओ।” वृषकेतु घोड़े से नीचे उतरा, जबकि तृप्ति अभी भी घोड़े पर सो रही थी। “माफ़ कीजिए, मेरी आँख हवा की चपेट में आ गई और मैं…” लेकिन अश्वत्थामा तुरंत खड़ा हुआ और दौड़ पड़ा।
“कोई फायदा नहीं। तुम्हारे हाथ बंधे हुए हैं। तुम तेजी से नहीं दौड़ सकते।”
लेकिन वह दौड़ता रहा। वृषकेतु ने तृप्ति को जगाया, जिसने तुरंत खुद को झटक लिया।
"क्या हुआ?"
तुम नींद में बातें कर रहे थे।
उसने उसकी बात अनसुनी कर दी। "अश्वत्थामा कहाँ है?"
"वह भागा।"
"और तुम मुझे घूर रहे हो," उसने घोड़े से कूदते हुए कहा और उस दिशा की ओर दौड़ पड़ी जिस ओर वृषकेतु ने इशारा किया था।
अश्वत्थामा की ओर जाते हुए घोड़ा उनके पीछे-पीछे चल रहा था, लेकिन जंगल से बाहर निकलते ही वे एक विशाल पुल के सामने पहुँच गए जो भूमि के दो हिस्सों को जोड़ता था। पुल बांस का बना था, और उसके नीचे एक बड़ा जलमार्ग और चट्टानें थीं; गिरने पर शायद जान चली जाती। उन्होंने देखा कि अश्वत्थामा को उस डगमगाते पुल पर दौड़ने में कोई झिझक नहीं थी।
लेकिन अचानक वह रुक गया।

वृषकेतु और तृप्ति भी रुक गए, जब उन्होंने देखा कि पुल के दूसरी ओर सैनिकों का एक छोटा दल दिखाई दिया है।
और वे काफी परिचित लग रहे थे।
“अगस्त्य,” वृषकेतु ने हताश स्वर में कहा।
“वह कौन है?” तृप्ति ने कहा।
“पिताजी का कमांडर। वह ऐसा बेटा है जिसे मेरे पिता हमेशा से पाना चाहते थे, लेकिन उन्हें मेरी जगह मैं मिला। एक गद्दार और पतित।”
उसने उसे खाली निगाहों से देखा। "क्या तुम्हें उसकी परवाह है?"
मैं उसे जान से मारना चाहता हूँ। वह बचपन में मुझे बहुत परेशान करता था। “अच्छा। तो हम एक ही बात पर सहमत हैं।”
लेकिन वह यहाँ क्यों था?
अश्वत्थामा बीच में ही अटक गया था, तभी अगस्त्य ने दूसरी तरफ देखा और हंसने लगा।
“तो ये सब गड़बड़ तुमने ही की थी? उस लड़के ने मुझे बताया, जिसे तुमने कायरों की तरह पीटा था।” अगस्त्य ने अपनी तलवार निकाली। “मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था कि इसमें तुम्हारा हाथ है। अश्वत्थामा हमारा है और तुम भी। अंग राज्य में तुम्हारी तलाश है।”
अगस्त्य अपने दो सैनिकों के साथ आगे बढ़ा और देखते ही देखते पुल हिलने लगा। अश्वत्थामा चीखते हुए बोला, “हजारों देवताओं के नाम पर, कृपया इस पर कदम मत रखो। वरना मैं मर जाऊंगा।”
अगस्त्य ने धीरे से, पहले एक पैर से उस पर कदम रखा। अश्वत्थामा डरने लगा था।
“तुम जाओ,” तृप्ति ने कहा। “अगर कुछ गड़बड़ हो जाए तो मेरे पास रस्सी है।”
वृषकेतु ने सिर हिलाया। "मुझे ऐसा लगता है कि अगर आपको मुझे और अश्वत्थामा को बचाने के बीच चुनाव करना पड़े, तो आप उसे ही बचाएंगे।" तृप्ति ने उसे ऐसे गुस्से से देखा मानो उसकी कही बात में कुछ सच्चाई हो। वह हाथ में तलवार लिए आगे बढ़ा। वे दोनों आगे बढ़े और पुल उलट-पलट हो गया। लेकिन अश्वत्थामा ने स्थिति पर फिर से नियंत्रण पाने की कोशिश की। “मेरे लिए लड़ने का क्या फायदा? मेरी कोई कीमत नहीं है। मुझे अकेला छोड़ दो, मेरे पिता तुम्हें ब्रह्मास्त्र चलाना सिखा देंगे।” उसने सौदेबाजी और

मोलभाव करने की कोशिश की, लेकिन वृषकेतु और अगस्त्य को ज़रा भी परवाह नहीं थी।
जैसे ही वृषकेतु पास आया, उसने अश्वत्थामा को पकड़ लिया, लेकिन तभी अगस्त्य प्रकट हो गए और उन्होंने तलवार चलाई, जिसे अश्वत्थामा ने घुटने टेककर चकमा दिया और वृषकेतु ने वार को रोक दिया। वह अश्वत्थामा के ऊपर से कूदकर अगस्त्य को जमीन पर गिरा दिया, जिससे अश्वत्थामा को भागने का मौका मिल गया और वह तृप्ति की दिशा में भागा, लेकिन इसके परिणामस्वरूप पुल और भी ज्यादा डगमगाने लगा।
और यह मुड़ गया।
पुल उल्टा हो गया, और जल्द ही वे सभी उस पर लटक रहे थे, किसी तरह आधे ढीले पुल को पकड़े हुए थे।
अश्वत्थामा के हाथ थक चुके थे, इसलिए वह पुल की रस्सी को अपने दांतों से पकड़े हुए था और उसे सचमुच बहुत संघर्ष करना पड़ रहा था।
उस लटकती हुई अवस्था में, अगस्त्य ने अपनी तलवार से वृषकेतु पर आक्रमण किया, और दोनों में तलवारबाजी, लात-घूंसे चलने लगे, जबकि नीचे पानी उछलता- कूदता रहा। अंत में, वृषकेतु ने एक अकल्पनीय कार्य कर दिखाया।
उसने अगस्त्य के गुप्तांग पर लात मारी। पुल को पकड़े हुए उसका हाथ छूट गया और अगस्त्य के पास पकड़ने के लिए कुछ नहीं बचा, वह चीखता-चिल्लाता हुआ पानी में गिर पड़ा।
इसी बीच, तृप्ति पुल को आगे की ओर घुमाकर उसे स्थिर रखने की कोशिश कर रही थी और उन्हें फिर से ऊपर ला रही थी। लेकिन अपने कमांडर की भयानक मौत देखकर, सैनिकों ने पुल पर वार करना शुरू कर दिया।
और वह एक छोर से टूट गया, जिससे पुल आसमान के बीचोंबीच उड़ने लगा, और वे सब चीखने लगे, और पुल पर अपनी जान बचाने के लिए लटके रहे, और तृप्ति के किनारे स्थित चट्टानी दीवारों से टकराकर गिर पड़े।
उसने रस्सी को नीचे खींच लिया ताकि वे उसे पकड़ सकें।
वह वृषकेतु की ओर गिरा, और उसने अश्वत्थामा को भी पकड़कर ऊपर खींच लिया।
जब वे शिखर पर पहुँचे, तो वृषकेतु ने व्याकुल होकर आकाश की ओर देखा।
“तुम मेरे लिए इसे इतना मुश्किल क्यों बना रहे हो?” उसने अश्वत्थामा से पूछा। “बस हमें तुम्हें ले जाने दो।”

“अरे मूर्ख! अगर तू मुझे ले गया तो…” अश्वत्थामा ने कहना शुरू किया, लेकिन उसी क्षण तृप्ति ने उसके चेहरे पर लात मारी और उसे बेहोश कर दिया। वृषकेतु ने अपनी रक्षक की ओर देखा, जिसने अपने चेहरे पर दुपट्टा लपेटा हुआ था, और उसे खड़े होने के लिए कहा।
उन्होंने कहा, "वह कुछ कहने की कोशिश कर रहा था।"
"सब झूठ है, जैसा कि आप जानते हैं," उसने कहा। "उसकी बातों पर ध्यान मत दीजिए, हमें अभी लंबा सफर तय करना है, और पास में ही एक कस्बा है, जो हाथियों के शहर तक जाने का एक वैकल्पिक मार्ग है।"
वृषकेतु असमंजस में डूबा हुआ, स्वप्न जैसी अवस्था में वहीं लेटा रहा। लेकिन उसने ज्यादा न सोचने का फैसला किया। फिर भी, गुरु केशव की आवाज उसके कानों में गूंज रही थी:
“जो कम बोलता है, उस पर कभी भरोसा मत करो। उसके पास छिपाने के लिए बहुत कुछ होता है।”

34

कर्ण ने अपने बेटे सत्यसेना को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा, जो बिस्तर पर थका हुआ लेटा था।
“मुझे माफ कर दीजिए, पिताजी,” उसने कहा। “मैं…उम…मैं डरा हुआ था।”
कर्ण ने कुछ नहीं कहा। वह चुप रहा। हालांकि, वह ध्यान से सुनता रहा, बस अपने बेटे को देखता रहा।
“वह तुम्हें अपमानित करना चाहता था, और राज्य के राजकुमार को उसकी सेना के सामने शर्मिंदा करने से बेहतर और क्या हो सकता था?” सत्यसेना बोलता रहा, लेकिन उसके पिता ने कोई जवाब नहीं दिया। “मैं उसका पेट चीर देना चाहता हूँ। मैं उस मोटे आदमी और उसके बौने को मार डालना चाहता हूँ। मैं उसकी हत्या करना चाहता हूँ, उसका सिर धड़ से अलग करना चाहता हूँ, और उसके साथ अकल्पनीय काम करना चाहता हूँ।”
वह रुका। अपने पिता की ओर देखा। कोई प्रतिक्रिया नहीं।
“वैसे, मैं महारोगियों से मिलने गया था। उन्होंने यहाँ रहने वाले पूरे पिशाच समुदाय को मार डाला था। दर्जनों लोग मारे गए थे,” सत्यसेना ने कहा। “वे काफी शक्तिशाली हैं। शायद पिशाचों ने उन पर हमला किया और उन्होंने जवाबी कार्रवाई की। लेकिन अगर दो महारोगी हत्यारे इतना बड़ा नुकसान कर सकते हैं, तो मैं सोचता हूँ कि पूरा समुदाय क्या कर सकता है?”
कर्ण अपने पुत्र के बगल में बैठ गया और लंबे मौन के बाद बोला, “एक समय ऐसा था जब मुझे विश्वास था कि तुम सचमुच सिंहासन संभाल सकते हो। पुत्र, तुम्हारे पास कौशल था। तुम ऊर्जावान थे। तुम साहसी थे। तुमने गलतियाँ भी कीं। लेकिन कहीं न कहीं, तुम राज्य के बोझ तले दब गए, अपने आस-पास के लोगों के दबाव में आ गए और मूर्खतापूर्ण निर्णय लेने लगे। मुझे नहीं पता कि यह कब हुआ। मैं तुम्हारे पतन का साक्षी नहीं था। शायद तुम्हारी माँ इसके पीछे थी। तुम्हें कमज़ोर बनाने के लिए, क्योंकि जब तक मैं यहाँ था, तुम मज़बूत

थे। तुम्हारे भीतर मौजूद यूनानी रक्त ने वास्तव में तुम्हें कमज़ोर बना दिया है।”
सत्यसेना इन शब्दों से असमंजस में पड़ गया; हालांकि वह भयभीत भी था। "पिताजी, मुझे एक और मौका दीजिए और मैं वही करूंगा जो आप मुझसे अपेक्षा करते हैं।"
कर्ण ने कहा, “तुम कुछ मत करो। क्योंकि तुम कुछ कर ही नहीं सकते। और मुझे तुमसे अब और कुछ भी उम्मीद नहीं है। वापस राज्य जाओ और महल और उसके मंत्रियों की सेवा करो। मुझे अब तुममें कोई योद्धा नजर नहीं आता।”
कर्ण अपने पैरों पर खड़ा हुआ और तम्बू से बाहर निकलने लगा, तभी सत्यसेना ने कुंठा में चिल्लाकर कहा, "तुम्हें इतना यकीन कैसे है?" उसने गुर्राते हुए कहा।
कर्ण ने कुछ नहीं कहा। उसने चुप्पी साधे रखी। वह अपने तंबू की ओर बढ़ने लगा, क्योंकि वे भीम द्वारा उसके लिए रची गई अगली आक्रमण योजना की तैयारी कर रहे थे। उसका सेनापति तब तक नहीं लौटा था, और कोई खबर भी नहीं थी। इससे वह थोड़ा भयभीत हो गया। वह राजमहल के तंबू में पहुँचा, जहाँ उसका युद्ध कक्ष स्थापित था, और वहाँ उसने अष्टार को अपना इंतज़ार करते हुए पाया। “धर्म का यह आदमी यहाँ क्यों है?” उसने पूछा।
“महाराज, आपकी पत्नी राज्य में हंगामा मचा रही है,” अष्टर ने तिरस्कार भरे लहजे में कहा। “उसे काबू में रखना होगा। मैं सूर्य को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहा था, राज्य की मदद करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसने जुलूस रोक दिया, जिसके कारण रक्तपात हुआ।”
कर्ण ने आह भरी। झुंझलाहट से वह अपनी कुर्सी पर गिर पड़ा, जिसके सामने मेज पर युद्ध के नक्शे और खाके रखे थे, साथ ही बोर्ड के मोहरे भी थे जिनका इस्तेमाल अस्थायी दुश्मन मूर्तियों के रूप में किया जा रहा था। "मुझे नहीं पता कि क्या करूं।"
“भगवान सूर्य ने समाधि की अवस्था में आपका मार्गदर्शन किया।”
मुझे इस बारे में पक्का यकीन नहीं है। मैं अपने हाथों से अपनी पत्नी की हत्या नहीं कर सकता।
“तो फिर किसी और को करने दो।” उसने व्यंग्यपूर्वक कहा।
कर्ण ने अष्टार को पकड़कर तंबू की दीवारों से धक्का दिया। "मेरी पत्नी की हत्या की बात कभी मत करना, समझे!"

“महाराज, आपने सूर्य के आदमी को चोट पहुंचाई है। सूर्य…” वह हांफते हुए बोला। “वह आपको अपना… अपना वंशज कहता है, और आप उसके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं।”
कर्ण ने उसे छोड़ दिया और तुरंत अपने क्रोध पर पछतावा करने लगा। "मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं।"
"तुमको क्या परेशान करता है?"
“मेरे बेटे।” और फिर उसने जो कुछ भी घटित हुआ था, उसका वर्णन करना शुरू कर दिया।
जैसे-जैसे अष्टार सुनता गया, उसने अपने मन में अपने खुद के सिद्धांत गढ़ने शुरू कर दिए और बोला, “भगवान सूर्य आपकी परीक्षा लेते हैं। वे आपकी शक्ति की परीक्षा लेते हैं। आपके पुत्र में क्षमता है।”
"लेकिन उतना नहीं जितना मैं करता हूँ।"
"शायद, लेकिन वह आपकी कल्पना से कहीं अधिक हो सकता है।"
“क्या उस क्षमता तक पहुँचने का कोई रास्ता है?” कर्ण ने कहा। “हो सकता है मैं इस युद्ध से बच न पाऊँ, और मैं जानता हूँ कि सत्यसेना सत्ता संभालने के लिए उपयुक्त प्रतीत होता है, लेकिन मुझे डर है कि अंगा के लिए, अपनी माँ के लिए लड़ने का मेरा जीवन भर का सपना सत्यसेना की अज्ञानता के कारण चकनाचूर हो जाएगा।”
“तुम्हें क्या लगता है कि उसने यह साधारण प्रदर्शन कब हासिल किया?” अष्टार ने पूछा। “इसका कारण क्या था?”
“जब वह छोटा था, तब उसे तपेदिक हो गया था और तब से उसका दिमाग खराब हो गया है,” कर्ण ने कहा। “उसका व्यवहार और भी नरम हो गया है। वृषकेतु में अधिक साहस और बुद्धि है, लेकिन वह गद्दार था। उसने मेरे सहयोगियों के खिलाफ जाकर और अंग के विरुद्ध जाकर मेरी पीठ में छुरा घोंपा। और इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता।”
“मैं समझता हूँ,” अष्टार ने कहा। “महाराज, मैं आपकी पीड़ा को पूरी तरह समझता हूँ। आप संकट में हैं। आप असमंजस में हैं। भगवान सूर्य आपकी पीड़ा को देख रहे हैं, और इसीलिए उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है। जब आपने मुझे विदेशियों से बचाया था, तब आपने मुझे नया जीवन दिया था, और इसके लिए मैं सदा आपका आभारी रहूँगा। मेरे पास एक विधि है, जिससे सत्यसेना की रक्षा हो सकती है और उन्हें वह शक्ति मिल सकती है जो आप चाहते हैं। वह वही करेंगे जो

आप उनसे अपेक्षा करते हैं, लेकिन उस विधि में पीड़ा सहन करनी होगी। क्या आपको लगता है कि वह इसे सहन कर पाएंगे?”
कर्ण ने अष्टार की ओर देखा और उसकी आँखों में आशा की झलक थी। कर्ण ने कहा, “गुरु अष्टार, भले ही वह उस पीड़ा को सहने में सक्षम न हो, मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि वह सहने में सक्षम हो जाए।”

35

वह अपने राजघराने के खिलाफ, अपने पति के खिलाफ गद्दारी करने की कला का अभ्यास कर रही थी।
शनाया और मेनेंडर चुपचाप चलते रहे, मेनेंडर उसे दिलासा देता रहा और उससे धीमी, दबी हुई आवाज में बातें करता रहा।
"सब ठीक हो जाएगा," मेनांडर ने कहा।
आज उनका रूप बिलकुल अलग था। उन्होंने एक कुर्ता, लंबी, ढीली पैंट, बूट और गले में एक स्कार्फ बांध रखा था।
वे राज्य के भूमिगत सीवरों में थे, शनाया जानती थी कि वहाँ से निकलने का रास्ता ज़रूर है। एक समय था जब इसका इस्तेमाल कैदियों की तस्करी के लिए किया जाता था, लेकिन अब इसका उपयोग राज्य से बाहर निकलने के लिए किया जाता था। इसे खोलने के लिए, ज़ाहिर है, दो दरवाजों की चाबी होनी ज़रूरी थी। एक सीवर में प्रवेश करने के लिए और दूसरा बाहर निकलने के लिए। सीवरों का काफी समय से इस्तेमाल नहीं हुआ था, और वे वीरान और खाली पड़े थे।
"यह एक दिलचस्प माध्यम है।"
“तुम वही करोगे जो मैं कहूँ, ठीक है?” उसने आगे कहा। “मैं नहीं चाहती कि कुछ भी हाथ से निकल जाए, और अगर मुझे ऐसा होता हुआ दिखाई दिया, तो मैं इस योजना से पीछे हट जाऊँगी।”
“बिल्कुल, महाराज। ये आपके पिता के लोग हैं,” मेनांडर ने कहा। “वे आपका सम्मान मुझसे या किसी और से ज़्यादा करते हैं।”
तो मुझे योजना के बारे में संक्षेप में बताइए।
“हम शहर में प्रवेश करेंगे और पूरे खजाने पर कब्जा कर लेंगे। भगवान कर्ण मामले को सुलझाने आएंगे, और पूरी योजना की चाबी आपके पास है, इसलिए उन्हें आपसे बातचीत करनी होगी। और फिर आप अपनी शर्तें रख देना,” उसने वही दोहराया जो उसने कहा था।

“हां, और किसी और को पता भी नहीं चलेगा। तुम बहुत समझदार हो। तुम बहुत फुर्तीले हो। मैं नहीं चाहता कि पूरा शहर मुझसे नफरत करे।”
"बिल्कुल।"
“मैं बातचीत की शर्तें रखूंगा और मैं खुद को कर्ण के सामने पेश करूंगा। कोई मध्यस्थ नहीं।”
"बिल्कुल, महोदया।"
उसने सीवर का गेट खोला, और ठीक सामने एक बड़ा, टपकता हुआ सुरंगनुमा रास्ता था, जहाँ एक विशाल प्रकाश स्तंभ की तरह चमक रहा था। वे चुपचाप इंतजार करते रहे।
"तुम्हें पता है, मुझे यकीन है कि तुम्हें नहीं पता होगा, उसने मुझे तुम्हारी देखभाल करने के लिए यहाँ भेजा था," मेनांडर ने कहा।
"मेरा ख्याल रखें?"
“हाँ। उन्हें लगा कि आप किसी खतरे में होंगे। ज़ाहिर है, उन्हें भारतवर्षियों पर भरोसा नहीं है।” वह खुशी से मुस्कुराए। “उन्हें लगा कि वे आपका मनोबल तोड़ देंगे, आपकी रीढ़ में छुरा घोंप देंगे और आपका काम तमाम कर देंगे।”
उसने उपहास उड़ाते हुए कहा, “उसने मुझे कम आंका। वह हमेशा से ऐसा ही करता था। अपनी बेटियों को कम आंकता था। तुम्हें पता है वह क्यों चाहता था कि मेरी शादी कर्ण से हो? आखिर राजगद्दी के लिए ही तो थी। जब उसने देखा कि विरोध हो रहा है और मैं खुश हूं, तो उसने एक तरह से मेरी बात मान ली।”
“वह अंगा को अपने लिए क्यों चाहता था?”
“हमारे पास बहुत सारे जहाज़ थे। आज भी हैं। वह उनका इस्तेमाल अपने वतन में अपने विरोधियों पर हमला करने के लिए करना चाहता था,” उसने कहा। “कुछ लोगों ने उसके कामों के लिए उसे देश निकाला दे दिया था। आख़िरकार, वह निर्दयी था, और परिषद के सदस्यों ने उसे देश निकाला दे दिया था, और उसे बर्खास्त किए जाने से पहले जेल में डालने ही वाले थे। इसलिए वह इस मौके का फ़ायदा उठाकर जहाज़ों पर कब्ज़ा करना चाहता था और इस मामले को खत्म करना चाहता था। लेकिन उसे कर्ण से कोई समर्थन नहीं मिला, और उसने इसे छोड़ दिया। उसने यह भी सोचा कि उसकी बेटी अब उसकी बेटी नहीं रही, जो काफ़ी चौंकाने वाली बात थी। उसने मेरे पत्रों का जवाब दिया। यह उसकी अच्छी बात थी कि उसने पुरानी बातों को भुला दिया।”

मेनांडर ने सिर हिलाया और थोड़ा झुककर अभिवादन किया। "महामहिम, मैं आपकी सेवा में तत्पर हूं।"
"तुम्हें मेरे पिता के ये आदमी कैसे मिले?"
"उन्होंने मुझसे संपर्क किया," मेनांडर ने कहा।
उसे मेनांडर पर पूरी तरह भरोसा नहीं था। उसका व्यवहार अजीब था। वह ऊपर से तो बहुत अच्छा व्यवहार करता था, लेकिन साथ ही साथ चालाक भी था। उसके शब्दों के पीछे कोई बुरी मंशा ज़रूर थी। लेकिन वह उलझन में थी, और उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब किस पर भरोसा करे।
उन दोनों ने देखा कि लगभग एक दर्जन सैनिक फटेहाल कपड़ों में, जानवरों की खाल से बने लबादे, चोगे और सिर पर टोपी पहने हुए प्रकट हुए। उनके पास कोई प्रतीक चिन्ह नहीं था, कोई चिह्न नहीं था, कुछ भी नहीं। वे भारी-भरकम और कद-काठी के थे। जैसे ही उसने उन्हें देखा, वह उनके पहनावे और उनके आभूषणों को देखकर दंग रह गई।
उन्होंने कहा, "मैंने इन लोगों को अपने पिता के साथ कभी नहीं देखा।" नकाबपोश यूनानी सैनिकों में से एक ने कहा, "हम नए हैं। हमें जाने दो।" शनाया थोड़ी असमंजस में थी, फिर उसने इजाज़त दे दी। वे आगे बढ़ने ही वाले थे कि तभी नकाबपोश यूनानी सैनिक ने मुड़कर अपनी तलवार को तेज़ी से हवा में लहराया और मेनांडर की छाती चीर दी। मेनांडर चीखता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा। दूसरे आदमी ने सीवर के दरवाज़े बंद कर दिए और शनाया को पीछे धकेल दिया, ताकि वह दूसरी तरफ हो जाए, जबकि मेनांडर का शरीर दर्द से तड़प रहा था और वह डर से चीख रहा था।
“ये…ये…ये क्या हो रहा है?” उसने झुंझलाते हुए पूछा और मेनांडर की ओर बढ़ी, जिस पर उसे भरोसा नहीं था, लेकिन हैरानी की बात ये थी कि वह खुद ही इसका शिकार बन गया था। “तुम लोग कौन हो?”
“ओह, हम डाकू हैं,” नकाबपोश आदमी ने कहा। “हम तो बस राज्य में घुसने का रास्ता ढूंढ रहे थे। और अब जब हमें वह रास्ता मिल गया है, तो हम जानते हैं कि हमें क्या करना है।”
"चोरी करने के लिए?"
"और भी बहुत कुछ करने के लिए," नकाबपोश आदमी ने कहा, जैसे ही उसने अपना नकाब पीछे खींचा, और शनाया की रीढ़ में एक सिहरन दौड़ गई।
"पिता!"

[illegible]

36

जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं जब मनुष्य यह निर्णय लेता है कि वह नरसंहार के बीच भी जीवित रहेगा, भले ही वह सच्चे सुख का एक क्षण प्राप्त करने के लिए ही क्यों न हो।
और वही दिन वृकोदरा के लिए निर्णायक साबित हुआ।
युद्ध शुरू हो चुका था, और उसके सैनिक झड़पों से निपटने के लिए आगे बढ़ चुके थे, जबकि वह युद्ध की तैयारी में जुट गया था। उसने अपना हेलमेट पहना, और खोपड़ी के चिन्ह वाला कवच ओढ़ लिया, साथ ही बिना दस्तानों के अपना विशाल गदा भी उठा लिया। उसके घुटनों पर कोई पैड नहीं थे, न ही कोई कमरबंद जो उसकी धोती को थामे रख सके। वह युद्ध में नग्न था, ठीक वैसे ही जैसे कोई राहगीर चलता हो। वह अपने रथ पर आया, और घोड़ों की लगाम खुद ही पकड़ ली, किसी सारथी को अपना रथ चलाने नहीं दिया।
जब वह बैरिकेड्स पार करके खुद को आगे बढ़ाने ही वाला था, तभी उसने देखा कि पुक्कासती उसकी ओर आ रहा है, जिसकी छोटी तलवार उसकी कमरबंद से लटक रही थी।
"हे भगवान वृकोदरा, हमें एक समस्या का सामना करना पड़ सकता है।"
“वह क्या होगा?” वृकोदरा ने युद्ध पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूछा। "अंगा के पास हमसे कहीं बड़ी सेना है।"
“तो ठीक है, मुझे परवाह नहीं।” उस दरिंदे ने जवाब दिया।
“आपको ऐसा करना चाहिए। हमारे लोग मर रहे हैं, और हमें एक अतिरिक्त सेना की आवश्यकता है।”
"वे इसलिए मर रहे हैं क्योंकि मैंने प्रवेश नहीं किया है।"
"और यह ठीक है, और यह आपकी महानता है, कि आप कितने उदार और शक्तिशाली हैं, लेकिन हमें रणनीतिक भी होना होगा।"
वृकोदरा ने मुंह बनाया। उसे ये बातचीत बिल्कुल पसंद नहीं थी। "आप क्या सुझाव देते हैं?"

“हमने कुछ मील दूर एक स्थानीय राक्षस बस्ती की पहचान की है। मेरा सुझाव है कि हम उनसे बातचीत करें और उन्हें अपने पक्ष में शामिल करके भाड़े के सैनिक बना लें। राक्षसों को अपने साथ रखने से युद्ध जीतने की हमारी संभावना काफी बढ़ जाएगी।”
“राक्षस? वे भरोसेमंद नहीं हैं।” उसने दबी आवाज़ में कहा, “राक्षस! वे भरोसेमंद नहीं हैं।” वह भगवान शिव की पूजा करने वाले, लेकिन अपने नियम और जीवन शैली रखने वाले योद्धाओं की जाति के बारे में बात कर रहा था। वे शहर की भागदौड़ छोड़कर जंगल में रहने लगे, जंगल के लिए काम करने लगे और अपने पूर्वज भगवान रावण की योद्धा मानसिकता का अनुसरण करने लगे। “मुझे नहीं लगता कि हमें उनके साथ किसी भी तरह का व्यापार करना चाहिए।”
लेकिन वृकोदरा के लिए उसके साथ आगे बढ़ने का एक कारण जरूर था। उसका एक ऐसा अतीत था जिसे वह राक्षसों के साथ उजागर नहीं करना चाहता था। पुक्कासती ने कहा, "मैंने सुना है कि उस बस्ती में हजारों योद्धा हैं जिनका हम उपयोग कर सकते हैं। हमें बस उन्हें मनाना होगा।"
वृकोदरा ने सिर हिलाया। “मैं जानता हूँ कि वे कैसे हैं, और मैं उन पर विश्वास नहीं करता। इसलिए रहने दो।”
और यह कहते ही, उसका रथ बैरिकेड तोड़कर बौने को पीछे छोड़ते हुए, चिलचिलाती धूप और लाल आसमान के नीचे एक युद्ध में प्रवेश कर गया—शरीर क्षत-विक्षत हो रहे थे, मानव अंग अजीबोगरीब दिशाओं में बिखर रहे थे। हर तरफ खून-खराबा और भयावहता फैली हुई थी। लेकिन उस नरसंहार में, वृकोदरा फला- फूला।
उसने अपने रथ के पहियों के फ्लैप खोले, जिससे दोनों ओर से बड़े-बड़े धारदार ब्लेड बाहर निकले।
और उसने उन पर हमला करना शुरू कर दिया। उसने वार किए, प्रहार किए, आग लगाई और विरोधी सेना को हर तरह से नुकसान पहुँचाया। जब वृकोदरा ने अपने रथ से छलांग लगाई, हाथ में गदा लिए और ज़मीन पर प्रहार किया, तो विरोधी पक्ष के सैनिक गिर पड़े।
जैसे-जैसे और सैनिक आते गए, वह उन्हें पीट-पीट कर कुचलने लगा। उसने उन्हें धक्का दिया, धकेला और घुटनों के बल गिरा दिया, और वह हँसने लगा, उसके दुश्मनों का खून उसके चेहरे पर फैल गया, उसकी हँसी इतनी उन्मादी थी कि कोई उसे पागल ही समझेगा।

जैसे ही उसने खून में पनाह ली, उसने देखा कि आकाश से अचानक आग का एक विशाल गोला प्रकट हुआ, और जैसे ही उसकी आंखों ने उस आग को देखा, वे तुरंत सिकुड़ गईं।
वह पीछे मुड़ा, और आग का गोला उनके करीब आकर गिरा, जैसे ही वह घबराकर भागने लगा, उसका दिल बैठ गया।
एक सिपाही प्रकट हुआ और उसने उसे चाकू मारने की कोशिश की, लेकिन वृकोदरा ने उसका गला पकड़कर उसे ऊपर उठाया, उसकी पिंडली पर लात मारी और उसे दूर फेंक दिया। फिर एक और सिपाही प्रकट हुआ, लेकिन उसने उसे अपनी गदा से इतना मारा कि वह बुरी तरह से लहूलुहान हो गया। फिर एक और सिपाही प्रकट हुआ, जिसने उस आदमी के सिर को अपनी गदा से तब तक पीटा जब तक कि वह चूर-चूर न हो गया।
यह सब बहुत अच्छा चल रहा था, तभी उसने गुलेलों से दागे जा रहे आग के एक और गोले को देखा, और फिर वे तेजी से एक के बाद एक आने लगे। उसने देखा कि वे गोले उसके चारों ओर जमीन पर गिर रहे थे और पूरे इलाके को रोशन कर रहे थे। वृकोदरा पीछे हट गया, तभी आग का एक गोला उसकी पीठ पर लगा, लुढ़कता हुआ उसके ऊपर से नीचे तक उसे जला गया। उसे भय का एक तीव्र झटका लगा और उसका शरीर सुन्न हो गया।
उसने अपनी बची हुई ऊर्जा का इस्तेमाल घोड़ों को सीटी बजाकर बुलाने और अपने रथ को लाने में किया, और जल्दी से उस पर सवार होकर मुख्य भूमि की ओर लौट गया जहाँ वे पहले तैनात थे। दरअसल, लगातार ग्रीक गोलाबारी से उन पर बरसने के बाद सभी सैनिक भी पीछे हटने लगे थे। उसने गहरी साँस ली, होश में आने की कोशिश करते हुए, क्योंकि उसका शरीर जगह-जगह से जल गया था और उसका हाथ खून से लथपथ था।
वह वहीं लेटा हुआ जोर-जोर से चिल्ला रहा था, युद्ध के देवताओं द्वारा धोखा महसूस कर रहा था, जिन्होंने मानो उससे मुंह मोड़ लिया था।
पुक्कासती अचानक कहीं से प्रकट हुए और उन्होंने नौकरों को वृकोदरा को ऊपर खींचने का आदेश दिया, जब तक कि उन्हें घसीटकर चिकित्सकों के तम्बू में नहीं डाल दिया गया।
“वहाँ क्या हुआ?”
“आग…आग…” उसका दिल अभी भी जल रहा था और उसके होंठ गंभीर थे। “वे गुलेल का इस्तेमाल कर रहे हैं।”

"तो फिर हम भी उनका इस्तेमाल करते हैं।"
"फिलहाल पीछे हटें।"
“ठीक है, कोई बात नहीं।” और पुक्कासती ने अपने एक गार्ड को पीछे हटने का आदेश दिया।
एक लड़ाई महीनों और यहाँ तक कि सालों तक चलती है, ये झड़पें तब तक जारी रहती हैं जब तक कि एक पक्ष हार मानकर सफेद झंडा नहीं उठा लेता। और उसने कभी उम्मीद नहीं की थी कि पहले ही संघर्ष के दौरान वह हार मान लेगा।
"अब आप क्या करना चाहते हैं?"
हम कल हमला करेंगे।
और हमें और अधिक नुकसान होता है।
वृकोदरा ने अपने रणनीतिकार की ओर देखा और हताशा में दांत पीसते हुए बोला, "ठीक है, राक्षस बस्ती से संपर्क करो।"
"अच्छा, धन्यवाद। मुझे लगा था कि आप ज़्यादा ज़िद्दी होंगे और इसमें ज़्यादा समय लगेगा।"
"जब आपकी बात हमेशा मानी जाती है, तो जिद्दी होने का क्या फायदा?"
“अच्छा। तुम समझ गए।” वह मुस्कुराया। “राक्षस के बारे में पूरी चर्चा में बस एक ही बात ध्यान रखने वाली है।”
वह कराह उठा। "अब क्या?"
“ओह, ये तो... कुछ नहीं, इसका नेतृत्व आपकी गर्भवती पत्नी कर रही हैं,” उन्होंने कहा। “हिदाम्बी।”

37

वृषकेतु हमेशा से ही परिवार की चाह रखता था।
और उसे वह कभी नहीं मिला।
लेकिन वही तड़प, वही हानि का भाव, तृप्ति के जीवन में भी उतना ही प्रासंगिक था। उसे परित्याग की समस्या थी। वे उस कस्बे में प्रवेश कर चुके थे, जो हाथियों के शहर के करीब था, और उन्होंने अपने लिए कुछ नए कपड़े और भोजन का इंतजाम कर लिया था। उन्होंने बारी-बारी से स्नान किया और हस्तिनापुर की यात्रा के लिए तैयार हो गए।
वे ज्यादा कुछ नहीं बोलते थे, सिवाय अश्वत्थामा की कभी-कभार की घुरघुराहट और बड़बड़ाहट के, जो हमेशा शिकायत करता रहता था, रोता रहता था और कुछ कहने की कोशिश करता रहता था।
वे जंगल में रुके, जहाँ उन्होंने आग जलाई और रात बिताने के इरादे से एक शिविर लगाया। हालाँकि, आवारा और लुटेरों के मामले में जंगल अक्सर विवाद का केंद्र रहा था। उन्हें सावधान रहना था, खासकर अश्वत्थामा जैसे व्यक्ति के साथ। यह कहना मुश्किल है कि मणि के लिए अंगा से कितने और सैनिक उनका पीछा कर रहे थे।
“तुम क्या सोच रही हो?” वृषकेतु ने तृप्ति से पूछा। वह उससे बातचीत शुरू करना चाहता था, लेकिन वह शांत स्वभाव की महिला थी।
“कुछ नहीं,” उसने कहा।
लेकिन उस शब्द की कई परिभाषाएँ थीं जिनके बारे में वह अनजान था, और वह चाहता था कि उसे पता हो।
“देखो, हमें एक-दूसरे को जान लेना चाहिए,” वृषकेतु ने कहा। “जैसे तुम्हारा बैकग्राउंड क्या है, तुम कहाँ से आए हो? तुम कौन हो? मुझे कुछ नहीं पता। और हस्तिनापुर में प्रवेश करते ही मुझसे ये सवाल पूछे जाएँगे।”

अश्वत्थामा कीचड़ में फंसा हुआ था, उसके हाथ-पैर बंधे हुए थे और वह छटपटा रहा था। तृप्ति ने उसका मुंह खोला और उसने तुरंत कहा, "लड़का तुम्हें पसंद करता है, लड़की।"
तृप्ति गुर्राया और अपना मुंह फिर से भर लिया। "वह ज़रूर कुछ बेवकूफी भरी बात कहेगा!"
वृषकेतु को जब इस तरह पुकारा गया तो वह लगभग शर्म से लाल हो गया।
तृप्ति ने उसकी ओर एक नजर डाली, और उसके चेहरे पर व्यंग्य और विश्वास का भाव था, लेकिन उसने बस नजरें हटा लीं, उसके कान खड़े हो गए, और उसने वृषकेतु को आगे कुछ भी कहने से रोक दिया।
“क्या हुआ?” वृषकेतु ने फुसफुसाते हुए पूछा।
तृप्ति ऊपर चढ़ने लगी और दूसरी ओर बढ़ने लगी, वृषकेतु भी उसके पीछे-पीछे गया और उसे दूसरी तरफ से कुछ फुसफुसाहटें सुनाई देने लगीं। वे झाड़ियों से बाहर निकले और चांदनी रात में तीन आदमियों को आग के चारों ओर बैठे देखा, लेकिन वे फटेहाल, युद्ध में घायल पूर्व सैनिकों जैसे लग रहे थे। उनके पास पिंजरे थे जिनमें छोटी लड़कियां सो रही थीं, मानो वही उनका घर हो। “गुलामों का व्यापार करने वाले,” उसने एकदम स्पष्ट स्वर में कहा। “वे इन महिलाओं को ऊँची बोली पर बेचने के लिए कहीं जा रहे हैं।”
वृषकेतु ने महिलाओं की गुलामी और बच्चों के अपहरण के बारे में सुना था, लेकिन अंग में ऐसा कभी नहीं होता था। अब, जब वे अंग से निकलकर इस बंजर भूमि में आ गए, जहाँ कोई दूसरा राज्य नहीं था, तो उन्होंने समाज के नियम तोड़ने वालों को देखा। इसे सबसे बड़ा पाप माना जाता था, क्योंकि ये युवतियाँ भोली थीं और वे बहुत बड़े लोगों, राजाओं या विदेशी दूतों की गुलाम बन जाती थीं, जो उन्हें उनके अपने देश वापस ले जाते थे। यह आम बात थी, और ये लड़कियाँ अधिकतर गरीब परिवारों और गरीबी से ग्रस्त क्षेत्रों से आती थीं, और उनकी चिंताएँ ऐसी थीं जिनका समाधान कुछ ही लोग कर सकते थे।
हमें उनकी मदद करनी होगी।
“उन आदमियों को देखो। वे तो बिल्कुल मजबूत हैं,” वृषकेतु ने कहा। “हो सकता है हमें मदद मिल जाए और हम बाद में सहायता मांग सकें।”
“नहीं,” उसने कहा।
"क्यों?"

“आप मेरे बारे में जानना चाहते थे। तो लीजिए—एक ज़माने में, मैं भी उन्हीं लड़कियों में से एक थी, ठीक उसी पिंजरे में बंद और मुझे पता नहीं था कि मैं कहाँ जा रही हूँ। मेरे मालिक अच्छे और दयालु थे, जब तक कि मैं एक ऐसे क्रूर साम्राज्य का हिस्सा नहीं बन गई जिसने मेरे रंग-रूप का शोषण किया,” उसने तिरस्कार और दुख भरे स्वर में कहा। “तो नहीं, धन्यवाद, मैं उन लड़कियों की मदद करना चाहती हूँ।”
इस रहस्योद्घाटन के बाद वृषकेतु अधिक कुछ नहीं कह सका।
उनका ध्यान भटकाओ।
और वृषकेतु कुछ और कह पाता, उससे पहले ही वह गायब हो गई।
वृषकेतु को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करे, तभी उसने अश्वत्थामा को कोई धुन गुनगुनाते हुए सुना और उसे वापस खींच लिया।
"मुझे आपकी मदद की जरूरत है।"
उसने अश्वत्थामा के मुंह से पट्टी हटाई और अश्वत्थामा ने सिर हिलाकर कहा, "अपनी आजादी के लिए कुछ भी।"
आपको कोई आजादी नहीं मिलेगी।
तो फिर मैं तुम्हारी मदद क्यों करूँ?
क्योंकि मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति हूं जो आपके पिता के पास आपकी सुरक्षित वापसी सुनिश्चित कर सकता हूं।
“तुम समझते नहीं हो, लड़के। यहाँ एक साजिश रची जा रही है,” अश्वत्थामा ने कहा।
“तुम्हारी किसी बात पर मुझे विश्वास नहीं है। तुम कैदी हो और मैं तुम्हें पकड़ने वाला हूँ,” वृषकेतु ने कहा। “तुम भागने के लिए कुछ भी कर या कह सकते हो। अगर तुम मेरी मदद करोगे, तो मैं तुम्हें मदीरा दूंगा।”
“वाह, यह तो काफी अच्छा सौदा है। ठीक है फिर।”
वृषकेतु ने अश्वत्थामा को योजना का खुलासा करने के बाद उसे घसीटते हुए ले गया, और वे दास व्यापारियों की नज़र में आ गए, जो तुरंत अपने मेमने और गोमांस खाते हुए अपनी सीटों से उठ खड़े हुए। उन्होंने वृषकेतु को देखा और अपनी तलवारें निकाल लीं।
“मैं रास्ता भटक गया हूँ, दोस्तों,” वृषकेतु ने कहना शुरू किया। “मुझे इस कैदी को हस्तिनापुर ले जाना है, और लगता है मैं रास्ता भूल गया हूँ।”

दास व्यापारी ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं, एक शब्द भी नहीं बोला। इसी बीच, जब उनकी पीठ पिंजरों की ओर थी, तृप्ति चुपचाप पिंजरों की ओर गई और अपनी कटार से उन्हें खोलकर लड़कियों को बाहर निकाल दिया, जितना हो सके चुपचाप। अश्वत्थामा ने अतिरंजित अभिनय करने की कोशिश करते हुए कहा, "मैं बहुत कीमती कैदी हूँ। अगर आप मुझे किसी स्थानीय नागा बस्ती में ले जाएँगे, तो वे आपको अच्छी खासी रकम देंगे।"
वृषकेतु ने योजना के विरुद्ध जाकर मन ही मन अपशब्द कहे। दास व्यापारी भ्रमित हो गए और तृप्ति ने पीछे से शोर मचाया, जिस पर दास व्यापारियों ने उनकी ओर देखा और धोखे का बोध होने पर उनका पीछा करना शुरू कर दिया। वृषकेतु ने अपनी तलवार निकाली और तुरंत उनमें से एक की गर्दन पर वार किया, जबकि अश्वत्थामा ने दूसरे के पैर की उंगलियों को काट लिया। तृप्ति तीसरे दास पर झपटी और उसे बेरहमी से पीटने लगी। यह लंबा संघर्ष कुछ देर तक चलता रहा, जब तक कि वृषकेतु ने अंत में दास के हृदय में वार करके उसे समाप्त नहीं कर दिया।
“अच्छा, यह काम हो गया,” अश्वत्थामा ने कहा, जबकि तृप्ति लड़कियों की देखभाल कर रही थी।
“इसीलिए मुझे तुम पर भरोसा नहीं है,” वृषकेतु ने कहा। “तुम इस खूनी मुसीबत से बचने के लिए हर घटिया तरीका अपनाओगे।” उसने उसे पैरों पर खड़ा किया।
“तो फिर मेरी अगली बात पर भी भरोसा मत करना,” उसने कहा। “इस राज्य में कदम रखते ही तुम्हें पछतावा होगा, मैं वहां मौजूद हर देवता की कसम खाता हूँ।”

38

सत्यसेना ने सुना कि उसके भाई ने अपेक्षा से अधिक हंगामा किया था। अगस्त्य के दल से भागे हुए दो सैनिक जब वापस लौटे और वृषकेतु द्वारा एक सेनापति की हत्या का किस्सा सुनाने लगे, तो पूरे शिविर को इस बात का पता चल गया। इससे काफी हंगामा मच गया और वह जानता था कि उसके पिता को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आएगी। एक ओर तो वह सत्यसेना से निराश थे, वहीं दूसरी ओर वृषकेतु से भी व्याकुल थे।
वे आदर्श पुत्र नहीं थे।
सत्यसेना अपने पलंग पर आराम कर रहे थे जब उन्हें यह खबर मिली और वे चुपचाप इसे आत्मसात कर रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि अष्टर भी उनके तम्बू में प्रवेश कर गया।
“गुरु अष्टार,” उसने रोमा की हत्या को याद करते हुए कहा। उसका क्रोध चरम पर था, लेकिन वह कुछ कर नहीं सकता था, क्योंकि वह कर्मों से नपुंसक और आत्मा से पूर्णतः कायर था। “आप यहाँ कैसे आए हैं?”
“तुम्हारे पिता ने मुझे तुम्हें बुलाने के लिए भेजा है।”
"मुझे वापस ले जाने के लिए?"
"आपको एक नई भूमि पर ले जाने के लिए।"
"आपका क्या मतलब है?"
“वह चाहता है कि तुम एक मर्द बनो,” उसने कहा, तभी पीछे से दो अनुयायी प्रकट हुए। “वह चाहता है कि तुम अपने भीतर के विदेशी खून को त्याग दो और अपनी राष्ट्रीयता को अपना लो।”
सत्यसेना असमंजस में था। उसके शरीर में अभी भी दर्द था। "मुझे नहीं पता कि क्या हो रहा है।"
"हमारे साथ आइए।"
“नहीं। तुम बताओ, क्या बात है?” उसकी घबराहट उस पर हावी हो रही थी, वह डरा हुआ था, उसके गले में पित्त जैसा कुछ बन रहा था।

"हमारे साथ आओ, सत्या।"
सत्यसेना वहीं अपने बिस्तर पर जमे हुए पड़े रहे।
“तुम्हें पता है तुम्हारा नाम मैंने रखा है,” अष्टार ने कहा। “मैंने तुम्हें बचाया भी है। मैंने तुम्हें बीमारी से बचाया और तुम्हारे पिता इसके लिए मेरे ऋणी हैं। वे मेरा बहुत सम्मान करते हैं। और मैं भी उनका बहुत सम्मान करता हूँ,” अष्टार ने आगे कहा। “तुम्हारा नाम सत्य से आया है। यह उनके गुरु, उनके मामा सत्य से आया है, जो एक महान सेनापति थे और जिन्होंने जरासंध से लड़ने में उनकी मदद की थी। उन्हें लगा था कि तुम उनकी महान आत्मा का प्रतिबिंब बनोगे, लेकिन तुम अपनी माँ के पास चले गए, और वे जानते हैं कि यह कठिन होगा, लेकिन यह करना ही होगा।”
सत्यसेना ने देखा कि परिषद के अनुयायी उसे पकड़ने के लिए तैयार होकर प्रकट हुए, लेकिन उसने उन्हें दूर धकेलने और एक तरफ करने की कोशिश की, तभी उसके पैरों को पकड़ लिया गया और वह धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ा, फिर उसे घसीटकर उठाया गया।
इसे जरूरत से ज्यादा मुश्किल मत बनाओ।
सत्यसेना थोड़ा नरम पड़ा, फिर उसे रात के अंधेरे में बाहर धकेल दिया गया। चाँद चमक रहा था और आगे का युद्ध मानो थम सा गया था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, मानो दोनों पक्ष अपनी अगली चाल की योजना बना रहे हों। सत्यसेना ने देखा कि दूर से कुछ लोग उसे उत्सुकता से देख रहे थे। उसे घसीटते हुए एक लकड़ी के लट्ठे के सामने लाया गया, जहाँ एक नकाबपोश आदमी हाथ में छुरी लिए खड़ा था।
"आप क्या करने का प्रयास कर रहे हैं?"
"भगवान सूर्य के लिए बलिदान करने के लिए, आपको वह चीज देनी होगी जो आपको सबसे ज्यादा प्रिय हो।"
"नहीं - नहीं…"
"और बदले में, वह तुम्हें सब कुछ देगा," अष्टर ने प्रसन्नता भरी मुस्कान के साथ कहा।
जब सत्यसेना को इस बात का एहसास हुआ कि क्या हो रहा है, तो उसने खींचना और धक्का देना शुरू किया, लेकिन वह ज्यादा कुछ नहीं कर सका।

“तुम मूर्ख हो! इन्हें रोको! मूर्खों!” उसने अपने अधीन सैनिकों पर चिल्लाते हुए कहा, लेकिन वे चुपचाप खड़े रहे। “पिताजी! पिताजी! देखो ये मेरे साथ क्या कर रहे हैं!”
उसने तेवर चढ़ाए और चिल्लाया।
“माफ़ करना, बच्चे,” अष्टर ने फुसफुसाते हुए कहा, जैसे ही उसका हाथ लकड़ी के लट्ठे पर टिका हुआ था और छुरी उसके पास पहुँच रही थी। “लेकिन तुमने मुझसे कहा था कि तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे पिता तुमसे निराश हों।”
इसके बाद सत्यसेना ने विद्रोह करना बंद कर दिया, यह सोचकर उसकी आँखें नम हो गईं। "हाँ।"
“उसके लिए ऐसा करो, और वह कभी निराश नहीं होगा। भगवान सूर्य इसका ख्याल रखेंगे,” अष्टार ने मुस्कुराते हुए कहा।
सत्यसेना ने अपने जबड़े भींच लिए। उन्होंने अपने अनुयायियों को छोड़ दिया और स्वेच्छा से अपनी तलवार वाली भुजा त्याग दी। यह वही भुजा थी जिस पर उन्हें गर्व था, वही भुजा जो उन्हें उनके शत्रुओं से बचाती थी।
और अब वह हार मान रहा था।
उसने अपने पिता को देखा, जो दूर से उसे घूर रहे थे। वह अपने तम्बू में थे और थोड़े डरे हुए भी लग रहे थे।
"करो," सत्यसेना ने कहा, और उसकी निगाहें अपने पिता से मिल गईं, जिन्होंने दूर से ही सिर हिलाकर सहमति दी।
तेज धार वाला चाकू तेजी से गिरा और उसकी कोहनी तक का हाथ काट दिया। तुरंत ही उसके शरीर से खून बहने लगा और वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा। चिकित्सक आए और खून बहना रोकने लगे, जबकि वह असहनीय दर्द से चीखता-चिल्लाता रहा। लेकिन तलवारबाजी में दोबारा हिस्सा न ले पाने का दर्द उसे सबसे ज्यादा तकलीफ दे रहा था।
वह कीचड़ पर पीठ के बल गिर पड़ा, उसकी आँखें तनावग्रस्त थीं। उसने ऊपर अष्टार की ओर देखा, जो उसके बगल में घुटनों के बल बैठा था।
“तुमने जो किया वो अच्छा हुआ।” अष्टार ने मुस्कुराते हुए उसके कंधे पर थपथपाया। “अब तुम उठोगे और ऐसी शक्ति से परिपूर्ण हो जाओगे। तुम्हारे पास सब कुछ होगा। और मेरे पास तुम्हारे लिए एक खबर है।”
“क्या…क्या…” खून की कमी के कारण वह कुछ बेहोशी की हालत में था।

“मुझे मेरी चिड़ियों से पता चला है कि तुम्हारी माँ के नेतृत्व में यूनानी कुछ योजना बना रहे हैं। मेरे और सूर्य देव के सिवा कोई नहीं जानता। राज्य लौट जाओ और उन्हें नष्ट कर दो। उनके सिर लेकर लौट आना, तब तुम्हारे पिता को सबसे अधिक गर्व होगा।”
सत्यसेना ने दर्द के बावजूद मुस्कुराते हुए कहा, "धन्यवाद। और मैं भगवान सूर्य को निराश नहीं करूंगा।"
“हाँ। और उसने तुम्हें एक और जीवन, एक और अवसर दिया है,” अष्टर ने कहा। “और जब मैं कहता हूँ कि तुम्हें यूनानियों से निपटना है, तो तुम्हें उन सभी से निपटना है।”
सत्यसेना उसका मतलब समझ गया था।
भगवान सूर्य…वे अपनी माता की हत्या करवाना चाहते थे।

39

शनाया ने खून बहना तो रोक दिया था, लेकिन मेनांडर के खूनहीन चेहरे को देखकर वह समझ गई कि वह ज्यादा देर तक जीवित नहीं रह पाएगा।
उसका सिर उसकी गोद में था, और वह कांप रहा था, खुद को रोकने की कोशिश कर रहा था। उसके हाथ उसकी बाहों को जकड़े हुए थे, और खून से लथपथ तरल पदार्थ उसके कपड़ों को भिगो रहा था।
खून बहते हुए उसने उससे पूछा, “क्या हुआ? क्या गड़बड़ हुई? क्या चल रहा है? तुमने मुझे मेरे पिता की मौत दिखाई थी और वो तो ज़िंदा हैं।” “मैं…मैंने तुम्हारे पिता की सेवा की थी,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “उन्होंने मुझे यहाँ तुम्हारी जासूसी करने के लिए भेजा था।”
"मेरी जासूसी क्यों कर रहे हो?"
“क्योंकि वह जानना चाहता था कि क्या हो रहा है, उसे इससे क्या फायदा हो सकता है। मैंने हमेशा उसकी सेवा की, और उसने मुझे धोखा दिया।” उसने अपने घाव की ओर देखा।
“हां, वो मेरे पिता हैं। उन पर भरोसा करने से पहले आपको मुझसे पूछना चाहिए था,” शनाया ने कहा। “और क्या?”
“वह काफी समय से दूसरे राजा के पैसों पर जी रहा था, लेकिन यूनानी होने के कारण कई मोर्चों पर बहिष्कृत किए जाने के बाद उसकी स्थिति गिरने लगी। हालात तब और बिगड़ गए जब जरासंध ने आर्किमिडीज के साथ किया गया समझौता तोड़ दिया और उसने इसके लिए खुद को कोसा।” उसे खून की खांसी आई। “उसने सोचा, मुझे कर्ण के साथ साझेदारी करनी चाहिए थी। तब मुझे धोखा नहीं मिलता।”
“हां। यह सच है,” उसने मुस्कुराते हुए गर्व से कहा।
“उसने सोचा। घर लौटना ही सबसे अच्छा है। ग्रीस वापस। अपने वतन वापस और वहीं रहना। लेकिन इसके लिए उसे सेना, सिक्के और जहाज चाहिए थे। वह मुझसे और अधिक संपर्क साधने लगा, यह जानने की कोशिश कर रहा था कि वह हमसे और किस तरह

लाभ उठा सकता है, लेकिन कर्ण स्वाभाविक रूप से अनिच्छुक था। उसने ध्यान नहीं दिया। वह जानता था कि अगर उसके विश्वासघाती से संपर्क किया गया तो उसकी जान खतरे में पड़ जाएगी। लेकिन वह यह भी जानता था कि अंग ही उसकी एकमात्र मुक्ति है।”
“वह जानता था कि प्रवेश करने का एकमात्र तरीका कर्ण को मारना है, इसलिए उसने मुझे परेशान किया और आपसे ऐसा करवाने के लिए दबाव डाला,” मेनांडर ने कहा। “इसीलिए मैंने बार-बार आपसे पूछा, लेकिन वह किसी न किसी कारण से बच जाता था। कप्तान आर्किमिडीज क्रोधित हो गए और उन्होंने उसे राज्य में प्रवेश करने देने की अनुमति मांगी, और मैंने आपकी मदद से ऐसा ही किया।” शनाया ने अपना सिर हिलाया, उसे इस बात से घृणा हो रही थी कि उसे इस तरह का काम करने के लिए बहकाया गया था।
“जिस व्यक्ति की हत्या हुई थी, वह कौन था? कौन मेरे पिता जैसा दिखता था?” “अरे, बस एक बेचारा किसान था, जो देखने में थोड़ा-बहुत उसके जैसा लगता था,” मेनांडर ने कहा। “इसीलिए मैं नहीं चाहता था कि आप उसका चेहरा देखें, क्योंकि नहीं तो आप उसे पहचान लेते।”
“तो कर्ण ने कभी हमला नहीं किया?”
“नहीं। वह हमेशा आपके वचन का पालन करता था,” मेनांडर ने पीला पड़ते हुए, चेहरे की चमक खोते हुए कहा। “उसने उस पर हमला नहीं किया, जबकि वह आसानी से ऐसा कर सकता था। लेकिन वह आपसे प्यार करता था। चाहे कुछ भी हो जाए।” Shanaya flared her nostrils.
मुझे नहीं पता उसने मुझ पर हमला क्यों किया। मैंने वह सब कुछ किया जो उसने मुझसे करने को कहा था।
“मुझे पता है,” शनाया ने कहा। “तुमने अपना काम कर दिया है और अब उसे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। और सच कहूँ तो,” उसने उसकी गर्दन मरोड़ते हुए कहा, “मुझे भी।”
मेनांडर ने आराम किया और सुरंग के दूसरी ओर चलने लगी, यह देखने के लिए कि सीवेज के अंत में क्या है। उसे ऊपर जाने वाली एक सीढ़ी मिली, लेकिन दुर्भाग्य से वह ऊपर का रास्ता बंद था, किसी चीज से अवरुद्ध था। उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे धक्का देने की कोशिश की और आखिरकार दरवाजा खोलने में सफल हो गई। उसने अपना सिर उस छोटे से खुले स्थान से बाहर निकाला और चारों ओर एक विशाल रेगिस्तान देखा, और राज्य कुछ ही कदमों की दूरी पर था, लेकिन

वह उसके बाहर थी। दूसरे छोर पर एक जंगल था, और राज्य में प्रवेश करने का यह सबसे अच्छा रास्ता था, लेकिन बहुत से लोग इस रास्ते के बारे में नहीं जानते थे, इसलिए यह एक रहस्य बना रहा।
सीवर के अंदर से उसे कुछ आवाज़ सुनाई दी, इसलिए उसने दरवाज़ा बंद कर लिया और लाश के पास वापस चली गई। जब तक वह वहाँ पहुँची, उसने देखा कि उसके पिता जालीदार दरवाज़े के दूसरे छोर से लाश को घूर रहे थे, उनके चेहरे पर एक घिनौनी मुस्कान थी। वह लाश को देखती रही, तभी उनके पिता ने कहा, “ओह, और मैंने सोचा था कि भारतवर्षियों के साथ रहते हुए तुम नरम दिल हो जाओगी।” वह हँसे। उनके बाल छोटे थे और उनके दाँत हमेशा की तरह टेढ़े थे। कभी एक सुंदर आदमी रहा वह अब अंदर से सड़ा हुआ हो गया था। “लेकिन मुझे खुशी है, मेरी बेटी अभी भी तुम्हारे अंदर जीवित है।”
“मैं तुमसे नफरत करती हूँ,” शनाया ने दाँत पीसते हुए कहा। “तुम्हें सिर्फ अपने पैसे और रुतबे की फ़िक्र थी, अपने खून की कभी नहीं।”
“सच कहूँ तो, लड़की, तुम्हारा जन्म एक वस्तु के रूप में इस्तेमाल होने के लिए हुआ था, और कुछ नहीं। हमें यहाँ भारतवर्षियों के साथ मज़बूत संबंध बनाने थे, और इसके लिए तुम्हारी स्त्रियों को सौंपने से बेहतर तरीका और क्या हो सकता था। दुर्भाग्य से, तुम्हारा पति तुमसे प्रेम करने लगा।” उसने अपना सिर ऐसे हिलाया जैसे यह कोई घिनौना मज़ाक हो। “मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा, और मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा कि जरासंध के युद्ध के दौरान उसे मुझसे मदद क्यों माँगनी पड़ी, और वह तुम्हें मेरी सेना में लेने के लिए राज़ी हो गया, और फिर मैंने अपना इरादा बदल दिया।”
"हां, क्योंकि आपको बेहतर सौदा मिला।"
सच कहूं तो, मेरा मकसद कभी भी कमजोर पक्ष का साथ देना नहीं था। जीवित रहने का यही तरीका है।
“तिलचट्टे इसी तरह जीवित रहते हैं। राजा नहीं। और मेरे पति तो राजा हैं।”
उसने आंखें घुमाईं। “मैं गलत था। तुम नरम दिल हो। लेकिन फिर भी, अगर तुम मेरी बात मानो, तो तुम अपना ताज और अपना आदमी अपने पास रखो, और हमें अकेला छोड़ दो।” उसने जालीदार गेट खोले, तभी उसके एक आदमी ने उसका हाथ पकड़कर उसे अंदर खींच लिया।
“तुम्हें क्या चाहिए?” उसने गुस्से से कहा।

उन्होंने कहा, "मैं कोषागार में प्रवेश करना चाहता हूं और जाहिर तौर पर आप ही एकमात्र व्यक्ति हैं जो हमें प्रवेश करने में मदद कर सकते हैं।"

40

वृकोदरा को अपनी पत्नी से मिलने का विचार बिल्कुल पसंद नहीं था, क्योंकि पहले भी ऐसा करने से उसे कोई सकारात्मक परिणाम नहीं मिले थे।
उसने अपनी सेना को हर तरफ से हमला करने, उनके तीरंदाजों को मार गिराने, उनकी घुड़सवार सेना से लड़ने और अधिक समय प्राप्त करने के लिए गुरिल्ला रणनीति अपनाने का आदेश दिया। साथ ही, गुलेलों से बचने को कहा, क्योंकि उस समय असली समस्या वही थीं।
वृकोदरा और पुक्कासती राक्षस बस्ती की ओर चल पड़े, और उनके आगमन की खबर पहले ही भेज दी गई थी। राक्षस ज्यादातर पिशाचों की तरह नरभक्षी जनजाति थे, लेकिन वे अंतर्विवाह का परिणाम नहीं थे। वे मानव मांस इसलिए खाते थे क्योंकि उन्हें यह पसंद था, क्योंकि उन्हें लगता था कि किसी दूसरे पुरुष का सेवन करने से उन्हें स्वयं पर अधिक नियंत्रण प्राप्त होता है।
जब वे अपनी घोड़ी पर सवार होकर आगे बढ़ रहे थे, तब पुक्कासती ने पूछा, "हिदाम्बी के साथ क्या हुआ था?"
“अच्छा।” उसने अपने होंठ सिकोड़ते हुए कहा, “मैंने उसे बहला-फुसलाकर उसके भाई की हत्या कर दी।”
“अह…हाँ, यह बुरा है।” पुक्कासती ने आँखें घुमाईं। “तुम्हें शायद बाद वाला काम नहीं करना चाहिए था।”
“अरे नहीं, उसे बाद वाली बात से कोई आपत्ति नहीं थी, उसे तो पहली बात से परेशानी है। राक्षस मानते हैं कि मृत्यु इस संसार का अभिन्न अंग है, और मेरे जैसे शक्तिशाली योद्धा के हाथों मरना जीवन से भी बड़ा सम्मान है।” वृकोदरा मुस्कुराया। “ओह, मुझे वह स्त्री बहुत पसंद है। वह जोशीली और थोड़ी सनकी भी है।”
"तब क्या हुआ?"
“ज़ाहिर है, वो तो लुभाने वाला हिस्सा था। एक राक्षस अपने समुदाय से बाहर किसी नागरिक से विवाह नहीं कर सकता। राक्षस पुरुषों के समुदाय से

बहिष्कृत होता है और दूसरों को… मानो… भोजन समझता है। उसका मानना है कि हर कोई बेकार है और वे ही सर्वोपरि और शक्तिशाली हैं।” वृकोदरा ने समझाया। “हिदाम्बी के साथ मेरा समय बहुत अच्छा बीता, लेकिन उसे बहुत बुरा लगा कि मैंने उसे अपने समुदाय में शामिल करने की कोशिश की। वह अपने राक्षस भाइयों को नहीं छोड़ सकी और उसने उन्हें ही चुना, हालाँकि आधिकारिक तौर पर हमारी शादी हो चुकी है। हमने फिर कभी बात नहीं की, क्योंकि अगर बात न बनती तो हम एक-दूसरे को याद करने लगते। जब आपने कहा कि वह मुझसे मिलने के लिए तैयार है, तो मुझे आश्चर्य हुआ।” उसके चेहरे पर मुस्कान अभी भी फीकी थी। पुक्कासती ने कहा, “तुम विचलित लग रहे हो। मुझे उम्मीद है कि उसकी भागीदारी से युद्ध में कोई बाधा नहीं आएगी। हमें अंगा को जीतना होगा, तुम्हारे बदले के लिए और हस्तिनापुर के लिए।”
वृकोदरा ने कंधे उचकाते हुए कहा, "बेशक, बेशक... मेरे भाई के लिए। मेरे प्यारे, लाडले भाई के लिए।" लेकिन वह उदासीन था।
और जैसे ही वे विशाल पहाड़ों की दरारों से गुज़रे, पथरीले इलाकों से होते हुए, जहाँ घाटियाँ उनका स्वागत कर रही थीं, उन्होंने महसूस किया कि वे एक अलग ही दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं। घाटी पहाड़ के भीतर खुलती थी, पहाड़ियों के भीतर खोखले स्थान बनाती थी, और वहाँ लोग रहते थे। पुलों के ऊपर और पुल बने हुए थे, विशाल छतों वाली बस्ती की हर मंजिल झोपड़ियों और घरों के आकार की थी। निवासी उन्माद में आ गए, वृकोदरा का स्वागत किया और उनका साथ दिया। उन्होंने राक्षसों को देखा, जिन्होंने मानव हड्डियों से बने आभूषण पहने हुए थे, और उनके शरीर विशाल थे और उनके कदम बहुत बड़े थे। वे वृकोदरा के आकार के लग रहे थे। और उन्हें लगा कि वे भी उन्हीं में से एक हैं।
उसने उस प्रतिष्ठित बस्ती के बीचोंबीच एक स्टेडियम जैसी जगह देखी, जहाँ लोग आपस में, जानवरों से और विभिन्न प्रकार के जीवों से लड़ रहे थे। आदमियों के सिर से पैर तक टुकड़े-टुकड़े किए जा रहे थे, और वृकोदरा तो उस हिंसा को देखकर खुश हो रहा था, जबकि पुक्कासती उल्टी रोकने की कोशिश कर रही थी। राक्षस उसके बारे में नहीं जानते थे, लेकिन वे जानते थे कि उसने क्या किया था। हिदम्बा को मारना कोई साधारण बात नहीं थी। वह राक्षसों का सरदार था, पुरुषों में एक विशालकाय, जो भोजन के लिए आस-पास के गाँवों में आतंक

फैलाता था। वह अपनी भूख मिटाने के लिए शिशुओं को चुराता था, जब तक कि वृकोदरा ने उसे रोका नहीं।
“यही तो अखाड़ा है,” वृकोदरा ने खून-खराबे की ओर इशारा करते हुए कहा। “असली मजा तो यहीं आता है।”
मुझे लगता है कि तुम दुनिया के गलत हिस्से में पैदा हुए हो। तुम राक्षसों के साथ रहने लायक हो।
"कम से कम मेरा दिल तो यही मानता है।"
"आपने अभी अभी क्या कहा?"
“कुछ नहीं।” वृकोदरा ने दृढ़ता से कहा।
पुक्कासती को देखकर लोग भौंहें चढ़ा रहे थे और हँस रहे थे, क्योंकि वह कद में छोटा था और राक्षसों की भूमि में रहने वाले व्यक्ति जैसा नहीं दिखता था। वे पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए, जहाँ से पूरा युद्धक्षेत्र दिखाई दे रहा था। पुक्कासती ने कहा, "हमारी हिदाम्बी देवी से मुलाकात है।"
“मैडम?” गार्ड्स हँस पड़े। “ये तो बहुत ही मजेदार हैं।”
उन्होंने उसे अंदर आने दिया, और वृकोदरा ने लंबे समय बाद अपनी पत्नी को देखा। नीचे हो रही लड़ाई को देखते हुए उसकी पीठ दिखाई दे रही थी। उसने अपने भारी शरीर पर एक लंबा लबादा बांध रखा था, जबकि उसके लंबे बाल जूड़े में बंधे हुए थे। वह वहाँ मौजूद किसी भी पुरुष जितनी लंबी थी, उसकी मांसपेशियां और जांघें चट्टान की तरह मजबूत थीं। वृकोदरा के मन में एक ही पल में कई भावनाएँ उमड़ आईं।
“हिदाम्बी,” वृकोदरा ने कहा, “काफी समय हो गया है, मेरी प्रियतमा।”
वह मुड़ी और अपनी भौहें ऊपर उठाईं, वह इतनी खूबसूरत और आकर्षक थी।
“मेरे प्यारे भीमा,” उसने मोहक मुस्कान के साथ कहा, “और तुम ही वह व्यक्ति हो जिसने हमसे संपर्क किया होगा।”
पुक्कासती ने सिर हिलाया। "आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई, महोदया।"
“मैं तुम्हारी प्रेमिका नहीं हूँ। मैं उसकी प्रेमिका हूँ।” उसने वृकोदरा को आँख मारी, जिस पर वृकोदरा हँस पड़ा। “बड़े लड़के, तुम्हें मेरी मदद चाहिए?”
“हां,” उसने आत्मविश्वास से कहा। “यह अच्छा रहेगा।”
“बहुत बढ़िया, तो इधर आओ।” उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

“हमें कभी अलग नहीं होना चाहिए था,” वृकोदरा ने कहा। “मुझे समझ नहीं आता कि हम अलग क्यों हुए। हमें हमेशा साथ रहना चाहिए था।”
उसने उसका हाथ पकड़ा और मुस्कुराई। "क्योंकि, मेरे प्यारे," उसने दांत पीसते हुए कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया है।"
और उसने उसे अखाड़े के अंदर धकेल दिया।

41

वे गंगा नदी की एक घाटी के पास प्रतीक्षा कर रहे थे, तभी उन्हें एक जानी- पहचानी नाव दिखाई दी। पिछली बार की तरह ही, एक नाविक आया और उसके आगे काले लबादे और सिर पर हुड पहने एक आदमी था। नाविक लोरी गा रहा था।
“और आपकी यात्रा पूरी हो गई।” नकाब हट गया और बभरु का चेहरा सामने आ गया। “यह दिलचस्प है कि आप सबको इतना समय लग गया।”
“रास्ते में बहुत सारी बाधाएँ थीं,” वृषकेतु ने झुंझलाहट भरी आह भरते हुए कहा और अपने साथ लाए मणि को दिखाते हुए कहा, “लेकिन हम उसे पकड़ने में कामयाब हो गए हैं।” अश्वत्थामा का मुँह बंद कर दिया गया था और उसका चेहरा एक काली चादर से ढका हुआ था, ताकि इंद्रप्रस्थ पहुँचने तक उसे कोई पहचान न सके।
“मुझे उम्मीद थी कि मणि का आकार… खैर… छोटा होगा,” बभरु ने कहा। “अफवाहें अक्सर झूठ ही होती हैं।”
“नाव पर आ जाओ। मुझे रास्ता पता है।”
वृषकेतु और तृप्ति ने ऐसा ही किया, उन्हें जंगल में घटी घटनाएँ याद आ गईं।
हस्तिनापुर के करीब, साथ ही नवप्रसिद्ध इंद्रप्रस्थ में प्रकट होने से पहले, उन छोटे बच्चों को स्थानीय कस्बे के एक अनाथालय में सौंप दिया गया था।
चाँदी जैसी चाँदनी में, लोरी की धुन के बीच नाव पानी में चलने लगी।
अश्वत्थामा ने विरोध करने की कोशिश की, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका क्योंकि तृप्ति और स्वयं वृषकेतु ने उसे रोक रखा था।
“उह, तुम्हारे साथ जो हुआ उसके लिए मुझे खेद है,” वृषकेतु ने तृप्ति से कहा।
"हम्म।"

मुझे लगता है कि हमारी यात्रा यहीं समाप्त होती है, लेकिन मुझे इस बात की खुशी नहीं है। इस दौरान आपसे मिलना एक सुखद अनुभव रहा।
तुम तो बड़े ही नखरेबाज़ हो।
वृषकेतु शरमा गया। "अरे नहीं, मुझे इस क्षेत्र में बिल्कुल भी अनुभव नहीं है।"
उसने उसकी तरफ देखा। "मैंने तुम्हें जो बताया है, वह मैंने आज तक किसी को नहीं बताया, इसलिए मैं चाहती हूँ कि तुम इसे गुप्त रखो।"
“बिल्कुल, बिल्कुल। किसी को मत बताना।”
बभ्रु ध्यान नहीं दे रहा था, वह सामने तारों और सामने आ रहे लंबे और कुछ हद तक टूटे हुए पुल को देख रहा था। जैसे ही वे एक ऐसे राज्य में प्रवेश करने लगे जहाँ महल और बाज़ार सभी ऊँचे चबूतरे पर बने थे, सीढ़ियाँ ऊपर तक जाती थीं, और नदियाँ शहरों के बीच आपस में गुंथी हुई थीं, जिनमें नौकाएँ यात्रा करती थीं। घोड़ों की संख्या कम थी, शायद रात होने के कारण। इंद्रप्रस्थ को देखकर और उसकी सुंदरता को निहारकर वह अत्यंत प्रसन्न हुआ। "शानदार, मैं यहाँ पहले कभी नहीं आया।"
“कहते हैं कि इसे स्वयं भगवान इंद्र ने बनाया था,” बभ्रु ने कहा। “इसे माया नामक राक्षस वास्तुकार ने डिजाइन किया था, जो एक विलक्षण प्रतिभा का धनी था।”
चारों ओर ऑर्किड के फूल खिले हुए थे, जबकि अधिक ऊंचाई के कारण हल्की धुंध छाई हुई थी।
“यह छोटा सा गाँव है, लेकिन यहाँ विवाद चल रहा है,” बभ्रु ने कहा। “भगवान कृष्ण ने पाँच गाँवों की ज़मीन का सौदा करवाया था, और यह उनमें से सिर्फ़ एक है। बाकी चार गाँवों पर विवाद है। दुर्योधन उन्हें ये ज़मीन देने को तैयार नहीं है। वह इसका घोर विरोधी है। अब, मुझे उसके बारे में तो नहीं पता, लेकिन मुझे लगता है कि वह इस पूरे मामले में इतना अकड़ू इसलिए है क्योंकि जब वह झरने के पास गिरा था तो पांडु के बच्चों ने उसका मज़ाक उड़ाया था। ये सब अफवाहें हैं और शायद निराधार भी, लेकिन क्या ये सच हो सकता है?”
वृषकेतु ने अपनी भौंहें उठाईं। इस तरह की भ्रांतियाँ और इस तरह के तर्क, बड़ों के बीच लड़ाई जारी रखने के लिए बिल्कुल तर्कसंगत लगते हैं। वह चाचा सुयोधन को, जिन्हें परिवार में दुर्योधन के नाम से जाना जाता था, एक

चिड़चिड़े और अड़ियल बच्चे के रूप में जानते थे। वह किसी की बात नहीं सुनते थे और खुद को विशेषाधिकार प्राप्त समझते थे। और सुयोधन की शक्ति को ध्यान में रखते हुए, वह जानते थे कि यदि वह पूरे देश के नेता और राजा बन गए, तो उन्हें रोकना असंभव होगा और वे सभी धर्मों का नाश कर देंगे।
“तो आपके विचार से युद्ध कौन जीतेगा?” वृषकेतु ने पूछा।
“जो ज्यादा समझदार है।” उसने उसकी तरफ आँख मारी।
वृषकेतु को उसकी बात समझ नहीं आई। वे एक स्थानीय तट पर पहुँच चुके थे, जहाँ से सीढ़ियाँ एक विशाल महल की ओर खुलती थीं।
"हमने अभी-अभी पीछे के रास्ते से इंद्रप्रस्थ में घुसपैठ की है।"
आपको इसके बारे में कैसे पता चला?
“यहीं पर मैं पांडु भाइयों के गंदे कपड़े धोता हूँ।” बभरु हँस पड़ा।
“आप असल में क्या करते हैं?” वृषकेतु ने नाव से उतरते हुए पूछा।
बभरु ने कंधे उचकाते हुए कहा, "हम जल्द ही इस बारे में बात करेंगे। लेकिन जहां से मैं आता हूं, मुझे लगता है कि हम दोनों की कहानी काफी मिलती-जुलती है।"
सीढ़ियों पर पहरेदार तैनात थे, लेकिन बभरु को देखकर वे हंसने लगे। तृप्ति और अश्वत्थामा को घसीटा जा रहा था। जब तक वे द्वार तक पहुंचे, बभरु को हार माननी पड़ी।
“मैं तो शामिल नहीं होऊंगा, लेकिन आप दोनों को शुभकामनाएं। मुझे यकीन है कि आपको भरपूर इनाम मिलेगा।” इतना कहकर, झुककर उन्होंने विदा ली।
जब उस आदमी को घसीटा जा रहा था, तब तृप्ति का चेहरा ढका हुआ था और उसके भाव शांत थे। उन्हें नीचे जाने के लिए कहा गया, जहाँ युद्ध कक्ष स्थित था, और वे पहरेदारों के पीछे-पीछे गलियों और रास्तों से होते हुए अंत में युद्ध कक्ष में पहुँचे, जो पुस्तकों, ग्रंथों और अन्य पठन सामग्री से भरा हुआ था।
और उनके सामने उन्होंने एक आदमी को देखा, जिसके हाथ में एक किताब थी, वह धोती पहने हुए था और उसके नंगे शरीर पर एक छोटा सा दुपट्टा लिपटा हुआ था, वह कुछ याद कर रहा था।
वह उनकी ओर मुड़ा नहीं, लेकिन वृषकेतु ने गरजती हुई आवाज सुनी और महान धर्मराज से मिलने की खुशी से झूम उठा। उसने उनके बारे में बहुत कुछ सुना

था, एक प्रभावशाली व्यक्तित्व, और वह उस व्यक्तित्व की भव्यता को महसूस कर सकता था।
“आप सोच रहे होंगे कि युद्ध कक्ष में इतनी सारी किताबें क्यों हैं,” उन्होंने अपनी मधुर, सुरीली आवाज़ में कहा। “क्योंकि देखिए, आपका सबसे बड़ा हथियार आपका दिमाग है। और इसे समय-समय पर तेज करते रहना चाहिए।” उसने अपना चेहरा घुमाया, जिससे उसके सुंदर चेहरे, चिकने बाल और तीक्ष्ण जबड़े दिखाई दिए। "तो बताओ, बभरु ने कहा, क्या तुम मेरे लिए ऐसा उपहार लाए हो जिसे मैं ठुकरा नहीं सकता?"
वृषकेतु घबराते हुए उस व्यक्ति को आगे लाया और उसे सबके सामने पेश किया। मास्क उतारते हुए।
खुद उस आदमी का चेहरा सामने आ गया। मुंह बंद किया हुआ। बुरी तरह पीटा हुआ।
धर्मराज ने कुछ क्षण तक असमंजस भरी निगाहों से उसकी ओर देखा और कहा: "तुम दोनों उसे यहाँ लाए हो?"
“हां,” वृषकेतु ने कहा, जबकि तृप्ति चुप रही।
“तुम कर्ण के पुत्र हो, है ना?” वह खड़ा हुआ और वृषकेतु की ओर बढ़ा, अपने भारी हाथों को उसके कंधे पर रखते हुए बोला, “वही जो हमारे लिए काम करता है।”
"जी जी, महाराज। मैं आपकी और कुरुओं के सच्चे राजा की सेवा करता हूँ।" उसने सिर हिलाया। “अच्छा। अच्छा। बस एक ही समस्या है, बच्चे, तुमने एक बहुत बड़ी, बेवकूफी भरी गलती कर दी है और उस कमीने बभरू ने भी। उसने मुझे बेवकूफ बना दिया।”
वृषकेतु ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। “क्या? वह अश्वत्थामा है। वही है जिसने इतने सारे नागों को मृत्यु के घाट उतारा था।”
“हां,” धर्मराज ने कहा। “ऐसा हुआ था। लेकिन वह अश्वत्थामा नहीं है।”
फिर उसने उस आदमी के चेहरे से आवरण हटाया और मुड़कर देखा तो उसे वृषकेतु और तृप्ति दिखाई दिए।
“खैर, मैंने तुमसे कहा था कि मुझे यहाँ मत लाओ।” उसने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा। “मैं अर्जुन हूँ। आप सभी से मिलकर अच्छा लगा।”

42

वृकोदरा कुछ देर के लिए असमंजस में पड़ गया और भयभीत भी हो गया।
वह जगमगाते अखाड़े में खड़ा था, जहाँ लोग चिल्लाते, रोते और एक-दूसरे से मांस और पैसे के लिए जुआ खेलते थे, ताकि जीत का चरम आनंद प्राप्त कर सकें।
वृकोदरा को अखाड़े में रहना बिल्कुल पसंद नहीं था। पिछली बार जब वह ऐसी ही स्थिति में था, तब उसने हिदाम्बा को मार डाला था।
और अब वह यहाँ था।
उसने कीचड़ और धूल साफ की और पीछे छूटी लाशों और हड्डियों को देखा। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि किस तरह का जानवर उस पर हमला करने वाला है। लेकिन जहाँ से उसे फेंका गया था, वहाँ से उसने ऊपर देखा और हिदाम्बी को पागलों की तरह मुस्कुराते हुए पाया। दूसरी ओर, पुक्कासती अपने सेनापति को इस हालत में देखकर बुरी तरह भयभीत हो गया।
“आप किसे चुनौती देने के लिए कह रहे हैं?” उसने अपनी मांसपेशियों पर हाथ मारते हुए कहा, “मैं इसके लिए तैयार हूँ।”
उसने उसकी ओर देखा। “यहाँ हम अपने नए दावेदार की घोषणा करते हैं!” उसने बाकी सभी राक्षसों की ओर देखते हुए चिल्लाकर कहा, उसके बाल बिखरे हुए और बेतरतीब थे, भूरे रंग के। “राक्षसों का नाश करने वाला!”
सभी लोग हूटिंग करने लगे, और कुछ लोग हूटिंग करने लगे।
“वह अपनी इस तुच्छ लड़ाई में हमारी मदद चाहता है!” वह चिल्लाई। “वह अपने साथियों को बुलाना चाहता है। अगर वह अखाड़े में बच जाता है तो हम उसे यह मदद देंगे।”
“मैं तैयार हूँ,” वृकोदरा ने बिना किसी डर के कहा, हालाँकि उसे आश्चर्य हुआ कि उसने उसके बारे में धोखा देने की बात क्यों कही, क्योंकि उसने कभी ऐसा नहीं किया था। “चलो करते हैं।”
"इसलिए मैं उसे वही दावेदार दूंगा जिसकी उसे तलाश है।"

और सामने वाली गुफा खुल गई, जिससे एक बाघ बाहर निकला, जो जंजीरों में जकड़ा हुआ था और अपने पंजों से अपने दुश्मन पर हमला करने के लिए तैयार था।
“ओह, एक साधारण जानवर!” वृकोदरा ने गौरव से चिल्लाते हुए कहा।
बाघ कुतरने लगा और गुर्राते हुए दहाड़ने लगा।
"नहीं!"
और हिदाम्बी ऊपर से कूदकर बाघ की पीठ पर जा गिरा। "तुम मुझसे लड़ रहे हो।"
वृकोदरा रुक गया। उसे इसकी उम्मीद नहीं थी। वह अपनी पत्नी पर हमला नहीं कर सकता था। वह उसे मार नहीं सकता था। वह उसकी…प्रेमिका थी। लेकिन उसने अपनी कमरबंद से गदा निकाली और खुद को तैयार किया।
वह आगे की ओर झपटी, वह लुढ़क गया और बाघ के पंजों ने उसे थोड़ा खरोंच दिया। इसके बाद और भी चीखें सुनाई दीं।
"आपको क्यों लगता है कि मैंने आपको धोखा दिया है?"
“तुमने उस औरत से शादी की!” उसने गुस्से से कहा।
वृकोदरा असमंजस में पड़ गया। वह किसके बारे में बात कर रही थी? और फिर उसे अचानक समझ आया। "तुम्हारा मतलब द्रौपदी से है?"
"हाँ।"
“यह पूरी तरह से एक राजनीतिक चाल है। मुझे यह करना पड़ा क्योंकि वह एक व्यक्ति से शादी नहीं कर सकती। उसके पंडितों और ज्योतिषियों ने उसे बताया है कि वह केवल पाँच लोगों से ही शादी कर सकती है। अगर वह ऐसा नहीं करती, तो उसका नाश हो जाएगा। हालांकि उसका सच्चा प्यार और उसका असली पति अर्जुन ही है। हमारी शादी सिर्फ एक राजनीति है।”
“तुम लोग और तुम्हारी तुच्छ राजनीति!”
और उसने फिर से हमला किया, वह पलटने में असमर्थ होकर पीठ के बल गिर पड़ा। बाघ उसके ऊपर था, किसी तरह उसने गदा को पकड़ लिया जो उसके और बाघ के बीच एक बाधा का काम कर रही थी। बाघ ने हमला किया, दहाड़ा, अपने पंजों से उसे नोचा। “उसे खा जाओ! उसे खा जाओ!” लोग चिल्ला रहे थे।
लेकिन वृकडोरा की ताकत बाघ से कहीं अधिक थी, उसने बाघ को धक्का देकर दूर कर दिया और फिर उसे खिलौने की तरह उछाल दिया। उसके साथ ही हिदाम्बी भी अपने हथियार के साथ दूसरी तरफ गिर पड़ी।

बाघ ने देखा कि अब उस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है, और वह उस पर झपटा, जबकि वह अपनी तलवार से अपना बचाव करने की कोशिश कर रही थी।
“शांत हो जाओ, लड़के! शांत हो जाओ!” वह चिल्लाई।
वृकोदरा बाघ के पीछे से आया और उसे पकड़ लिया, उसकी भुजाएँ तोड़ दीं और गर्दन मरोड़ दी, जिससे जानवर बेजान होकर गिर पड़ा। उसने उसकी छाती पर घूंसा मारा और तुरंत ही अपने सारे अपशब्द चिल्लाते हुए और अपनी अजेयता का बखान करते हुए दहाड़ लगाई।
“तुम्हें मुझे बचाने की ज़रूरत नहीं थी। मैं कोई संकट में फंसी राजकुमारी नहीं हूँ!”
“मैं तुमसे प्यार करता हूँ, हिदाम्बी। तुम ही मेरी सच्ची मोहब्बत हो।” उसने कहा।
तुम झूठे और चोर हो।
"चोर?"
"खुशियों का चोर।"
वो हंसा।
उसने अपनी तलवार से उस पर हमला किया, जिसे उसने अपने गदा से रोक दिया और उससे भी तेज़ हमला किया, लेकिन वह पीछे हटने में कामयाब रही। और उसके शरीर के ऊपर से कूद गई, जिससे वह चौंक गया। वह ज़मीन पर गिर पड़ा। और उसने उसे मारने के लिए तलवार निकाली। लेकिन वह पीछे नहीं हटा, और वह रुक गई।
भीड़ ने सीटी बजाई और चिल्लाई।
“मुझे मार डालो,” उसने कहा।
"नहीं कर सकता!"
“मुझे आपसे अक्सर मिलना चाहिए।” वृकोदरा मुस्कुराया।
मुझे अपनी आजादी पसंद है।
और उसने उसे ज़मीन पर धकेल दिया और उसे चूमा।
पूरी भीड़ लगातार हूटिंग करती रही और तितर-बितर होने लगी।
“मैं लोगों को खुश करने वाला व्यक्ति हूँ, लेकिन अब मुझे इसकी परवाह नहीं है।” हिदाम्बी मुस्कुराया। “आपको मुझसे क्या चाहिए?”
मुझे आपकी मदद चाहिए। मुझे आपके साथ मिलकर लड़ने की जरूरत है।
“कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो मेरा विरोध करें,” हिदाम्बी ने कहा।
"जैसे कि तुम्हें परवाह हो?"

"जैसे कि मुझे परवाह हो।"
और वे दोनों बाघ के खून से लथपथ होकर एक दूसरे को चूमने लगे।

43

अचानक हुए इस अहसास से वृषकेतु स्तब्ध रह गया, जबकि दूसरी ओर तृप्ति एक शिकारी पक्षी की तरह शांत थी।
सैनिक पीछे से आ गए थे और वृषकेतु को घेर रहे थे, जबकि धर्मराज अपने चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान लिए वहीं खड़े थे। अर्जुन खूब पानी पी रहे थे। वृषकेतु जितना उन्हें देखते, उतना ही उन्हें अश्वत्थामा और अर्जुन के बीच समानता का एहसास होता। उनकी नाक, आंखें और बाल सब एक जैसे थे... बिलकुल एक जैसे। कोई भी उलझन में पड़कर भ्रमित हो जाता।
उसे वाकई में मूर्खता का एहसास हुआ।
“इन दोनों का क्या करें?” अर्जुन ने पानी खत्म करते हुए पूछा। “यात्रा के दौरान तो ये दोनों मेरे प्रति काफी दयालु रहे। मुझे अब भी लगता है कि उस औरत के पास कई राज़ हैं।”
“क्या हो रहा है?” वृषकेतु ने पूछा।
धर्मराज ने उसकी ओर देखा। वह सुंदर और शांत स्वभाव का व्यक्ति था। देखने से लगता था कि वह एक कुशल विचारक और रणनीतिकार है। वह अर्जुन जितना लंबा या भीम जितना चौड़ा नहीं था। लेकिन वह बिल्कुल अलग था। और वृषकेतु ने सुना था कि उसकी एकमात्र दुर्गुण जुआ खेलना था, और जुआ खेलते समय वह एक भयंकर राक्षस में बदल जाता था, जिसे रोकना असंभव था।
उन्होंने कहा, “असल में, आपकी अज्ञानता के कारण मेरी योजना विफल हो गई है। देखिए, जब खांडवा वन में नागाओं का नरसंहार हुआ था, जिस पर यह भूमि निर्मित हुई थी, तब अश्वत्थामा ने यह नहीं किया था।”
अर्जुन ने हाथ ऊपर उठाए। "दोषी।"
उसके तीरों ने जंगल में आग लगा दी।
वृषकेतु ने लंबे बालों वाले उस व्यक्ति की कल्पना की, जो अपने साथ मौजूद धनुर्धारियों का उपयोग करके जंगल पर हमला करेगा, अंदर मौजूद लोगों को जला देगा और सब कुछ नष्ट कर देगा।

बेईमानों के हाथों में विशेषाधिकार अभिशाप बन जाता है।
“यह समझते हुए कि इससे हम खुद भी बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे, हमने अश्वत्थामा के साथ एक समझौता किया। हमने उसे शराब, पैसे और औरतें दीं और उसे तब तक दूर रहने का प्रस्ताव दिया जब तक हम इस मामले का हल नहीं निकाल लेते। अश्वत्थामा ने अनिच्छा से ही सही, सारा दोष अपने ऊपर ले लिया।” उन्हें इसमें मजा आया।
“भाई, मुझे ऐसा लग रहा है कि वह वापस आकर हमला कर सकता है।” धर्मराज ने तुरंत अर्जुन को सही दिशा में इशारा किया। “खैर, हमें एहसास हुआ कि यह एक शानदार अवसर था।”
“अरे, तुम्हें तो पता चल ही गया।” अर्जुन हँस पड़ा।
धर्मराज थोड़ा शरमा गए। “हस्तिनापुर के बाद भारतवर्ष के सबसे समृद्ध राज्य, अंग के बारे में जानने के लिए। अंग बाहर से सुंदर और मोहक था, और यह एक महत्वपूर्ण प्रमाण है। तो अब, हमें यह जानना था कि अंदर क्या चल रहा है। और, केवल इतना ही नहीं, बल्कि जरूरत पड़ने पर अंदर से ही उस पर आक्रमण भी करना था। इसलिए, मैं अपने उदास, दयनीय चेहरे के साथ सुयोधन के पास गया और उससे एक सौदा किया। अश्वत्थामा को दुनिया से छिपाने में मेरी मदद करो, वही एकमात्र सबूत है जो मेरी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकता है। सुयोधन ने इसे मेरे खिलाफ इस्तेमाल करने का एक बड़ा अवसर समझकर कर्ण के पास गया, और वे संगठित कठपुतलियों की तरह मेरे हाथ में आ गए।” वे थोड़ा हँसे। “क्योंकि वे सीधे सोचते हैं। वे जानवरों की तरह सोचते हैं। वे योद्धाओं की तरह सोचते हैं।” उन्होंने टिप्पणी की। “खैर, अश्वत्थामा की जगह अर्जुन को भेजा गया, और ज़ाहिर है, ये कमीने, खासकर तुम्हारा आधा-नस्ल का बाप, मेरे खिलाफ हो गए। उन्होंने कहा, ये फिरौती जैसा मामला है। हम अश्वत्थामा को अपने पास रखेंगे, ताकि भविष्य में अगर हम हमला करें तो उसे फिरौती के तौर पर इस्तेमाल कर सकें। मेरा बेचारा भाई।” उसने सिर हिलाया। “अब उसका अपहरण हो चुका था। उसे बांध दिया गया था। और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसे छुड़ाऊं।”
“लेकिन!” अर्जुन ने आगे कहा, “मैं अपना रास्ता ज़रूर निकाल सकता था। मुझे खुशी थी कि मैं अंग में था, अगर युधिष्ठिर को मेरी ज़रूरत पड़ती।” “और इसलिए, मैं अंगा पर हमला नहीं कर सका। क्योंकि मेरा भाई वहाँ था, और वह गोलीबारी की चपेट में आ जाता।”

अर्जुन ने धर्मराज की ओर देखा। “खैर, हम दोनों एक-दूसरे की रक्षा करने का प्रयास करते हैं, और एक-दूसरे से भी।”
धमरराज मुस्कुराए। “और बभ्रु ने वही किया जो ज़रूरी था। उन्होंने अर्जुन को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए अपने निजी सहायकों को बुलाया। जबकि मेरा दूसरा भाई भीम, अंग पर हमला करने के लिए अपने साधनों का इस्तेमाल कर रहा था। अब उनके पास न तो फिरौती है और न ही भीम का साथ देने और उससे लड़ने की अक्ल। अंग अब हमारा होगा, हस्तिनापुर का एकमात्र शक्तिशाली गढ़ नष्ट हो जाएगा और हमें अपना सिंहासन वापस पाने का बेहतर मौका मिलेगा।” “हालांकि,” अर्जुन ने बात शुरू करते हुए कहा, “बभ्रु की गलती एक लड़की से जुड़ी है।”
और दोनों भाई तृप्ति की ओर देखने लगे जो वहाँ चुपचाप एक कोने में खड़ी थी।
“हमने तो आपको ही बुलाया था,” धर्मराज ने वृषकेतु से कहा। “क्योंकि आप अंग की भूमि को भली-भांति जानते हैं, लेकिन वह लड़की हमारी योजना का हिस्सा नहीं थी। वह कैसे आई, हमें इसका कोई अंदाजा नहीं है।”
“तुम उस पर भरोसा कर सकते हो।” वृषकेतु ने दांत पीसते हुए कहा। “और हम तुम्हारा काम कर रहे हैं। अगली बार से अंधेरे में न रहना बेहतर होगा। मैं तुम्हारे साथ हूँ।”
“नहीं,” अर्जुन ने कहा। “तुम अपने बाप के बच्चे हो। तुम बस एक बागी हो और हमारे लिए एक मोहरा हो।”
धर्मराज ने आगे कहा, “चुप रहो भाई। वह कीमती है। लेकिन मुझे इसके लिए क्षमा कर दो, बेटा, हम पाँच भाई हैं और हमारे पास पहले से ही बहुत काम है। इसलिए हम तुम पर इतना भरोसा नहीं कर सकते।”
“मैंने अपना सब कुछ तुम्हें और तुम्हारे उद्देश्य को दे दिया है…” उसने पलटवार करना शुरू किया और कुंठा भरी नज़र से देखने लगा। “लेकिन, लेकिन…” “कोई बात नहीं। समय के साथ सदमा कम हो जाएगा,” धर्मराज ने कहा। “अभी हम आप दोनों को निगरानी में रखेंगे, जब तक कि हम मामले का हल नहीं निकाल लेते।”
और उसी क्षण, जब सैनिक उन्हें ले जाने आए, तृप्ति ने खुद को आगे बढ़ाया, अपना चेहरा, गर्दन पर बने टैटू और जबड़ा दिखाया, जो काफी हद तक…
सांप।

उसने अपने खंजर से वार किया और अर्जुन के कंधे पर वार कर दिया, जिससे अर्जुन दर्द से चीख उठा। तृप्ति चिल्लाते हुए और गुस्से से बोली, “हत्यारे! हत्यारे! अगर मुझे पहले पता होता तो मैं तुम्हें जान से मार देती!”
वृषकेतु ने आमतौर पर शांत रहने वाली तृप्ति को एक अलग ही स्तब्धता से देखा, मानो वह उन्मत्त और क्रोधित स्त्री हो।
और उसे आश्चर्य हुआ कि वह कोई और नहीं बल्कि एक...
नागा।

44

कर्ण अपने धनुष और बाण लेकर युद्ध में प्रवेश कर गया।
यह झड़प उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक भयंकर रूप ले चुकी थी। उसके पास एक रथ था और एक सारथी था जो युद्ध के मैदान में फिसलते-झटके आगे बढ़ रहा था। कर्ण का ध्यान धूल-मिट्टी और खून से लथपथ युद्ध के मैदान पर केंद्रित होना था, जो मानो किसी पालतू जानवर की तरह युद्ध में उतरने के लिए तैयार था।
वह लगातार और तेज़ी से तीर चला रहा था, बड़ी संख्या में अपने दुश्मनों को निशाना बना रहा था। उसने लगभग सौ तीर चलाए थे और सौ खोपड़ियों को भेद दिया था।
वे आकाश से धूमकेतुओं की तरह गिरे, जिससे ज़मीन बुरी तरह से नष्ट हो गई और भीम की आधी सेना तबाह हो गई। भीम निश्चित रूप से हार रहा था, और कर्ण को एक पल के लिए अपने भीतर छिपे अहंकार की सुंदरता से प्रेम और आनंद हुआ—यह सोचकर कि अंग समृद्ध होगा।
हमेशा।
फिर किसी कारणवश धूमकेतु रुक गए, और आसमान बिल्कुल साफ हो गया, सिवाय हवाओं के। एक सैनिक रथ के पास रुक गया, ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था, शरीर पर निशान थे।
“मेरे स्वामी, गुलेलें निष्क्रिय कर दी गई हैं,” उसने कहा।
“आपका मतलब क्या है—विकलांग?”
उन पर जंगली जानवरों ने हमला किया था।
“जानवर?”
और इससे पहले कि पहरेदार कुछ और बोल पाता, एक विशालकाय योद्धा प्रकट हुआ, जिसकी पीठ पर जानवरों की खाल थी, और उसने उसे नीचे गिराकर उसकी छाती पर एक बड़ा भाला मार दिया।
“आरआरआरआर!” वह एक जानवर की तरह चिल्लाया और रथ के ऊपर कूद गया, जिससे कर्ण रथ से नीचे गिर गया।

उसने पलटवार करने की कोशिश करने वाले सारथी को चाकू मारा और फिर उसे भी सारथी से नीचे फेंक दिया।
कर्ण ने अपने धनुष का इस्तेमाल रक्षा के लिए किया और शत्रु के हमले को रोकते हुए उसकी छाती पर लात मारी।
"तू तू…"
राक्षस के दांत थे, जिन्हें उसने चाकुओं से तेज करके नुकीले दांतों जैसा बना लिया था, और वह उनसे कर्ण को काटने की कोशिश कर रहा था। कर्ण ने राक्षस को एक घूंसा मारा और रथ से दूर हटते हुए, हवा में ही एक तीर निकाला और दुश्मन पर चला दिया।
वह ज़मीन पर गिर पड़ा, लुढ़का और चारों ओर युद्धक्षेत्र को देखने लगा। असंख्य योद्धा अचानक प्रकट हो रहे थे। फर से ढके ये योद्धा लंबे भाले लिए हुए थे, और वे उग्र थे, बड़े-बड़े घोड़ों पर सवार थे, चीख-पुकार मचा रहे थे और हत्या का जश्न मना रहे थे। वे अंगा के सैनिकों की तरह जबरन भर्ती किए गए सैनिक नहीं थे।
वे राक्षस थे।
वे राक्षस थे।

शनाया को खजाने की ओर धकेला गया, जो एक पहाड़ी को काटकर बनाई गई संगमरमर की एक विशाल इमारत थी। इसे जानबूझकर इस तरह बनाया गया था कि इसके दूसरे छोर पर कोई प्रवेश द्वार न हो, क्योंकि पहाड़ी को खोदना असंभव था।
वह अपने सैनिकों के साथ चल रही थी, क्योंकि उसके पिता के सैनिकों ने अब अंगा के सैनिकों की तरह कपड़े पहन रखे थे, सभी बैंगनी, नीले और सुनहरे रंग के वस्त्र पहने हुए थे। शनाया ने अपने पिता, कप्तान आर्किमिडीज को देखा, जो बिल्कुल सामान्य व्यवहार कर रहे थे, मानो वे इस भूमिका को निभाने के लिए ही पैदा हुए हों।
“मैं तुमसे नफरत करती हूँ,” उसने कहा।
उन्होंने कहा, "हर बेटी अपने पिता से नफरत करती है। बस उन्हें अभी इस बात का एहसास नहीं है।"

वे उस द्वार तक पहुँचे जहाँ पहरेदार तैनात थे। पूरे खजाने की कड़ी सुरक्षा की जा रही थी।
“मैं प्रवेश करना चाहूंगी,” उसने अधिकारपूर्वक कहा।
"जी महाराज।"
वे ज़रा भी नहीं हिचके और न ही कुछ बोले। वे कर वसूलने और राज्य द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न व्यवसायों से होने वाली आय का हिसाब रखने वाले वित्त और मुद्रा मंत्रियों, बैंकरों और मुद्रा एवं वित्त मंत्रियों के पास से गुज़रने लगे। तभी वह सोने से बने विशाल तिजोरी में दाखिल हुई, जिसकी सुरक्षा भी पहरेदार कर रहे थे। लेकिन उसने उन्हें जाने के लिए कहा और उन्होंने तुरंत उसका आदेश मान लिया।
सामने की तरफ एक पहिया था।
“तुम्हारी योजना क्या है?” उसने पूछा। “मैं इसे खोलूँगी और तुम सब कुछ चुरा लोगे?”
“हाँ, फिर हम गोदी में जाकर जहाज़ चुरा लेंगे। वहाँ से हम निकल जाएँगे, और आपको मेरी या अपनी कोई चिंता नहीं होगी।”
“तुम सोना कहाँ रखोगे? ग्रीस में इसका क्या उपयोग होगा?”
“देवी, सोना देश के किसी भी हिस्से में काम आता है।” उसके पिता ने उसका उपहास किया। “लेकिन नहीं, सोना मिलने के बाद मैं दूसरे देश जाकर सेना खरीदूंगा। फिर उस सेना के साथ मैं हर उस गद्दार के दिल में तीर मारूंगा जिसने कभी मुझे परेशान किया हो या मेरा बहिष्कार किया हो।”
"अच्छा।"
उसने पहिया घुमाना शुरू किया, लेकिन उसे यकीन नहीं था कि यह सही तरीका है या नहीं। क्या तिजोरी खोलने के लिए उसे बाएँ से दाएँ और फिर दाएँ से बाएँ घुमाना था? या फिर इसका उल्टा करना था?
"अरे, बेवकूफों जैसी हरकतें मत करो।"
"मुझे बताओ।"
“मैं याद करने की कोशिश कर रहा हूँ, मुझे थोड़ा समय दीजिए। मैं अपने राज्य को हर दिन लूटता तो नहीं हूँ, है ना?”
और फिर उसे याद आया। उसे वह संयोजन याद आया जो उसने रानी के रूप में स्थापित किया था, उसे यकीन नहीं था कि कर्ण ने इसे बदला था या नहीं। जल्द ही उसे एहसास हुआ कि उसने इसे नहीं बदला था। तिजोरी खुल गई।

और जब ऐसा हुआ, तो उसने देखा कि कोई व्यक्ति सोने के सिक्कों के बीच बैठा है, रत्नों से बने मुकुट से खेल रहा है, और उसकी आंखें चमक रही हैं। सत्यसेना ने कहा, "आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा, मां। काफी समय हो गया।"

वृषकेतु जेल में था, उसके साथ तृप्ति भी थी, जो गली के दूसरी ओर थी। दोनों ने एक-दूसरे को देखा, जबकि तृप्ति एक कोने में लेटी हुई थी। उसका चेहरा अब दिखाई दे रहा था, वह उसे छिपा नहीं रही थी।
“तो तुम नाग थे?” उसने पूछा। “बहुत बढ़िया।”
“मैंने तुम्हें कभी मुझ पर भरोसा करने के लिए नहीं कहा,” तृप्ति ने कहा। “लेकिन मैंने किया। और मैं मूर्ख था। और अब हम दोनों इसमें फंस गए हैं,” उसने मन ही मन बड़बड़ाते हुए कहा।
वह कुछ नहीं बोली।
“अगर मुझे पता होता कि मैं एक नागा के साथ काम कर रहा हूँ, तो मैं…”
“तुम क्या करते?” तृप्ति ने पूछा।
वृषकेतु चुप हो गया।
“बचपन में ही मुझे गुलामों के व्यापारियों ने त्याग दिया और अगवा कर लिया था। मैंने अमीर व्यापारियों की दासी बनकर लंबा जीवन बिताया। जब मुझे अपने असली वंश का पता चला, तो मैं वापस लौटी, लेकिन उन्हें उन्हीं लोगों ने क्षत-विक्षत, जलाकर और नष्ट कर दिया, जिनकी कैद में मैं अब हूँ,” उसने कहा। “एक राज्य के फलने-फूलने के लिए मेरे जैसे लोगों को मार डाला गया। यह मत कहो कि उन्हें पता नहीं था। अगर यह गलती थी, तो इसके लिए माफी मांगो, न कि अपने असली रूप को छिपाओ।” उसने अपने होंठ सिकोड़ लिए। “ये सभी खूनी घटनाएँ इसलिए हुईं ताकि मैं यहाँ रह सकूँ, और जो कुछ हुआ था, जो इसके पीछे था, उसे देख सकूँ। और अब मुझे पता है, अब मैं अपना बदला लूँगी। मैं महारोगों का क्रोध प्रकट करूँगी, वे जो नागों की रक्षा करते हैं, वे जो नागों के लिए लड़ते हैं।”
वृषकेतु वहीं जम कर, अचंभित होकर खड़ा रहा और चुप रहा क्योंकि उसके पास चुप रहने का कोई कारण नहीं था। वह दीवार के सहारे तब तक खड़ा रहा, जब तक कि

उन दोनों ने एक नकाबपोश व्यक्ति को चाबियों से हाथ मटकाते हुए अंदर आते नहीं देखा।
"ठीक है, बाहर आओ, दोस्तों, जाने का समय हो गया है।"
वृषकेतु ने उस आवाज को पहचान लिया और तुरंत नकाबपोश व्यक्ति को दीवार से धक्का दे दिया, क्योंकि अन्य कैदी जाग गए और जोर-जोर से शोर मचाने लगे। “तुमने…यह किया।”
और उसने अपना हुड पीछे गिरा दिया, जिससे पता चल गया कि वह कौन है।
Babhru.

45

वृकोदरा अपने बैल पर सवार होकर आगे बढ़ता था और अपने रास्ते में आने वाले किसी भी व्यक्ति को बैल के सींगों से नष्ट कर देता था।
जो लोग उस दैत्य के पैरों तले कुचले नहीं गए, वे उसकी गदा के प्रहार से चकनाचूर हो गए। वह पूरे वैभव के साथ युद्ध में उतरा था। रास्ते में, एक घोड़े पर सवार उसकी पत्नी हिदाम्बी भी थी, जो अपने भाले से लड़ते हुए आगे बढ़ रही थी, उसका मांसल शरीर सूर्य की रोशनी में चमक रहा था।
“कैसा लग रहा है?” वृकोदरा ने पूछा।
“ओह, यही तो मुझे चाहिए था!” वह चिल्लाई।
वृकोदरा मुस्कुराया। राक्षस भाड़े के सैनिकों के रूप में सेनाओं में लड़ने या निजी अंगरक्षकों के रूप में काम करते थे। लेकिन वृकोदरा जानता था कि उन्हें वेतन पाने के लिए किसी कारण की आवश्यकता नहीं थी, उन्हें लड़ने के लिए एक कारण की आवश्यकता थी। उन्हें युद्ध से प्रेम था।
"वैसे तुम इस शहर पर कब्जा क्यों कर रहे हो?" उसने पूछा, और अपना भाला आसमान में फेंकते हुए एक घुड़सवार की छाती पर जा लगा, जिससे वह अपने घोड़े से गिर गया।
“बचपन का आघात।” वह मुस्कुराया।
राजा ने क्या किया?
“उसने अपने शरीर पर जहर का निशान दिखाया। लेकिन उससे भी ज्यादा शर्मिंदगी थी। मैं उल्टी कर रहा था, शौच कर रहा था और न जाने क्या-क्या कर रहा था, जबकि सब मुझ पर हंस रहे थे, और कर्ण भी।”
“जानते हो मैंने तुमसे प्यार क्यों किया? जब मुझे पता चला कि तुम ज़हर से बच गए हो। तुम इतने महान थे कि ज़हर भी तुम्हें मार नहीं सका।” उसने उत्सुकता से अपने होंठ चाटे। “मैं अपने दुश्मनों की लाशों पर तुमसे प्रेम करना चाहती हूँ।” और उसने ज़ोर से जयकार की। और भी राक्षस प्रकट हुए और पुरुषों पर हमला कर दिया।

वृकोदरा मुस्कुराया। अपने शत्रुओं को परास्त करते हुए दूसरी ओर जाते समय उसने देखा कि कहीं से अग्नि का एक तत्व प्रकट हुआ है। हालाँकि राक्षसों द्वारा फेंके गए भालों से गुलेलें टूट चुकी थीं और निष्क्रिय हो गई थीं, फिर भी उसने युद्धक्षेत्र के बीचोंबीच एक टूटा हुआ, अग्नि से धुआँ निकलता हुआ पहिया लुढ़कता हुआ देखा और वह रुक गया, उस पहिये के परे जो कुछ उसने देखा था, उससे वह भयभीत हो गया।
उसके सामने एक महिला और उसके बच्चे की छवि प्रकट हुई।
नहीं।
जैसे ही उसने उन्हें देखा, वह बैल से गिर पड़ा, और उसकी आँखें तन गईं, जबकि उसने अपने गदा को कसकर पकड़ रखा था। तभी विरोधी सेना का एक सैनिक प्रकट हुआ और उसने उसकी पीठ में वार कर दिया। वह चिल्लाया, पीछे मुड़ा, उस व्यक्ति का गला पकड़ा और उसे ज़मीन पर पटक दिया, फिर अपने गदा से उसका सिर तरबूज की तरह फोड़ दिया।
मैं लोगों से तंग आ चुका हूँ।
और इस सारी अफरा-तफरी में, उसने एक और चीज़ देखी। एक तीर उसकी ओर आ रहा था और उसकी छाती में जा लगा। जैसे ही उसने तीर निकाला, वह खून से लथपथ हो गया, तभी उसकी नज़र कर्ण पर पड़ी, जो अपने टूटे हुए कवच और खून से सने धनुष के साथ खड़ा था।
उसके लिए आगे बढ़ना।
उसका डटकर मुकाबला करने के लिए तैयार।

सत्य ने अपनी माँ के साथ आए लोगों को कभी नहीं देखा था। फिर भी, वह इस पूरी घटना को लेकर उत्साहित था। जब तक वे पहुँचे, अष्टार के लोगों ने उसे पूरी बात चरण-दर-चरण बता दी थी। वे सोने के लिए आ रहे थे। सत्य वहाँ तैनात हो गया और उसके बाकी सैनिक उनके पीछे खड़े हो गए।
जब बूढ़ा आदमी और उसका समूह तहखाने में पहुंचा, तो वे उसकी मां के साथ-साथ स्तब्ध रह गए।

उसकी बांह में अभी भी दर्द था, और मांस और खून के हाथ की जगह उसके पास लकड़ी का हाथ था, जिसे भगवान सूर्य के अनुयायियों ने तराशा था।
“इन्हें ले जाओ, लेकिन रानी को यहीं रहने दो। मैं अपनी माँ से बात करना चाहती हूँ।”
सत्य ने अपनी माँ को देखा और वह समझ गया कि सूर्यदेव की कृपा पाने के लिए उसे अपनी माँ को मारना ही होगा। वह उसके वंश की सबसे नीच और घृणित प्रति थी और उसे समाप्त करने का अर्थ था इस साधारणता का अंत। वह अपने पिता की तरह मौज-मस्ती कर सकता था।
लेकिन सैनिकों ने सत्य की बात नहीं मानी और उन्होंने सत्य के सैनिकों पर पलटवार करना शुरू कर दिया। सत्य ने अपनी तलवार निकालकर लड़ाई में हिस्सा लिया, जबकि शनाया एक कोने में छिप गई।
सत्य ने बूढ़े व्यक्ति पर हमला कर दिया और दोनों के बीच द्वंद्वयुद्ध शुरू हो गया, तभी शनाया चिल्लाई और उसे रुकने के लिए कहा।
“वह तुम्हारा पोता है!” शनाया ने आर्किमिडीज से चिल्लाकर कहा, लेकिन उसने परवाह नहीं की।
उसने सत्या के चेहरे पर वार किया, जिससे वह जमीन पर गिर पड़ा। शनाया उसके पास आई और उसके माथे पर जोरदार प्रहार किया, जिससे उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई।
सत्या खून बहते हुए अपने गाल को पकड़े हुए अपनी मां की ओर देख रहा था।
“तुम्हारे हाथ को क्या हुआ?” वह चिंता से घुटनों के बल बैठ गई।
सत्या ने उसे और उसकी मातृत्व भरी चिंताओं को देखा और तुरंत समझ गई कि भले ही वह यूनानी थी...
वह उसकी मां थी।
और वह उससे प्यार करती थी, उसकी देखभाल करती थी और उसके लिए कुछ भी कर सकती थी।
“वह मेरे दादा थे।”
“हाँ। और एक पागल आदमी।”
एक और यूनानी सैनिक हमला करने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन सत्य ने अपने लकड़ी के हाथ का इस्तेमाल करके उसे रोक दिया, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि इसका इस्तेमाल इस काम के लिए भी किया जा सकता है। उसने सैनिक को घूंसा मारा जिससे वह ज़मीन पर गिर गया, और माँ-बेटे ने एक-दूसरे को गले लगा लिया।

“इस भयानक, उदास जगह से निकल जाने के बाद मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा,” बभरु ने कहा, जब वे जेल की कोठरियों से बाहर निकल रहे थे।
सभी लोग अपशब्द बोल रहे थे और उन्हें पुकार रहे थे, जिससे पहरेदार जाग गए और घंटियाँ बजने लगीं। वे जेल की कोठरी के दूसरी ओर, जितनी तेज़ी से हो सके भाग रहे थे, तभी पहरेदारों की मीनारें तेज़ हो उठीं और कई पहरेदार मैदान में बिखरने लगे।
“अरे बाप रे, ये तो अच्छा नहीं है,” बभरु ने कहा। “अस्तबल के आसपास एक रास्ता है। ये एक छोटा सा छेद है, जिसे मेरे एक तस्कर दोस्त ने खोदा है।” "तुमने हमें इस मुसीबत में क्यों फंसाया?"
बभ्रु ने वृषकेतु से कर्कश स्वर में कहा, "सब कुछ समय पर होगा, मेरे प्रिय मित्र।"
वे दुबके हुए जेल के मैदान के दूसरी ओर बढ़े, वे उग्रता से आगे बढ़ रहे थे, क्योंकि अंधेरा छा चुका था और पहरेदार सभी उन्माद में थे, एक हाथ में मशालें और दूसरे हाथ में हथियार पकड़े हुए थे।
“कुत्तों को छोड़ दो!” किसी ने पुकारा।
और शिकारी कुत्ते बाहर आ गए।
गार्डों के नेतृत्व में कोयोट्स को सूंघने और उनका पीछा करने के लिए छोड़ दिया गया। वे भौंकते और चिल्लाते हुए उनकी ओर बढ़ने लगे।
वे पास ही स्थित अस्तबल में पहुँच गए।
“तुम मुझे योजना के बारे में बता सकते थे!” वृषकेतु ने शाप दिया।
तुम मेरी बात कभी नहीं सुनते।
“बिल्कुल नहीं, मैं ऐसा नहीं करता। मुझे तुम पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए था।”
मैं तुम्हारी और तुम्हारी गर्लफ्रेंड की जान बचा रहा हूँ, ठीक है? तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो। मुझे ऐसा करने की कोई बाध्यता नहीं है, लेकिन मैं कर रहा हूँ।
और इस अचानक बदलाव का कारण क्या है?
क्योंकि मैं यहाँ बुरा आदमी नहीं हूँ।

तो फिर कौन है?
“जो हमसे ऊपर हैं। जो हमें मोहरों की तरह इस्तेमाल करते हैं। जो हमें कीड़े-मकोड़ों की तरह समझते हैं। वे सोचते हैं कि सोना और ताज उन्हीं के पास है, और वे विद्रोह नहीं करेंगे। नहीं। मैं एक क्रांतिकारी बच्चा हूँ। मैं राज्यों का नाश करने वाला हूँ।”
और तुरंत ही कोयोट ने उन्हें ढूंढकर उन पर गुर्राते हुए जोर से आवाज निकाली।
“ओह, चलो चलें!” वह तुरंत अस्तबल की ओर भागा, और वे दोनों उसके पीछे-पीछे चले गए।
वे अपने पहरेदारों के साथ अंदर दाखिल हुए और उस गड्ढे की ओर बढ़े जिसे उसने खोदा था, जो एक झरने वाले मैदान की ओर खुलता था। तृप्ति सबसे पहले अंदर गई, फिसलती हुई, इसी बीच सियार ने वृषकेतु पर हमला कर दिया। लेकिन बभ्रु बीच में आ गया और उसने अपनी छुरी से उसे हवा में ही मार गिराया। "हाँ, यह अच्छा होगा।"
खरगोश के बिल में प्रवेश करने से पहले वृषकेतु ने फिर पूछा, "मैं तुम पर भरोसा क्यों करूं?"
बभरु ने उसकी ओर देखा। “क्योंकि मेरे पिता अर्जुन हैं, और मैंने उन्हें चोट पहुँचाना अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है।”

46

कर्ण ने भीम पर और अधिक बाण चलाए, जिन्हें भीम ने अपनी गदा से रोक दिया, और फिर कर्ण ने कर्ण पर हमला कर दिया।
कर्ण ने अपनी गदा को जोर से पटका, कर्ण लुढ़क गया, उसके शरीर ने हथियार की गर्जना, उसकी शक्ति को महसूस किया, लेकिन फिर भी स्थिर रहा। वह एक पल के लिए हिल गया, लेकिन तब तक भीम उसके पास आ चुका था, उसने उसे कवच से पकड़ लिया और सिर से टक्कर मार दी।
कर्ण पीछे गिर पड़ा, अपने आसपास के अन्य छोटे-मोटे लोगों की तरह दिख रहा था, उसके माथे से खून बह रहा था। वह भागने लगा, फिर उसने अपना तरकश उठाया और भीम पर एक बाण चलाया। बाण उसकी बांह पर लगा, लेकिन उसने उसे ऐसे निकाल दिया जैसे कोई चुभने वाली सुई हो।
“तुम मेरे लिए मुसीबत के सिवा कुछ नहीं रहे,” भीमा ने कहा। “तुम और सुयोधन ने पूरी जिंदगी मुझे सताया है।”
तुम लोग गुंडे थे।
“मैं बच्चा था!” वह चिल्लाया। “मैं बड़ा होकर समझ जाता कि मैं गलत था।
तुम नहीं समझते, उस जहर ने मुझे आज ऐसा बना दिया है।”
कर्ण स्वयं को ऊपर खींच रहा था।
“तुम्हारा क्या मतलब है?” उसने युद्ध के नारों के बीच पूछा।
“मैं इतना बड़ा हो गया, इतना खा गया, मोटा हो गया, और आज मैं जो कुछ भी हूँ, उस ज़हर की वजह से हूँ। वरना मैं सामान्य रूप से बढ़ता, लेकिन मेरा पेट उसे सहन नहीं कर पाया। और अब मैं ज़रूरत से ज़्यादा खाने के बिना नहीं रह सकता। तुमने मुझसे एक सामान्य जीवन छीन लिया। तुमने मुझे योद्धा बनने से रोक दिया। मैं एक दरिंदा बन गया, और एक दानव के सिवा कुछ नहीं, जबकि मैं एक इंसान बन सकता था, और एक खुशहाल इंसान।”
मुझे नहीं लगता कि आप शिकायत कर रहे हैं।

भीमा की आँखों में आँसू थे। “तुम्हारे कद, तुम्हारे आकार, तुम्हारी भूख को लेकर कभी तुम्हारा मज़ाक नहीं उड़ाया गया, न ही तुम्हारा उपहास किया गया, न ही तुम्हें नीचा दिखाया गया। बचपन में मेरे साथ ऐसा हुआ था, और मैं दशकों के उस अपमान को कभी नहीं भूलूंगा। मैं तुम्हारी रीढ़ तोड़ दूंगा।” वह कर्ण की ओर बढ़ा और उसे उठाकर उसके पैरों और सिर को टटोलने लगा। फिर उसने तुरंत उसे घुटनों से मारने की कोशिश की, लेकिन कर्ण ने उसे धक्का देकर एक तरफ कर दिया और अपने हाथ-पैर मरोड़ते हुए पलटवार किया।
दोनों जमीन पर गिर पड़े, और कर्ण आगे बढ़ा और धनुष से उसके सिर पर वार करके उसे घायल कर दिया।
“हमने ऐसा इसलिए किया क्योंकि तुम हमें बहुत परेशान करते थे। हमें बहुत तंग करते थे। तुम कहते हो कि हमने तुम्हारा जीवन छीन लिया, तुमने हमारा बचपन छीन लिया।”
भीमा ने ऊपर देखा, उसके पूरे शरीर पर घाव के निशान थे, और उसने कर्ण की आँखों में घूरते हुए कहा, "पहले तुम, फिर तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त। मैं तुम दोनों को तुम्हारी आँखों में देखते हुए मार डालूँगा।"
तो फिर मत देखो।
इतना कहकर उसने तरकश की डोरी खींची और एक तीर चलाया।
तीर भीमा की आंख में लगा, जिससे खून बहने लगा और वह भ्रमित हो गया। वह बुरी तरह घायल और टूटा हुआ पीछे की ओर गिरने लगा।
“तू नीच है! तू!” वह चिल्लाया और गुस्से से घूरने लगा।
कर्ण उस पर कूद पड़ा और उसे जमीन पर पटक दिया, और अपनी छुरी से उसका गला घोंटने के लिए तैयार हो गया, तभी भीम ने कर्ण के हाथों को पकड़ लिया, क्योंकि वह उससे कहीं अधिक बलवान था...
उसने कर्ण की भुजाओं को मरोड़ दिया।
मैं तुम्हारी कीमती चीजें तोड़ दूंगा!
कर्ण को अचानक एक झटका लगा और हड्डियां टूटने की आवाज सुनाई दी, जिससे उसकी बाहें कांपने लगीं, लेकिन दर्द से ज्यादा उसे सुन्नपन महसूस हुआ। भीमा अपनी आंख पकड़े हुए भाग निकला, जबकि कर्ण पराजित होकर जमीन पर पड़ा था। राक्षस और उनकी सेना विजयी हो चुकी थी, और अब वे बैरकों को तोड़ते हुए राज्य पर आक्रमण कर रहे थे, द्वार तोड़ते हुए आगे बढ़ रहे थे।

कर्ण ने आह भरी, उसकी आंखें कमजोर पड़ गईं और उसे मृत्यु की मीठी मुक्ति की तीव्र इच्छा महसूस हुई।

शनाया और सत्यसेना सीवर की ओर दौड़ रहे थे।
उन्हें पता था कि राज्य में घुसपैठ हो चुकी है, और आम नागरिकों के बजाय सबसे पहले उन्हीं का शिकार किया जाएगा। महल पर कब्ज़ा कर लिया जाएगा।
शनाया ने अपने बेटे का हाथ थामे रखा, और वे आम लोगों की तरह शहर के बाकी लोगों के साथ आगे बढ़े, जिनमें सैनिक और शाही अंगरक्षक भी शामिल थे, जो उन दरिंदों और राक्षसों का पीछा कर रहे थे और उनसे लड़ रहे थे।
उनके साथ शाही रक्षक भी थे, जो चांदी के कवच में थे।
शनाया को विश्वास नहीं हो रहा था कि जिस युद्ध को वे इतने लंबे समय से लड़ रहे थे, वह अब समाप्त होने वाला है। वे हार गए थे।
वे भागने लगे और खरगोश के बिल से होते हुए सीवर में घुस गए। रास्ते में उनकी मुलाकात सूर्य के अनुयायियों से हुई, जिन्होंने देखा कि राजघराने के दो सदस्य भाग रहे हैं।
लेकिन शनाया को ऐसा करना ही पड़ा, क्योंकि अगर वह सत्या के साथ पकड़ी जाती, तो भीमा उसे नहीं छोड़ता। वह सबक सिखाने के लिए उसे जान से मार देता। जैसे ही वे सीवर में दाखिल हुए और आखिरकार निकास द्वार के करीब पहुंचे, उन्हें अपनी ओर आती हुई एक आवाज सुनाई दी: "कायरों!"
वे दोनों, राजरक्षक दल के साथ, पीछे मुड़े। और उन्होंने देखा कि कुबड़ा अष्टार अपने दो अनुयायियों के साथ, जिनके हाथों में मशालें थीं, उनकी ओर बढ़ रहा था।
“अगर तुम इस तरह से राज्य छोड़कर जाओगे, तो तुम कायर और गद्दार हो। इसके लिए मैं तुम्हें मौत की सजा दूंगा और मुझे ऐसा करने का पूरा अधिकार है।” शनाया आगे आई। “तुम्हें भी भाग जाना चाहिए। वह तुम्हारे साथ भी नरमी से पेश नहीं आएगा।”

“मैं उस राज्य के साथ विश्वासघात नहीं करूंगा जिसने इतने लंबे समय तक मेरी मदद की है। मैं हर हाल में उनके साथ खड़ा रहूंगा, चाहे इसके लिए मुझे तुम्हें मारना ही क्यों न पड़े।”
सत्यसेना ने कहा, “तुम इसके लिए बहाने ढूंढ रहे हो। तुम माँ और मुझे जान से मारने के अलावा और कुछ नहीं चाहते। तुम अपने निजी कारणों को बीच में ला रहे हो, क्योंकि आखिरकार तुम… हमसे नाराज़ हो।”
कुबड़ा व्यक्ति सत्यसेना की ओर देखते हुए बोला, “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे बोलने की। तुम्हें कोई हक नहीं है। मैं तुम्हारा जन्मदाता हूँ। मैं तुम्हारा रक्षक हूँ। मैं तुम्हारा भगवान हूँ। और तुमने मुझे दुख पहुँचाने के सिवा कुछ नहीं किया, और इसके लिए मैं अपना क्रोध तुम पर उतारूँगा।”
उनके अनुयायी प्रकट हुए और उन पर हमला कर दिया, जबकि शाही रक्षक दल बीच में आकर उनकी रक्षा के लिए लड़ने लगे।
“जाओ! जाओ!” सत्या ने कहा। “मैं शामिल होऊंगा।”
शनाया ने चिंता से अपने बेटे की ओर देखा। "क्या तुम सच में आश्वस्त हो?" “हाँ, मुझे यकीन है। मैं शामिल हो जाऊँगा। जाओ!” उसने गुस्से से कहा। शनाया ने सिर हिलाया और सीढ़ी की ओर चल पड़ी। पीछे से आती चीखें और गुहारें उसे सुनाई दे रही थीं। उसने अपने कान बंद कर लिए, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि ये गुहारें उसके बेटे की हों। वह वहीं असमंजस में खड़ी रही, इंतज़ार करती रही।
वह सत्यसेना का इंतजार कर रही थी। वह नरसंहार से बचकर राज्य से बाहर निकल आई थी…
लेकिन…
इस गड्ढे से और कौन बाहर आएगा?
और उसने एक आकृति को बाहर निकलते देखा…
सत्यसेना।
वह खून से लथपथ था, उसका चेहरा मुरझाया हुआ था और उसकी आँखें बेजान थीं।
वह अब वह लड़का नहीं था जो पहले मूर्खतापूर्ण हरकतें किया करता था।
वह अलग था।
वह एक योद्धा था।

वृषकेतु अविचलित रहे, क्योंकि वे सभी एक बार फिर जंगल में थे, राज्य से भाग रहे थे, और उनके लिए घोड़ियां इंतजार कर रही थीं।
अब हम कहाँ जा रहे हैं?
बभरु ने उत्तर दिया, "यहाँ से दूर।"
“तुम अर्जुन के पुत्र हो।”
"हाँ।"
वृषकेतु ने अपना सिर हिलाया।
“कैसे…कैसे?” वह बहुत हैरान था।
“मैं उनका नाजायज बेटा हूँ। मेरा पूरा नाम बब्रुवाहन है। बहुत समय पहले उन्हें मेरी माँ चित्रगंधा से प्रेम हो गया था और वे उन्हें भूल गए थे। मेरा जन्म बिना पिता के हुआ था और मेरी माँ ने उनसे कई बार मुझे सिंहासन का उत्तराधिकारी बनाने की विनती की, लेकिन उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया,” बब्रु ने सिर हिलाते हुए कहा। “मैंने जो कुछ भी किया, वह अपने पिता को नाराज करने के लिए किया।”
कितनी दुखद कहानी है, हालांकि अब वृषकेतु को एहसास हुआ कि वह भी यही कर रहा था।
आपने उसे कैसे नाराज किया?
उसने तृप्ति को दिखाया। “उसने उसे चाकू मारा था। यह उनका भरोसा जीतने के लिए था। मैं चाहता था कि वे बिखर जाएं, और ऐसा ही हुआ। उन्हें पता नहीं था कि एक नाग उनके साथ चल रहा था।”
"और तुमने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि वह अर्जुन था?"
“तुम उसे मार डालते,” बभरु ने कहा।
तृप्ति ने अपनी नाक फुला ली। "यह सच है, लेकिन मुद्दा यह नहीं है।"
“मेरी प्यारी बेटी, तुम्हारी बात में दम है। मैं झूठा हूँ, लेकिन अर्जुन को मारना समाधान नहीं है। तुम अपने लोगों का बदला लेना चाहती थी, पूरे कुरु वंश को नष्ट करना होगा और यह एक सोची-समझी योजना है जिसमें नागों की अन्य बस्तियों, विशेषकर महारोगों को भी शामिल किया गया है।”
वृषकेतु ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

बभ्रु ने आगे कहा, “महारगों को अपने लोगों के लिए अधिकारों के अलावा कुछ नहीं चाहिए। खून के बदले खून, है ना? अच्छा, अब हम उन्हें वही बताते हैं जो तुमने सुना है, तृप्ति। वे तुम पर भरोसा करेंगे और कुरु वंश के खिलाफ युद्ध छेड़ देंगे, और अंततः हम वही करेंगे जो हमारे और मेरे लिए अच्छा है। हम दोनों की जीत होगी।”
“इसीलिए तुमने उनकी मदद की,” वृषकेतु ने कहा। “उनका विश्वास जीतने के लिए। जबकि हम साक्ष्य संग्राहक होने के नाते तुम्हें वह दिला देंगे जो तुम चाहते हो। तुमने उन्हें अंगा में प्रवेश करने दिया, और उन्होंने मेरे दादाजी की हत्या कर दी। अब, तुम्हें महारोगों का विश्वास प्राप्त है, तुम्हारे पास सबूत हैं, और तुम उनका इस्तेमाल हमला करने के लिए करना चाहते हो।”
“हमें यह नहीं पता, बेटा।”
Vrishaketu and Tripti began to corner Babhru.
"चलो तुम दोनों, तुम्हें मेरे जैसे चतुर व्यक्ति की जरूरत है।"
“तुम झूठे हो। तुमने हम दोनों से झूठ बोला,” वृषकेतु ने कहा।
"लेकिन मेरा एक बड़ा सपना है, बस मेरी बात सुनो।"
“मेरा तुमसे कोई लेना-देना नहीं है,” वृषकेतु ने कहा। “तुम यहाँ से जा रहे हो।”
“मैं भी,” तृप्ति ने कहा। “मैं तुम्हें मारूंगी नहीं क्योंकि तुमने पहले मेरी मदद की है, लेकिन अब मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकती।”
और ऐसा कहते हुए उन्होंने अपनी घोड़ियों को पकड़ लिया, जबकि वृषकेतु ने पीछे मुड़कर देखा।
“और मैं तुम्हें नहीं मारूंगा क्योंकि तुमने मेरी जान बचाई,” उसने कहा। “अलविदा, तुम अपने खेल और अपनी योजनाओं के साथ रहो।”
वे अंधेरे और धुंध में गायब हो गए, उन्हें नहीं पता था कि रास्ता उन्हें कहाँ ले जाएगा।
शायद कहीं।
शायद कहीं नहीं।

□□□ □□

47

सहस्र उस झील को देख रहा था जिसने उसकी जान ले ली।
उसकी भारी-भरकम भुजाएँ मुड़ी हुई थीं, आँखें सीधे सामने विशाल झील को निहार रही थीं। यह झील उसके और उसके जैसे लोगों के जीवन का एक अभिन्न अंग थी। बचपन से ही। यह वही झील थी जिसकी वह पूजा करता था। यह वही झील थी जिससे उसे प्रेम था। यह वही झील थी जहाँ उसे पहली बार प्यार हुआ था। यह वही झील थी जहाँ उसने मछली पकड़ना सीखा था। यह झील उसके लिए बहुत मायने रखती थी... और फिर भी इसका कोई मतलब नहीं था।
सहस्र ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं, जब उसने अपने प्रमुख सेनापतियों में से एक, तक्षक को पीछे के उष्णकटिबंधीय जंगल से प्रकट होते देखा, और उसने कहा, "प्रमुख, वे सभी यहाँ हैं।"
वह एक वफादार सेवक था। सहस्र उसकी बस्ती का एक हिस्सा था—राजा, मुखिया, पालनहार और भी बहुत कुछ, और उस पर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी।
“आप क्या सोच रहे हैं, चीफ?” उनके कमांडर-इन-चीफ ने फिर पूछा।
"मुझे आश्चर्य होता है कि क्या जो चीज हमें आजादी देती है, वही हमें पिंजरे में भी बंद कर देती है," सहस्रा ने गंजे कमांडर को जवाब दिया।
"आप ऐसा क्यों सोचते हैं?"
"अतीत की तस्वीरें मुझे परेशान करती हैं।"
क्या आपको वतापी याद है?
सहस्र ने आंखें बंद करके, आंसू रोकने की कोशिश करते हुए सिर हिलाया। उसने काफी समय से अपने बेटे का नाम नहीं सुना था।
“मैंने हमेशा परिवार में विश्वास रखा है। जब हमारे लोग यहाँ आकर बसे थे, तो हम ही ऐसे लोग थे जिन्होंने इतनी उपजाऊ भूमि खोजी थी, जहाँ किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार नहीं था। इंसानों ने इस जगह को अभी तक नष्ट नहीं किया था। और हम प्रकृति के करीब रहते थे, जैसा कि हमारे जैसे लोगों को रहना चाहिए।” सहस्र ने अपने बचपन को याद करते हुए आह भरी। “जब वतापी और उसकी माँ

“मुझे पता है। हो सकता है यह भगवान वरुण की ओर से हमें दंड हो, क्योंकि हमने उनके जल को बर्बाद होने दिया, जबकि हम देखते रहे और हमने कोई प्रतिरोध नहीं किया।”
और अब हम इंसानों की मदद करते हैं, युद्ध में उनकी मदद करते हैं।
हमें जो आवश्यक है वह करना होगा।
"उम्मीद है, वह अजनबी हमारी बात मानेगा। सौदे के अपने हिस्से को पूरा करेगा। हमने अपना काम कर दिया, जैसा हमें बताया गया था।"
सहस्र ने सिर हिलाया और अपने गले में माला की तरह पहनी हुई अपने शिकारों की हड्डियों को छुआ। वह नंगे बदन था, सांवला था और उसके पूरे शरीर पर सांपों के टैटू बने हुए थे। “हमें न्याय मिलेगा। हमें हमारा हक मिलेगा। हमें हमारा घर मिलेगा, ताकि हमारे बच्चों को हमारी तरह न जीना पड़े।” वह रुका। “महारग, एक मिथक, हकीकत बन गया। मुझे बचपन में बताया गया था कि नागों पर संकट के समय महारोग आएंगे। वे हमारे देवता थे, भगवान शिव द्वारा भेजे गए हमारे योद्धा थे, हमारी रक्षा करने के लिए। क्योंकि आखिर हम प्रकृति प्रेमी लोग थे, स्वभाव से सीधे-सादे। लेकिन मैं पूरी तरह गलत था। वे जहर और भ्रष्टाचार से बेखौफ होंगे। वे किसी से भी ज्यादा ताकतवर होंगे। लेकिन यह सब गलत था।”
"कैसे?"
“महारोगे महज एक कहानी हैं। लेकिन हमारे पास उन कहानियों को हकीकत में बदलने की शक्ति है।”
और वह झील की ओर आगे बढ़ने लगा, जहाँ उसके पैर रेत पर पड़े और उसने वही धारा महसूस की जो उसके बेटे ने महसूस की होगी। तक्षक ने उसे नहीं रोका, लेकिन सहस्र ने वही किया जो आवश्यक था, और जिसे आत्महत्या माना जा सकता था। वह मृत्यु की झील में प्रवेश कर गया।
और उसने धारा को महसूस किया। उसने मृत समुद्री जीवों की दुर्गंध को महसूस किया। फिर भी, उसके शरीर में जहर से जलन नहीं हुई, बल्कि उसे मुक्ति का अहसास हुआ।
जब वह झील में अपने बेटे के साथ एक होने गया था, तब उसे पता चला कि उसकी मृत्यु नहीं हो सकती। वह उन लोगों द्वारा तैयार किए गए जहर से अप्रभावित था।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

“[illegible] [illegible],” [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

48

सत्यसेना ने नदी में अपना चेहरा धोया और अपनी परछाई को देखा।
उसके चेहरे से खून टपक रहा था और पानी पर गिरकर उसे भयावह बना रहा था।
खाई में अपनी धुंधली परछाई देखकर वह खुद में आए बदलाव को देखकर हैरान था।
उसके होंठ फटे हुए थे, बाल चिपचिपे थे, पूरे शरीर पर निशान और चोट के निशान थे, आधी बढ़ी हुई दाढ़ी थी और कपड़े फटे-पुराने और झुलसे हुए थे।
“क्या तुम ठीक हो?” उसकी माँ ने पीछे से पुकार लगाई।
वह एक पेड़ से टेक लगाकर अपने पेट को पकड़े खड़ी थी, जहाँ उसका भाई या बहन होता। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि अष्टार जैसे गुरु को प्रसन्न करने के लिए वह अपने होने वाले भाई या बहन, अपने ही खून के रिश्ते को मारने जा रहा है। यह सोचकर उसे घिन आ रही थी।
मैंने अष्टार के साथ जो किया, वह उसी के लायक था।
सत्यसेना वापस आया और अपनी माँ की मदद की; उसने आसपास से कुछ बेर इकट्ठा किए थे ताकि उन्हें खिला सके। वे राज्य से बाहर थे, उनके पास न पैसा था, न रक्षक, न संपत्ति। वे साधारण नागरिक थे, जिन्हें सत्ता हथियाने वालों ने उनके शाही दर्जे से वंचित कर दिया था।
“धन्यवाद, बेटा।” वह स्नेह भरी मुस्कान के साथ बोलीं, “तुम अच्छे लड़के हो, तुम्हें पता है ना।”
"जब भी तुम यह कहते हो, मुझे शर्म आती है।"
"क्यों?"
"क्योंकि तुमने पहले कभी ऐसा नहीं कहा था।"
उसकी मुस्कान गायब हो गई। “मुझे पता है मुझे ऐसा करना चाहिए था। मैं… उह…” वह रुक गई। “हमें आपसे बहुत उम्मीदें थीं।”
और मुझे पता है कि मैंने उन्हें कभी पूरा नहीं किया।

“मुझे परवाह नहीं। तुम मेरे बेटे हो। यही सबसे ज़्यादा मायने रखता है, मेरे बच्चे।” उसने उसके बालों से खेलना शुरू किया, उन्हें बिखेर दिया, जैसा वह बचपन में किया करती थी।
“मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारे पिता का क्या हुआ?” उसने पूछा।
मुझे नहीं पता, लेकिन मुझे इतना पता है कि हमें पास के गांव तक पैदल जाना होगा। वहां इलाज करवाकर आगे बढ़ेंगे। हम हस्तिनापुर जा सकते हैं। भगवान सुयोधन हमारी रक्षा करेंगे।
शनाया ने सिर हिलाया। "हाँ, वह करेगा।"
"गांव पहुंचते ही मैं एक कौआ भेजूंगा। दिक्कत ये है कि मुझे पता ही नहीं कि हम कहां हैं।"
“युद्धक्षेत्र के करीब,” उसने कहा। “यह बिल्कुल पूर्व दिशा की ओर है।”
"यह खाली ही होगा, है ना?"
“नहीं, पुत्र। युद्धक्षेत्र कभी खाली नहीं होता। वहाँ मृतकों के शव और आत्माएँ हमेशा मंडराती रहती हैं। युद्ध की यही कीमत होती है। इसलिए, मैं अपने आस-पास सभी को शांत रखता था। मैं कभी युद्ध नहीं करता था, बल्कि गठबंधन करता था और स्वयं को वश में रखता था।”
“हाँ, खैर, अब तो बहुत देर हो चुकी है। चलो, मैं तुम्हारी मदद करता हूँ।” सत्यसेना और शनाया युद्धक्षेत्र के किनारों से होते हुए, घने जंगलों से गुजरते हुए रेगिस्तान की ओर चलने लगे। उन्हें उम्मीद थी कि वे सही दिशा में जा रहे हैं, तभी उनकी नज़र एक रोचक दृश्य पर पड़ी। सत्यसेना ने अपनी माँ को फिर से लिटा दिया ताकि उन्हें थकान महसूस न हो, और फिर दूरबीन से देखने लगे कि क्या हो रहा है।
वहाँ नग्न पुरुष थे, मृतकों की राख से सने हुए, खेतों से लाशें ढो रहे थे और आपस में एक ऐसी भाषा में फुसफुसा रहे थे जिसे सत्यसेना ने पहले कभी नहीं सुना था। सत्यसेना ने उनके बारे में सुना था। वे चांडाल थे, जो मृतकों को दफनाते या उनका अंतिम संस्कार करते थे। यही उनका काम था और इसी के लिए उन्हें वेतन मिलता था। खेतों को साफ करना और उन्हें अगले युद्ध के लिए तैयार रखना ताकि फिर से उन्हें गंदा किया जा सके। उनके पास बैल और बक्से भी थे, कटे-फटे शवों के लिए उनके पास लकड़ी के बड़े-बड़े ठेले और टूटे-फूटे रथ थे।

लेकिन जिस चीज़ ने उन्हें सबसे ज़्यादा आकर्षित किया, वह यह नहीं थी। बल्कि, वे जिन शवों को ले जा रहे थे, वे ही उन्हें सबसे ज़्यादा उत्सुक कर रहे थे।
सत्यसेना ने अपनी माता से प्रतीक्षा करने को कहा और स्वयं चांडालों की ओर चल पड़ा, जिनके बारे में वह जानता था कि वे स्वभाव से हानिरहित होते हैं। वह सावधानीपूर्वक और मुस्कुराते हुए उनके पास पहुँचा।
"मेरा इरादा किसी को नुकसान पहुंचाने का नहीं है, मेरे दोस्तों। मैं बस एक शव की तलाश कर रहा हूं, उस व्यक्ति का जिसे मैं पहले जानता था।"
लेकिन चांडाल उसे समझ नहीं पाए और वे उससे पूछने लगे कि वह क्या चाहता है और एक शव के बदले वह क्या दे सकता है।
“पैसा? सोना?”
सत्यसेना ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। सच कहें तो उसके पास कुछ भी कीमती नहीं था, तभी उसे याद आया कि उसने सोने की एक अंगूठी पहनी हुई है जो चमत्कार कर सकती है। उसने उसे अपनी उंगली से निकाल लिया, और जब चांडालों ने उसे देखा तो वे उछलने और शोर मचाने लगे। शनाया पीछे से सब कुछ देख रही थी। “इसका ध्यान रखना। मेरे किसी बहुत करीबी ने इसे मुझे दिया है।”
“कौन सा?” चांडालों को परवाह नहीं थी, और उन्होंने पूछा, “कौन सा?”
“वह शव। मुझे वही चाहिए।”
चांडालों ने उसे पालकी से निकाला और सत्यसेना के चरणों के पास रख दिया। थोड़ी देर बाद वे इस बात से प्रसन्न होकर चले गए कि उन्होंने एक मृत शरीर के बदले सोना कमा लिया है।
लेकिन यह कोई साधारण शव नहीं था। और उसका शव उसके लिए धरती के किसी भी सोने से कहीं अधिक मूल्यवान था।
वह जमीन पर घुटने टेककर बैठ गया और उस आदमी के दिल की जांच की; वह अभी भी धड़क रहा था।
अचेत।
उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई।
“मां,” उसने पुकार कर उन्हें आगे आने के लिए कहा, और वह यह देखने के लिए दौड़ पड़ीं कि वह क्या करने वाला है।
"क्या हुआ?"

“[illegible] [illegible] [illegible],” [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], “[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]”

49

वृकोदरा ने राजसी दिवस के लिए सज-धज कर तैयार हो गया था।
उसने गर्दन तक लंबा कुर्ता पहना हुआ था, साथ में बैंगनी दस्ताने और एक टेढ़ा मुकुट भी था। उसकी धोती कमर से चिपकी हुई थी और उसके सैंडल घुटनों तक टेढ़े-मेढ़े थे। वह महल की सीढ़ियों पर चढ़ रहा था, जिसे सैनिकों के खून से साफ कर दिया गया था। जब उसने राज्य संभाला था, तब यहाँ कई सैनिक मारे गए थे। उसके साथ हिदाम्बी भी थी, जिसने पोशाक पहनी हुई थी, हालाँकि उसे यह पसंद नहीं थी।
“मुझे रानी बनना पसंद नहीं है,” उसने कहा। “मुझे इससे नफरत है। मैं इस पोशाक को फाड़ देना चाहती हूँ।”
“अच्छा, इसके बाद मैं आपके लिए यह कर देता हूँ।” वृकोदरा हँसते हुए बोले। “लेकिन हमें यह करना ही होगा, ताकि लोगों में विश्वास पैदा हो सके, वरना वे थोड़े चिंतित हो सकते हैं।”
यह पुक्कासती का विचार था। राजशाही पर कब्ज़ा करना तो ठीक था, लेकिन जनता को नाराज़ करना ठीक नहीं था। जनता विद्रोह कर देगी, बगावत कर देगी और वह सेना राजशाही की सेनाओं से कहीं ज़्यादा बड़ी थी।
"आप क्या सोच रहे हैं?"
वृकोदरा ने अपनी एक अच्छी आँख से उसकी ओर देखा, जबकि दूसरी आँख में चोट लगी थी, जिस पर उसने पट्टी बाँध रखी थी। उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और दाढ़ी मुंडी हुई थी, जबकि उसकी लंबी मूंछों में तेल लगा हुआ था।
मैं पिछले कुछ वर्षों से केवल एक ही बात के बारे में सोच रहा हूँ।
“क्या बात है? आपको क्या परेशान कर रहा है?”
उसने अपने जबड़े भींच लिए। "जानते हो, मुझे हिंसा से डर नहीं लगता, और मुझे हिंसा के बीच में रहना पसंद है।"

“मुझे पता है। मुझे तुम्हारी यह बात बहुत पसंद है। यह वाकई बहुत आकर्षक है।” वह मुस्कुराई, और उसके दांत देखकर उसे वे पल याद आ गए जब वह उसकी खाल नोंच लेती थी।
"लेकिन मैंने बहुत समय पहले एक भयानक काम किया था, और वह मुझे आज भी परेशान करता है," वृकोदरा ने कहा।
"यह क्या है?"
वृकोदरा ने महल के शिखर का चक्कर लगाते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं और उनका मन उन दिनों में खो गया। “हस्तिनापुर में हम लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हो गए थे, और इससे मेरे चचेरे भाई दुर्योधन को बहुत ईर्ष्या होने लगी थी। यहाँ तक कि उसने अपने धूर्त पिता, अंधे व्यक्ति को भी मना लिया था कि उसे कुछ करना चाहिए। इसलिए उसने हमें राजसी रीति-रिवाजों के अनुसार उत्सवों में शामिल होने के लिए पास के शहर भेज दिया। हम एक घर में काफी समय तक, लगभग कुछ महीनों तक रहे, और गरिमापूर्ण ढंग से उत्सवों का समापन किया। लेकिन मेरे भाई, धर्मराज, को कुछ गड़बड़ महसूस हो रही थी। दुर्योधन इतना ज़िद क्यों कर रहा था? अंततः उसे समझ आया कि जिस घर में हम रह रहे थे, उसमें ज्वलनशील पदार्थ रखे हुए थे—भांग, राल और न जाने क्या-क्या।”
"ओह?"
“हाँ, पुरोचना नाम के एक वास्तुकार ने ऐसा किया था। और धर्मराज उस जगह को छोड़ने के बजाय, उसके साथ नाटक करते रहे क्योंकि उनकी एक योजना थी। अपनी मृत्यु का नाटक करना। यह दिखाना कि उन्हें जलाकर मार डाला गया था।” वृकोदरा ने सिर हिलाया। “उत्सव के आखिरी दिन, हमने तय किया कि हम अपने बनाए हुए सुरंग से भाग निकलेंगे। और उसी दिन दुर्योधन ने पुरोचना को उस खूनी घर को जलाने का आदेश दिया था, ताकि हम भी उसके साथ मर जाएँ। लेकिन उस अनहोनी को टालने के लिए, हमने नगरवासियों को अपने महल में बुलाया, और वे सब शराब पीकर नशे में चूर हो गए। पुरोचना को इंतज़ार करना पड़ा। मुझे आज भी याद है, एक परिवार अपने पाँच बच्चों के साथ आया था, जो इतने बड़े महल में आमंत्रित होकर बहुत उत्साहित थे। मैंने उनसे कहा कि यहाँ मदीरा है और यह बच्चों के लिए नहीं है, लेकिन उन्होंने ज़िद की कि उन्हें खाने की खुशबू आ रही है। मैंने सोचा कि शायद सब ठीक हो, इसलिए मैंने उन्हें जाने दिया। उन्होंने कहा कि वे एक कोने में रहेंगे और किसी भी गतिविधि में हिस्सा नहीं लेंगे। जब धर्मराज ने यह देखा, तो उन्होंने हमारे भागने की योजना बनाई। मुझे सभी

नशे में धुत लोगों को घर से बाहर निकालने की ज़िम्मेदारी दी गई, ताकि वे मर न जाएँ, और जैसे ही पुरोचना ने उस जगह को जलाने का फैसला किया, हम भाग निकले।”
जब तक मुझे याद नहीं आया…
"क्या?"
“मुझसे एक कमरा छूट गया।” उसने अपने जबड़े भींच लिए। “मैं जले हुए महल में लौटा, और मुझे वहाँ पाँच बच्चों के शवों के साथ एक महिला का शव मिला। मेरी इस मूर्खतापूर्ण गलती के कारण, मैंने एक निर्दोष परिवार को मार डाला, जो राजपरिवार के करीब आ गया था।”
वे छत पर पहुँच गए थे, जहाँ से वे अंगा शहर को देख सकते थे, जो ईंटों और गारे से बनी ऊँची-ऊँची सपाट इमारतों से निर्मित था।
लोग नीचे जमा हो गए थे और वे सब उसकी ओर देख रहे थे।
“मुझे जीवन में एक ऐसी चीज से डर लगने लगा था जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मुझे आग से डर लगने लगा था।” उन्होंने अपनी पत्नी से कहा। “मैं किसी भी चीज से डरना नहीं चाहता, लेकिन मेरे पास यह बात साझा करने के लिए कोई नहीं था।”
“इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। शायद उनकी मृत्यु होनी ही थी।”
वृकोदरा ने हल्की सी मुस्कान बिखेरी और उसके गाल पर चुंबन किया, फिर आगे उस चबूतरे की ओर बढ़े जहाँ एक आसन बना हुआ था। उनके हाथ में एक झंडा था, जो हवा के साथ लहरा रहा था और गरज रहा था। उस झंडे पर हाथी का चिन्ह बना हुआ था, जो इंद्रप्रस्थ का प्रतीक था, यानी धर्मराज का मुकुट।
पुक्कासती ने कहा, “कहो कि यह राज्य इंद्रप्रस्थ के भगवान युधिष्ठिर का है।”
वृकोदरा ने बौने की ओर देखकर गरजते हुए कहा, “मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और तुम्हें जो चाहिए वह दूँगा। मैं तुम्हारे लिए लड़ूँगा। मैं तुम्हारे पिछले राजा की तरह कमजोर नहीं रहूँगा। मैं अनुपस्थित नहीं रहूँगा।”
और फिर उसने कहा।
“मैं तुम्हारा राजा बनूंगा। और यह राज्य अब अंग के स्वामी भीम का है।”

50

कर्ण को जब होश आया तो उसे एहसास हुआ कि इस तरह जीने से बेहतर है कि वह मर जाए।
उसने पलकें झपकाईं और पाया कि उसकी पत्नी शनाया और सत्यसेना उल्लू की तरह उसके सिर के ऊपर मंडरा रही हैं। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वे बच गई हैं और वह उनके साथ है।
“कैसे…कैसे…”
"शांत हो जाएं।"
उन्होंने उसे थोड़ा पानी पिलाया और कुछ फल खाने को दिए, उसे अपने हाथों से खिलाते हुए, जबकि वह खेत के एक कोने में लेटा हुआ था। उसे लगा कि वह किसी घने जंगल में है, अंग साम्राज्य में कहीं, या शायद मगध के पास।
“आप कैसी हैं?” शनाया ने पूछा।
“बहुत बुरा हुआ।” उसे यह एहसास होते ही मन ही मन हंसी आ गई कि उसने अपना राज्य एक क्रूर व्यक्ति के हाथों खो दिया है। उसे विश्वास नहीं हो रहा था और वह इसके लिए खुद से नफरत करना चाहता था। “सचमुच बहुत बुरा हुआ।”
“कुछ देर आराम करो। हम एक किसान के घर में रह रहे हैं, और उन्होंने हमारी मदद करने की कृपा की है, बदले में मैंने उन्हें एक पैर की अंगूठी भेंट की थी,” शनाया ने कहा।
कर्ण जानता था कि राजशाही के पतन के बाद, उनके लिए केवल सोने के आभूषण ही मूल्यवान रह गए थे। वह जानता था कि वह अपनी कवच और कान की बालियाँ कभी नहीं देगा। ये दोनों चीजें उसके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थीं।
“अंगा का क्या हुआ?” उसने अपने राज्य, अपनी प्रजा, अपने झंडे के बारे में सोचा। सब कुछ नष्ट हो चुका था। “क्या तुमने उसका पतन देखा था?”
दोनों ने सिर हिलाया।
“तुम्हें इसकी रक्षा करनी चाहिए थी।” उसने सत्यसेना को कोसते हुए कहा, जो शांत और संयमित रहा। “लेकिन, मुझे नहीं पता कि तुम कहाँ थे।”

"मुझे आपके द्वारा स्थापित धार्मिक संगठन द्वारा गुमराह किया जा रहा था।"
वे अच्छे लोग थे।
शनाया अंदर आई। “वे मुझे और तुम्हारे होने वाले बच्चे को मारना चाहते थे। मुझे नहीं लगता कि तुम उन्हें अच्छे लोग कहोगे।”
कर्ण ने गहरी साँस ली और अपने जबड़े भींच लिए। उसकी बांह में सोने की चूड़ियाँ थीं, जिन्हें जीवनयापन के अंतिम उपाय के रूप में बेचा जा सकता था। वह चिड़चिड़ा और बहुत दर्द में था। और उसके कठोर शब्दों के कारण सत्यसेना, शनाया के साथ उस शांत कमरे को छोड़कर चली गई थी।
"मुझे आपके साथ कदम मिलाकर चलना पड़ता है क्योंकि आप मेरे पति हैं, लेकिन आपको अपने बेटे के बारे में भी सोचना शुरू करना होगा," शनाया ने कहा। "आप उसके साथ लकड़ी के लट्ठे जैसा व्यवहार नहीं कर सकते।"
मैं उसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करता हूँ।
“शायद आपके लिए कठोर प्रेम कारगर साबित हुआ हो, लेकिन उसके लिए नहीं। उसका जन्म आपकी जैसी परिस्थितियों में नहीं हुआ है। और मुझे यह भी पता चला है कि आपने उसका लड़ने वाला हाथ कटवा दिया था, इसलिए अब वह लड़ भी नहीं सकता। फिर भी, जब आप यहाँ लेटी हुई थीं, वह अपने बाएं हाथ से अभ्यास कर रहा था, इस उम्मीद में कि वह आपकी मदद कर सके। वही था जिसने आपको लाशों के ढेर से निकाला था, और इसके लिए उसने अपनी अंगूठी भी दे दी थी। कम से कम आप इतना तो कर सकती हैं कि अपने बेटे ने आपके लिए जो किया है, उसकी सराहना करें।” कर्ण ने आह भरी, उसे वे पल याद आ गए जब उसके आसपास के लोगों ने उसकी सराहना की थी। उसके माता-पिता उसके जीवन के अधिकांश समय अनुपस्थित रहे। उसका एक गुरु था जिसने उसे पर्याप्त शिक्षा दी, लेकिन कुछ समय बाद वह शराबी बन गया। उसका एक और गुरु था जो उसे जान से मारना चाहता था। अपने जीवन के हर मोड़ पर वह फंसा रहा।
और हर बार, उसने परिस्थितियों के अत्याचार के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।
“तुम भी चले जाओ। मुझे यहाँ किसी की ज़रूरत नहीं है। मुझे किसी की परवाह नहीं है। मैं बिल्कुल अकेली हूँ। मुझे अकेले रहना अच्छा लगता है।”
शनाया ने गुस्से और हताशा भरी निगाहों से उसे घूरा और चुपचाप, एक शब्द भी बोले बिना कमरे से बाहर निकल गई। उसे कुछ हद तक इस बात की खुशी थी कि वह बच गया था, और वह अभी भी जंगल, पत्तों और पक्षियों को देख पा रहा था। लेकिन

उसने सब कुछ खो दिया था। उसका राज्य, उसका ताज, लोगों से मिला प्यार और, ज़ाहिर है...
उसने अपनी उंगलियों को देखा। वे कांप रही थीं। वे सुन्न पड़ गई थीं। संभवतः, उसने तीरंदाजी करने की अपनी क्षमता भी खो दी थी।
लेकिन थकान हावी हो चुकी थी, और वह सो गया, ठीक वैसे ही जैसे वह लंबे समय से सोता आ रहा था। अपने सपनों में, उसने एक आदर्श जीवन देखा जिसमें वह अपने परिवार, अपने दोस्तों और अपने ताज के साथ जी रहा था। उसने खुद को सर्वकालिक महानतम तीरंदाज समझा, फिर भी उसके सपने की धुंध एक बुरे सपने में बदलती चली गई, और वह अपने भ्रमों के जाल में खो गया...
वह कब जागा।
कुछ गड़बड़ थी। उसके आसपास कुछ हिल गया था, और उसने यह समझने के लिए चारों ओर देखा कि क्या हुआ था। ऐसे भी मौके आए थे जब उसके कानों ने उसकी आँखों या शरीर की तुलना में ज़्यादा आवाज़ें सुनी थीं।
वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और बाहर निकला, और उसने सत्यसेना और शनाया को आग की लकड़ियों के पास गहरी नींद में सोते हुए पाया, जबकि एक युवक, एक तरह की परछाई की तरह, उनके पास प्रकट हुआ था और शनाया की जानकारी के बिना उसकी एक और पैर की अंगूठी चुरा रहा था।
कर्ण ने चिल्लाकर शनाय्या को सचेत किया, जिससे वह जाग उठी और चोर को लात मारकर पीठ के बल गिरा दिया। कर्ण ने अपने शरीर पर बंधे तरकश और धनुष को निकाला। उसने भागते हुए चोर पर बाण ताना। कर्ण ने गहरी सांस लेते हुए सावधानीपूर्वक निशाना साधा...
लेकिन उसके हाथ कांपते रहे। उसका मन एकाग्र था, फिर भी वह ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था, और चोर अपनी पूरी ताकत से भागता रहा, उनके बीच की दूरी बढ़ती जा रही थी, और कर्ण के लिए उस पर निशाना लगाना मुश्किल होता जा रहा था।
“HIT HIM! HIT HIM!” Shanaya shouted.
उसने निशाना तो लगाया, लेकिन तीर बिल्कुल दूसरी दिशा में चला गया। उसने एक और तीर मारा, और वह उससे पाँच फीट दूर जाकर गिरा। वह लगातार निशाना लगाता रहा, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला और चोर भाग निकला।

कर्ण को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसका निशाना इतना बिगड़ गया है, यहाँ तक कि धनुष को ठीक से पकड़ना भी उसके लिए एक समस्या बन गया था और अब वह हथियार जिसे वह इतना प्यार करता था, जो उसे इतना प्रिय था...
उसकी उंगलियां अब उसे सहारा नहीं दे पा रही थीं।
"क्या गड़बड़ हुई?" शनाया ने सत्यसेना के साथ पूछा, जो उसके पीछे-पीछे चल रही थी।
“मैं…भीमा…उसने मेरी उंगलियां तोड़ दीं, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था…कि इसका यह अंजाम होगा।” कर्ण अपनी साधारण सी दिखने वाली उंगलियों को घूरता रहा और उसने एक फैसला किया।
उसने फैसला किया कि अब जीने का कोई मतलब नहीं है।
उसने फैसला किया कि आत्महत्या करना ही बेहतर है।

51

वृषकेतु को रात को नींद नहीं आई।
रात ढल चुकी थी और चाँद अपनी हल्की सी आशा की किरण लिए टिमटिमा रहा था।
वह ज़मीन पर कपड़े की चादर पर सो रहा था, जबकि तृप्ति पलंग पर सो रही थी।
लेकिन उसे कहीं न कहीं यह एहसास था कि वह इतने मोटे तकिये पर आराम से नहीं सो रही थी।
“तुम क्या सोच रहे हो?” वृषकेतु ने पूछा।
"हम ऐसी स्थिति में कैसे फंस गए जिससे निकलने का हमें कोई रास्ता नहीं पता?"
वृषकेतु ने कहा, “हमें हर तरफ से गुमराह किया गया। अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम दोबारा ऐसा न होने दें।”
वे दंडकप्पा नगर में थे, जो कोसल राज्य के अंतर्गत आता था। इंद्रप्रस्थ में हुए पूरे हंगामे के बाद और भगोड़ों की तरह भटकने के कारण, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अब कहाँ जाएँ। उन्होंने बभ्रु के सुझाव पर विचार किया— कि यह विचार व्यावहारिक था और मददगार भी हो सकता था, लेकिन वे पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे।
“हम दोनों तरफ से दुश्मन हैं,” वृषकेतु ने कहा। “कम से कम मैं तो हूँ। मेरा अब कोई घर नहीं है। जिस घर के लिए मैंने लड़ाई लड़ी, उसी घर ने मुझे धोखा दिया। मुझे अब समझ नहीं आ रहा कि क्या चुनूँ—कौन सही है और कौन गलत। गुरु केशव पूरी तरह गलत थे, और मैं मूर्ख था जो सोचता था कि मैं सही पक्ष के लिए लड़ रहा हूँ।”
तृप्ति ने करवट बदली और बिस्तर से सिर झुका लिया। “तुम्हें खुद पर इतना कठोर होने की ज़रूरत नहीं है। अभी के लिए, मेरे साथ मेरी बस्ती में चलो, जहाँ हम योजना बनने तक रह सकते हैं। हमारे पास ज़रूरी सबूत हैं। महारोगा कुरु वंश को नष्ट करने के उद्देश्य में शामिल होकर बहुत खुश होंगे।” “लेकिन क्या वे संख्या में किसी और के बराबर हैं?” वृषकेतु ने पूछा।

“मुझे नहीं पता। मेरे लिए तो ये सिर्फ कहानियां हैं। लेकिन मैं अपने परिवार का, उन लोगों का जिनसे मुझे छीना गया, बदला लेने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं, और अगर इसका मतलब और अधिक नरसंहार को आमंत्रित करना है तो ऐसा ही सही।”
वृषकेतु को यकीन नहीं था कि महारोगों और अन्य नागों को ऐसी खबर देना सही होगा—इससे निश्चित रूप से और हिंसा भड़क उठेगी। वह अब इसमें शामिल नहीं होना चाहता था। आखिरकार, वह पहले ही बहुत कुछ देख चुका था।
जब वे दोनों चुपचाप बिस्तर पर लेटे थे, तभी तृप्ति ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा: “वैसे, आपको मेरी यात्रा का हिस्सा बनने की ज़रूरत नहीं है। अगर आप इसका समर्थन नहीं करते हैं, तो आप अपना रास्ता खुद बना सकते हैं।”
मुझे नहीं पता कि मैं अब किस चीज का हिस्सा हूं। मुझे बस इतना पता है कि तुम मुझे घर जैसा महसूस कराते हो।
वह चुप थी, और पहली बार वृषकेतु ने उसे मुस्कुराते हुए देखा। उसने भी मुस्कुराकर जवाब दिया। और सचमुच उसकी मुस्कान हजारों चंद्रमाओं के समान थी।
थकान के मारे वे कुछ देर सो गए, तभी उन्हें कुछ सुनाई दिया। कोई चीख रहा था। कुछ गड़बड़ थी। वृषकेतु और तृप्ति जाग उठे और उन्होंने उस सराय की ओर देखा जिसमें वे ठहरे हुए थे। बीच में उन्होंने हाथी का झंडा लिए सैनिकों का एक समूह देखा, जिनका नेतृत्व एक व्यक्ति कर रहा था।
वह चिल्ला रहा था, उनके हाथों में मशालें थीं।
वृषकेतु! बाहर आओ! बाहर आओ!
वे दबंगों जैसे दिखते थे, ऐसे लोग जिनकी कोई सीमा या इलाका नहीं था। वे अपने सहयोगी के राज्य में घुसकर सत्ता हथियाने वालों की भूमिका निभाते थे।
“वह कौन है?” उसने पूछा।
“सत्यकी, अर्जुन के सेनापतियों में से एक और करीबी शिष्य,” वृषकेतु ने कहा। उसने उसे राजपरिवार की कई पार्टियों में से एक में देखा था। वह उन लोगों में से एक था जो वृषकेतु की भर्ती के समय उसका सीधा पर्यवेक्षक हुआ करता था। “क्या मैंने तुम्हें इस तरह प्रशिक्षित किया है? क्या तुम एक निकम्मे इंसान हो जो अपने गुरुओं के साथ ऐसा व्यवहार करते हो?”

कस्बे के लोगों ने अपने दरवाजे बंद कर लिए थे। उनकी खिड़कियां भी खुली हुई थीं।
तृप्ति ने कहा, "हमें भागना होगा।"
“नहीं।” वृषकेतु ने अपनी तलवार पकड़ ली। “मैं भागना बंद कर रहा हूँ।”
और उसने वही किया जो तृप्ति किया करती थी। वह खिड़की से कूदकर ज़मीन पर लुढ़क गया। सैनिकों ने उसे देखा, और सत्यकी ने भी, जिसने लोहे और प्लैटिनम से बना भारी कवच पहन रखा था। वह घोड़ी से उतर गया।
“अच्छा, आप यहाँ हैं और मेरे जासूस सही थे। आपको महल में वापस बुलाया गया है। धर्मराज आपसे बात करना चाहते हैं।”
“मैं अब और नहीं जा रहा हूँ और वह अब मेरे लिए धर्मराज नहीं है।” उसने तलवार ऊँची उठाई।
सत्याकी ने भी तलवार उठा ली। वह एक युवा लड़का था, जिसने अर्जुन के साथ बहुत करीब से अभ्यास किया था।
“तुम मुझसे लड़ नहीं सकते। मैंने तुम्हें भर्ती किया है।”
मैं जो चाहूँ वो कर सकता हूँ।
सत्यकी ने अपनी आँखें घुमाईं और तलवार आगे बढ़ाई। वे शहर के बीचोंबीच एक-दूसरे से भिड़ गए। वृषकेतु ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी क्योंकि उसने देखा कि तृप्ति धीरे-धीरे पीछे से अपनी छुरी लेकर सत्यकी के सैनिकों का गला काटने के लिए आ रही है।
वृषकेतु को महसूस हुआ कि तलवार उसकी जांघ में चुभ गई है। उसने पलटकर सत्यकी की बांह पर वार किया। सत्यकी गिर पड़ा और वृषकेतु से जा टकराया, जिससे सत्यकी भी जमीन पर गिर गया। सत्यकेतु ने तलवार वृषकेतु के सिर के ऊपर से निकाली, लेकिन वृषकेतु ने किसी तरह वार को अपने चेहरे से कुछ इंच दूर होने पर बचा लिया। वृषकेतु ने उसे एक घूंसा मारा और दूर फेंक दिया। “गुरु केशव न होते तो मैं तुम्हारे इस खूनी मकसद में कभी शामिल न होता,” वृषकेतु ने कहा। “लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि मेरे पिता को बेनकाब करने में तुम्हारी मदद कर सकते हो। तुम्हारा साथ देकर मैंने गलती की।”
“तुम अपने पिता को बहुत अच्छा समझते हो। भीम ने उन्हें सिंहासन से हटा दिया है। तुम्हारा शासन समाप्त हो गया है।”
और वह वृषकेतु को नष्ट करने के लिए और करीब आ गया। उसने वृषकेतु को धक्का देकर दूर कर दिया और तलवार सत्यकी के करीब ले आया। सत्यकी उसके हमले से

बचते हुए कूद पड़ा और उसके गुप्तांग पर लात मारी। दर्द से वृषकेतु चौंक गया और होश में आने की कोशिश कर रहा था, तभी सत्यकी ने अपनी तलवार वृषकेतु की पीठ में गहरी धंसा दी।
उसे असहनीय दर्द महसूस हो रहा था।
“तुम्हें तो आधी बातें भी नहीं पता जो तुम्हारे साथ घटी हैं, है ना? तुम्हें कुछ भी नहीं पता।”
दर्द कम होने लगा, लेकिन वृषकेतु ने सत्यकी को घुटने से और फिर कोहनी से चेहरे पर वार किया, जिससे उसकी नाक टूट गई। सत्यकी ने खुद को रोकने की कोशिश की, तभी वृषकेतु ने शरीर में फंसी तलवार से सत्यकी की छाती पर वार किया, जिससे उसकी कवच पर एक निशान बन गया, और फिर उसके चेहरे पर वार करके उसे घायल कर दिया, जिससे खून बहने लगा।
उसने देखा कि तृप्ति द्वारा उसकी हत्या किए जाने के बाद से उसके बाकी सैनिक भी मारे जा चुके थे।
वृषकेतु ने तृप्ति को देखा जो खून से लथपथ थी और वह खुद भी खून से लथपथ था, जैसे ही वह जमीन पर गिरा, एड्रेनालाईन का स्तर कम होने लगा।
“मुझे जरूरत है…मुझे जरूरत है…” उसका चेहरा पीला पड़ गया।
“हम तुम्हें प्रशिक्षण दे रहे थे,” सत्यकी ने दूर से कहा, जाने से पहले, “हम तुम्हें तुम्हारे पिता के विरुद्ध जाने के लिए तैयार कर रहे थे, मूर्ख। अब तुम्हारा काम खत्म हो गया है। मेरे उद्देश्य के लिए तुम्हारी अब कोई आवश्यकता नहीं है।”
"तैयारी से तुम्हारा क्या मतलब है?" उसने दर्द में ही पूछा।
सत्यकी घबराकर पीछे हट गया, भागने के लिए तैयार था, तभी उसकी सीटी सुनकर एक घोड़ी प्रकट हुई और वह उस पर सवार हो गया। जाने से पहले उसने कहा, “अंगा के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध की तैयारी में तुम हमेशा हमारे प्रमुख सदस्य रहे हो। तुम हमेशा एक हथियार रहे हो। गुरु केशव भी यही मानते थे।”
“वह इसमें कैसे शामिल था?”
“अरे, तुम मूर्ख हो!” सत्यकी मुस्कुराया। “वह धर्मराज के लिए काम कर रहा था। और सिर्फ़ तुम ही नहीं, वह हर जगह था, उन सभी राज्यों में जहाँ धर्मराज को लगता था कि बच्चों को अपने पिता के विरुद्ध जाना चाहिए। धर्मराज का मानना था कि किसी साम्राज्य को नष्ट करने के लिए, राजा के खून के हत्यारे को ढूँढ़ना पड़ता है। और बस यही बात थी। गुरु केशव मान गए। यह उनकी योजनाओं

[illegible] [illegible]” [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] “[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]”

52

उसने पहले कभी इतना ज़िम्मेदार महसूस नहीं किया था।
शनाया रात-दिन जाग रही थी जब उसने अपने सामने किसान को देखा। उसने आग जलाई थी, सत्यसेना कर्ण के साथ सो गया था।
खुले में एक भयंकर तूफान उठ रहा था। यह पागलों की तरह कहर बरपा रहा था, पेड़-पौधे आपस में टकरा रहे थे और बिजली कड़क रही थी। अगर यह तूफान और देर तक चलता रहा तो उनकी झोपड़ी भी गिर जाएगी। किसान आग के पास बैठा बोला, "मुझे भी नींद नहीं आ रही है।"
“कोई ऐसा कैसे कर सकता है?” शनाया ने कहा। “हमारे प्रति इतनी मेहमाननवाज़ी दिखाने के लिए धन्यवाद।”
किसान ने कहा, "पिताजी ने मुझे यह सिखाया था। मैंने जो कुछ हुआ था उसके बारे में सुना था।"
शनाया चुप थी।
“हाँ, दुर्भाग्यवश, लेकिन मेरा अक्सर डाकुओं और चोरों से सामना होता रहता है। इसलिए मैं अपने दरवाजे बंद कर लेता हूँ और उनके आसपास होने पर बाहर नहीं निकलता। इस दुनिया में इतना भ्रष्टाचार फैला हुआ है कि समझ नहीं आता यह सब कब खत्म होगा,” किसान ने आह भरते हुए कहा। “पिताजी ने मुझे जीवन के बारे में बहुत कुछ बताया था और कहा था कि झगड़ों से दूर रहो, उनमें से किसी को भी जीत नहीं मिलती।”
"हाँ, तो ये बात मेरे पति को बताओ।"
उस खूंखार आदमी ने हंसते हुए कहा, "मुझे लगता है मैंने उसे पहले भी देखा है।"
शनाया को ठंडक का एहसास हुआ, फिर वह रुक गई और मुट्ठी भींच ली। वह नहीं चाहती थी कि शाही परिवार से होने के कारण उसे ताने मारे जाएं, वरना वह इसकी सूचना अधिकारियों को दे सकता था और उन्हें उनसे छीन लिया जा सकता था।

“शायद मुझे यह मेरे पिता द्वारा सुनाई गई कहानियों से याद है।” किसान ने सोचते हुए आह भरी।
आपका मतलब क्या है?
“अरे नहीं,” उन्होंने कहा, “आखिरकार, वह एक भीषक थे। और उन्होंने उस दंपत्ति का इलाज किया था जो जरासंध के प्रकोप से भाग रहे थे। वही राजा जिसे भीम ने दो टुकड़ों में फाड़ दिया था? हाँ। वही।” उन्होंने याद करने की कोशिश करते हुए आह भरी। “और उन्हें उस घटना का हर पल याद था, क्योंकि उस दंपत्ति की रक्षा करते हुए वह मौत के बहुत करीब पहुँच गए थे। वह महिला गर्भवती थी, बिल्कुल तुम्हारी तरह। और उन्होंने उन्हें शरण दी। जरासंध ने उन्हें ढूंढ लिया और हमला कर दिया। वह बीच में फंस गए थे, लेकिन बच गए। वह उनके लिए और हमारे लिए भी उथल-पुथल भरा समय था, लेकिन वह ठीक हो गए, और उन्होंने मुझे बच्चे, कुंडल और कवच के बारे में बताया। उनके पास ये सब थे, तुम्हें पता है। उन्हें बस इतना ही याद था। जब मैंने तुम्हारे पति को देखा, तो उनके पास भी वही सब था।” वह अपनी दाढ़ी खुजा रहे थे। “शायद यह एक संयोग था।”
शनाया ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं, यह सोचते हुए कि क्या वह संयोगवश उस व्यक्ति के पुत्र से मिल गई है जिसने राधा और अधिरथ को बचाया था।
“आपके पति को यह समस्या है, है ना? लकवा? या कुछ और। मुझे लगता है इसका कोई समाधान है,” उन्होंने कहा।
"यह क्या है?"
“मेरे पिता, जो एक भीषक थे, उन्होंने देश भर से चिकित्सा के बारे में ज्ञान प्राप्त किया था। लेकिन एक बात जो उन्हें कभी समझ नहीं आई, वह थी नागों की चिकित्सा। वे किसी प्रकार का जादू जानते हैं, और वे इस तरह की बीमारी का इलाज कर सकते हैं,” उन्होंने कहा। “अगर आप अपने पति की मदद करना चाहती हैं, तो आप इसे आजमा सकती हैं। नागों की बस्तियों में से कोई एक आपकी मदद कर सकती है। वे अक्सर बेघरों की मदद करते हैं। उन्होंने बताया कि यह विशेष औषधि 'भूले सपनों की घाटी' से आई है।”
लेकिन हम राजपरिवार से हैं। हम ही तो उनकी आजीविका, उनके प्राकृतिक परिवेश को नष्ट करते हैं। शनाया ने अपने होंठ दबाए। साथ ही, कर्ण के पिता की हत्या महारोगों ने ही की थी। तनाव बहुत ज़्यादा था।

"मेरा साथ देने के लिए धन्यवाद, लेकिन मुझे अपने पति का हालचाल पूछना चाहिए।"
“जी महोदया। आपसे बात करके अच्छा लगा। मुझ जैसे बूढ़े आदमी को अच्छी संगत की हमेशा जरूरत होती है। आखिर दिन के अंत में यही तो सहारा होता है।” शनाया ने शिष्टाचारवश मुस्कुराया और अपने कमरे की ओर जाने लगी, तभी खिड़की से उसने देखा कि कोई झोपड़ी से निकलकर तूफान की ओर जा रहा है। वह दरवाजे के पास गई और देखने लगी कि कौन है, और वह उसके पति की आकृति लग रही थी।
वह उसके पीछे चलने लगी, लेकिन वह परछाई की तरह तेज़ी से भागा और एक चट्टान पर पहुँच गया। वह उसका पीछा करती रही, तभी उसने अपने पति को चट्टान पर खड़े देखा, जो कूदने के लिए तैयार था।
वह छलांग लगाने ही वाला था कि शनाया ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे अपनी ओर खींच लिया। बारिश की बूँदें उनके चेहरों पर पड़ रही थीं और शनाया को अपने कभी ताजपोशी कर चुके पति का धुंधला सा प्रतिबिंब दिखाई दिया। वह टूट चुका था, पराजित हो चुका था और उसकी आँखों में गहरा दर्द और पीड़ा थी। “तुम इतनी आसानी से हमें छोड़कर नहीं जा सकते!” उसने उसे कसकर पकड़ लिया।
लेकिन वह जम गया था।
"क्या हुआ?"
“मैं धनुष का इस्तेमाल नहीं कर सकता… मेरे हाथ…” वह सदमे में था।
शनाया ने उसे अपने सीने से लगा लिया और रोने लगी, क्योंकि वह अच्छी तरह जानती थी कि उसे क्या करना है।
वह जानती थी कि उसे यह यात्रा करनी ही होगी। उसे अपने पति को फिर से अपने जीवन में वापस लाने में मदद करनी ही थी।
उसे घर का स्तंभ बनना था।

वृषकेतु जब जागा तो उसने खुद को एक झोपड़ी में पाया, उसके शरीर पर एक बड़ी पट्टी बंधी हुई थी। उसने अपने बगल में तृप्ति का सिर भी देखा, जो पेट के बल

लेटी हुई सो रही थी। उसे पता नहीं था कि वह कहाँ है, लेकिन उसे यह जादुई सा एहसास हो रहा था।
तृप्ति को पता चला कि वह जाग गया है, तो उसने मुस्कुराते हुए उससे पूछा, "क्या तुम ठीक हो? क्या तुम बिल्कुल ठीक हो?"
"हाँ।"
उसे जड़ी-बूटियों और आयुर्वेदिक सुगंध आ रही थी।
"हम कहाँ हे?"
“उस बस्ती में जहां मुझे बचाया गया था।”
“ओह!” वृषकेतु ने कहा। “हम नागों की भूमि में आ गए हैं।”
“हां। भूले हुए जंगल की घाटी। वे ही मेरे रक्षक थे। जब उन्होंने मुझे गुलामों से बचाया, तो वे ही मेरे रक्षक थे,” तृप्ति ने कहा।
हे भगवान! मैंने अपने गुस्से को खुद पर हावी होने दिया।
“बहुत आश्चर्यजनक। क्या अभी भी दर्द हो रहा है?”
वृषकेतु उठने की कोशिश कर रहा था, और उठते ही उसे आयुर्वेदिक दवा की और भी तेज़ गंध आने लगी। दर्द अभी भी बहुत ज़्यादा था, लेकिन वह ठीक होने की कोशिश कर रहा था, और सुन्नपन के साथ-साथ कमज़ोरी भी कम हो गई थी। "मैं ठीक हो जाऊँगा।"
मैंने मां से बात की।
“क्या तुम्हारी माँ है?”
“नहीं। माँ। वो पवित्र चाची जो अपनी औषधि से समुदाय की देखभाल करती हैं,” उसने कहा। “सारा काम वही करती हैं। और उन्होंने मुझे बताया कि महारोगा लोग पिसाख के साथ अपने कथित युद्ध के बाद यहाँ आए थे। वे घायल थे, लेकिन उन्होंने अपनी शक्ति से पूरे पिसाख समुदाय का सफाया कर दिया था।” “तुम क्या कहना चाह रहे हो?” वह असमंजस में था।
“महारोग बहुत शक्तिशाली हैं। उन्होंने कहा कि वे एक विषैली झील से पैदा हुए हैं और उनके पास मनुष्य से कहीं अधिक शक्तियां हैं। मुझे नहीं पता कि यह कैसे संभव है, या इसका रहस्य क्या है,” तृप्ति ने कहा। “लेकिन अगर वे ऐसे ही हैं, तो वे हमारी मदद कर सकते हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि हम क्या चाहते हैं, और फिर हमें मनुष्यों के पतन की योजना बनानी चाहिए।”
वृषकेतु और तृप्ति द्वार की ओर चले, और वह द्वार एक विशाल घाटी में खुलता था जो शुद्ध हरियाली से भरी थी, एक झरना था जहाँ नागों के बच्चे खेल रहे थे,

और वहाँ झोपड़ियाँ, जुगनू, तितलियाँ, सभी प्रकार के कीड़े और न जाने क्या- क्या थे।
“यह इतना सुंदर कैसे है?”
"यह प्रकृति को नष्ट करने वाली मानवीय विकास परियोजनाओं से अछूती है," तृप्ति ने कहा।
एक पल के लिए वृषकेतु रुक गया, यह सोचकर कि उसने अभी-अभी क्या प्रस्ताव रखा है।
“यह तो बिल्कुल अविश्वसनीय लगता है,” वृषकेतु ने कहा। “जहरीली झील? महामानव? यह तो सीधे पौराणिक कथाओं से लिया गया है।”
“मुझे नहीं पता कि यह कितना सच है,” उसने कहा। “लेकिन यह कुछ तो है। एक उम्मीद। आगे बढ़ने की प्रेरणा। अभी हमारे पास बस यही है, वृषकेतु।”
और उसने पहली बार उसका नाम लिया था। उसने होंठ चाटे और सिर हिलाया। "ठीक है। चलो चलते हैं।" वह आगे होने वाले भयानक मंजर से बचना चाहता था, और उसके साथ हुए बिना वह ऐसा नहीं कर सकता था। इससे उसे उसे मनाने का समय मिल जाएगा।
तृप्ति ने उसे गले लगाया, और उसे अपने शरीर में चिंता की एक लहर दौड़ती हुई महसूस हुई।
"यह जगह कहां है?"
उसने कहा, "जाहिर तौर पर इसे 'भूले हुए सपनों की घाटी' कहा जाता है।"

53

वृकोदरा को स्वयं को राजा घोषित किए जाने से घृणा थी।
क्योंकि इससे मिलने वाली प्रसिद्धि के अलावा, उन्हें प्रशासनिक कार्यों की भी देखरेख करनी पड़ती थी। युद्ध कक्ष में, जिसे विशेष रूप से उनकी आवश्यकताओं के अनुसार बनाया गया था, पुक्कासती ने वृकोदरा से अनगिनत प्रश्न पूछे। अनाज का क्या करना है, किसानों से क्या करना है, कृषि से लेकर व्यापारियों पर कर कैसे लगाना है, निर्यात, आयात आदि विषयों पर प्रश्न पूछे जाते थे।
आह! उसने गुस्से में मेज पर मुक्का मारा। "क्या इन सब कामों के लिए हमारे पास लोग नहीं हैं? मंत्री, रईस?"
“सेनापति, आप उनमें से आधे को पहले ही मार चुके हैं,” पुक्कासती ने व्यंग्यपूर्वक कहा। “और बाकी आधे आपके फैसले का इंतजार कर रहे हैं। वे इसे अंजाम देंगे, लेकिन यह राजा का फैसला होना चाहिए। आखिर आप ही तो राजा बनना चाहते थे।”
वृकोदरा ने अपनी नाक फुला ली। "मेरे मित्र, एक दिन मैं तुम्हारे द्वारा मेरे विरुद्ध बोले गए शब्दों के लिए तुम्हारा गला काट सकता हूँ, लेकिन अभी के लिए मैं अपने भाग्य पर हँस सकता हूँ।"
आपको ऐसा क्यों लगता है कि आप राज्य पर शासन करना चाहते हैं?
वृकोदरा ने इस बारे में सोचा नहीं था। “मुझे कुछ पता नहीं। मैं बस इतना जानता हूँ कि मैं युधिष्ठिर का हाथ बनकर थक चुका हूँ, और मुझे अपना खुद का रास्ता खुद बनाना है।”
“हाँ, इस पर कर भी लगता है!” पुक्कासती ने दस्तावेज़ दिखाते हुए कहा। “और, तुमने राक्षसों से कर्ज लिया था। तुम्हें पता ही है कि यह कैसे होता है। खून से चुकाया गया कर्ज खून से ही देना पड़ता है।”
“वह मेरी पत्नी है। उसकी आधी सेना भी मेरी है।”

“राक्षसों के बीच यह तरीका काम नहीं करता। आखिर वे तो बर्बर हैं।” उसने आंखें घुमाईं। “अब मैंने सोचा, हमें पूरे राज्य में सबसे अच्छे सूअरों का शिकार करना चाहिए और उन्हें और उनके लोगों को उपहार देना चाहिए। तब कर्ज चुकाया जाएगा, क्योंकि यह खून से चुकाया जाएगा।”
“हां,” उसने कहा। “जो भी हो, मुझे परवाह नहीं।”
"लेकिन संयोगवश मेरी हिदाम्बी से बात हुई, और उसने कहा कि वह कॉलोनी या वह पिंजरे जैसी बकवास चीज, कॉलोनियों के एक बड़े समूह का हिस्सा थी, जिस पर उसके भाई का शासन था।"
“हिदाम्बा, मैं जानती हूँ।”
“नहीं, दूसरा भाई। तो हमें बस नई शर्तों पर फिर से बातचीत करनी होगी, और सब ठीक हो जाएगा। फिर हमें तुम्हारे भाई का सामना करना होगा।” वह हँस पड़ा। “हे भगवान! इतने सारे भाई-बहनों से निपटना है। कभी-कभी तो मुझे खुशी होती है कि मैं अनाथ हूँ, वरना मेरी गर्दन पर चाकू रखा होता।”
वृकोदरा ने सोचा कि पुक्कसती को पता होना चाहिए कि वह ये मज़ाक कहीं और नहीं कर पाएगा, लेकिन एक बौना दोस्त होना अच्छा था, जो स्वभाव से हानिरहित था और अधिकांश कार्यों के पीछे उसी का दिमाग था। उसने अपने मज़ाक पर हँसते हुए अपनी घायल आँख को छुआ। काली पट्टी ने चोट के भयानक निशान को छुपा रखा था।
पुक्कासती ने कहा, "कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या कर्ण की मृत्यु हो गई थी।"
“हाँ, उसने किया था। मैंने चांडालों से दोबारा पुष्टि की और उसका बेजान शरीर बाकी लाशों के साथ पड़ा हुआ था,” वृकोदरा ने कहा। “हम जीत गए, बौने।” दरवाजा खुला और ब्रूट कंपनी से ही नियुक्त शाही रक्षक प्रकट हुए। "कमांडर, इंद्रप्रस्थ से एक दूत यहाँ आया है।"
वृकोदरा ने आंखें घुमाईं और कुर्सी पर बैठ गया, अपने पैर मेज पर रख दिए, जहां लकड़ी की मूर्तियां रखी थीं। उसके भारी पैरों से वे सभी गिर गईं। दूत हाथी के चिन्ह को धारण किए हुए प्रकट हुआ।
“हे भगवान भीम, मैं इंद्रप्रस्थ के भगवान युधिष्ठिर के दरबार से आपके साथ आया हूँ…” और वह अपना पूरा नाम और उपाधि बताने ही वाला था कि वृकोदरा ने उसे आगे बढ़ने का आदेश दिया।
"आगे बढ़ो, क्या बात है?"

“भगवान युधिष्ठिर उस सैनिक के साथ किए गए व्यवहार से प्रसन्न नहीं थे जिसे आपने उनके पास वापस भेजा था।”
“जासूस की बात कर रहे हो?” वृकोदरा ने सिर हिलाया। “उसे कह देना कि वह दूसरों के मामलों में दखल न दे, ठीक है?”
दूत घबरा गया। “भगवान युधिष्ठिर भी अंग पर आपकी विजय के लिए आपको बधाई देना चाहते हैं। उनका मानना है कि अंग में ठहरने के बाद, आप पूर्व में उनके लिए और अधिक क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने की योजना बना रहे हैं, और वे पूछ रहे थे कि आपकी अगली योजना क्या होगी।”
वृकोदरा ने दूत को घमंडी निगाहों से देखा और फिर उसकी ओर चल पड़ा, उसके हाथ में जो मदीरा था वह फिसलकर ज़मीन पर गिर गया। दूत के सामने वृकोदरा पुरुषों के बीच एक विशालकाय व्यक्ति की तरह लग रहा था।
इसके जवाब में उसने दूत पर डकार मार दी।
“मैं अभी कुछ समय यहीं रुकूंगा। वह अपने किसी भी आदमी को और अधिक क्षेत्रों पर कब्ज़ा करने के लिए भेज सकता है। मैं उसकी बात सुनकर और उसके आदेश मानकर थक चुका हूं,” वृकोदरा ने दूत को कमरे से बाहर धकेलते हुए कहा। पुक्कासती पीछे खड़ी होकर वृकोदरा को निराशा भरी आह के साथ देख रही थी। "आप जानते हैं, सेनापति, अंततः आप हम सबको मुसीबतों के ढेर में धकेल देंगे।"
हमें उस बूढ़े आदमी की बात क्यों सुननी चाहिए?
“क्योंकि वह अपने पिता के प्रति न्याय करने की कोशिश कर रहा है, जिन्होंने उसे सिंहासन सौंपा था, लेकिन सुयोधन जैसे गिद्ध उसके चारों ओर मंडरा रहे हैं। वह उस अधिकार के लिए लड़ रहा है जो उसके वंश को मिलना चाहिए।”
“आह!” उसने खिड़की से बाहर देखते हुए इस विचार को मन से झटक दिया। “युधिष्ठिर हमेशा से ही ज़रूरत से ज़्यादा ध्यान आकर्षित करने वाला व्यक्ति रहा है, जो उसके लिए नुकसानदायक था।”
प्रशिक्षण के दौरान उसने देखा कि उसकी पत्नी बाहर किसी से द्वंद्वयुद्ध कर रही है। यह देखकर वह खुशी से हँस पड़ा। सब कुछ ठीक चल रहा था कि तभी दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। पुक्कासती के बजाय, वह गया और दरवाजा खोला, तो देखा कि बाहर दूत नहीं, बल्कि उसका एक सिपाही खड़ा है।
“कमांडर, हमारे सामने एक समस्या है। आप छत पर आ सकते हैं।”

“छत पर?”
वृकोदरा बौने के साथ उसके पीछे-पीछे चला, बौना लगातार अपने आप से कुछ बुदबुदा रहा था।
“क्या हो रहा है?” उसने उस छोटे आदमी से पूछा।
मुझे पहले से ही अंदाजा था कि चीजें हमारे पक्ष में नहीं जाएंगी, मुझे ऐसा बहुत प्रबल एहसास था।
“अपनी इस भावना को अपने पास रखो और अपनी छोटी सी गांड में डाल लो, बौने।” उसने गुस्से से थूकते हुए कहा और ऊपरी मंजिल की ओर बढ़ गया।
वहाँ पहुँचते ही उसने देखा कि महल इतना विशाल था कि वह चारों ओर फैले हुए राज्य के बाहरी इलाके को देख सकता था, जो कई गज तक फैला हुआ था, जहाँ जंगल और रेगिस्तान मिलते थे। अंगा इतना विशाल था कि वह लगभग अवास्तविक लग रहा था, जबकि उसकी तुलना में वह बहुत छोटा लग रहा था, और वह कर्ण और शनाया द्वारा इस भव्य स्थान के निर्माण को देखकर विस्मित था। उसने दूर से छोटी चींटियों का एक झुंड देखा, जो सभी मुख्य द्वारों के चारों ओर चक्कर लगा रही थीं, स्थिर खड़ी थीं लेकिन मच्छरों की तरह भिनभिना रही थीं।
"क्या रहे हैं?"
उन्होंने वृकोदरा को दूरबीन सौंप दी।
“एक समस्या है, महाराज।” कर्ण के साथ काम करने वाले सैनिकों में से एक ने कहा।
वृकोदरा ने चींटियों की ओर देखा और पाया कि उनके आधे मुंडे हुए सिर, घने रोएँदार शरीर, लंबे, असामान्य हथियार, नुकीले दाँत थे और वे दहाड़ रही थीं और गुर्रा रही थीं। “राक्षस… लेकिन ये राक्षस यहाँ क्यों हैं? हमारे पास पहले से ही अंदर राक्षस हैं, और हमने उन्हें काफी कुछ दे दिया है।” पुक्कासती ने अपना सिर पीट लिया। "अरे बाप रे, यह तो अच्छा नहीं हुआ।"
तब तक हिदाम्बी भी आ चुका था। "मेरे प्रिय!" उसने उसे पुकारा।
वृकोदरा ने पीछे मुड़कर देखा।
"क्या हो रहा है?"
“यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन मैं पहले उनके अधीन काम करता था। और वह यहीं हैं। सब ठीक हो जाएगा।”
और वह घबराई हुई लग रही थी। वृकोदरा ने अपनी क्रूर पत्नी को इतना घबराया हुआ कभी नहीं देखा था।

मुझे लगा था कि वह नहीं आएगा। हम एक छोटी सी बस्ती थे, उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन... लेकिन मुझे नहीं पता कि वह यहाँ क्यों है, या शायद मुझे पता है कि वह यहाँ क्यों है, और यह अच्छी बात नहीं है।"
वृकोदरा समझ गई कि वह उस कर्ज की बात कर रही है जिसे चुकाना था। "यह किर्मिरा है, है ना?"
पुक्कासती और हिदाम्बी ने सिर हिलाया।
“हम उससे निपटेंगे,” वृकोदरा गुर्राया। “चलो चलें।”
“मैं आपको बस एक बात बताना चाहता हूँ…” हिदाम्बी ने कहा।
"क्या?"
उसने पलकें झपकाईं। "वह हिदाम्बा का बड़ा भाई है।"

54

वृषकेतु ने पहली बार आराम से यात्रा की।
पर्याप्त भोजन, एक घोड़ा और जीवित रहने के लिए आवश्यक सामान लेकर विस्मृत वन की घाटी छोड़ने के बाद, उन्हें पता था कि उनकी आगे की यात्रा आरामदायक होगी। हालांकि, पहाड़ों, जंगलों और शुष्क क्षेत्रों से यथासंभव चुपचाप यात्रा करते हुए, वृषकेतु को तृप्ति के बारे में और साथ ही साथ अपने बारे में भी बहुत कुछ पता चला।
उन्होंने शिविर लगाए, साथ भोजन किया, कभी वे आकाश और तारों को निहारते, कभी वे शांति से सो जाते। वृषकेतु तृप्ति के आक्रामक और हिंसक व्यवहार को समझते थे, क्योंकि तृप्ति ने बचपन से ही बहुत कुछ सहा था। और तृप्ति समझती थीं कि वृषकेतु हमेशा धर्म का पक्ष क्यों लेते थे, क्योंकि उन्होंने केवल गलत चीजें ही देखी थीं। उन्हें यह नहीं पता था कि कौन सही है और कौन गलत। अपनी एक यात्रा के दौरान, वृषकेतु ने अपनी असुरक्षाओं के बारे में बात की।
“बचपन से ही मेरा शोषण होता रहा है,” उन्होंने कहा। “काश मुझे पता होता कि गुरु केशव भगवान कृष्ण हैं, तो मैं सावधान रहता। और यह सब इतनी चालाकी से किया गया, उन्होंने खुद को इतनी अच्छी तरह छिपाया था कि एक बुद्धिमान व्यक्ति भी मूर्ख महसूस करे। उन्होंने मुझे अपने परिवार के खिलाफ जाने के लिए भी कहा। मुझे नहीं पता कि धर्म क्या है—अपने परिवार के साथ रहना या अच्छाई का साथ देना। लेकिन फिर, अच्छाई आखिर है क्या? यह सोचकर मुझे बहुत दुख होता है।”
“अच्छाई जैसी कोई चीज नहीं होती,” तृप्ति ने कहा। “ये हमारे अपने बारे में हमारी धारणाएं हैं। हम मानते हैं और सोचते हैं कि हम अच्छे हैं, लेकिन हम नहीं हैं। हम सोचते हैं कि हम बुरे हैं, लेकिन हम नहीं हैं। यह एक धारणा है, और हम इसे बदल नहीं सकते। पांडव खुद को अच्छा मानते हैं, लेकिन कई लोगों के लिए वे अच्छे नहीं हो सकते। कम से कम मेरे जैसे लोगों के लिए तो

नहीं। उन्होंने भयानक काम किए हैं, और उन्हें उसका परिणाम भुगतना होगा।” उनकी आवाज में दृढ़ता थी।
अपनी एक यात्रा के दौरान जब वे रुके, और तेज़ बारिश हो रही थी और कड़ाके की ठंड पड़ रही थी, तब उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें कंबल की ज़रूरत है, लेकिन उनके पास केवल एक ही कंबल था, इसलिए उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाकर उसे साझा किया। वृषकेतु ने पहले कभी इस तरह की गर्माहट और इस तरह का प्यार महसूस नहीं किया था, और उसने अपनी ठुड्डी उसके कंधे पर टिका दी, और वे घंटों तक उसी स्थिति में रहे।
उन्होंने कहा, "यह एक यात्रा है। हर चीज एक यात्रा है। और उस यात्रा में, हम नायकों से मिलते हैं और खलनायकों से भी, और कभी-कभी, हम दोनों को अपने भीतर ही पाते हैं।"
रास्ते में उन्हें हर तरह के लोग मिले। वे चरवाहों और सैनिकों से मिले, जिन्होंने उन पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे बाहरी इलाके में थे, शायद उत्तर-पूर्व दिशा में, ठंडे क्षेत्रों की ओर बढ़ते हुए, पहाड़ों को पार करते हुए, और अंत में पूर्व के उष्णकटिबंधीय द्वीपों तक पहुँच रहे थे। क्योंकि पुल टूटे हुए थे और वहाँ नावों का आना-जाना संभव था। तृप्ति के पास उसकी माँ द्वारा दिया गया नक्शा था, जिसमें उसकी माँ ने उसे सही दिशा दिखाई थी।
रास्ते में उन्हें एक भिखारी भी मिला, जिसे उन्होंने कुछ पैसे और कुछ खाना दे दिया। वृषकेतु ने यह तृप्ति की इच्छा के विरुद्ध किया था, क्योंकि तृप्ति को लगता था कि उनके पास तब भी बहुत कम था और अगर वह इसी तरह बांटता रहा तो उनका गुजारा नहीं हो पाएगा।
वह भीख मांगने वाली महिला बुरे दौर से गुज़री थी। उसकी आँखें खूबसूरत थीं, बाल घुंघराले थे और त्वचा सांवली थी। उसने पूछा, "मेरे बच्चों, तुम कहाँ जाने की योजना बना रहे हो?"
“यह तुम्हारा विषय नहीं है,” तृप्ति ने उत्तर दिया।
वृषकेतु ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "तुम क्यों पूछ रहे हो?"
"ताकि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना कर सकूँ, ताकि मैं कह सकूँ कि देवता तुम्हारी यात्रा में कृपा करें।" उसने हल्की सी मुस्कान दी।
"हम एक ऐसी बस्ती में जा रहे हैं जिसे 'भूले हुए सपनों की घाटी' के नाम से जाना जाता है।"

भिखारी मुस्कुराया। “एक युवती की मदद करने और उसकी देखभाल करने के लिए आपको आशीर्वाद मिलेगा। मेरी दुआएं आपके साथ रहेंगी।”
और वे अपनी यात्रा पर आगे बढ़े। उन्होंने अपने पिता से यथासंभव दानशील होना, जरूरतमंदों की मदद करना सीखा था, चाहे इससे कितनी भी बड़ी समस्या क्यों न उत्पन्न हो।
उन्होंने एक बार कहा था, "क्या हम जो यात्रा करते हैं, वह सही यात्रा है? या नहीं?"
“हमारा यह सफर शायद एकमात्र सही सफर है, क्योंकि यह हमारा है और कोई इसे हमसे छीन नहीं सकता। हम वही कर रहे हैं जो हमारे लिए सबसे अच्छा है।”
वे अपनी घोड़ियों के साथ एक चट्टान पर पहुँच गए थे, और उन्होंने सामने के उष्णकटिबंधीय भूभाग, टूटे-फूटे द्वीपों और उन द्वीपों के आसपास फैली झील को देखा।
उन्होंने कहा, "हम करीब हैं। इसमें समय लगा, लेकिन हम करीब हैं।"
“आप अपना परिचय कैसे देने की योजना बना रहे हैं?” उन्होंने पूछा।
“शुरुआत में उनका रवैया शत्रुतापूर्ण हो सकता है। मेरी माँ ने बताया कि वे बाहरी लोगों के प्रति, यहाँ तक कि नागाओं के प्रति भी, काफी उदासीन रहते हैं, क्योंकि वे एक बंद समुदाय हैं। संभवतः। वे किसी भी तरह से व्यवहार कर सकते हैं, लेकिन हमें शांत रहना होगा और जनजाति के मुखिया से मिलकर उन्हें अपनी जानकारी देनी होगी।”
मैंने अक्सर नागाओं के इतिहास के बारे में सोचा है।
हम शेषनाग की संतान हैं।
“और हम विष्णु की संतान हैं। तो फिर हम अलग क्यों हैं?”
वह थोड़ी देर रुकी। “क्योंकि जिस बात को आप नहीं समझते, उसे आप अपने से दूर रखते हैं। हमारी संस्कृति अलग है, हमारा इतिहास और मिथक अलग हैं। हम उस तरह का जीवन नहीं जीते जैसे आप सब जीते हैं। नाग, राक्षस, पिशाच... ये नाम हमें दिए गए हैं, या हमने खुद बनाए हैं, क्योंकि हम इंसानों से... आपसे अलग पहचान बनाना चाहते थे। मानव जाति ने इतना अन्याय किया कि हम उससे तंग आ गए।” तृप्ति बोलती रही, और वह इतना बोल गई कि वह काफी हैरान रह गया।
"आपको क्या लगता है कि उन्होंने अब तक हमला क्यों नहीं किया?"

उन्होंने कहा, “क्योंकि उनके पास कोई कारण नहीं था। नागा लोग शांतिप्रिय हैं, लेकिन महारोगा लोग... अगर उन्हें इसके विपरीत समझाया जाए तो वे आदेश मान लेंगे। वे गुस्से में आकर भी कार्रवाई कर सकते हैं।” “सामने वाली झील जहरीली है ना?” उसने पूछा।
"ऐसा हो सकता है, हमें सावधान रहना होगा।"
वृषकेतु और तृप्ति पहाड़ियों की ओर आगे बढ़े, और उन्हें आभास हुआ कि कोई उनका पीछा कर रहा है। उन्हें थोड़ी देर आराम करने के लिए रुकना पड़ा, लेकिन उन्होंने सुझाव दिया कि वे पहाड़ियों के अंदर जाकर गुफाओं में शरण लें। जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते गए और हवा ठंडी होती गई, बारिश और बिजली कड़कने लगी। वे एक टपकती हुई गुफा में बैठ गए और आग जलाने लगे। गुफा लंबी थी और उसे इस तरह खोदा गया था कि वह दूसरी तरफ जाती थी। लेकिन वे वहीं रुके रहे। तभी अचानक कहीं से एक तीर प्रकट हुआ, वह आग की लपटों से घिरा हुआ था और उनके सामने जमीन पर आकर गिरा।
अचानक हुई हलचल से दोनों चौंक गए और वृषकेतु उठकर काले पत्थर से बने अलंकृत बाण को देखने लगे। उस पर एक पत्र लगा हुआ था। वृषकेतु ने उसे निकाला और गीली, ठंडी सतह को छूते ही आग भी बुझने लगी। जब उन्होंने पत्र में लिखी बातें पढ़ीं, तो उनके रोंगटे खड़े हो गए।
वृषकेतु गुफा के किनारे पर आकर चट्टान से नीचे उस जंगल की ओर देखने लगा जिसे वे पीछे छोड़ आए थे। तृप्ति ने पूछा, “क्या हो रहा है? उस पत्र में क्या है? इसे किसने भेजा है?”
काफी नीचे, अपने पीछे एक छोटी सी सेना लिए, अर्जुन अपने घोड़े पर सवार था। उसने उन्हें हाथ हिलाकर अभिवादन किया, उनके चेहरे पर खुशी की मुस्कान थी क्योंकि उसे लगा कि उसने उन्हें ढूंढ लिया है। अब वे घिर चुके थे। उसके पीछे एक महिला थी—जो उसके कान पर चुंबन कर रही थी, उसकी छाती को छू रही थी और उसके चेहरे पर एक धूर्त मुस्कान थी।
लेकिन उसके शरीर पर लगी सारी गंदगी के बावजूद भी उसे पहचाना जा सकता था, उसकी सुंदरता इतनी दूर से भी झलक रही थी।
वह वही भिखारी थी जिसकी उन्होंने कुछ दिन पहले मदद की थी।
लेकिन उस समय वह यह भी जानता था कि वह कौन है।
दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला।
Draupadi.

55

कर्ण ने जीवन में बहुत कुछ किया था, लेकिन एक चीज जो उसने कभी नहीं की थी, वह थी हार मानना।
और जब, बेशक, जिंदगी आपका साथ छोड़ देती है, तो परिवार होता है जो आपकी देखभाल करता है।
और यही हुआ था, जब शनाया ने उसे खुद से बचाया था। वह खुद पर एक भयानक हिंसक कृत्य करने ही वाला था, लेकिन उसने उसे रोक दिया।
उसने उसे बताया कि एक डॉक्टर उनसे काफी दूर है, लेकिन वह कर्ण की समस्या का समाधान कर सकता है। और उन्हें इसके लिए यात्रा करनी चाहिए।
कर्ण अनिच्छा से मान गया, उसका गुस्सा शांत हुआ और उसने फिर से अपनी पत्नी की बात ध्यान से सुनी। वे काफी देर तक यात्रा करते रहे, फिर एक गुरुकुल पहुँचे, जहाँ उन्होंने ठहरने और आराम करने का अनुरोध किया। किसान ने उन्हें बताया कि उन्हें कहाँ जाना है, और वह जगह हरियाली के बीचोंबीच थी, जहाँ प्रकृति का आरंभ होता था और मानव विकास रुक जाता था। लेकिन कर्ण को पता नहीं था कि वह जगह कहाँ है, फिर भी उसने ध्यान से सुना, और केवल सुना।
उन्होंने गुरुकुल की ओर देखा, जहाँ छोटे बच्चे ध्यान लगा रहे थे, प्रशिक्षण ले रहे थे, मार्शल आर्ट और युद्ध की अन्य विधाओं का अध्ययन कर रहे थे। उन्हें समूहों में प्रशिक्षण दिया जा रहा था, कुछ तलवारबाजी का अभ्यास कर रहे थे।
शनाया, सत्यसेना और कर्ण ने गुरुकुल में रहने के दौरान एक-दूसरे को भिक्षा और आश्रय के बदले में काम सौंपा था। गुरु उन पर मेहरबान थे, और कर्ण ने धनुर्विद्या के पाठों पर सबसे अधिक ध्यान दिया।
उसने बच्चों को एक पेड़ के ऊपर अभ्यास करते हुए देखा, वे एक सेब को मारने की कोशिश कर रहे थे।

हालांकि, कर्ण को कपड़े धोने का काम दिया गया था, वास्तव में वह बच्चों को पढ़ाता था।
“अपने कंधे सीधे करो, गहरी सांस लो, सीना चौड़ा करो और अपने लक्ष्य की दिशा में देखो। बस इतना ही काफी है,” उन्होंने मुस्कुराते हुए बच्चों से कहा। “तुम्हारे सामने और कुछ नहीं होना चाहिए, बस यही कि तुम्हारा लक्ष्य ही तुम्हारा उद्देश्य है, और यही सबसे महत्वपूर्ण है। तुम जानते हो कि दुनिया का सबसे महान तीरंदाज कैसे बना जाता है? यह अपने दुश्मन को जानकर और उसे सबसे ज्यादा चोट पहुंचाने वाली जगह को पहचानकर ही संभव है।”
जब वह पढ़ा रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि सत्यसेना दूर से उन्हें देख रहे थे। कर्ण उनकी ओर बढ़े, यह जानते हुए कि सत्यसेना को उनके आत्महत्या के प्रयास के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।
“तुम क्या सोच रहे हो?” उसने पूछा।
“आपने हमें इस तरह आखिरी बार कब पढ़ाया था? मुझे और वृषकेतु को?” वह एक मोटे पेड़ के तने से टिके हुए थे।
"जब तुम छोटे थे तब मैंने बहुत कुछ किया था।"
“और तुम्हें याद क्यों नहीं है?” उसने पूछा।
“तुम्हें तो हमेशा शिकायत ही करनी होती है, है ना?” उसकी आँखों में डर झलक रहा था, फिर उसे शनाया की कही बात याद आई और उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। “ठीक है, जानते हो क्या? मैं तुम्हें सिखा दूँगी। चलो अब।” सत्यसेना असमंजस में था। "मेरे पास हाथ नहीं है। आपकी वजह से।"
“अरे, धनुष चलाने के लिए हाथ की जरूरत नहीं होती।”
मैंने आज तक जितनी भी बातें सुनी हैं, उनमें से यह सबसे बेवकूफी भरी बात है।
"अपने पैरों का इस्तेमाल करके एक तीर पकड़ें और अपने दांतों से डोरी को पकड़ें, जबकि आपका बायां हाथ धनुष के दूसरे हिस्से को पकड़े हुए हो।"
और उसने ठीक वही किया जो उसे कहा गया था।
“इसे बांधो और सांस लो। ध्यान से आगे देखो, सेब के पेड़ को देखो, तुम्हें क्या दिखाई देता है?”
मुझे पेड़ दिखाई दे रहा है।

“नहीं। तुम्हें सेब देखना चाहिए। एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है, है ना?” उन्होंने हंसते हुए सत्यसेना को निशाना लगाने को कहा, लेकिन उनका निशाना बुरी तरह चूक गया।
“कोई बात नहीं।” उन्होंने उसकी पीठ थपथपाई। “तुम जल्दी सीख जाओगे।” सत्यसेन मुस्कुराये. "आप खुशमिज़ाज लग रहे हैं।"
“मुझे यह जगह पसंद है। आप जानते हैं, मैं अपनी माँ की वजह से अंगा का राजा बना था। उन्होंने मुझसे वादा करवाया था, लेकिन यह मेरा सपना कभी नहीं था। पूरी ज़िंदगी, मैं हमेशा अपना खुद का गुरुकुल खोलना चाहता था,” उन्होंने कहा। “ऐसी जगह जहाँ मैं प्रशिक्षण दे सकूँ, जहाँ बच्चों को वास्तविक अवसर मिल सकें। और कभी भी राजघराने में नहीं। नहीं। यह हमेशा बाहरी लोगों के लिए होगा, मेरे जैसे लोगों के लिए।”
सत्यसेना चुप थे।
“तुम्हें नहीं पता कि पराया होना कैसा लगता है,” कर्ण ने कहा। “शायद इसीलिए, तुम और तुम्हारा भाई… जैसे-जैसे तुम बड़े होते गए, मैंने देखा कि तुम ठीक वैसे ही मर्द बन रहे थे जिनसे मुझे नफ़रत थी—पक्षपाती, बिगड़े हुए और विशेषाधिकार प्राप्त। इसलिए मैंने तुमसे वो विशेषाधिकार छीन लिया और बदले में तुमने क्या किया? ठीक वही जो एक बिगड़ा हुआ बच्चा करता है। रोना-धोना, बगावत करना। तुम्हारे भाई ने तो मुझे धोखा दिया, जबकि तुमने बस मुझे निराश करने की कोशिश की।” उन्होंने सत्यसेना की ओर देखा, और सत्यसेना कुछ कहने ही वाले थे कि उन्होंने कहा, “लेकिन इस चक्कर में मैं भूल गया कि मैं एक पिता भी हूँ, और मुझे ऐसा नहीं भूलना चाहिए था।” उन्होंने अपने बेटे की पीठ थपथपाई। “मुझे तुम्हारे साथ होना चाहिए था। शायद यहाँ खुले में होने से हम एक-दूसरे को बेहतर जान पाएंगे।”
सत्यसेना ने अपनी भौंहें उठाईं। “आप राजा क्यों बने हुए हैं? आप महल क्यों नहीं छोड़ देते?”
“शायद मैं करूँगा। शायद। लेकिन मैं जानता हूँ, यह राज्य भीम और उसके अधीन लोगों का नहीं है। अगर होता, तो यह एक स्वतंत्र राज्य होता, जो बाहरी लोगों का, बहिष्कृत लोगों का स्वागत करता। अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो शायद मैंने अपना काम ठीक से नहीं किया,” कर्ण ने सुयोधन द्वारा दिए गए अवसर को याद करते हुए कहा। वह अपने मित्र के बारे में सोच रहा था, कि वह क्या कर रहा

होगा। उसे यकीन था कि अंगा के राज्य पर कब्ज़ा करने पर वह बहुत क्रोधित होगा।
“वैसे, मां तुम्हें नागाओं के पास ले जा रही हैं। उन्हें खबर मिली है कि वे तुम्हारे हाथों का इलाज कर सकते हैं।” उन्होंने बताया।
कर्ण ने क्रोध के बजाय धनुष और बाण उठाया और निशाना चूकते हुए तीर चलाया। उसके हाथ कांप रहे थे। “बेटा, मैंने बहुत पहले ही सीख लिया था कि तुम्हें अपनी पत्नी की बात सुननी चाहिए। वो तुमसे ज़्यादा जानती हैं। मुझे भी उसके प्रति दयालु होना चाहिए था। मैं बहुत व्यस्त था। आखिर में, तुम्हारे पास परिवार के अलावा और कुछ नहीं बचता।” वह कुछ देर रुका, हालांकि उसके मन में यह सवाल उठा कि क्या नागों ने ही उसके पिता की हत्या की थी? लेकिन उस चट्टान को देखकर, अपनी आंखों के सामने जीवन को गुज़रते हुए देखकर और सारी घटनाओं को अपनी आंखों से देखकर, उसे एहसास हुआ कि उसे दयालु होना ही होगा।
कर्ण ने अपने बेटे का हाथ थामते हुए, शनाया की ओर बढ़ना शुरू किया, जो बाहर पीपल के पेड़ के नीचे बच्चों को खाना खिला रही थी। पिता और पुत्र को इस तरह देखकर शनाया के चेहरे पर तुरंत एक प्यारी सी मुस्कान आ गई।
“तुम दोनों को क्या हुआ है?” शनाया ने पूछा। “क्या सब ठीक है?”
सत्यसेना ने कहा, "सब कुछ बढ़िया है, हालांकि पिताजी कुछ ज्यादा ही अच्छे बन रहे हैं।"
“मुझे खोए हुए वर्षों की भरपाई करनी होगी, है ना?” वह हँस पड़ा।
और परिवार के तीनों सदस्य बच्चों को एक साथ खाना खिलाते हुए हंसने लगे। कर्ण जानता था कि राज्य, ताज, मित्रता आदि से पहले, उसके पास दयालुता और कभी हार न मानने वाला स्वभाव था। और केवल इसी कारण उसने जीने का निर्णय लिया।

56

कुछ ही देर में सूरज की तेज रोशनी हो गई और वृषकेतु और तृप्ति गुफाओं से निकलकर दूसरे छोर की ओर चले गए।
वे घुसपैठियों से बचने के लिए बेतहाशा गति से भाग रहे थे। उन्हें पता था कि यह एक बड़ी समस्या होगी, तभी तृप्ति ने वृषकेतु को डांटते हुए कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि दान मत करो।"
पिताजी ने हमेशा मुझसे ऐसा ही बनने को कहा है।
"खैर, यह एक ऐसा गुण है जिसे छोड़ देना चाहिए, खासकर नैतिक संकट के इन समयों के दौरान।"
वृषकेतु को थोड़ा आश्चर्य हुआ कि अर्जुन ने उसे इस स्थिति में फंसा दिया था। वे उसे रोकना चाहते थे। और संभवतः उसे मारना भी चाहते थे। क्योंकि उनके पास इंद्रप्रस्थ के विरुद्ध महत्वपूर्ण जानकारी थी। और दुर्भाग्य से, इंद्रप्रस्थ की सैन्य शक्ति चरम पर नहीं थी। वे चारों ओर के राज्यों पर विजय प्राप्त करके शक्ति बढ़ा रहे थे, लेकिन नाग या महारोग भी उन पर आसानी से हमला करके कब्जा कर सकते थे।
“वे चाहते हैं कि हम उनका पीछा करें,” वृषकेतु ने अपने घोड़े पर सवार होकर ऊपर घने बादलों को ढके अनगिनत बड़े पेड़ों के बीच से गुजरते हुए कहा, जहाँ से सूरज की रोशनी न के बराबर आ रही थी। गहरी खाइयाँ पीछे-पीछे आ रही थीं, लेकिन प्यास से बेहाल होने के बावजूद वे पानी नहीं पी सके, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं वह जहरीला न हो। “वे चाहते हैं कि हम चिंतित हों, उनके शिकार बनें।”
“वे शिकारी हैं,” तृप्ति ने कहा। “मुझे पता है। और मुझे वे पसंद नहीं हैं।”
वे फिसलते हुए खुले मैदान की ओर बढ़े और उस दिशा में देखने लगे जहाँ शायद भूले हुए सपनों की घाटी हो सकती थी। लेकिन उन्हें आसपास कोई झरना या दूर-दूर तक कोई बस्ती दिखाई नहीं दी।

“नक्शे में यहाँ से कुछ मील की दूरी दिखाई गई है, लेकिन हमें अब तक कुछ न कुछ पता चल जाना चाहिए था। आश्चर्यजनक।”
फिर उन्होंने देखा—आकाश में लाल रंग की लपटों के साथ बाणों की वर्षा हुई, जो उनके करीब आकर वृषकेतु के घोड़े को लगीं। घोड़ा हिनहिनाया और तुरंत उछलकर उसे नीचे गिरा दिया। तृप्ति ने एक हाथ से वृषकेतु को सहारा देने की कोशिश की, जबकि दूसरे हाथ से उसने उनके सिर के ऊपर ढाल पकड़ रखी थी ताकि बाण उन्हें न लगें।
“चलो उठो!” उसने कहा।
उसने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की, और एक तीर उनके बीच से निकल गया। वृषकेतु ने खुद को बचाने के लिए पीछे हटते हुए देखा कि हर तरफ से तीर आ रहे हैं। तभी एक आकृति एक विशाल रथ पर सवार होकर आई, जिसे मोटे-ताज़े, मांसल लकड़बग्घे खींच रहे थे।
और वह कोई और नहीं बल्कि द्रौपदी थी, अपनी चमकदार लाल साड़ी में, जिसके चेहरे पर क्रूर भाव थे।
"चलो, तुम दोनों। हमारे लिए इसे आसान मत बनाओ। चलो!"
“भागो!” वृषकेतु ने तृप्ति से कहा, और वह दूसरी दिशा में चली गई, जबकि वह दूसरी ओर चला गया।
वृषकेतु ने पहले कभी न देखी गई तेज़ी से दौड़ लगाई, उसकी पीठ पर थैला लटका हुआ था और उसके जूते कीचड़ और गंदगी में धंस रहे थे। लकड़बग्घे अविश्वसनीय गति से उसका पीछा कर रहे थे, जबकि वह उन्हें काबू में करने के लिए चाबुक मार रही थी।
वृषकेतु उग्र गति से दौड़ते रथ से आगे रहने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहा था, शाखाओं पर से कूदता हुआ, जब तक कि वह एक चट्टान के लगभग पास, एक बंद रास्ते पर नहीं पहुंच गया।
द्रौपदी मुस्कुरा रही थी, उसकी त्वचा कोयले जैसी काली थी, आँखें कमल के रंग की थीं, बाल नीले थे, भौंहें सुनहरी थीं और सीना चौड़ा था। उसने हाथ में कोड़ा लिए कहा, “तुम अपने पिता से बहुत मिलती-जुलती हो, बस तुम्हारी त्वचा की बीमारी को छोड़कर। मुझे कभी-कभी उनकी याद आती है। उनकी यादें अच्छी हैं, लेकिन मेरे उद्देश्य से मेरा ध्यान भटकाती हैं।”
“और तुम्हारा उद्देश्य क्या है?” वृषकेतु ने पूछा।

“जो भी मेरे परिवार को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा, मैं उसे नष्ट कर दूंगी और अपने पति अर्जुन के साथ खड़ी रहूंगी,” उसने कहा और हिरनी को कोड़े मारे, जिससे हिरनी ज़ोर से दहाड़ उठी। “मैं जो कुछ भी करती हूं और जो कुछ भी मैंने किया है, वह अपने परिवार को मुझ पर गर्व महसूस कराने के लिए है, और मैं अपनी हर शक्ति से उनकी रक्षा करूंगी।”
वृषकेतु ने अपनी भौंहें उठाईं। उसने म्यान से अपनी तलवार निकाली, जिसे देखकर द्रौपदी हंस पड़ी।
"अरे कृपया, उस छोटे से हथियार से खुद को परेशान न करें, उससे कोई फायदा नहीं होगा।"
वृषकेतु को लकड़बग्घे क्रूर निगाहों से देख रहे थे। वृषकेतु ने उन्हें छोड़ दिया और उनकी कमरबंद खोल दी, और वे तुरंत वृषकेतु की ओर बढ़े; मानो वह उनका भोजन हो। वृषकेतु ने एक लकड़बग्घे को चकमा देकर चट्टान से नीचे फेंक दिया। बाकी दो लकड़बग्घे उसके पैर चबाने लगे, तभी उसने उनकी गर्दन पर वार कर दिया। एक अन्य लकड़बग्घे ने उसे उसकी कमीज से पकड़ लिया और उसने तलवार घुमाकर उसे मार डाला। वृषकेतु बुरी तरह घायल हो गया था, लेकिन उसने लकड़बग्घों को हरा दिया था।
द्रौपदी अपने रथ से उतरी और उसने अपना धनुष उसकी ओर तान दिया।
“मैं और मेरे पति अक्सर खुद ही खरगोश का शिकार करने की चुनौती स्वीकार करते हैं। हम जंगल में जाते हैं, प्यार करते हैं और शिकार का बेहतरीन अनुभव प्राप्त करते हैं। पता नहीं क्यों, इससे हमें रोमांच भी मिलता है। दुनिया गंदी जगह है और हमें इसमें गंदा रहना अच्छा लगता है। आखिर जीने का यही तरीका है, है ना?”
"धिक्कार है तुम पर, स्त्री," वृषकेतु ने घृणा से भरे स्वर में कहा।
“ओह, और मुझे लगा था कि तुम हमारे लिए फिर से काम कर पाओगे। हम उस लड़की को मारने आए थे, लेकिन तुमने जो थोड़ा-बहुत किया था, उससे तुमने उम्मीद जगाई थी। युधिष्ठिर अपने इन छोटे-छोटे दिमागी तौर पर बहकाए सैनिकों को अपने चेले कहते हैं। मैं तुम सबको सेवक कहना पसंद करता हूँ, लेकिन ठीक है। मैं बस इतना कहूँगा कि मैंने तुम्हें इस सड़ती हुई हालत में पाया…”
उसी क्षण एक बाण उसकी गर्दन पर लगा और वह तुरंत ज़मीन पर गिर पड़ी। वृषकेतु यह सब देखकर स्तब्ध रह गया और सोचने लगा कि क्या यह तृप्ति है।
लेकिन तभी उसकी नज़र कुछ पुरुषों पर पड़ी जिनके गले में हड्डियाँ लटकी

थीं, शरीर पर अजगरों के टैटू बने थे, जो आम लोगों से भी बड़े थे, उनके बाल आपस में गुंथे हुए थे, शरीर पर अंगूठियाँ और तरह-तरह के आभूषण थे, वे अधनंगे थे, तृप्ति को सूंघ रहे थे और वृषकेतु को घूर रहे थे।
उसने आत्मसमर्पण करने के लिए तलवार फेंक दी।
“मैं…दोस्त…” उसने कहा।
इसी बीच घनी दाढ़ी वाला एक आदमी आया।
“Me friend…he said…Naga friend,” Vrishaketu said.
हाथ में बांस का भाला लिए दाढ़ी वाले आदमी ने कहा, “आपको हमसे इस तरह बात करने की ज़रूरत नहीं है। हम भी सभ्य लोग हैं। मेरा नाम तक्षक है और मैं यह जानना चाहता हूँ…” उसने हाथ में धनुष पकड़ा हुआ था, “तुम यहाँ, हमारे खूनी इलाके में क्या कर रहे हो?”

57

वृकोदरा अपने बैल पर सवार होकर द्वार से बाहर निकला और अपनी शक्ति से राक्षसों की पूरी सेना को रौंदते हुए तितर-बितर कर दिया।
वह हमेशा की तरह अकेला था, लेकिन उसने यह सुनिश्चित कर लिया था कि ऊपर मौजूद सभी तीरंदाज उन्हीं पर निशाना साध रहे थे। तीरों में जहर लगा हुआ था, और वे अंततः पूरे इलाके को तबाह कर देंगे और उनके राजा को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करने वालों को जहर से भर देंगे।
वृकोदरा के साथ उनकी पत्नी हिदाम्बी और पुक्कसती भी थीं। वे किसी भी लड़ाई के लिए तैयार होकर आगे बढ़ रहे थे। दरअसल, वे किसी लड़ाई की तलाश में ही थे, क्योंकि कर्ण से राज्य का कार्यभार संभालने के बाद कई सप्ताह बीत चुके थे।
उसने राक्षसों की ओर देखा, और वे उसे पहले जैसे ही लगे, लेकिन वे हिदाम्बी के राक्षसों से कहीं अधिक उग्र और आक्रामक प्रतीत हुए, वे जंगल के जानवरों की तरह उस पर फुफकार रहे थे और दहाड़ रहे थे।
“किर्मिरा कौन है?” उसने अपनी पत्नी से पूछा।
उसने उसे ढूंढने की कोशिश की।
“ऐसा लगता है कि वह यहाँ नहीं है। यह उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है।”
वृकोदरा ने कहा, "अगर उनका नेता यहां नहीं है, तो मैं आपके लोगों का मनोरंजन नहीं करने वाला।"
“तुम मुझसे विवाहित हो। वे भी तुम्हारे ही लोग हैं।”
वृकोदरा ने धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए कहा, “अपनी पहचान बताओ!” उसने राक्षसों पर चिल्लाते हुए कहा, जो उस पर पलटवार कर भौंक रहे थे। “इस यात्रा का उद्देश्य बताओ। यदि यह मैत्रीपूर्ण है, तो आपका हमारे साथ भोज में स्वागत है, लेकिन यदि यह शत्रुतापूर्ण है, तो हम आपके साथ बहुत निर्दयता बरतेंगे।”

कोई जवाब नहीं आया, किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। एक राक्षस से शादी करने के कारण उसने राक्षसों के बारे में कुछ बातें जान ली थीं। उसने यह भी जान लिया था कि वे झुंड में रहकर काम करते हैं। मनुष्यों की तरह उनके हज़ारों अलग-अलग विचार नहीं होते, बल्कि वे अपने नेता के आदेश का पालन करते हैं, चाहे इसके लिए उन्हें मरना ही क्यों न पड़े। वे क्रूर और नरभक्षी थे, लेकिन उनकी एक ऋण प्रणाली थी। राक्षस अक्सर पैदल सैनिक, निजी सेवक और इसी तरह के पदों पर होते थे। मुख्य रूप से उनकी ताकत और क्रूरता के कारण। संक्षेप में, उन्हें हराना बहुत मुश्किल था। लेकिन वे मित्रवत भी थे, खासकर मनुष्यों के साथ वर्षों तक युद्ध करने के बाद, उन्होंने एक समझौता किया था - वे समय-समय पर उनकी आज्ञा का पालन करेंगे, लेकिन बदले में कुछ लेंगे। वह कुछ भी मूल्यवान हो सकता था। यह ऋणी पर निर्भर करता था, जो ऋणी से पूछता था। और यदि आप आज्ञा का पालन नहीं करते, तो वे आप पर सौ धूमकेतुओं की तरह अपना प्रकोप बरसाते थे। यदि आप उनकी बात मानते, तो वे आपकी आज्ञा का पालन करते और आप पर और अधिक ऋण डाल देते। अब, ज्यादातर कर्ज खून से चुकाया जाता था, और बदले में आपको उन्हें शिकार किया हुआ भोजन और समय-समय पर शिकार किए हुए लोग भी देने पड़ते थे। ऐसा इसलिए किया जाता था क्योंकि एक समय था जब राक्षस कई समूहों में हमला करते थे, लेकिन कर्ज प्रणाली लागू होने के बाद से उन्होंने ऐसा करना बंद कर दिया था। राक्षस मनुष्यों को मार नहीं सकते थे और राक्षसों को ऐसा करने से मना किया गया था। एक नियम बनाया गया था। राक्षस अपराधियों का शिकार करके या जिन मनुष्यों की उन्होंने मदद की थी उनसे भोजन प्राप्त करके खुश रहते थे, और इस तरह एक बढ़िया आपूर्ति-मांग प्रणाली स्थापित हो गई थी।
जब वृकोदरा ने हिदम्बा का वध किया, तो राक्षसों की नज़रों में उसका नाम बहुत ऊँचा हो गया, क्योंकि आधुनिक युग में किसी मनुष्य द्वारा राक्षस का वध करना अभूतपूर्व था। लेकिन वृकोदरा ने इतनी अपार शक्ति का प्रदर्शन किया कि राक्षस भी उससे विमुख हो गए।
वृकोदरा ने एक और पल इंतजार करने का फैसला किया, तभी उसने भीड़ के बीच से एक घोड़ा निकलते देखा, लोग उसके लिए रास्ता बना रहे थे, और उस पर एक आदमी सवार था, जिसके बाल कांटों जैसे गहरे लाल रंग के थे और आग के गोले की तरह धधक रहे थे, उसने अपने होंठों, नाक और कानों में अंगूठियां पहन रखी थीं और उसके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान थी।

“अरे वाह, वाह, वाह, मैं हूँ अपने भाई का हत्यारा,” उसने कहा। “मैं अपना परिचय देना चाहूँगा। मेरा नाम किर्मिरा है।” उसने हिदाम्बी की ओर देखा।
“नमस्ते बहन।”
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” उसने पूछा।
“खैर, कुछ नहीं, बस आपके पति का कर्ज़ चुकाने आया था। उन्होंने हमारे सैनिकों का इस्तेमाल अपने मकसद के लिए किया था, है ना?” उन्होंने पूछा। “तो मैंने सोचा कि ऐसा करना ठीक रहेगा। जब मुझे पता चला कि आपने आखिरकार मेरी बात मान ली, तो मैं बहुत खुश हुआ। आमतौर पर हमें इतने शाही लोग नहीं मिलते।”
"ये नियम मेरे वंश द्वारा बनाए गए हैं, और मुझे इन्हें तोड़ने में कोई संकोच नहीं है।"
“लेकिन आप ऐसा नहीं करेंगे, क्योंकि आपके लोग कहने लगेंगे कि आप बाहर के बर्बर लोगों से भी बदतर हैं, कि आप अपना वादा नहीं निभाते। इसलिए अब आपको ऐसा करना ही होगा।”
वृकोदरा ने अनिच्छा से सिर हिलाया। "आप क्या चाहते हैं? मुझे आपका कौन सा ऋणी होना है?"
“मेरी बहन को तो इस बात से कोई आपत्ति नहीं थी कि तुमने मेरे भाई को मार डाला, लेकिन मुझे नहीं थी। उनके जैसा इंसान खोना मेरे लिए बहुत दुखद था। वो एक नेक इंसान थे, उनकी आत्मा को शांति मिले, अब वो स्वर्ग में रावण के सेवक हैं।” उन्होंने विनम्रता से सिर झुकाया। “इस अन्याय के बदले में मुझे बस एक ही चीज़ चाहिए।”
वृकोदरा ने जबड़े भींचते हुए पूछा, उसे भली-भांति पता था कि क्या होने वाला है। "तुम्हारा जीवन।"

58

तब तक वृषकेतु मरना चाहता था।
उसे सरकंडे की डोरियों से बांधकर इधर-उधर धकेला जा रहा था, ठीक वैसे ही जैसे बहुत समय पहले उसके राज्य में होता था। उसे लगा कि इतिहास खुद को दोहरा रहा है और उसका जीवन एक कठिन परीक्षा बना रहेगा। महारोगों द्वारा धकेले जाने पर भी वृषकेतु अविचल बना रहा। उसने महारोगों और सामान्य नागों के बीच अंतर देखा। वे इतने सजे-धजे या भव्य नहीं थे, और उनके शरीर पर अजगर के टैटू भी नहीं थे। जबकि महारोगों के शरीर पर ये टैटू थे। महारोग आकार में बड़े और भारी-भरकम थे, मानो जन्म से ही काम कर रहे हों। सामान्य नागों की त्वचा का रंग भी हल्का था, जबकि महारोगों का रंग गहरा था, कुछ-कुछ द्रौपदी के रंग जैसा।
उसे एक विशाल घेरे के बीचोंबीच फेंक दिया गया, जहाँ दर्जनों नाग और महारोग उसे बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे, मानो कोई मनुष्य उनके क्षेत्र में प्रवेश कर गया हो। यह स्थान उतना सुंदर नहीं था जितना उसने पहले नागों का क्षेत्र देखा था। वास्तव में, यहाँ किसी कारणवश मृत्यु की दुर्गंध फैली हुई थी, और सभी लोग उदास थे। उसे यहाँ शायद ही कोई बच्चे दिखाई दिए, मानो इस भूमि में केवल वयस्क ही हों।
वहाँ शोर-शराबा और मंत्रोच्चार चल रहा था। ढोल बज रहे थे और तुरही की आवाज़ें गूंज रही थीं। उसने देखा कि उन सभी के घर पेड़ों पर बने थे, मानो बीच से बहने वाली गंदी खाई से बचने के लिए। उनके पास घोड़े भी थे, लेकिन वे चोरी के लग रहे थे, फिर भी अच्छी तरह से पोषित थे, सामान्य से अधिक मोटे थे।
उसे तृप्ति कहीं नज़र नहीं आ रही थी, और उसे लगा कि कहीं वह खो तो नहीं गई।
इस विचार ने उसे डरा दिया।
रात अभी जवान सी लग रही थी, और वे सब अपनी छाती पीट रहे थे, चिल्ला रहे थे, मानो कोई रस्म निभा रहे हों, जबकि वह थोड़ा टेढ़ा होकर बीच में खड़ा रहा।
उसने देखा कि किसी के बैठने के लिए एक तकिया रखा हुआ था।

उसने दाढ़ी वाले उस व्यक्ति को देखा जिसने उनके सरदार का अभिवादन किया था।
हालांकि सरदार गंजा था, जबकि बाकी सबके सिर पर बाल थे, उसकी आँखों में गहरा काजल लगा था, उसकी गर्दन में कई हड्डियाँ थीं, जो बाकी सब में सबसे ज़्यादा थीं, और वह अपने साथ एक भाला रखता था। लेकिन वृषकेतु को सबसे ज़्यादा हैरानी उसकी नाक की नथ पर हुई। वह एक छड़ी की तरह उसकी पूरी नाक पर धँसी हुई थी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह आदमी साँस कैसे ले रहा होगा। "मुख्य सहस्र यहाँ है!" तक्षक ने घोषणा की.
वे घुटने टेककर उनकी पूजा करने लगे। यह देखकर वृषकेतु ने भी वैसा ही किया, यह सोचते हुए कि क्या यह करना उचित है।
“सहस्र…” वृषकेतु ने धीमी आवाज़ में कहा। “मैंने उसके बारे में कभी नहीं सुना।”
“तुम हमारी अनुमति के बिना हमारी ज़मीन में घुस आए हो। सालों से कोई इंसान यहाँ कदम नहीं रख पाया है,” उसने कहा। “ऐसा इसलिए नहीं कि हमने बाड़ या बैरिकेड लगा रखे हैं, बल्कि इसलिए कि वे ऐसा करने से डरते हैं। और तुम ऐसे अंदर आ गए जैसे कोई बड़ी बात ही नहीं है।”
मैं तुम्हारे जैसा ही एक व्यक्ति लेकर आया हूँ।
सहस्रा ने प्रसन्नता से घूरते हुए कहा, "मुझे पता है। हमने भी उसे ढूंढ लिया था। वह घायल थी, लेकिन वह एक आक्रमणकारी से बच निकली थी, जिससे हमने लड़ाई लड़ी थी।"
उसके चेहरे पर राहत के भाव उभर आए।
“वह आराम कर रही है,” उन्होंने आगे कहा। “हालांकि हम उस पर पूरी तरह से भरोसा भी नहीं करते।”
"मुझे शांति मिली।"
सहस्र ने सिर हिलाया। "कोई भी मनुष्य कभी शांति से नहीं आता।"
“मैंने तुम्हारे जैसे लोगों को अंगा में प्रवेश करने में मदद की। मैं कर्ण का पुत्र हूँ,” उसने कहा। “मैं बभ्रु के साथ काम करता हूँ।”
सहस्रा ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। "वह कमीना तस्कर?" उसने अपनी भौंहें उठाईं। "दिलचस्प बात है कि तुम उसे जानते हो।"
“उन्होंने सुझाव दिया कि मुझे आकर वह बात कहनी चाहिए जो कही जानी चाहिए,” वृषकेतु ने कहा।

“तो अब वह कहाँ है?”
उन्होंने कहा, "उसने हमें धोखा दिया, इसलिए हम खुद आए।"
सहस्र कुछ देर रुका, तभी तक्षक ने कहा: “हे मुखिया, यह झूठा लगता है! इसे मार डालो! इसे भून दो! और इसे झील में फेंक दो।”
सहस्रा ने कहा, "शांत हो जाओ, हमारे मेहमान से छेड़छाड़ मत करो, क्योंकि हम मेजबान हैं।"
वह खड़े होकर वृषकेतु के पास आया और देखने में वह बेहद प्रभावशाली लग रहा था। उसका शरीर एकदम सुगठित था और उससे लैवेंडर की खुशबू आ रही थी। मुझे सब कुछ बताओ, और मैं फैसला करूंगा कि यह सच है या नहीं।
वृषकेतु चाहता था कि तृप्ति यह कार्य करे, लेकिन फिर उसने आगे बढ़ते हुए पांडवों और नागों के बीच जो कुछ हुआ था, उसका ब्योरा दिया। उसने बताया कि कैसे उन्होंने सब कुछ छिपाया था। कैसे अर्जुन इसके पीछे है, और कैसे उन्हें इसके लिए दंडित किया जाना चाहिए। यह सब सुनकर सहस्र ने एक पल के लिए वृषकेतु की ओर देखा। सभी नाग और महारोग वृषकेतु को घूरते रहे और चुपचाप, भयभीत होकर, उसकी स्वीकारोक्ति सुनते रहे, यह जानकर कि मनुष्य किस हद तक संभाव्य हो सकते हैं।
“तो आप हमें यह बताने के लिए यहाँ आए हैं?” सहस्रा ने कहा। “हमारे दुश्मनों को जानने में हमारी मदद करने के लिए आपने इतनी मेहनत की है।” वृषकेतु ने सिर हिलाया। "मैं जनता के साथ न्याय करना चाहता हूँ।" “दिलचस्प,” सहस्रा ने कहा। “हालांकि मुझे यह पहले से ही पता था। आपने अपना समय बर्बाद किया।”
उसने उसे घुटने टेकने को मजबूर किया।
“मुझे पता था कि इस हत्या के पीछे पांडवों का हाथ है, लेकिन हमने कुछ नहीं किया, क्योंकि हमें शक्तिशाली लोगों का विश्वास जीतना था। हमें उनका समर्थन करना था, और एक बार जब हम उनके साथ हो गए, तो हम उनके क्षेत्र में घुसकर उनकी चालें नाकाम कर देते हैं।” वह हँस पड़ा। “यही तो एक साँप करता है, और यही हम भी करते हैं।”
क्या आपको गुस्सा नहीं आ रहा?
“हम लंबे समय से नाराज हैं। लेकिन हम रणनीति के साथ आगे बढ़ते हैं, आक्रामकता के साथ नहीं।

दूसरी ओर, वृषकेतु ने देखा कि तक्षक सहस्र के आचरण से प्रसन्न नहीं था। वह शांत था; अपने लोगों के नरसंहार के बारे में सब कुछ सुनने के बाद भी उसका व्यवहार आश्चर्यजनक रूप से गंभीर था।
“पर तुम इस क्षेत्र में घुस आए हो और हमारी ज़मीनों पर अतिक्रमण किया है। तुम आक्रमणकारियों को लाए हो, और इसके लिए तुम्हें कीमत चुकानी पड़ेगी,” उसने अपनी लंबी नाखूनों को अपनी गर्दन के पास लाते हुए कहा, जहाँ उसकी नसें उभरी हुई थीं। “मैं अपने नाखूनों को हर दिन तेज़ करता हूँ ताकि मैं उनका इस्तेमाल अपने दुश्मनों के खिलाफ कर सकूँ, उनकी रक्त वाहिकाओं को चीर सकूँ और उन्हें खून बहा सकूँ, और मैं यह सम्मान तुम्हारे लिए भी दूंगा।”
"नहीं - नहीं…"
उसे महसूस हुआ कि नुकीले नाखून उसके अंदर चुभ रहे हैं।
"हम अच्छे लोग हैं, हम आपके साथ हैं।"
“मेरे दोस्त, कोई पक्ष अच्छा नहीं है। सिर्फ राजनीति है, और कुशल पक्ष ही जीतता है,” सहस्रा ने कहा, और वह अपने नाखूनों को और भी गड़ाने ही वाला था कि उसने सुना…
तृप्ति हांफती, हांफती और पसीने से तरबतर होकर वहां पहुंची। “नहीं! उसे चोट मत पहुंचाओ, कृपया उसे जाने दो।”
“और ऐसा क्यों, मेरे बच्चे? हम तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाते क्योंकि तुम हममें से एक हो।” सहस्र ने अपनी भौंहें उठाईं। “इस इंसान से तुम्हारा क्या भला है?”
“वह…” तृप्ति ने वृषकेतु की ओर देखा। “वह हमारे पक्ष में है।”
“नहीं, वो नहीं है। जहाँ तक मुझे पता है, वो अपने दादा की मौत का बदला लेने के लिए अपने पिता द्वारा भेजा गया हत्यारा हो सकता है, है ना?” सहस्र ने कहा और वृषकेतु को एहसास हुआ कि वो उस व्यक्ति से बात कर रहा है जिसे इस बारे में पता था। “हाँ।” उसने वृषकेतु की आँखों में देखा।
“वह नहीं है!” तृप्ति ने उसकी ओर से उत्तर दिया। “वह…वह…तुम उसे मार नहीं सकते।”
“क्यों?” सहस्रा ने कहा।
क्योंकि वह मेरे अजन्मे बच्चे का पिता है।

सहस्रा रुक गया, और बाकी लोग भी रुक गए। “दिलचस्प। एक तरह का संकर। एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रेम कहानी। कितनी दुखद त्रासदी है।” और उसने उसे नीचे पटक दिया।
वृषकेतु स्वयं आश्चर्यचकित था, सोच रहा था कि उसे तृप्ति को गर्भवती करने का अवसर कब मिला, लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि यह उसकी जान बचाने की एक चाल थी। और सहस्र ने इसके बाद कुछ नहीं किया।
“दुर्भाग्यवश, बेटा, तुम्हें बच्चे के जन्म तक जीने की अनुमति है, और तुम बच्चे का नाम रखोगे। उसके बाद, मैं तुम्हारा भविष्य तय करूँगा, लेकिन तब तक तुम एक कैदी की तरह रहोगे, जब तक हम यहाँ तुम्हारी जगह तय नहीं कर लेते।” क्या तुम पांडवों पर हमला नहीं करने वाले हो?
“बेवकूफ मत बनो, लड़की,” उसने तृप्ति से कहा। “क्या तुमने उनकी सेना देखी है? भले ही हम ज़हरीली झील से विकृत हो गए हैं, हमारी संख्या मुश्किल से कुछ सौ है, जबकि वे हज़ारों की संख्या में आते हैं। हमें समझदारी से काम लेना होगा। मूर्खों की तरह नहीं।”
उन्होंने वृषकेतु की ओर देखा और मुस्कुराते हुए बोले।
"तुम्हे कुछ पता है?"
जाने से पहले उसने पूछा।
“क्या?” वृषकेतु सहस्र की घातक निगाहों के नीचे कांप उठा।
"तुम्हारे दादा की हत्या के निर्देश मैंने ही दिए थे।"

59

कर्ण को विश्वास था कि वे उस स्थान पर पहुँच गए हैं जहाँ उन्हें पहुँचना था।
गुरुकुल के गुरु ने स्वप्नों की घाटी का ज़िक्र तक किया था और कहा था कि यह एक खतरनाक जगह है, ज़हर और छल से भरी हुई। लेकिन कर्ण ने फिर भी उसमें गहराई तक जाने का फैसला किया। दुर्भाग्य से, उन्होंने पहाड़ों वाला रास्ता नहीं, बल्कि जंगल वाला रास्ता चुना। वे सत्यसेना और शनाया के साथ अपनी घोड़ी पर सवार हुए। शनाया रास्ते में कई बार थक गई थी और उन्हें बीच-बीच में आराम करना पड़ा। एक बार जब कर्ण उसकी देखभाल कर रहे थे, तो उसने पूछा, “क्या आपको गुस्सा नहीं आ रहा कि मैं आपको नागों के पास वापस ले जा रही हूँ? उन्हीं लोगों के पास जिन्होंने आपके पिता को मारा था?”
“हाँ, मुझे ऐसा होना चाहिए, लेकिन अगर यही रास्ता है, तो यही सही। हो सकता है उन्हें चिकित्सा का ऐसा ज्ञान हो जो हमें भी न हो, और अगर वे मेरी मदद कर सकते हैं, तो ठीक है। और इसकी क्या संभावना है कि जो लोग मेरी मदद करने वाले हैं, वही मेरे पिता के हत्यारे हों? हर नागा अलग होता है, और हमें यह समझना होगा।” वह रुका। “लेकिन मैं आगे बढ़ चुका हूँ। मुझे नहीं पता…जब मैं उस चट्टान के किनारे पर था, तब मुझे कई बातें समझ में आईं और मुझे पता चल गया कि मैं गलत रास्ते पर जा रहा हूँ।”
आप शांत प्रतीत होते हैं।
"शायद। मैंने सपना देखा था।"
“हाँ? किस बारे में?”
“मुझे एक बेटी होने वाली है।” वह मुस्कुराया, उसके गालों को छूते हुए, उसे अपनी हथेलियों के पास रखते हुए। “और हाँ, मेरा ज़्यादातर गुस्सा तुम्हारे प्रति उस व्यक्ति ने भड़काया था जिसने भगवान सूर्य के सेवक का वेश धारण किया था। जितना मैं इसके बारे में सोचता हूँ, उतना ही मुझे एहसास होता है कि इन हिंसक कृत्यों को करने पर भगवान सूर्य मुझे अपना पुत्र बना

लेंगे, यह मानना मेरी मूर्खता थी। उन्होंने हमेशा मुझे एक अच्छा इंसान बनने का मार्गदर्शन दिया है, और मुझे इसी पर ध्यान देना चाहिए, न कि किसी और चीज़ पर।”
वे आगे बढ़ते रहे और अपनी मंज़िल की ओर यात्रा करते रहे, तभी अचानक उन्हें एहसास हुआ कि वे एक चौराहे पर आ गए हैं। एक रास्ते पर एक टूटी हुई नाव पड़ी थी, लेकिन वह उन्हें आगे ले जा सकती थी। जबकि दूसरा रास्ता उन्हें पहाड़ियों से होकर ले जाता।
“हमें अलग हो जाना चाहिए,” कर्ण ने सुझाव दिया। “वह नौकागृह दिख रहा है?” उसने किनारे पर बनी एक छोटी सी कुटिया की ओर इशारा किया। “मुझे लगता है कि वह इंसानों का घर है, और जहाँ तक मुझे पता है, नाग लोग पेड़ों पर रहते हैं। उनसे मिलो, स्थिति को समझो, मैं इलाके का जायजा लेता हूँ, और फिर नौकागृह पर तुमसे मिलूँगा, और फिर हम आगे बात कर सकते हैं। नौकागृह के मालिकों को यह बता देना कि तुम सिर्फ प्रकृति को समझने और उसकी सराहना करने आए यात्री हो। अपने पास जो भी सोना है, उसे उतारकर कहीं छिपा देना। हम बिना तैयारी के नागों के इलाके में नहीं जा सकते। वे बहुत सावधान होते हैं।”
सत्यसेन और शनाया दोनों ने एक स्वर में सिर हिलाया।
“बेटे, अपनी माँ का ख्याल रखना,” उन्होंने सत्यसेना से कहा, जिसने उन्हें गले लगाया, और वे नाव पर सवार होकर चले गए।
कर्ण अपने तरकश, धनुष और बाण लिए हुए था, लेकिन वह तैयार नहीं था और थोड़ा डरा हुआ भी था। वह ऐसा कोई युद्ध नहीं लड़ना चाहता था जिसमें वह जीत न सके। शारीरिक शक्ति के लिहाज से वह बेहद कमजोर था। उसके हाथ कांप रहे थे और उसका मन भी काफी विचलित था। उसने अपने परिवार के साथ यथासंभव सुलह करने की कोशिश की थी। लेकिन उसने उन्हें एक बात नहीं बताई। चट्टान पर, जब वह गिरने ही वाला था, तब उसने भगवान सूर्य का प्रकाश देखा, जिन्होंने उसे बताया कि वह गलत रास्ते पर जा रहा है और अभी भी सुधार और मुक्ति की गुंजाइश है।
वह आगे बढ़ा और अगले कुछ घंटों तक उसने चारों ओर सावधानीपूर्वक छानबीन की। उसे पता था कि कुछ ही गज की दूरी पर जंगल के ऊपर घर बने हुए हैं और कुछ लोग भाले लिए घूम रहे हैं। वह झुककर ज़मीन पर लेट गया। अंदर जाने के बजाय, उसने हर चीज़ को बहुत ध्यान से देखने की कोशिश की, तभी अचानक उसकी नज़र...

वहाँ एक पिंजरा था, और लंबे बालों वाला एक आदमी उसमें लटका हुआ था। नाग बच्चों का एक समूह उसके आसपास खेल रहा था, नीचे से भाले से उसे छेड़ रहा था, और पिंजरे में फंसे उस बेचारे आदमी को धक्का देने और गिराने की कोशिश कर रहा था। एक पल के लिए कर्ण को यह सब देखकर हंसी आई, लेकिन वह जानता था कि उसे हस्तक्षेप करना होगा। उसने अपना धनुष और बाण निकाला और पिंजरे पर तीर चलाया, लेकिन निशाना चूक गया। उसने फिर तीर चलाया, इस बार पिंजरा गिर गया। जैसे ही बच्चों को एहसास हुआ कि पिंजरा उन पर गिरने वाला है, वे तुरंत अलग-अलग दिशाओं में भाग गए। वे इस पूरी घटना को लेकर उत्साहित भी थे, लेकिन डरे हुए भी थे।
पिंजरा नीचे गिर गया और चकनाचूर हो गया।
कर्ण ने पिंजरे में बंद कैदी को देखा, जो एक इंसान था, और वह उसकी ओर चलने लगा।
“क्या तुम ठीक हो? बाद में मेरा शुक्रिया अदा कर देना, लेकिन इतनी सारी जगहों में से तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”
उस आदमी ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "मैं आभारी हूँ..."
और वह रुक गया।
दोनों ने ऐसा ही किया। वे एक-दूसरे को घूर रहे थे, आमने-सामने खड़े थे, तभी अचानक उस आदमी ने कर्ण की छाती पर मुक्का मारा, जिससे वह लुढ़क गया और उसकी ओर एक तीर चलाया, लेकिन वह फिर से चूक गया।
“तुम फिर आ गए,” उस आदमी ने कहा।
कर्ण ने भी अपनी आँखें घुमाईं।
क्योंकि वह उसका पुराना प्रतिद्वंदी था।
“अर्जुन।”

60

वृकोदरा ने सबसे बुरे हालात के लिए तैयारी कर ली थी।
अपने आस-पास के लोगों से जो थोड़ी-बहुत जानकारी उसे मिली थी, उससे यह स्पष्ट था कि किर्मिरा से पंगा लेना ठीक नहीं था। वह उन्मादी और पागल था। हालांकि, वृकोदरा में क्रूरता तो थी, लेकिन वह पागल नहीं था। किर्मिरा का पसंदीदा हथियार दो छोटे खंजर थे, लेकिन वह उन्हें उल्टा पकड़ता था, मानो उनसे वार करना चाहता हो। दूसरी ओर, वृकोदरा उससे दुगना बड़ा था और प्रतिशोध के आवेश में था। उसकी आँखों में खून ही खून था और वह सब कुछ झोंक देने को तैयार था।
"तुम मेरे दूसरे भाई को मार डालोगे," हिदाम्बी ने अपने हाथों से उसके गालों को थामते हुए कहा।
“हाँ। अफसोस के साथ।” उसने अपना सिर हिलाया, जबकि उसका सहायक उसे कवच पहना रहा था। “मैं इसे पहनना नहीं चाहता। मैं नग्न होकर युद्ध के मैदान में जाना चाहता हूँ और उसे जान से मार डालना चाहता हूँ।” वह हिदाम्बी की ओर मुड़ा। “वैसे, मुझे इसके लिए खेद है। मैंने उससे लड़ाई शुरू नहीं की, उसने की।”
“मुझे परवाह नहीं। जब कोई राक्षस अपने ही वंश के दूसरे व्यक्ति से विवाह करता है, तो उसका एकमात्र घर पति का ही होता है। मुझे अपने भाई की कोई परवाह नहीं। आखिर वो तो मूर्ख ही है। लेकिन तुम, मेरे राजकुमार, तुम मेरा भविष्य हो और तुमने अपने लिए महान योजनाएँ बनाई हैं। महान की रक्षा करो और बहादुरी से लड़ो। तुम सबसे सम्मानजनक द्वंद्वयुद्ध के पात्र हो, और यदि संभव हो तो, खेद के साथ, एक सम्मानजनक मृत्यु के भी।” और उसने उसके होठों पर ज़ोर से चुंबन किया, उसे उसकी जीभ का धातु जैसा स्वाद महसूस हुआ, जिससे उसे एहसास हुआ कि हिदाम्बी कितनी उग्र स्त्री थी, और वह उससे कितना प्यार करता था।

उसने पचास किलो वजनी गदा उठाई और अपने तम्बू से निकलकर द्वंद्वयुद्ध क्षेत्र की ओर चल पड़ा। भीड़ उसके चारों ओर जमा हो चुकी थी। वृकोदरा का ध्यान केवल किर्मिरा पर केंद्रित था, उसकी छाती धड़क रही थी लेकिन चेहरे पर मुस्कान थी। उसने अपने चरम पर कई राक्षसों का वध किया था, लेकिन आज वह केवल घबराया हुआ नहीं था। उसने सुना था कि किर्मिरा अप्रत्याशित था और एक ऐसे पागलपन में सक्षम था जो घातक हो सकता था।
सूरज की तेज़ धूप उस पर पड़ रही थी, उसकी किरणें बिजली की तरह उसके शरीर पर चुभ रही थीं। उसे गर्मी से नफ़रत थी। उसे हमेशा से ठंड पसंद थी। उसे सर्दियों में पहाड़ों पर घूमने जाना याद था, जहाँ वह ठंडी हवा का आनंद लेता था। वह नंगे बदन बर्फ में बाहर निकलता, लकड़ियाँ काटता और अपने पिल्लों, भेड़ियों और भालुओं को खाना खिलाता। वह भालू से कुश्ती भी करता, और बाद में उसे मछली खिलाकर इनाम देता। यही उसके लिए एक सफल छुट्टी की परिभाषा थी। वह किर्मिरा का इंतजार करता रहा और चिल्लाया, "क्या हम और देर तक इंतजार करेंगे या तुम डर गई हो, डरपोक छोटी सी बच्ची?"
राक्षसों की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई, सिवाय कभी-कभार सुनाई देने वाली गुर्राहट और दहाड़ों के। अपनी छाती पीटते हुए, वृकोदरा ने फिर से घोषणा की, लेकिन इस बार भीड़ तितर-बितर हो गई, जिससे किर्मिरा को अंदर आने का रास्ता मिल गया। उसकी आँखें क्रोध से लाल थीं, कवच पहने हुए, हाथों में दो खंजर, चेहरे पर नारंगी रंग की धधकती मुस्कान, उसके लाल, लहराते बाल बेहद आकर्षक और खून से सने हुए थे। लेकिन उसके बाल बंधे हुए थे, क्योंकि उसने एक तरह का हेलमेट पहना हुआ था, जिसमें दो बड़े सींग थे, जिससे वह एक विशाल बकरी जैसा दिख रहा था, जो मुड़ी-तुड़ी और किसी चमकदार चीज़ में डूबी हुई लग रही थी।
“तुम उत्साहित लग रही हो,” किर्मिरा ने कहा। “हाँ, मैं हूँ।”
“अच्छा। तो मैं तुम्हारी इस उत्तेजना को अभी तुरंत बुझाना चाहूंगा।”
एक राक्षस मशाल लेकर प्रकट हुआ और उसने अपने सींगों को प्रज्वलित कर लिया, जिससे उसका हेलमेट जलते हुए नरक में बदल गया।
वृकोदरा का हृदय भय से कांप उठा, जब उसने अपनी पत्नी हिदाम्बी से एक नजर मिलाई। वह असमंजस में था कि क्या प्रतिक्रिया दे, तभी किर्मिरा ने उस पर झपट्टा मारा और उसे बबून की तरह अपनी छाती से चिपका लिया। आग उसके चेहरे के

इतने करीब थी कि किर्मिरा ने उसे मारने की कोशिश नहीं की, बल्कि उसे आग को घूरने के लिए मजबूर कर दिया।
मैंने महान भीम के बारे में बड़ी-बड़ी कहानियां सुनी थीं, लेकिन लगता है कि वो तो सिर्फ आग से ही डर जाते हैं। फिर महानता का क्या मतलब, जब डर ही आपको इतना जकड़ लेता है?
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, लेकिन फिर भी उसे अपने चेहरे पर गर्मी महसूस हो रही थी, और उसने अपनी पूरी ताकत से किर्मिरा को पीछे धकेलते हुए उसे ज़मीन पर गिरा दिया। वह युद्धक्षेत्र से भागना चाहता था, तभी किर्मिरा ने एक चाकू फेंका जो उसकी पीठ में जा लगा।
उसने दबी आवाज़ में तेवर चढ़ाते हुए उसे बाहर निकाल लिया।
मैं नहीं कर सकता…मैं नहीं कर सकता…”
उसने हिदाम्बी की ओर देखा, जो उस पर चिल्ला रहा था, “करो! करो! डरो मत। आग का सामना करो, मेरे राजकुमार! सामना करो!”
वृकोदरा ने सिर हिलाया।
"अगर इसका सामना नहीं करना है, तो इससे बचकर निकल जाओ।"
वृकोदरा को एक पल के लिए भी समझ नहीं आया कि वह क्या कहना चाहती है, लेकिन उसने अपने पैर से कटार पर दबाव डाला और वह टुकड़ों में टूट गई। उसने किर्मिरा की ओर देखा, जिसने उसकी दूसरी कटार पकड़ी हुई थी और गोल-गोल घूम रही थी।
मुझे आगे बढ़ना होगा।
मुझे अपने डर से लड़ना होगा।
मुझे खुद को इससे बाहर निकालना होगा।
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और तेज़ी से हाथ घुमाकर अपनी गदा को ज़मीन पर पटका, जैसे ही किर्मिरा उससे बचने की कोशिश करने लगी। उसने फिर से आँखें खोलीं यह देखने के लिए कि वह कहाँ है, और इस बार उसने आग की लपटों की ओर देखने से परहेज किया, इसके बजाय वह किर्मिरा के चेहरे को घूरने लगा।
उसने गदा किर्मिरा की ओर फेंकी, जो उसकी छाती पर लगी और वह गिर पड़ा। तुरंत ही वह उसके ऊपर से कूद गया और सबसे पहले उसने जो किया, वह था...
उसके हाथ जला दो।

उसने हेलमेट को अपने सिर से उतारा और उसकी उंगलियां जलने लगीं, लेकिन उसने फुर्ती से हाथ हिलाकर हेलमेट तोड़ दिया, जिससे आग अपने आप बुझ गई। वह तेजी से सांस ले रहा था, उसकी घबराहट चरम पर थी और वह अब भी डरा हुआ था। लेकिन उसने यह कर दिखाया था। उसने हेलमेट तोड़ दिया था, और इससे उसे आजादी का एहसास हुआ।
उसने अपने डर का सामना किया था और इससे निश्चित रूप से उसे अधिक आत्मविश्वास मिला, और साथ ही साथ वह अधिक व्यंग्यात्मक भी हो गया।
दूसरी ओर, किर्मिरा उसकी ताकत से हैरान थी, लेकिन उसकी मानसिक स्थिरता को देखकर वह और भी ज्यादा स्तब्ध रह गई।
वृकोदरा ऊपर ही रहा और उसे धक्का देकर घायल करने की कोशिश करता रहा, जिससे वह छटपटाता रहा। वृकोदरा ने सभी राक्षसों की ओर दृष्टि घुमाई और कहा, “जो कोई भी मुझे चुनौती देने का साहस करेगा, उसका वही हश्र होगा जो तुम अब देखने वाले हो।”
फिर उसने अपनी जांघों को किर्मिरा के चेहरे के पास लाया और उसे जोर से दबाया, उसके सिर को निचोड़ा, उसकी आंखों को कुचल दिया, और कुछ ही पलों में उसके चेहरे को गूदे में बदल दिया।
कुछ देर बाद वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया, अपने कपड़ों से खून पोंछते हुए उसने चारों ओर देखा।
हिदाम्बी के चेहरे पर बड़ी मुस्कान थी। एक और भाई की मृत्यु हो गई, लेकिन वह जानती थी कि वृकोदरा जैसे महान व्यक्ति के हाथों मारा जाना सम्मान की बात है।
उसका पति उसकी ओर बढ़ा और अपना थका हुआ सिर उसके कंधे पर रखकर उसके माथे पर चुंबन किया।
मुझे कोई डर नहीं है।
तुम्हें डर नहीं है।
“मुझे कोई डर नहीं है!” उसने घोषणा की।
और सबने खुशी मनाई।

61

वह नौकागृह किसी सपने के बुरे सपने में बदलने जैसा लग रहा था।
शनाया तट पर पहुँच चुकी थी, जबकि सत्यसेना ने नाव को किनारे से बांध दिया और अपनी गर्भवती माँ को नाव से उतरने में मदद की। वे घर की ओर चलने लगीं। उन्होंने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि यहां कौन रहता है।"
उन्होंने कहा, “जो भी नागा बस्ती के इतने करीब रहता है और जिसकी वास्तुकला मानव आवासों से मिलती-जुलती है, उसके पास सुनाने के लिए कई कहानियां होंगी। हालांकि, यह सवाल उठता है कि आखिर यहां मानव बस्ती की ज़रूरत ही क्या है।”
अब आप हमारी भूमि के बारे में बहुत कुछ जानते हैं।
“मैं इसी धरती की हूं, बेटे,” उसने सख्ती से कहा। “मुझे नहीं पता तुमने अपने दिमाग में क्या भर रखा है, लेकिन मेरा जन्म यहीं हुआ है।”
"वास्तव में?"
“हाँ। यह हमेशा से मेरा घर रहा है। शायद मेरी जड़ें कहीं और से हैं, लेकिन मेरा जन्म और पालन-पोषण यहीं हुआ है, मैंने एक भारतवर्षी का जीवन जिया है। मैं अलगाव, नस्लवाद, पूर्वाग्रहों, उन प्राचीन रीति-रिवाजों से अच्छी तरह वाकिफ हूँ जो समुदाय के ताने-बाने को लगातार सता रहे हैं और नष्ट कर रहे हैं—मैं इन सभी के बारे में जानती हूँ।” वह थोड़ी देर रुकी। “हालाँकि मैं पुजारी को पूरी तरह से दोषी नहीं ठहराती। मुझे यह नहीं पता था कि उसे मेरे ही लोगों ने प्रताड़ित किया था, और इसी वजह से उसके मन में हमारे प्रति एक खास तरह का पूर्वाग्रह है। वह विदेशियों के खिलाफ था। लेकिन क्या यह भूमि सभी को समान अवसर देने के बारे में नहीं है? हमें समय के साथ आगे बढ़ना होगा, और हमें लोगों को अपने साथ काम करने, बोझ बाँटने की अनुमति देनी होगी, क्योंकि इसी तरह एक देश प्रगति कर सकता है, है ना?” आपने इस बारे में काफी सोच-विचार किया है।

“मेरे ऐसा करने के अपने कारण हैं। इसलिए हमेशा याद रखना, मेरे बेटे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम कहाँ से आए हो, फर्क इससे पड़ता है कि तुम कहाँ जाते हो।” उसने उसकी पीठ थपथपाई।
“मुझे यह कहते हुए बुरा लग रहा है, लेकिन हम दोनों ने इतनी देर तक कभी बात नहीं की है।” सत्यसेना मुस्कुराए।
“वैसे, मुझे रोमा के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ। मेरा दिल उसके लिए बहुत दुखी है। वह एक दुखी महिला थी और उसकी मृत्यु भी एक दुखी महिला के रूप में हुई। मुझे पता है कि तुम उससे प्यार करते थे, हालांकि लंबे समय तक तुम्हारे पिता को लगा कि यह उनके प्रति एक तरह का अप्रत्यक्ष विद्रोह था।” सत्यसेना मुस्कुराईं। "काश ऐसा होता। लेकिन वह एक अच्छी महिला थीं, और आशा है कि उन्हें स्वर्ग में शांति मिली होगी।"
वे नौकागृह की छत पर पहुँचे और दरवाज़ा खटखटाया। उसमें खुली खिड़कियों वाला एक भारी-भरकम शेड और ईंटों की दीवारें थीं। वह किसी भी अन्य घर जैसा ही था, बस थोड़ा बड़ा था, लेकिन साथ ही उसमें एक अजीब सा भूतियापन भी था, मानो उसके अतीत के भूत अब भी उसके परिसर में भटक रहे हों।
किसी ने दरवाजा नहीं खोला।
"अगर हो सके तो पीछे की तरफ कोशिश करो।" शनाया ने सत्यसेना से कहा।
उसने सिर हिलाया और झोपड़ी के चारों ओर घूमते हुए एक संकरे चबूतरे पर पहुँचा, जहाँ से गिरने पर सीधा झील में जा गिरता। वह सावधानी से चबूतरे पर से होते हुए पीछे से दरवाजा खोलकर आगे बढ़ा। वह मुख्य द्वार तक पहुँचा और कुंडी खोलकर शनाया को अंदर आने दिया।
“माँ, इस बदबू से सावधान रहना। यह वाकई भयानक है।” उसने अपनी नाक पर एक कपड़ा रखा और माँ को पकड़ने के लिए एक और टुकड़ा फाड़ दिया। “यहाँ किसी की मौत हुई है।”
वे इधर-उधर घूमने लगे, पुराने सामान की जाँच करने लगे, कमरों और खाली अलमारियों को देखने लगे। वहाँ कोई रोशनी नहीं थी, बस अँधेरा था, और उस जगह से भयानक बदबू आ रही थी। हर कोने से मौत का साया मंडरा रहा था, जो खाना मिला वह बासी हो चुका था। यकीनन काफी समय से यहाँ कोई नहीं आया था।
“यहाँ देखो, यहाँ लाशें पड़ी हैं,” उसने कहा।
शनाया कमरे में दाखिल हुई और उसने एक कोने में एक मृत महिला को पाया, जिसका शरीर पूरी तरह से सड़ चुका था, हड्डियाँ धँसी हुई थीं, बाल नहीं थे।

वह काफी समय से यहाँ पड़ी थी। उसने देखा कि वहाँ कई चर्मपत्र पड़े थे और उनके चारों ओर आकृतियाँ बनी हुई थीं।
“इसमें क्या लिखा है?” सत्यसेना ने पूछा।
“इस कहानी में दो लोग थे। एक पति-पत्नी। उनके बच्चे नहीं थे, लेकिन उन्हें झील में तैरती हुई एक टोकरी मिली। उन्हें एहसास हुआ कि वह बच्चा उनके लिए खास है, देवताओं का उपहार है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा हुआ, उसमें असामाजिक प्रवृत्ति विकसित होने लगी। वह हत्या करता था, दूसरों को चोट पहुँचाता था। उन्होंने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन वह अपना जीवन जीता रहा, इस जगह से निकलकर बर्फीले इलाकों की ओर चला गया…” उसने धूसर पहाड़ों की तस्वीरें देखीं, “जहाँ उसे एक अजीब वरदान के बारे में पता चला जो उसे सचमुच शक्तिशाली बना सकता था। वह लौटा, तो पाया कि उसके दत्तक माता-पिता ने उसे बहिष्कृत कर दिया था, और अब उसे स्थानीय नागा बस्ती में रहना पड़ा, और उन्हीं की तरह बनना पड़ा। वह गुस्से में था। बहुत गुस्से में। वह चला गया, कई सालों तक दूर रहा, और उन्होंने उसे याद किया, लेकिन वे जानते थे कि वह पागल हो गया था, वह सब कुछ नष्ट करना चाहता था… और फिर स्थानीय नागा जनजाति का जिक्र है, जिनकी झील जहरीली होने लगी थी, और उनके पास अब कोई घर नहीं था, कहीं जाने की जगह नहीं थी, और वे एक नई भूमि की तलाश में थे, और वे एक नई भूमि के लिए कुछ भी कर सकते थे। उन्होंने तो बात भी की थी मैंने उन्हें उनके मानवीय माता-पिता को बताया, और वे इस बारे में बहुत अच्छे थे।" “आगे क्या हुआ?” सत्यसेना ने पूछा।
“कोई तस्वीरें नहीं हैं। मेरा मानना है कि वे इसे दोबारा बनाने से पहले ही मर गए।”
वे चित्र क्यों बना रहे थे?
"हो सकता है वह महिला बहरी और गूंगी रही हो, यही उसके संवाद करने का, संदेश छोड़ने का एकमात्र तरीका था, मुझे लगता है।"
"यह व्यक्ति कौन है?" सत्यसेना ने आश्चर्य से सोचा, और दूसरे कमरे की ओर चल पड़ा।
शनाया उसके पीछे-पीछे मुख्य कमरे में गई, जो कि शयनकक्ष था, और वहाँ एक शव पड़ा था, संभवतः एक पुरुष का। उसके हाथ में एक कसकर लिपटा हुआ स्क्रॉल था। शनाया ने कहा, “यह पति ही होगा। इसकी भी हत्या कर दी गई है। शायद गोद लिए बच्चे ने ही यह किया होगा।”

"कहानी पिता की कहानी से काफी मिलती-जुलती है, सिवाय माता-पिता की हत्या वाले हिस्से के।"
“हाँ। बहुत से बच्चे परित्यक्त हो जाते हैं। अगर उन्हें गोद लिया जाता है, तो उन्हें उनकी सामाजिक स्थिति के अनुसार स्वीकार कर लिया जाता है। और अगर उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है, तो उन्हें किसी दूसरी जाति में अपना लिया जाता है। सभी राक्षस, नाग, यक्ष, पिशाच—आप जानते हैं, उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था, उस समाज ने उन्हें त्याग दिया था जो उन्हें अपना नहीं मानता था। वास्तव में, हमारी जाति को भी मनुष्य नहीं कहा जाता। हमें यवन कहा जाता है। लेकिन यह सिर्फ एक सामाजिक स्थिति नहीं है, यह एक अपमान है, एक भद्दा बयान है, जो हमें हमेशा के लिए सताता रहेगा।” सत्यसेना ने सिर हिलाया और शव की हड्डियों वाली उंगलियों को तोड़कर अपने हाथ में मौजूद पांडुलिपि को पकड़ लिया। यह एक विचित्र भाषा में लिखी थी, संभवतः नागों के प्रतीकों में होने के कारण इसे समझना असंभव था। उसने इसे अपनी जेब में रख लिया।
मुझे लगता है कि हमें पिताजी के लौटने तक बाहर इंतजार करना चाहिए।
“नहीं, हमें उन्हें दफनाना चाहिए, बेटा,” उसने कहा। “जिस तरह से उनका अंतिम संस्कार होना चाहिए था, उसी तरह से।”
लेकिन इस पूरी बात में कुछ गड़बड़ थी, और यह शनाया के लिए perplexing होता जा रहा था।
समय ही बताएगा कि उनका रहस्यमय बेटा कौन था।

62

कर्ण को जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसकी मुलाकात उस आखिरी व्यक्ति से होगी जिससे वह कभी मिलना नहीं चाहता था।
कर्ण ने अर्जुन से कहा, "मेरा सुझाव है कि हम शत्रु के क्षेत्र में एक-दूसरे को न मारें।"
"आप सही हैं।"
लेकिन जैसे ही वे दोबारा मिले और एक-दूसरे के सामने आए, वे एक-दूसरे को घूंसे और लात मारने लगे और हर चीज के लिए एक-दूसरे को दोषी ठहराने लगे। “हमें शांत रहना चाहिए। हम नागों की भूमि में हैं, और हमें अपनी भावनाओं को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” कर्ण ने पूछा।
मैं आपसे भी यही सवाल पूछना चाहता हूं।
"पहले मुझे बताओ।"
नहीं, आप ही बताइए!
अर्जुन ने दबी आवाज़ में कहा, “मैं तुम्हारे बेटे से यहीं मिला था। मैं उसे मारने आया था।”
"क्या आपको किसी तरह सफलता मिली?"
नहीं, वह बदमाश भाग निकला।
“वृषकेतु यहाँ है?” कर्ण उसका नाम सुनकर आश्चर्यचकित रह गया।
“शायद, मुझे पक्का नहीं पता,” अर्जुन ने कहा। “मेरी सेना मुझसे छीन ली गई, बेरहमी से मार डाली गई और मुझे इस हालत में गिद्धों के हवाले छोड़ दिया गया, जब तक कि तुम नहीं आए। वैसे, मुझे कष्ट में मरने से कोई आपत्ति नहीं थी,” अर्जुन ने कहा।
कर्ण और अर्जुन, वे दिखने में अजीब तरह से एक जैसे थे, केवल एक की दाढ़ी छोटे बालों वाली थी जबकि दूसरा बिना दाढ़ी वाला और लंबे बालों वाला था।

“मुझे तुमसे बहुत शिकायत है। और तुमने और तुम्हारे भाइयों ने मुझे जो कुछ भी सहने पर मजबूर किया है, उसके लिए मुझे तुम्हें मार डालना चाहिए,” कर्ण ने कहा।
“लेकिन यह सम्मानजनक लड़ाई नहीं होगी, है ना?” अर्जुन ने कहा। “किसी को मारने का यह कायरतापूर्ण तरीका होगा, खासकर तब जब उस व्यक्ति के हाथ में कोई हथियार न हो।”
“लो, मेरा धनुष और बाण ले लो, फिर मैं तुम्हें अपने नंगे हाथों से मार डालूंगा,” कर्ण ने कहा।
"नहीं, धन्यवाद, मुझे यह नहीं चाहिए।"
"इसे लें!"
“मैं तुम्हें मुझे मारने का कोई बहाना नहीं देना चाहता। उफ़! मुझे मूर्ख मत समझो,” अर्जुन ने कहा। “तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या मेरे बेवकूफ भाई ने आखिरकार तुम पर कब्ज़ा कर लिया?”
कर्ण ने आह भरी। “दुर्भाग्यवश, हाँ। मैं यहाँ…” वह रुक गया, असली कारण बताना नहीं चाहता था। उसके प्रतिद्वंदी को उसकी कमजोरी का पता नहीं चलना चाहिए। “तो फिर बोलो। मैंने तुम्हारी जान बचाई है। मुझे अकेला छोड़ दो। और अपना चेहरा मत दिखाना, वरना जंगल में कोई तुम्हें मार सकता है।”
अर्जुन ने आह भरी। "लेकिन मुझे एक मदद चाहिए।"
"हाँ?"
“द्रौपदी के साथ मेरी मदद करो। तुम्हारे पास साझा करने के लिए कोई हथियार नहीं है, और मुझे पता है कि उसे पास ही कहीं बंदी बनाकर रखा गया है।” “क्या वह भी यहाँ है?”
कर्ण पूरी तरह से अचंभित रह गया।
मुझे पता है कि तुम उसे ज्यादा पसंद नहीं करते।
“बिल्कुल। स्वयंवर के दौरान मेरा हाथ न पकड़कर उसने मुझे डांटा और अपमानित किया, जबकि मैंने ईमानदारी से जीत हासिल की थी। लेकिन नहीं, उसे यह भी कहना था कि मैं सूत हूँ!”
कर्ण ने सिर हिलाया। एक समय था जब उनके बीच तीव्र प्रेम था, लेकिन अब कर्ण उससे घृणा करता था क्योंकि वह इतनी क्रूर थी। सबसे बुरी बात यह थी कि उसने पंचाल राज्य के साथ गठबंधन करना असंभव बना दिया था, जो उसके जहाज निर्माण कार्यों के लिए बहुत बड़ा लाभ साबित हो सकता था।

वह मुझसे प्यार करती थी।
“हाँ, उसने किया होगा! द्रौपदी किसी से प्रेम नहीं करती,” उसने कहा। “वह केवल एक ही चीज़ से प्रेम करती है और वह है सत्ता। जब तक तुम इसी पर टिके रहोगे, तब तक सब ठीक रहेगा। अब, वह कहाँ है?”
वे जंगल में घूमते रहे। कर्ण ने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन वह अपने कट्टर दुश्मन की मदद करेगा; वे नागों की भूमि में चुपचाप आगे बढ़ रहे थे। “यहाँ आना एक गलती थी। मुझे तुम्हारे बेटे को पहले ही मार देना चाहिए था।”
अचानक उन्हें एक आवाज सुनाई दी। एक महिला की रोने की आवाज।
वे एक टूटे हुए पिंजरे और कुचली हुई घास को पार करते हुए आगे बढ़े। वे एक खुले मैदान में पहुँचे जहाँ उन्होंने देखा कि नाग समूह बनाकर द्रौपदी को आगे घसीट रहे थे, मानो उस पर अपना अत्याचार करने के लिए तैयार हों। वह रो रही थी और ज़ोर-ज़ोर से सिसक रही थी।
अर्जुन को उसकी मदद करने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन कर्ण ने उसे रोक दिया, क्योंकि नाग…वे अलग प्रतीत होते थे।
उनकी आंखें लाल थीं, उनके मुंह से झाग निकल रहा था और उनके चेहरों पर नसें उभरी हुई थीं।
“वे सामान्य नहीं दिखते। ऐसा लगता है जैसे वे किसी प्रकार के सम्मोहन में हों,” कर्ण ने कहा।
और वे शिकारी कुत्ते की तरह गुर्रा रहे थे, जिन्हें कई दिनों से खाना नहीं मिला था।
“मुझे अपनी पत्नी को बचाना होगा!” अर्जुन ने चिड़चिड़ाते हुए फुसफुसाकर जवाब दिया।
मुझे पता है। मुझसे एक बात का वादा करो?
"क्या?"
“अगर हम यहाँ से भागने में कामयाब हो गए, तो तुम मेरे बेटे को कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे। और बदले में, मैं तुम्हारी मदद करूँगा। अभी मुझसे वादा करो!”
अर्जुन ने दबाव में आकर उसकी ओर देखा। "तुम मूर्ख हो, अपने बेटे को बचाने के लिए मेरी पत्नी का इस्तेमाल कर रहे हो।"
मैं अपने परिवार के हित में जो सही है वही कर रहा हूँ।

"ठीक है।"
उन्होंने हाथ मिलाया।
“हम यह कैसे करेंगे?” अर्जुन ने पूछा।
“वे काफी शक्तिशाली प्रतीत होते हैं, और मुझे नहीं लगता कि उनसे सीधे लड़ना उचित होगा, क्योंकि हम यहाँ कमजोर हैं,” कर्ण ने कहा। “मैं उनका ध्यान भटकाकर उन्हें अपने पीछे आने के लिए मजबूर करूँगा, और तुम द्रौपदी को लेकर भाग जाओ, और हम फिर कभी एक-दूसरे से नहीं मिलेंगे।”
अर्जुन ने सिर हिलाया।
वे अलग-अलग रास्तों पर चले गए, क्योंकि कर्ण पूर्वी मार्ग की ओर बढ़ गया, जहाँ उसका सामना भूखे नागों से हुआ, जो उसे महारोगों के समान प्रतीत हुए। यह एक संभावना थी।
उसने उनका ध्यान भटकाने के लिए उन पर एक तीर चलाया, और वे सभी उसकी ओर देखने लगे, उनके पीछे क्षुद्र द्रौपदी खड़ी थी जो अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रही थी।
"आओ आओ!"
महारोगियों ने द्रौपदी को वहीं छोड़कर अपनी छाती पीट ली और पागलों की तरह कर्ण का पीछा करने लगे। कर्ण ने देखा कि तब तक अर्जुन ने द्रौपदी को पकड़ लिया था और उसे अपने साथ ले जा रहा था।
लेकिन संयोगवश एक महारोग ने इसे देख लिया।
कर्ण को तुरंत कार्रवाई करनी पड़ी। उसने झट से उस पर हमला कर दिया और धनुष से वार किया। महारोग को दर्द का कोई आभास नहीं हुआ, बल्कि वह गिर पड़ा।
उसके बगल में एक और महारोग प्रकट हुआ और उसने उसका धनुष और तरकश छीन लिया। वहीं दूसरे ने उसके पैरों पर प्रहार किया। वह जमीन पर गिर पड़ा, और जिसने अर्जुन का पीछा करने की कोशिश की...
कर्ण ने उसके पैर पकड़ लिए और उसे उस दंपत्ति का पीछा करने से रोक दिया जो धीरे-धीरे दूर ओझल हो गए। महारोगियों ने उसे घेर लिया, फिर उसका धनुष तोड़ दिया और उसकी छाती पकड़कर उसे एक पेड़ के तने से टकरा दिया। जब तक उसने देखा कि दंपत्ति नज़रों से ओझल हो चुके हैं, कर्ण को राहत महसूस हुई, यह सोचकर कि उसने किसी के साथ सही किया है—कुछ अच्छा, कुछ स्वार्थी इरादों के साथ लेकिन सार्थक। उसकी यह सोच ज़्यादा देर तक नहीं टिकी

क्योंकि महारोगियों ने उसके चेहरे पर घूंसा मारा और उसका एक दांत तोड़ दिया। कर्ण ने उनमें से एक को चाकू मारा, लेकिन उसे ज़रा भी चोट नहीं आई।
उसने फिसलने और तेज़ी से भागने का फैसला किया। लेकिन वे उससे भी तेज़, अकल्पनीय गति से दौड़े, उसे रास्ते से भटका दिया और फिर घसीटते हुए एक तरफ ले गए।
उसे पैरों से पकड़ लिया।
उनकी संभावित मृत्यु की ओर।

63

वृषकेतु प्रेम में था।
और उसे इस बात का पूरा यकीन था।
तृप्ति बिस्तर पर लेटी हुई थी, और उस दिन जब वह उसे बचाने आई थी, उसने उसे उस स्थिति से बाहर निकालने के लिए अपनी पूरी कोशिश की थी। अब वह आराम कर रही थी, और उसके पैरों के आसपास एक बड़ा घाव था, जिससे वह कमजोर हो गई थी। लेकिन वह जीवित थी, और उसके साथ हंस रही थी और खिलखिला रही थी।
“वाह, बढ़िया था,” वृषकेतु ने कहा। “गर्भावस्था। मुझे यह झूठ पसंद आया।” “नागा संस्कृति में पति की मृत्यु से पहले बच्चे का नामकरण नहीं किया जा सकता, अन्यथा बच्चा जीवन भर अनाम रहता है और इसे मृत्यु से भी बदतर माना जाता है। ज़रा सोचिए…” वह रुक गई, और उसका चेहरा पीला पड़ गया, वह कमज़ोर लग रही थी।
“ज्यादा मत बोलो,” उसने कहा। “तो क्या बिना शादी के बच्चे पैदा करना ठीक है?”
“यहाँ विवाह की कोई अवधारणा नहीं है, केवल मिलन की अवधारणा है। आप प्रकृति से विवाहित हैं, और हम सभी उस प्रकृति की उपज हैं, इसलिए आप बचपन से ही विवाहित हैं।”
“अरे प्यारी, कभी-कभी इस तरह का ज्ञान होना खुद की रक्षा के लिए अच्छा होता है।” वृषकेतु ने मुस्कुराते हुए उसका हाथ पकड़ा। “मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ।”
मुझे यह मत बताओ कि तुम मुझे पसंद करते हो!
नहीं। मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।
“कितनी बुरी बात है ये कहना। तुम मुझसे प्यार क्यों करते हो?” वो मुस्कुराई, थोड़ी खुश थी और हमेशा से ज्यादा बातूनी थी।

“क्योंकि तुम उन कुछ वजहों में से एक हो जिनकी वजह से मुझे सुबह उठना अच्छा लगता है और मैं चाहता हूँ कि तुम जानो, मैं तुम्हारे और हमारे नकली बच्चे के लिए हमेशा मौजूद हूँ।” वह हँस पड़ा।
"उस नकली बच्चे को तुम्हारी बहुत जरूरत है।"
दोनों खूब हंसे।
उन्होंने कहा, "वैसे, हमारी योजना विफल हो गई।"
मुझे पता है। मुझे अब समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं।
"वहां से निकल जाना उनमें से एक विकल्प है। फिलहाल तो हम ज़िंदा हैं, लेकिन एक बार जब उन्हें पता चल गया कि तुमने अपनी गर्भावस्था का नाटक किया था, तो हमारे लिए और भी मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। इसलिए मुझे लगता है कि इससे पहले कि ऐसा हो, हमें यहां से निकल जाना चाहिए।"
तृप्ति ने सिर हिलाया। “मेरे पैर पहले से बेहतर लग रहे हैं और मुझे लगता है कि हम आधी रात को, जब सब गहरी नींद में सो रहे होंगे, तो यह छलांग ज़रूर लगा सकते हैं। लेकिन उसके बाद क्या? फिर क्या होगा?”
वृषकेतु ने इस बारे में सोचा। "क्या मैंने तुम्हें अपने सपने के बारे में बताया है?"
"नहीं।"
“अह, मेरा लक्ष्य। मुझे पता था कि मुझे धर्म की रक्षा करनी है, लेकिन मुझे यह भी पता था कि मैं उत्तर के बर्फीले इलाकों की यात्रा करना चाहता था। और मैं ईल मछली पकड़ना चाहता था और इग्लू में रहना चाहता था।”
तृप्ति ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "क्या तुम मुझे इस खूनी इग्लू में ही रखने की योजना बना रहे हो?"
“मुझे नहीं पता कि मैं क्या चाहती हूँ। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानती हूँ कि हमारा जीवन एक दूसरे से जुड़ा हुआ है और हम जहाँ चाहें वहाँ जा सकते हैं। जब हमें आपके लोगों को नुकसान पहुँचाने वालों के अधिकारों के लिए लड़ने का मौका मिलेगा, तो हम उस मौके का पूरा फायदा उठाएँगे। लेकिन आइए हम अपने जीवन का कीमती हिस्सा इस पर बर्बाद न करें, है ना? क्या आप ऐसा नहीं सोचते?”
वह दृढ़ निश्चयी थी। उसकी आँखें थकी हुई थीं। “मुझे नहीं पता कि मैं क्या करने वाली हूँ। मुझे नहीं पता कि अपने लोगों के अधिकारों के लिए लड़ने के अपने लक्ष्य के अलावा मेरा कोई व्यक्तित्व है भी या नहीं। लेकिन

यह सच है कि अगर मेरे लोग परवाह नहीं करते और डरे रहना चाहते हैं, तो ऐसा ही सही।”
वृषकेतु ने उसके गालों पर चुंबन किया और उसे थोड़ी देर सोने के लिए कहा। वह वृक्ष-गृह से बाहर निकला और उन अन्य घरों की ओर देखने लगा जिनके नीचे से खाई गुज़रती थी। वहाँ पुल भी थे, सभी टेढ़े-मेढ़े, जो लोगों को यात्रा करने में मदद करते थे; यह उसे वानरों की बहुत याद दिलाता था। उसने बहुत सारे पुल नहीं देखे थे, लेकिन उसने अपने जीवन में ज़्यादा यात्रा भी नहीं की थी। उसने सहस्रा के बारे में भी सोचा, और इस बात पर भी कि उसके दादा की मृत्यु में सहस्रा की क्या भूमिका थी। यह बात उसे परेशान कर रही थी। उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान पहुँचाना एक बात थी, लेकिन उनकी मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार होना दूसरी बात थी, और यह एक ऐसा अपराधबोध था जिससे वह कभी छुटकारा नहीं पा सकता था।
जब वह अपने विचारों में डूबा हुआ था, तभी उसे दूर से ढोल की थाप सुनाई दी; यह आवाज जानी-पहचानी सी लगी और उसे अपने मुकदमे की याद दिला दी।
एक और घुसपैठिया था, जो बाहरी इलाके से आया एक आक्रमणकारी था, जिस पर सहस्रा द्वारा मुकदमा चलाया गया।
और उसे आश्चर्य हुआ कि क्या वह अर्जुन था।

कर्ण को बांधकर महारोगा प्रमुख के बांस के सिंहासन के सामने एक कठपुतली की तरह प्रदर्शित किया गया था।
उसके हाथ बंधे हुए थे, आस-पास की बातचीत से उसे जो थोड़ी-बहुत जानकारी मिली थी, उससे वह पूरी व्यवस्था में कौन क्या है, यह समझ पाया था। एक तरफ तो तक्षक था, जो मुखिया का दाहिना हाथ था। और दूसरी तरफ सहस्र था, जिसने इस बस्ती पर कब्जा कर लिया था और इसे अपना बना लिया था।
कर्ण एकदम चुप था, क्योंकि वह जानता था कि वह जितना ज्यादा बोलेगा, उसकी स्थिति उतनी ही खराब हो जाएगी।
“इस बार हमारे इलाके में घुसपैठियों का क्या चक्कर है? इतने सारे। तुम दूसरे हो।” सहस्र प्रमुख ने कहा, जबकि उनके चारों ओर ढोल बजता रहा। वह कर्ण

के पास गया और उसके कानों की बालियों को छुआ। “मुझे कुंडल बहुत पसंद हैं, ये मुझे युद्ध में कुंडल पहनने वाले योद्धा की याद दिलाते हैं। क्या सच में तुम वही योद्धा हो?”
"मुझे नहीं पता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं," कर्ण ने अपनी पहचान बताए बिना कहा।
सहस्र रुका। वह कर्ण से लंबा और चौड़ा था, हालांकि भीम जितना विशाल नहीं था। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी, पतले-पतले होंठ थे, सांवली त्वचा थी और गहरी भूरी आँखें थीं। “तुम यहाँ क्यों हो? अपना परिचय दो।”
कर्ण चुप रहा। “मैं किसी को हानि नहीं पहुँचाना चाहता।”
"कोई भी इंसान ऐसा कभी नहीं करता, लेकिन फिर भी वे ऐसा करते हैं, है ना?" मैं आपके औषधीय गुणों के कारण आया हूँ जो दूसरों से अलग हैं। मैं अपने हाथों का इलाज कराने आया हूँ।
“अहा, दिलचस्प। और बदले में आप क्या देंगे? कोई कीमती चीज़? शायद वो कुंडल जो आप धारण करते हैं?” सहस्र ने पूछा।
कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। "मेरे झुमके कभी नहीं।"
"लेकिन इस लेन-देन को करने का यही एकमात्र तरीका है, अन्यथा मैं तुम्हें मार डालूंगा और तुमसे छुटकारा पा लूंगा।"
“तो फिर ऐसा करो। हम किसी और चीज का आदान-प्रदान कर सकते हैं, लेकिन मेरा जीवित शरीर कभी भी मेरे द्वारा धारण किए गए कवच और मेरे द्वारा सुशोभित कुंडल नहीं देगा,” उसने ऊँची और भावहीन स्वर में कहा।
सहस्र की सांप जैसी आंखें झपकीं। "जी हां, फिर।" उसने फुफकारा। "और मैं बस यही चाहता हूं। दुर्भाग्य से, बातचीत संभव नहीं है, और मैंने फैसला कर लिया है कि तुम्हारी मृत्यु होगी।"
अपने झागदार मुंह के साथ महारोग उसके पास पहुंचे, अपने पंजों और हथियारों से उस पर हमला करने के लिए तैयार थे।
कर्ण ने अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं, और आशा कर रहा था कि उसका परिवार ठीक होगा, तभी अचानक उसने किसी को फिसलते हुए दरबार के घेरे में प्रवेश करते देखा।
“वह मेरे पिता हैं। उन्हें छोड़ दो।”
कर्ण ने उस परिचित आकृति को देखा और एक पल के लिए उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि यह उसका बेटा है। वह कितना बदल गया था, कितना परिपक्व हो गया था।

Vrishaketu.
“बेशक, वो है,” सहस्रा ने उबाऊ लहजे में कहा। “इस खुलासे को इतना नाटकीय बनाने की क्या ज़रूरत थी? तुम्हें पता है बेटा, तुम्हारे पिता का यहाँ आना मुझे यकीन दिलाता है कि तुम अपने दादा के साथ हमने जो किया, उसका बदला लेने के लिए हमारे पास आए हो।”
कर्ण को अपने शरीर में एक सिहरन सी महसूस हुई।
उसने उसे मार डाला।
“तुम दोनों हत्यारे हो और इसी वजह से तुम खतरा हो, जिससे हमारा समझौता रद्द हो जाएगा,” उसने वृषकेतु से कहा। “मुझे लगता है कि अब हमें आवश्यक कार्रवाई करनी चाहिए।”
वृषकेतु को कर्ण के बगल में धकेल दिया गया, और वे दोनों एक दूसरे के बगल में खड़े हो गए, उनके दिलों और चेहरों के करीब भाले रखे हुए थे।
“हमें मत मारो। कृपया, ऐसा मत करो। उसे मत मारो,” वृषकेतु ने कहा, लेकिन कर्ण भयभीत नहीं हुआ। “मुझे मार दो।”
“अरे नहीं,” सहस्रा ने अपने आदमियों को हथियार नीचे रखने को कहा। “तुम्हें मारूँ? मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता। नहीं। नहीं। मैं कुछ और देखना चाहता हूँ।”
कर्ण ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। क्या? यही उसकी प्रतिक्रिया थी।
“मैं तो…” सहस्रा मुस्कुराई। “तुम दोनों को एक दूसरे को मारते हुए देखना पसंद करूंगी।”

64

वृकोदरा लेटा हुआ था, तभी उसे लगा कि उसने सपना देखा है। और उस सपने में उसकी बेरहमी से हत्या कर दी गई।
लेकिन तब वह निश्चित नहीं था।
यह सिर्फ एक सपना था।
क्योंकि हत्यारा कोई और नहीं बल्कि उसका भाई युधिष्ठिर था। उसका अपने भाई के साथ हमेशा से एक अजीब रिश्ता रहा था, जिसमें उसे कुछ करने को कहा जाता और वह बिना सवाल किए कर देता था। और यह पहली बार था जब उसने अपने भाई की इच्छा के विरुद्ध जाकर उसके दूत और जासूस को निकाल दिया था। हालात इतने भयावह थे कि उसे खुद पर विश्वास ही नहीं हो रहा था।
लेकिन जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो आयुर्वेदिक घास की तेज़ गंध से उसे आराम मिला, और उसने देखा कि वही आदमी उसके बिस्तर के बगल वाली कुर्सी पर बैठा है।
“कैसे हो भाई?” उसने पूछा।
वह अपने छोटे बालों, सुंदर चेहरे और मनमोहक मुस्कान के साथ यूं ही बैठा था। वृकोदरा उससे उतना सुंदर नहीं था, और यह ईर्ष्या उसे हमेशा सताती रहती थी, क्योंकि उसकी नाक उभरी हुई थी और होंठ बड़े और मोटे थे।
“आपने प्रवेश कैसे किया?”
"यह मेरी अधीनता है जिसके लिए आप इसे इतना प्रिय मानते हैं।"
वृकोदरा थोड़ा डरते हुए अपने बिस्तर पर बैठ गया। "तुम्हें अंदर किसने आने दिया? क्या मैं सपना देख रहा हूँ? क्या यह दवाइयों का असर है?"
“सच कहूँ तो, कुछ नहीं है। मैं सचमुच यहीं हूँ। मुझे तुम्हें चुटकी काटने दो।” उसने एक खंजर निकाला और उसे चुभो दिया।
वृकोदरा ने इसे महसूस किया।
“देखो। सब ठीक है। मैं यहीं हूँ।”
वृकोदरा ने उसे ध्यान से देखा। "क्या तुम मुझसे नाराज़ हो?"

मैं ऐसा क्यों होऊंगा?
मैंने आपकी बात नहीं सुनी।
“और राक्षसी के साथ समय बिता रहे थे? अपना समय बर्बाद कर रहे थे? अपनी राक्षसी पत्नी का मनोरंजन कर रहे थे?” उसने आँखें घुमाईं। “मैं तुमसे नाराज़ क्यों होऊँगा, बड़े लड़के? आख़िरकार तुम एक आज़ाद आदमी हो, जो चाहो करो।”
उनकी बातों में व्यंग्य साफ झलक रहा था। उन्हें पता था कि युधिष्ठिर इससे प्रसन्न नहीं होंगे।
मुझे अपने दम पर आगे बढ़ना है। मुझे एक दिन तुम्हारी छाया से बाहर निकलना ही होगा। यही वो राज है जिसका मैं हकदार हूं।
तुम एक जाहिल हो।
मैं यह सब सुनते-सुनते थक गया हूँ।
“राजनीति में मत पड़ो। तुम एक योद्धा हो, सर्वश्रेष्ठ योद्धा हो और मुझे तुम्हारी क्षमताओं पर पूरा भरोसा है, लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि तुम एक खूनी राज्य नहीं चला सकते,” उन्होंने कहा। “याद है, माँ घर के सारे भारी काम तुमसे करवाती थीं, जबकि महल में कौन सी चीज़ कहाँ रखनी है, यह मैं तय करता था? क्योंकि मुझे सब पता है। मुझे तुम्हारी जैसी ताकत नहीं मिली है, लेकिन मेरे पास यह है।” उन्होंने अपना सिर छुआ। “हर किसी को अपनी सीमाएँ पता होनी चाहिए और तुम्हारी सीमाएँ बहुत हैं। एक बात और, मुझसे पंगा मत लेना, जिसने तुम्हें सब कुछ दिया है।”
वृकोदरा रुक गया और उसने अपने जबड़े भींच लिए।
"मैंने खुद अंगा को जीता है और मैं इसका हकदार हूं।"
“क्या तुम जानते हो राजनीति में क्या-क्या करना पड़ता है? क्या तुम जानते हो कि मैंने यह सब मुमकिन करने के लिए क्या-क्या किया?” उन्होंने पूछा। “मुझे कर्ण की पत्नी के पिता को वापस लौटने और जहाज़ चुराने के लिए मनाना पड़ा, जिससे पति-पत्नी के बीच हंगामा मच गया। मुझे नागों को, विशेषकर उन नागों को जो खुद को महारोग कहते हैं, कर्ण के पिता की हत्या करने के लिए पैसे देने पड़े, ताकि शासक को मानसिक आघात पहुंचे। मेरे मित्र, तुम्हारे पास भले ही शारीरिक बल हो,” युधिष्ठिर ने एक विशालकाय दानव की तरह उससे ऊपर उठते हुए और उसके सिर पर थपथपाते हुए कहा। “लेकिन मैंने राज्य जीत लिया है। और तुम तो बस मेरे अंगरक्षक हो, वो जिसने गंदा काम किया। किसी राज्य पर

कब्ज़ा करने में बहुत सारी योजनाएँ बनानी पड़ती हैं, और दुर्भाग्य से केवल तलवारों से काम नहीं चलता। मेरा मतलब कोई व्यंग्य नहीं है।”
वृकोदरा अपने भाई द्वारा एक के बाद एक बताए जा रहे खुलासों से भयभीत हो गया। "क्या तुमने उसके पिता को मार डाला?"
"खैर, यह मेरी तरफ से एक संदेश था, आप जानते हैं। सावधान रहें कि आपके लिए क्या आने वाला है।"
"लेकिन फिर तुमने मुझे बीच में ही क्यों रोक दिया? अगर तुम इतने समय से अंगा को ही चाहते थे, तो तुमने मेरे लिए इसे इतना मुश्किल क्यों बना दिया?" “अर्जुन के शामिल होने से कुछ दिक्कतें आ गई थीं, लेकिन मैंने आपके उससे संपर्क करने से पहले ही उन्हें सुलझा लिया। इससे मामला और भी पेचीदा हो गया है, और मैं उसे भी सुलझाने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन मेरे बड़े अकड़ू, आपको सुनना सीखना होगा, वरना यह और भी बड़ी समस्या बन जाएगी।”
वृकोदरा ने अपने माथे और ठोड़ी पर युधिष्ठिर का हाथ महसूस किया, जो शांति से उसे थपथपा रहे थे और उसके चेहरे को सहला रहे थे।
“और अब मुझे पता चला है कि कर्ण नागों तक पहुँच गया है। मैं चिंतित हूँ, हो सकता है वह रक्षा रणनीति बना रहा हो, या इससे भी बुरा, आक्रमण की योजना बना रहा हो।”
“क्या वह जीवित है?”
युधिष्ठिर ने उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा।
“बेशक, वह है, मूर्ख। मैंने तुम्हें बताया था। अपना काम पूरा करो, और तुमने नहीं किया,” युधिष्ठिर ने कहा। “और अब देखो हम कहाँ हैं। तुम एक ऐसे राज्य पर मूर्खों की तरह शासन कर रहे हो जिसका राजा मरा नहीं है, बल्कि विस्थापित है, और वह कभी भी वापस आकर उस पर कब्ज़ा कर सकता है। और नाग भी उस पर हमला करेंगे। इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देने, तुम्हें रक्षा के लिए तैयार करने आया हूँ। मैं अपनी सेना का एक हिस्सा यहाँ छोड़ रहा हूँ, और इंद्रप्रस्थ के लिए रवाना हो रहा हूँ। जब तुम उससे निपट लो, तो कृपया वायु की कसम, जिसकी तुम परम पूजते हो, अपना काम पूरा करो।”
युधिष्ठिर के कृत्यों से वृकोदरा स्तब्ध रह गया, मानो उसकी नपुंसकता ही छिन गई हो। उसने पहले कभी इस तरह का दुर्व्यवहार नहीं किया था।

जब वह कमरे से बाहर निकला, तो उसे इस बात पर यकीन नहीं हो रहा था कि ताज की रक्षा करने में क्या-क्या करना पड़ता है, और सिंहासन हासिल करने के लिए लोग किस हद तक जा सकते हैं।
लेकिन यह सब देखकर वह अच्छी तरह समझ गया कि वह इसमें भाग नहीं लेना चाहता।
अब और नहीं।
जो कुछ उसने सुना था, उसके बाद तो नहीं।

65

कर्ण ने लंबे समय बाद अपने बेटे को देखा था।
और उसने कभी सोचा भी नहीं था कि यह सब एक लकड़ी के लट्ठे पर, एक विषैली झील के बीचोंबीच होगा, जहाँ उनकी तलवारें एक-दूसरे के बगल में रखी होंगी, और महारोग उन्हें घेरकर यह तमाशा देख रहे होंगे। वह ऐसा नहीं करना चाहता था, लेकिन जाहिर तौर पर द्वंद्वयुद्ध के नियमों में स्पष्ट रूप से लिखा था कि एक को जीवित बाहर आना होगा, और जो जीवित बचेगा उसे क्षमा कर दिया जाएगा। “यह सब करने के बजाय,” वृषकेतु चिल्लाया, “तुम्हें वह करना चाहिए जो आवश्यक है। इंद्रप्रस्थ के खूनी हथियाने वालों पर आक्रमण करो, पांडवों को मार डालो और अपनी प्रजा के साथ न्याय करो।”
लेकिन यह बात सुनकर सहस्रा ने सिर्फ जम्हाई ली।
“क्या हम शुरू करें?” उन्होंने पूछा और फिर ताली बजाई।
सींग की आवाज सुनाई दी।
और लकड़ी का लट्ठा खिसक गया।
कर्ण और वृषकेतु अपनी-अपनी जगह पर स्थिर खड़े थे। वे एक-दूसरे की आंखों में देख रहे थे।
“हमें एक योजना बनानी होगी,” कर्ण ने कहा। “हमें यहाँ से भागना होगा।” उसकी तलवार उसके हाथों में काँप रही थी, एक कुंद हथियार को पकड़ना मुश्किल था।
“मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम मुझ पर हमला नहीं करोगे?” वृषकेतु ने पूछा। “शुरू से ही तुम्हारी एकमात्र इच्छा मेरी मृत्यु रही है।”
“मैं गलत था। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।”
“क्या अब बहुत देर हो चुकी है? हमें देखो। भाग्य हमें वहीं ले आया है जहाँ हमें होना चाहिए। तुम बनाम मैं।”
“मैं गलत था। मैं बहुत कठोर था। मैं तुम्हारे साथ सही व्यवहार करना चाहता हूं।”

वृषकेतु वहीं खड़ा रहा, तभी सहस्र चिल्लाया, "उसे मारो!" और उसने ताली बजाई।
वृषकेतु ने कर्ण की तलवार पर हल्के से प्रहार किया, और फिर औपचारिकतावश एक बार फिर ऐसा किया। उसमें कोई भावुकता नहीं थी। कर्ण अपने चारों ओर फैली झील को देखता रहा, वह हरी थी और उसमें किसी रहस्यमयी और भयावह गंध आ रही थी।
“हम झील की तरह हैं। हमारे जीवन में अन्य लोगों के कारण हम बिगड़ गए हैं, लेकिन हमें अपने कर्मों में पवित्र रहना चाहिए।”
“आप खुद को समय का शिकार मत समझिए। आपने खुद कई घटनाओं को अंजाम दिया है।”
मैं आपके साथ मिलकर समस्याओं का समाधान करना चाहता हूं।
वृषकेतु ने फिर से अपनी तलवार चलाई, इस बार और ज़ोर से। वे हल्के-फुल्के ढंग से तलवारबाज़ी करते रहे, तभी गलती से वृषकेतु के हाथ पर एक कट लग गया। वृषकेतु ने सोचा कि यह जानबूझकर किया गया है, इसलिए उसने पलटवार करते हुए वृषकेतु की छाती पर लात मार दी।
कर्ण पीछे हट गया।
वृषकेतु उस पर झपट पड़ा, उसे चाकू मारने की कोशिश कर रहा था, उसकी आंखें खून से लाल थीं, लगभग आंसू भरी थीं जब वह उसे जान से मारने ही वाला था...

वृकोदरा अपनी खिड़की से अंग राज्य को देख रहा था, शायद यह सोच रहा था कि इंद्र की निगरानी में इसका क्या हाल होगा।
अपनी शक्ति के कारण उन्हें वायु का पुत्र कहा जाता था। वे तूफान की तरह अपने आसपास की दुनिया को नष्ट कर देते थे। लोग कहते थे कि उनमें दस हाथियों के बराबर शक्ति थी। वे खिड़की के पास नग्न अवस्था में खड़े थे।
वृकोदरा ने हिदाम्बी को अपनी ओर आते हुए देखा।
“क्या हुआ?” उसने पूछा।
वह एक मग पकड़े हुए थी और उसमें से घूंट-घूंट कर पी रही थी।
“तुम क्या पी रहे हो?” उसने पूछा।

“उस छोटे आदमी ने मुझे मेरी सेहत और ठीक होने के लिए थोड़ा दूध पिलाया। तो बताओ, क्या बात है? और इस विषय से बचो मत।”
मैं सोच रहा हूँ कि क्या मेरे लिए यहाँ बने रहने का कोई कारण है।
आप ऐसा क्यों सोच रहे हैं?
“मेरी इस यात्रा ने एक बेटे को अपने पिता से बिछड़ने पर मजबूर कर दिया,” उसने कहा। “मुझे याद है इतने लंबे समय तक पिता के बिना जीना कैसा होता है।” उसने अपने जबड़े भींच लिए। “अपने भाई के भयानक शासन में मैं किस तरह का राक्षस बन गया हूँ? वह तो बेरहम है।”
हिदाम्बी ने उसे कसकर गले लगा लिया। "तो मुझे लगता है कि अभी आपको बताने का सही समय नहीं है।"
“क्या हुआ?” उसने पूछा।
“मैं गर्भवती हूँ,” उसने कहा। “और तुम ही पिता हो, भीमा। तुम ही निश्चित रूप से पिता हो।”

वृषकेतु के मन और शरीर में भावनाओं का उफान उठ रहा था।
लेकिन एक झटके में उसने अपने पिता को लकड़ी के लट्ठे पर गिरा दिया। लट्ठा थोड़ा सा खिसका और उनका हाथ लगभग झील में डूब ही गया था, लेकिन कर्ण ने उसे लात मारकर दूर कर दिया, जिससे वह झील के पानी को छू नहीं पाया। वृषकेतु ने हमलों को रोकते हुए कर्ण के पैरों के बीच से फिसलकर तलवार की मूठ से उसके सिर पर प्रहार किया। कर्ण गिर पड़ा और मुड़कर बोला, “तुमने बहुत अच्छा सीखा है। तुमने एक सच्चे राजा की तरह सीखा है। तुम जानते हो कि तुम्हें क्या बनना है।”
“तुम्हारी अनुपस्थिति में माँ मुझे मारना चाहती थी। तुम इतने डरे हुए थे कि तुम्हारे द्वारा आयोजित मेरी मृत्युदंड की सजा के दौरान भी तुम वहाँ मौजूद नहीं थे।”
"उसने ऐसा नहीं किया, है ना?"
नहीं, मुझे मेरे लोगों ने बचाया।

“ये तुम्हारे लोग नहीं थे। ये वो थी,” उसने कहा। “मैंने बाद में जाँच की और मुझे पता चला। उन्हें नकाबपोश व्यक्ति मिल गया था, और मेरे जासूसों ने उसे भी वही नकाब पहने देखा था। मैंने उसे कभी नहीं बताया कि मुझे ये पता है, लेकिन मैं तुम्हें बता रहा हूँ। एक राजा होता है, एक पिता होता है। एक रानी होती है और एक माँ होती है। दुर्भाग्य से, वृषकेतु, जब तुम राजा बनोगे तब तुम्हें ये बात समझ आएगी।”
“मैं कभी नहीं,” वृषकेतु ने दांत पीसते हुए, आंखों में आंसू लिए, अपनी मां के किए गए बलिदान को याद करते हुए कहा। “मैंने सारी उम्मीद और जीवन का अर्थ खो दिया है।”
“हम आपके साथ हैं। हम हमेशा आपके साथ हैं,” उन्होंने कहा। “आपका परिवार आपके साथ है। शुरुआत में हम आपके साथ नहीं थे, लेकिन अब हम आपके साथ हैं। फिर से हमारे साथ जुड़िए, और आपको कोई परेशानी नहीं होगी।”
वृषकेतु ने कर्ण की सच्ची आँखों को घूरकर देखा। उसने तुरंत उसे नीचे पटक दिया और अपनी तलवार उसकी छाती के पास ले आया, लेकिन कर्ण ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। वह बस वहीं पड़ा रहा।
"अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है तो मुझे मार डालो। मुझे मार डालो और मुझसे छुटकारा पा लो," उसने लेटते हुए कहा।
वृषकेतु ने तलवार को अपने पास रखा और विश्वासघात, अविश्वास और भरोसे की कमी जैसी कई भावनाओं से गुजरा, अंत में उसने हार मान ली और तलवार को एक तरफ फेंक दिया।
सहस्र चिल्लाया, “तुमने तो बड़ी निराशा ही दी है।” और उसने महारोगों को आदेश दिया कि वे अपनी धनुषें उनकी ओर तान दें। “मुझे लगता है अब हमें अपना कर्तव्य पूरा करना होगा। इन्हें गोली मारो और इनके शवों को झील में फेंक दो।” उसने आदेश दिया।
कर्ण और वृषकेतु ने अपने धनुष उठाए ही थे कि अचानक उन्हें किसी के विलाप करने की आवाज़ सुनाई दी। वृषकेतु ने वह आवाज़ पहले भी सुनी थी, क्योंकि सहस्र ने उस व्यक्ति को अंदर आने की अनुमति दी थी, और वह कोई और नहीं बल्कि...
उसकी मां और भाई के मुंह पर पट्टी बांध दी गई थी।
“उन्हें मत मारो। उन्हें मत मारो!” वह चिल्लाई।

“ओह, लगता है पूरा परिवार यहाँ है।” सहस्रा ने आह भरी। “और कौन-कौन? क्या चाचा-चाची भी यहाँ हैं? क्या हमें किसी और के बारे में भी जानना चाहिए?” उसकी आवाज़ में झुंझलाहट थी।
“मेरे पास एक प्रस्ताव है,” शनाया ने इतनी ज़ोर से घोषणा की कि सब सुन सकें। यहाँ तक कि तक्षक के कान भी खड़े हो गए।
“तुम्हारे पास मुझे देने के लिए कुछ नहीं है। तुम्हारे पास कोई मोलभाव करने की शक्ति नहीं है।”
“मुझे पता है तुम क्या चाहती हो,” शनाया ने सख्ती से जवाब दिया।
सहस्रा ने जिज्ञासावश अपनी निगाहें सिकोड़ लीं।
“मैं जानती हूँ कि आप क्या चाहते हैं,” शनाया ने कहा। “मैं जानती हूँ कि आप अपने लोगों का स्थान बदलना चाहते हैं। आप ऐसा करने में असमर्थ रहे हैं और आपको एक नई भूमि की आवश्यकता है। हम इसमें आपकी मदद कर सकते हैं।”

66

सहस्रा सुनने के लिए तैयार थी।
कर्ण के पूरे परिवार को एक-एक करके उसके सामने लाया गया, वह शांति से देखता रहा। तक्षक उसके बगल में था। सहस्र इस झंझट से तंग आ चुका था, और वह जो कुछ भी कर रहा था वह केवल मनोरंजन के लिए कर रहा था। वह जानता था कि उसकी प्रजा को इस तरह का मनोरंजन पसंद आएगा, क्योंकि नागों के साथ सर्कस के जानवरों जैसा व्यवहार किए जाने से वे काफी परेशान हो चुके थे।
“तुम्हें हमारी ज़मीन के बारे में कैसे पता?” सहस्रा ने शनाया से पूछा। वह भी उन्हीं की तरह बाहरी थी।
“मुझे कैसे पता चला, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता… फर्क सिर्फ इस बात से पड़ता है कि मुझे पता है कि आप एक सुरक्षित स्थान की तलाश में हैं। हम अंगा के राजपरिवार हैं, और हम आपको अपने राज्य में वह सुरक्षित स्थान प्रदान कर सकते हैं। हमारे पास इतनी ज़मीन है जहाँ आपके लोग शांति से रह सकते हैं।” उसने भावहीनता से सिर हिलाया। “इंद्रप्रस्थ के लोगों ने तुम्हारे परिवार के मुखिया की हत्या के बदले में यही पेशकश की थी,” उसने कर्ण की ओर क्षमाप्रार्थी भाव से देखते हुए कहा। “हमने अपना काम किया, लेकिन बिना किसी उत्साह के।”
कर्ण ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह ज़मीन पर पैर मोड़कर बैठा था और चुपचाप सुन रहा था। "आपने अपने लोगों के अधिकारों के लिए वही किया जो आपको करना था, और मैं इसे किसी और से ज़्यादा समझता हूँ।"
“लेकिन…” सहस्र ने आगे कहा, “यह पूरा नहीं हुआ। हमने अपना काम कर दिया है, और इंद्रप्रस्थ के मनुष्यों से हमें अपनी भूमि के बारे में कोई सूचना नहीं मिली है। हमारे साथ अन्याय हुआ है, या शायद लगातार याद दिलाने का हमारे पक्ष में कोई असर नहीं हुआ।”
तक्षक ने आचार संहिता का उल्लंघन किया, जब उसने कहा, "मुझे उन पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं है। ज़रा भी नहीं।"

सहस्रा ने कहा, "हमारे पास साधन, हथियार और किसी और से कहीं अधिक शक्ति होने के बावजूद हम उन पर हमला करने में असमर्थ हैं।"
"मैंने देखा कि महारोगियों में से कुछ अलग दिखते थे। उन्हें अधिक क्रूर कहा जा सकता है।"
“हाँ, यह तुम्हारे अंदर के राक्षस को जगा देता है,” सहस्रा ने कहा। “यह झील से आया है। कुछ लोग मर गए, कुछ बच गए और पिछली बार से ज़्यादा शक्तिशाली हो गए। हमें इसे लेना होगा।” उसने अपने गले में लटकी एक शीशी दिखाई, “जब भी हम युद्ध में जाते हैं, तो इससे हमें ऊर्जा मिलती है।”
उन सभी ने सिर हिलाया।
“लेकिन इस अंगा के बारे में हमने बहुत कुछ सुना है, पर आप कहते हैं कि आपको यहाँ से निकाल दिया गया है। आप इसे हथियाने वालों से वापस कैसे लेंगे?” तक्षक ने पूछा। “क्या आप हमसे मदद की उम्मीद करते हैं?”
"हां, जमीन वापस लेने के लिए।"
“जिस सेना से आप हमें लड़वाना चाहते हैं, वह संख्या में बहुत बड़ी होगी,” सहस्रा ने कहा। “हम तो मुट्ठी भर ही हैं, और हम सामान्य से अधिक धन की मांग करेंगे। लेकिन फिर भी, स्थिति बेकाबू हो सकती है, और मैं आपके उद्देश्य के लिए अपने इतने सारे लोगों की जान जोखिम में नहीं डाल सकता।”
बहुत सोच-विचार के बाद जब शनाया बोलने ही वाली थी कि लकड़ी के हाथ वाले उस युवक ने कहा, "मेरे पास एक विचार है, और शायद यह एक अच्छा विचार है। इससे कई जानें बच सकती हैं और हम फिर से सिंहासन पर आसीन हो सकते हैं।"

वृकोदरा युद्ध कक्ष में दाखिल हुआ, जहाँ उसने देखा कि पुक्कसती अपने छोटे हाथों से पत्र लिख रहा था। वह कुछ पत्रों पर काम कर रहा था, उन्हें भेज रहा था, जबकि कमरे में अन्य लोग भी मौजूद थे, लेकिन वह बोलकर लिखवा रहा था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जिस व्यक्ति को वह इतने लंबे समय से जानता था, जिसने उसे मसखरा बनने से बचाया था, वह इतना कुशल रणनीतिकार हो सकता है। “मुझे आपसे कुछ बात करनी है,” वृकोदरा ने कहा।

“ज़रूर।” और उसने कमरे में मौजूद सभी लोगों को बाहर जाने का इशारा किया, जबकि वह अपनी शराब की चुस्की ले रहा था। “मुझे यह आनंद किस बात से मिला?” “तुम खुश लग रहे हो,” वृकोदरा ने कहा।
“जी हां, राक्षसों का कर्ज चुका दिया गया है और हम इससे काफी खुश हैं,” उन्होंने कहा। “मुझे डर था कि यह हमारे भीतर एक चुभन बनकर रह जाएगा।” वृकोदरा ने सिर हिलाया और उठकर सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। "क्या तुमने हिदाम्बी के बारे में सुना?"
“खैर, बधाई हो कमांडर।” उन्होंने अपने सामान्य गिलास से बड़ा एक शराब का गिलास उठाया और वृकोदरा को दे दिया, जिसने उसमें से एक घूंट पिया। “हमें जश्न मनाना चाहिए। मैंने उसे एक खास पेय दिया है जो मेरी देखभाल करने वाली मेरे लिए बनाया करती थी। दूध को गर्म करके उसमें थोड़ा शहद मिला देती हूँ।”
“मैं समझ गया,” वृकोदरा ने कहा। “मैं कुछ चीजों के बारे में सोच रहा था।” "ठीक है, क्या बात है?"
इंद्रप्रस्थ वापस जाने के लिए।
“मेरा मानना है कि धर्मराज द्वारा छोड़े गए कुछ ही सैनिक बचे हैं, जो शायद इसके विपरीत सोचते हों। कर्ण द्वारा हम पर हमला हो सकता है। आपने सुना ही होगा, वह जीवित है।”
वृकोदरा ने सिर हिलाया। “हाँ, बिलकुल। यकीन नहीं हो रहा। लेकिन अब मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।”
पुक्कासती ने आह भरी। "कमांडर, आपको इतना मूडी क्यों होना पड़ता है? हम वो क्यों नहीं कर सकते जो हमसे अपेक्षित है?"
क्योंकि मैं वह नहीं करना चाहता जो मुझसे अपेक्षित है।
“जब मैं मसखरा था, तो मेरा काम लोगों को हंसाना था। यही मेरा काम था। आपका काम है धर्मराज की बात ध्यान से सुनना। और इससे हमारा जीवन सरल हो जाएगा।”
“तुम बिलकुल उसकी तरह बोलते हो, वाह!” उसने आँखें घुमाईं। “पर मुझे परवाह नहीं, नन्हे बच्चे। बैग और गाड़ियाँ तैयार करो। हम अपने राज्य के लिए रवाना हो रहे हैं, और मैं माँ की गोद में चैन की नींद सोना चाहता हूँ।” "धर्मराज के क्रोध के बारे में क्या?" पुक्कसती ने पूछा।

वृकोदरा ने प्याले का सारा पेय पी लिया। “वह अभद्र, गाली-गलौज करने वाला और न जाने क्या-क्या हो सकता है, लेकिन वह भाई की हत्या करने वाला नहीं है।
जब तक मेरी माँ जीवित है, वह मुझे नहीं मार सकता, इसलिए मैं सुरक्षित हूँ।
वह ज़रूर नाराज़ होगा, लेकिन वापस जाने के पीछे यही मकसद है। मैं इस सब झंझट से तंग आ चुका हूँ। अब उसे बाकी के इलाकों पर खुद ही कब्ज़ा करने दो।
मैं अब उसकी मदद नहीं करने वाला। कम से कम अभी तो नहीं।”
वह अपने पैरों पर खड़ा होकर दरवाजे की ओर बढ़ा।
“तुम्हें पता है, मेरी देखभाल करने वाली ने मुझे एक गुप्त सामग्री के बारे में भी बताया था,” पुक्कासती ने कहा, जब वृकोदरा बौने की ओर मुड़ा। “उसने कहा था, दूध और शहद, ये उस असली सार को छुपा देते हैं जिसे तुम छुपाना चाहते हो।”
“तुम्हारा क्या मतलब है?” उसने पूछा।
पुक्कासती ने कहा, “जैसे मैंने तुम्हारी पत्नी को जहर दिया है, वैसे ही इसका एकमात्र विषनाशक मैंने कहीं छिपा रखा है। और अगर तुम चाहते हो कि तुम और तुम्हारा बेटा जीवित रहें, तो धर्मराज की बात मानो।”
“उस कमीने ने तुम्हें पछाड़ दिया!” वृकोदरा ने मन ही मन बड़बड़ाते हुए कहा।
पुक्कासती ने अपना सिर हिलाया। "नहीं, मेरे प्यारे क्रूर," उसने अपनी शराब की चुस्की लेते हुए कहा, "मैं हमेशा से उसका ही था। आखिरकार, मैं शुरू से ही उसका जासूस था।"

सत्यसेना ने आगे कहा, “शहर के आर-पार एक सीवर सिस्टम है, जो आपको राज्य में अंदर से प्रवेश करने में मदद करेगा। हम जानते हैं कि यह कहाँ खत्म होता है, और यह आपको एक सेना तक ले जाएगा, जिससे आपको तीरंदाजों या घुड़सवारों की चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी। एक बार प्रवेश करने के बाद, आप सभी गुलेलों को निष्क्रिय कर दें और चुपके से पहरेदार मीनारों पर हमला करें। उन्हें पता नहीं चलेगा कि आप क्या लेकर आए हैं।”

सहस्रा ने बड़े उत्साह से उसे देखा। "तुम्हारा बेटा बहुत बुद्धिमान है।"
सत्यसेना लगभग शर्म से लाल हो गए।
“उनकी सेना सीमित है,” शनाया ने कहा। “और हमारे वफादार लोग अभी भी राज्य के भीतर मौजूद हैं। जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि इस विद्रोह का नेतृत्व हम कर रहे हैं, वे भी उठ खड़े होंगे और आपका साथ देंगे।”
“जब यह सब समाप्त हो जाएगा…” कर्ण ने आगे कहा, “तुम्हारे भरण-पोषण के लिए राज्य का एक हिस्सा तुम्हें दे दिया जाएगा।”
सहस्र ने तक्षक की ओर देखा। “ठीक है। मुझे इस सौदे में दिलचस्पी है, और हम चालाकी से, चुपके से और अपने तरीके से काम करेंगे। इस लड़ाई का नेतृत्व मैं कर रहा हूँ।”
कर्ण ने सिर हिलाया। “बिल्कुल, और हम और हमारे सहयोगी आपके साथ हैं। अभी तो वे सोचते हैं कि हम मर चुके हैं, और जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि हम सत्ता में वापस आ गए हैं, वे हमारे साथ इस अभियान में शामिल हो जाएंगे।” सहस्रा ने सिर हिलाया। "और बदले में तुम्हें क्या चाहिए?"
“हमारा राज्य, बेशक,” उसने कहा। “और मेरे हाथ… उन्हें ठीक करने की ज़रूरत है। आपके पास ज़रूर कोई ऐसी दवा होगी जिससे मदद मिल सके।”
तक्षक ने अपने हाथ ऊपर उठाए। “मैं यहाँ का डॉक्टर भी हूँ।” और उसने काँपती हुई भुजाओं की ओर देखा। “दिलचस्प बात है, तुम्हारी नसें क्षतिग्रस्त हैं।”
कर्ण ने पूछा, "क्या वे ठीक हो सकते हैं?"
“समय के साथ सब कुछ ठीक हो सकता है,” तक्षक ने कहा। “लेकिन इसके लिए समय चाहिए, और अंगा की हमारी यात्रा ज़्यादा ज़रूरी है। मैं अभी के लिए आपको एक अस्थायी समाधान दे सकता हूँ।”
कर्ण मुस्कुराया।
सहस्रा ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।
यह एक आदर्श साझेदारी नहीं थी, लेकिन कुछ तो थी।
अब यह तय होना तो तय था कि सबसे पहले विश्वासघात कौन करेगा।

67

जब दल अंगा के लिए रवाना हुआ, तो कर्ण को रास्ते में ही इलाज कराना पड़ा। जब भी वे रुकते, कर्ण के हाथों और कंधों पर किसी हरे रंग के पेस्ट से मालिश की जाती। कर्ण ने ध्यान नहीं दिया, लेकिन वापसी का सफर काफी सामान्य था, क्योंकि वे सड़कों से भली-भांति परिचित थे। उन्हें पता था कि कहाँ जाना है, कौन सी घाटी पार करनी है, और किन पुलों से बचना है। हर बार मालिश के बाद कर्ण बेहतर महसूस कर रहा था।
इसके साथ-साथ, वह तीरंदाजी में भी हाथ आजमा रहे थे और अपने बेटों को भी सिखा रहे थे। वृषकेतु से उनकी बातचीत कम होती थी, क्योंकि अभी बहुत सी बातें सुलझानी बाकी थीं, लेकिन उन्हें खुशी थी कि उन्होंने कहीं न कहीं शुरुआत तो की।
वह तृप्ति से मिलने में कामयाब भी हो गया था, और उसे खुशी थी कि उसके बेटे को जीवनसाथी मिल गया था। लेकिन उसे इस बात का दुख भी था कि सत्यसेना की प्रेमिका रोमा की मृत्यु चरमपंथी विचारों के कारण हो गई थी। इस दौरान उसने अपने परिवार के बारे में बहुत कुछ जाना।
कर्ण ने नागों और महारोगों के बीच के अंतरों के बारे में भी कुछ जाना। जब वे नशे की हालत में नहीं होते थे, तो वे काफी दयालु होते थे। वे उन्हें भोजन देते थे। वे रात में नागों के लिए गीत गाते थे। वे सुरक्षा के लिए शेषनाग और भगवान विष्णु की पूजा करते थे। रास्ते में कोई बाधा आने पर वे नाचते भी थे। सैकड़ों नाग एक साथ झुंड में चलते थे।
कर्ण जानता था कि उसके राज्य से बाहर का जीवन सुंदर था। उसने अपने मित्र के साथ बहुत समय बिताया था, लेकिन वह कभी अपने परिवार को साथ नहीं ले गया था, अब उसे एहसास हो रहा था कि उसे ले जाना चाहिए था। क्योंकि अंततः, वह अपने परिवार के लिए ही लड़ रहा था।

वृकोदरा ने राज्य के कोने-कोने का जायजा लेकर उसे मजबूत कर दिया था। कर्ण के अधीन रहने वाले लोग केंद्रीय भाग में काम कर रहे थे, जबकि धनुर्धारियों को तैनात किया जा रहा था। वह पुक्कासती और धर्मराज की इस पूरी व्यवस्था से खुश नहीं था, क्योंकि दोनों ने उसे परास्त कर दिया था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके साथ धोखा हुआ हो और उसे लंबे समय से ऐसा महसूस नहीं हुआ था। घुड़सवार सेना को आगे तैनात किया गया था, और अंगा नामक किले को समझना इतना आसान नहीं था। कई ऐसी चीजें थीं जिनकी बारीकी से जांच करनी आवश्यक थी।
जब वृकोदरा सेना का नेतृत्व नहीं कर रहे होते थे, तब वे अपनी पत्नी की देखभाल करते थे। कभी एक प्रखर शेरनी रही उनकी पत्नी अब शांत, कमजोर और पीली पड़ गई थीं। उन्हें यह बताने की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वे बीमार हैं, कि उन्हें जहर दिया गया है। उन्हें स्वस्थ रखने के लिए जहर के असर को कम करने वाली दवा की खुराक दी जा रही थी, और वृकोदरा अपने बच्चे और पत्नी के लिए चिंतित थे। वे जानते थे कि वे सब कुछ खोने की स्थिति में हैं।
और वह यह भी जानता था कि अगर वह उसके बच्चे के साथ मर गई, तो वह पुक्कासती और धर्मराज की हत्या कर देगा, इस बात की परवाह किए बिना कि वह उसका भाई था। “क्या तुम ठीक हो?” उसने अपनी पत्नी से पूछा और अपने बड़े-बड़े हाथ उसके ऊपर रख दिए।
“मैं पहले से बेहतर महसूस कर रहा हूँ, लेकिन फिर भी बहुत दुखी हूँ। मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ।”
और तुम ऐसा करोगे।
“क्या आपको लगता है कि वे आएंगे?”
"कौन?"
“कर्ण।”
“गौरैयों ने खबर दी है कि नागा बस्ती में कुछ हलचल है। अब मुझे पक्का नहीं पता कि यह खबर कितनी सच है, और हमने जासूस भेजे हैं, लेकिन कोई भी जवाब लेकर वापस नहीं आया है। हमें नहीं पता कि वे कब हमला करेंगे, लेकिन हम पूरी तरह से तैयार हैं।”
“आप हमारे बच्चे का क्या नाम रखेंगे?” वह मुस्कुराई।
उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह इस बारे में सोच रही है, और वह उसे और ज़्यादा तवज्जो नहीं देना चाहता था। खासकर तब जब इतना कुछ दांव पर लगा हो।

"देखेंगे, जब हम इस मुसीबत से निकल जाएंगे।" उसने मुस्कुराते हुए उससे कहा।
“हां, हम करेंगे।”
और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, फिर से सो गई, जबकि वह अपने आँसू रोकने की कोशिश कर रहा था।

जब तक वे वहाँ पहुँचे, सत्यसेना किसी तरह सहस्र के एक सहायक बच्चे को उस पांडुलिपि को समझने में मदद करने के लिए राजी करने में कामयाब हो गया था।
वह कुछ समय से इस बात को लेकर बेचैन था। बच्चों में से एक ने सेब की एक साधारण टोकरी के बदले में इसे पढ़ने के लिए सहमति दी थी।
“तुम क्या कर रहे हो?” उसके भाई ने पूछा।
मुझे कुछ तो जानना ही होगा।
“तुम्हें शक हो रहा है।” वृषकेतु ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
“यह बात उस व्यक्ति से आ रही है जो गुपचुप तरीके से एक नागा के साथ संबंध बना रहा है। आखिर यह सब क्या है?”
"अरे, उससे बात होने तक इंतज़ार करो। इस तरह बोलकर तुम सचमुच उसे नाराज़ करने की कोशिश कर रहे हो।"
सत्यसेना जानता था कि वृषकेतु कुख्यात था, जबकि वृषकेतु सरल और सौम्य स्वभाव का था। “मुझे तुम्हारे लिए खुशी है, मित्र। मैं चाहता हूँ कि तुम खुश रहो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा जीवन सुखमय हो।”
आपकी सच्ची भावनाओं को देखकर वृषकेतु ने टोकरी आपको सौंप दी। “अचानक से तुम इतने अच्छे क्यों हो गए हो? लगता है ये सब सेबों के लिए है। वैसे ये तुम्हारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होंगे।”
उस पांडुलिपि में जो कुछ भी लिखा था, वह उसे सता रहा था। लेकिन सत्यसेना अपने भाई के लिए बहुत खुश था। वह कभी भी अपने भाई जैसा महान व्यक्ति नहीं बन सकता था। उसने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया, भले ही वे गलत थे। लेकिन कम से कम उसमें साहस तो था।
“तुम्हारा हाथ कैसा है?” वृषकेतु ने पूछा।

"सच कहूं तो, इससे खुद को सहलाना मुश्किल हो रहा है।"
"छी, दफ़ा हो जाओ, तुम घटिया इंसान।"
सत्यसेना मुस्कुराते हुए बच्चे के पास वापस गए और टोकरी उसे सौंपते हुए बोले, "क्या तुम अब मेरे लिए यह कर सकते हो?"
बच्चे ने उस हस्तलेख को देखा और उसे पढ़ा। "जी हाँ, यह बिल्कुल प्राचीन लिपि है, जो जानी-पहचानी लिखावट में लिखी गई है।"
"यह क्या कहता है?"
“इसमें लिखा है—मैंने…” उसे आगे बोलने में कठिनाई हो रही थी, “मैंने वह हासिल करना शुरू कर दिया है जो मुझे हासिल करना था। मैंने अपने लोगों— नागाओं—के लिए सद्भावना लाई है और उन्हें कुछ ऐसा दिया है जो उन्हें अपने उत्पीड़कों के खिलाफ लड़ने में मदद करेगा।” बच्चा पढ़ता रहा। “वे पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली होंगे, लेकिन यह सबके लिए नहीं है। यह उन्हें ज़हरीली झील से मुक्ति दिलाएगा, लेकिन यह सबके लिए नहीं होगा। कुछ रास्ते में मर जाएँगे, और कुछ बच जाएँगे। तुमने मुझे जीवन भर निकम्मा कहा। खैर, मैंने अपने लोगों के लिए कुछ अद्भुत किया है, और अब वे आज़ाद जीवन जिएँगे। मेरा मिशन स्पष्ट है, तुम्हारे जैसे लोगों को इस दुनिया से मिटाना, जिन्होंने हम जैसे लोगों को बहिष्कृत किया है। तुम्हें जल्द ही मेरे क्रोध का सामना करना पड़ेगा, और तुम मेरे हाथों मारे जाओगे। मैंने उन्हें अपने अतीत के बारे में झूठी कहानियाँ सुनाई हैं, ताकि वे मुझ पर दया करें और मुझे स्वीकार कर लें। और वे मनुष्यों से और अधिक घृणा करें, ताकि जब वे उन पर हमला करें तो उनके पास एक मकसद हो। एक बार जब मुझे मानव भूमि में स्वतंत्र रूप से प्रवेश करने और उनके धन और संसाधनों पर कब्ज़ा करने का रास्ता मिल जाएगा, तो मैं अपनी एक सेना बनाऊँगा और सब कुछ जीत लूँगा। अब मेरा एक नया नाम है, जिसे मैं खुद से पुकारता हूँ।”
सत्यसेना अभी नाम सुनने ही वाले थे कि तभी कोई उनके तम्बू में दाखिल हुआ।
“नया नाम क्या है?” उसने बच्चे से पूछा।
लेकिन तभी बच्चे की छाती में तीर लगा और वह पीछे की ओर उड़ गया।
"आपको अब तक जो कुछ भी सुनना पड़ा है, वह नहीं सुनना चाहिए था।"
सत्यसेना घुसपैठिए का सामना करने के लिए मुड़ा, लेकिन उसे सिर पर जोरदार प्रहार करके बेहोश कर दिया गया।

68

वृषकेतु कर्ण और तक्षक के बीच हो रही युद्ध संबंधी चर्चाओं को सुन रहा था, जिसमें वे सीवर प्रणाली में घुसपैठ करने की योजना बना रहे थे। उसकी माता शनाया भी वहाँ मौजूद थी, और उसने उसकी बातें भी ध्यान से सुनीं।
अंततः, वृषकेतु अपनी माँ के पास पहुँचा, जो उससे नज़रें नहीं मिला रही थी।
“क्या तुम मुझसे बात करने का इरादा नहीं रखते?” उसने पूछा।
“हाँ, मुझे पता है। बस…थोड़ी शर्म आ रही है, बस इतना ही। पिछली बार जब हम मिले थे, मैंने तुम्हें जान से मारने की कोशिश की थी।”
“नहीं, पिछली बार जब मैं तुमसे मिला था, तब मैं घोड़े की पीठ पर तुम्हें गले लगा रहा था।” वह मुस्कुराया।
"क्या आपको इसके बारे में पता है?"
“बिल्कुल,” उसने कहा। “पिताजी ने मुझे बताया था, लेकिन…” उसने अपनी गर्दन सहलाई। वे शिविर स्थल के बीचोंबीच थे। वह देख सकता था कि नागा लोग अंगा की ओर जाने वाले गुप्त प्रवेश द्वार से निकलने की तैयारी कर रहे थे। “मुझे इस बात का अंदाज़ा नहीं था। और मैं जानता हूँ कि मैं एक अच्छा बेटा नहीं रहा हूँ।”
“तुम एक बहुत अच्छे बेटे रहे हो,” उसने उसे प्यार से गले लगाते हुए कहा। “ऐसा कभी मत सोचना। हम सब उलझन में हैं, और हम सबने तुम्हें छोड़ दिया। अगर हम इसे और स्पष्ट कर पाते, तो हमारे लिए अच्छा होता।” उसने उसके गाल को छुआ। “क्या मैं तुम्हें गले लगा सकती हूँ?”
"बिल्कुल।"
वृषकेतु ने उसे गले लगाया और उसके गर्म और कोमल आलिंगन को महसूस किया। मन ही मन मुस्कुराते हुए वह पीछे हटा, तभी उसने देखा कि तृप्ति घबराकर उसकी ओर दौड़ रही है। उसने शनाया और फिर वृषकेतु की ओर देखते हुए कहा, "तुम्हें कुछ जानना ज़रूरी है।"

वृकोदरा ने स्थानीय निगरानी मीनार की चोटी से अपनी दूरबीन से देखा, उसने उस सेना को देखा जो आ चुकी थी और अंगा की ओर धीरे-धीरे बढ़ रही थी, लेकिन अभी तक हमला नहीं कर रही थी।
“मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या वे कोई घूमने वाला सर्कस हैं या वास्तव में कोई सेना, जो हम पर हमला करने की योजना बना रही है,” उसने चबूतरे पर खड़े पुक्कासती से कहा। “क्या वे हम पर हमला करना चाहते हैं? क्योंकि वे चुप हैं।”
पुक्कासती ने कहा, “हम दूत भेजकर उनकी जानकारी जुटा सकते हैं और पता लगा सकते हैं कि वे कौन हैं। उनके पास झंडा नहीं है, जिसका मतलब है कि वे नागा हैं। उनकी संख्या कम है, इसलिए वे शायद कोई चौकी गिरोह हों, जो असली सेना के आने तक हम पर नज़र रख रहे हों।”
“कुछ गड़बड़ लग रही है,” वृकोदरा ने अपने एक लेफ्टिनेंट की ओर मुड़ते हुए कहा। “क्या सभी स्वीकृतियाँ मिल गई हैं?”
"जी हां, कमांडर।"
क्या राज्य में प्रवेश करने या बाहर निकलने का कोई ऐसा रास्ता है जिसके बारे में हमें जानकारी नहीं है?
"नहीं, कमांडर।"
“दिलचस्प।” वह पीछे मुड़ा और पुक्कासती की ओर देखने लगा।
“भीमा, क्या तुम कुछ ऐसा जानते हो जो मैं नहीं जानता?” उसने बिना किसी सम्मान या संदेह के आँखों में देखते हुए पूछा। “क्या तुम इस युद्ध को जीतना चाहते हो या इसे अपने ऊपर हावी होने देना चाहते हो? मुझे इस समय संदेह हो रहा है।”
“ज्यादा मत सोचो, छोटे आदमी। मैं अपने भाई की इच्छा के अनुसार अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ।”
“जी हाँ, बिल्कुल, जैसा आपने कहा। आख़िरकार, मैंने आपकी पत्नी को इसमें शामिल करने के लिए बहुत प्रयास किए। एक और राक्षस बस्ती थी, जो आपकी पत्नी के नेतृत्व वाली बस्ती से ज़्यादा शांतिपूर्ण थी, लेकिन फिर भी हम वहाँ गए। मैं चाहता था कि वह भी इस सब में शामिल हो, ताकि मैं उसका इस्तेमाल

अपने फायदे के लिए कर सकूँ।” पुक्कासती ने शांत भाव से मुस्कुराते हुए कहा।
उसी क्षण, वृकोदरा ने उसका गला पकड़कर उसे आसानी से ऊपर उठा लिया। पुक्कासती को डर लगने के बजाय, उसने इसे हँसकर टाल दिया।
“अगर तुम मुझे मार दोगे तो तुम्हें एंटीडोट के बारे में पता नहीं चलेगा और तुम्हारी पत्नी गर्भ में पल रहे बच्चे के साथ मर जाएगी। यह कितनी बड़ी त्रासदी होगी!”
वृकोदरा ने अपने जबड़े भींचे और उसे छोड़ दिया। वह वापस चबूतरे पर गया और अपने गले के पट्टे ठीक किए। “तुम्हारे जैसे विशालकाय व्यक्ति के लिए, तुम बड़े ही भावुक हो सकते हो। मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है, अपनी रक्षा में कभी कोई कमजोरी मत रखना। इससे वैसी ही समस्या पैदा हो सकती है जैसी तुम अभी झेल रहे हो।” वह रुका। “मेरा सुझाव है कि हम हमला करें और उन्हें यहीं खत्म कर दें, ताकि वे दोबारा न लौटें।”
"मेरा सुझाव है कि हम प्रतीक्षा करें।"
“तुम अपरिहार्य की प्रतीक्षा कर रहे हो,” उसने कहा। “लेकिन देखो, मैं ऐसा नहीं करूंगा।”
वृकोदरा ने अपने जबड़े भींच लिए। “सब लोग अपने घोड़ों की लगाम कस लो। हम नागों से मिलने जा रहे हैं!”
और सींग ज़ोर से बजने लगे, जबकि सभी लोग हूटिंग कर रहे थे, लेकिन वृकोदरा भावहीन और भयभीत बना रहा।
अभी और क्या होना बाकी था?
“बातचीत करो। बात करो। बात करो। देखते हैं कि इन बर्बर लोगों के साथ कूटनीतिक बातचीत से हमें फायदा होता है या नहीं।” पुक्कासती ने अपने शब्दों में ज़हर घोलते हुए कहा।

क्रोधित और झाग उगलते महारोगा ने सत्यसेना को पेड़ के तने के कोने में धकेल दिया और जंगल के किनारे फेंक दिया।

उसे पहले घूंसे मारे गए, फिर लात मारी गई, और उसे एहसास हुआ कि वे शिविर स्थल से बहुत दूर आ गए हैं, इसलिए उसके परिवार का कोई भी सदस्य नहीं जान पाएगा। उसकी आँखें सूज गई थीं और उसका शरीर टूट रहा था।
“मुझे लगा कि वह कागज़ देखने में जाना-पहचाना सा लग रहा है, और जब मैंने उसे आपके पास पाया तो मैं हैरान रह गया,” सहस्रा ने हाथ में कागज़ पकड़े हुए कहा। “मैंने उन्हें मारने के लिए सेना भेजने से पहले इसे अपने पिता को दे दिया था। हैरानी की बात है कि यह अभी भी बहुत अच्छी हालत में है।” सत्यसेना ने कहा, “तुम…तुम यहाँ शरण लेने नहीं आए हो,” जबकि सहस्र उसे ध्यान से देख रहा था। “तुम मानव राज्यों पर शासन करना चाहते हो।”
“बेशक, मैं ऐसा चाहता हूँ और उन्हें समाज से बहिष्कृत करना चाहता हूँ। शरण देना एक उबाऊ अवधारणा है, एक तुच्छ विचार है,” उसने कहा। “मैं स्कैंडिनेविया सिर्फ इसलिए नहीं गया था कि वापस आकर नई भूमि खोज सकूँ। हम वर्षों से दूसरों की बातें सुनते हुए हर जगह घूमते रहे हैं, और आप लोग मुझे थाली में परोसी हुई चीज़ देने के लिए तैयार लग रहे थे। इतने समय तक मैं हमला करने से डरता रहा और अब आखिरकार मुझे घुसपैठ करने का सही मौका मिल गया है। वाह, यह भी कुछ कम नहीं है?” वह रुका। “और आपको बात को पेचीदा बनाना ही था, लेकिन मुझे खुशी है कि कम से कम कोई तो मेरे बारे में जानता है। इसे मार डालो।” उसने एक महारोगा से निर्दयता से कहा, जिसने सत्यसेना का गला घोंटना शुरू कर दिया। उसने महारोगा के पैरों के बीच लात मारी, और महारोगा पीछे गिर गया।
सहस्र ने उसे पेड़ के तने से सटाकर उसका गला घोंट दिया, तभी उसे पीठ में छुरा घोंपा जाने का एहसास हुआ। उसने मुड़कर देखा कि कौन है, और धुंध और अस्पष्टता के बीच सत्यसेना ने भी ऐसा ही किया, और देखा कि वह कोई और नहीं बल्कि...
उनके भाई वृषकेतु।
“हे भगवान!” सहस्रा ने हताशा से कहा।
वृषकेतु के पास एक तलवार थी जिसे उसने सहस्र में घुसा दिया था, लेकिन वह जरा भी नाराज नहीं लग रहा था। और भी महारोग प्रकट हुए और उन्होंने उन्मत्त शनाया और तृप्ति को पकड़ लिया, और हमला करने की कोशिश की।
“खैर, अगर सबको पता चल जाए तो ठीक है।” उसने अपनी पीठ से तलवार निकाली।
“जो मेरा है वो तुम्हारा है।”

और उसने उसी से वृषकेतु को वापस घायल कर दिया।
तृप्ति और शनाया दोनों ही इस घटना से भयभीत होकर चीख पड़ीं।
तब तक कर्ण भी प्रकट हो चुका था, जबकि सहस्र ने कहा, "मैं नहीं चाहता था कि ऐसा हो, लेकिन तुम्हारे बेटे को इस बारे में चुगली करनी ही थी।"
और वह चले गए। "अलविदा और इतना शानदार अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद।"
वृषकेतु एक बड़े, गहरे घाव के साथ वहीं पड़ा था। महारोगों ने उन्हें घेर लिया था और उन सभी को बंधक बना रखा था।
“कोई तो उसे चिकित्सा सहायता दो! कोई तो दो!” शनाया रोते हुए बोली।
लेकिन वृषकेतु तब तक स्थिर रहा, जब तक वह बोल नहीं सका, सांस नहीं ले सका और उसकी आंखों की रोशनी धीरे-धीरे मंद होती गई, क्योंकि वह मरणासन्न अवस्था में पड़ा था।
उसका पूरा परिवार उसे मरते हुए देखता रहा।

69

वृकोदरा भी सभा स्थल पर पहुँच गया था और नागों में से किसी एक के आने का इंतजार कर रहा था।
वह पुक्कासती के साथ इंतज़ार कर रहा था, जो एक जासूस के रूप में काम कर रही थी। उसे वृकोदरा पर भरोसा नहीं था, उसे शक था कि वह उसे धोखा दे सकता है। उनके सामने के बिंदु धीरे-धीरे वास्तविक रूप लेने लगे, तभी उनका एक दूत बीच में एक बैठक के लिए चला गया, जहाँ दूर-दूर तक कोई सेना दिखाई नहीं दे रही थी। जब वह वहाँ पहुँचा, तो वृकोदरा ने देखा कि सेनापति और उसका द्वितीय-कमांडर उसके बगल में खड़े हैं।
“मुझे किससे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है?” वृकोदरा ने कहा।
“सहस्र प्रमुख।” उसने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। “और वह तक्षक है।” वृकोदरा ने भी सिर हिलाया। “हम रेगिस्तान के बीचोंबीच, चिलचिलाती धूप में हैं। और तुम हमारे लिए असुविधा का कारण बने हुए हो।”
“लेकिन हमने तो कुछ किया ही नहीं,” सहस्रा ने कहा। “हम तो बस साधारण यात्री हैं।”
“ऐसे घोड़ों के साथ, ज़रूर!” वृकोदरा ने उत्तर दिया। “आंगन क्षेत्र में आने का आपका क्या इरादा है?”
“सवाल करना और जिज्ञासु होना,” उन्होंने कहा। “हे भगवान वृकोदरा, अगर आप अनुमति दें तो मैं आपसे ईमानदारी से कहूंगा। मुझे यह भ्रम था कि आपका यह सुंदर राज्य कर्ण नामक व्यक्ति के स्वामित्व में था।”
"हां, मैंने उनसे पदभार ग्रहण कर लिया है।"
“बहुत सुंदर।” सहस्र मुस्कुराया। “तो फिर, तुम कुख्यात पांडवों में से हो, है ना?”
वृकोदरा ने सिर हिलाया। "बदनाम से कहीं अधिक प्रसिद्ध।"
मुझे यकीन नहीं है कि आपको इस बात की जानकारी है या नहीं कि मैंने आपके भाई के साथ एक समझौता किया है।

“और उस समझौते का पालन किया जाएगा, मुख्य सहस्र,” पुक्कासती ने उसी क्षण कहा, मानो स्वयं धर्मराज की ओर से बोल रहे हों। “लेकिन हर चीज में समय लगता है।”
“हम महीनों से इंतज़ार कर रहे हैं। क्या हमने कभी कहा था कि तुम्हारा यह गंदा काम करते समय हम समय लेंगे?” उसने बौने से पूछा, मानो उसे बराबरी का दर्जा दे रहा हो। उसे कोई अपशब्द नहीं कहा। “देखो, राजघराने के बारे में मुझे यही बात पसंद नहीं है। वे कभी अपने वादे पर खरे नहीं उतरते।”
“मेरे पास यहाँ बहुत सारी ज़मीन है,” वृकोदरा ने कहा। “मैं आपको इसका कुछ हिस्सा दे सकता हूँ। आप इसका भरपूर आनंद लें। जो चाहें उगाएँ, खेती करें, जो चाहें करें।”
सहस्रा मुस्कुराई, और उसकी मुस्कान कुछ लोगों को चुभ सकती थी। "काश यह इतना आसान होता, क्योंकि हाल ही में हमें एक दिलचस्प बात पता चली है। हमारे लोगों के नरसंहार के बारे में, जहाँ अब इंद्रप्रस्थ का निर्माण हुआ है।" "यह सब फर्जी है।"
“हमारे पास विश्वसनीय दावे और गवाह भी हैं,” सहस्रा ने कहा। “और अब, मेरे पास दर्जनों संदेशवाहक हैं, जो मेरे आदेश का इंतज़ार कर रहे हैं, ताकि वे उस महत्वपूर्ण जानकारी को नागाओं की सभी बस्तियों तक पहुँचा सकें, जिससे एक पूरे समुदाय के साथ भीषण युद्ध छिड़ जाएगा। ज़रूरत पड़ने पर हम क्रूर भी हो सकते हैं।”
वृकोदरा का जबड़ा अकड़ गया। "तुम क्या चाहते हो?"
“सबसे पहले तो राज्य की बात है, पूरा का पूरा। मैं हमेशा से महल में रहना चाहता था, तुम्हें पता है। सच कहूँ तो, मैं इस पेड़ पर बने घर के दिखावे से तंग आ चुका हूँ।” वह तक्षक के साथ हँसा, जिसे अपने नेता के लिए हँसना पड़ा, लेकिन वह पूरी तरह से इसमें शामिल नहीं था।
“मैं एक मामूली धमकी के कारण आत्मसमर्पण नहीं करने वाला। मैं एक ही हमले में तुम्हारे लोगों को मार सकता हूँ। तुम लोग संख्या में भी बहुत कम हो।” सहस्रा मुस्कुराई। “तो फिर हम देखेंगे। क्या हम इस अनुरोध को अस्वीकृत मान लें?”
“हम सूर्यास्त के समय मिलेंगे। रक्तपात के लिए तैयार रहना,” वृकोदरा ने मुड़कर अपने राज्य की ओर घोड़े पर सवार होकर जाते हुए कहा, उसके पीछे-पीछे घोड़े पर सवार पुक्कासती भी चल रही थी।

“क्या हमने इस बारे में समझदारी दिखाई है?” बौने ने पूछा।
“नरसंहार में, समझदारी जैसी कोई चीज नहीं होती।” उस दैत्य ने उत्तर दिया।

सहस्रा ने एक मोटे आदमी और एक छोटे आदमी के एक असामान्य संयोजन को जाते हुए देखा और वे स्वयं बिंदु बन गए।
“खैर, इसी बात ने उन्हें भड़का दिया,” उसने तक्षक से कहा।
“हमें इस भूमि से संतुष्ट रहना चाहिए, मुखिया,” तक्षक ने कहा। “हमें लालच नहीं करना चाहिए। हमारे लोग अंगा जैसी सुंदर भूमि में सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे।”
“सोचने का काम मुझे करने दो, मेरे दोस्त। और मुझे पता है मैं क्या कर रहा हूँ,” उसने कहा। “क्या हमारे लोग सीवर और गुप्त प्रवेश द्वार की ओर निकल गए हैं?”
“हां।” उसकी निगाहें झुकी हुई थीं, मानो उसने बिना सोचे-समझे बोल दिया हो।
“बहुत बढ़िया,” सहस्रा ने कहा। “मैं चाहता हूँ कि शिविर में बहुत कम लोग हों, और वे सभी सीवर में हों। हम पूरी ताकत से आगे बढ़ेंगे, इससे पहले कि वे हम पर हमला करने के बारे में सोच भी सकें। कुछ ही मिनटों में, हम उनकी नज़रों से ओझल हो जाएँगे, और यह बहुत अच्छा होगा, क्योंकि वे भ्रमित हो जाएँगे।”
और मैं भी जा रहा हूँ।

कर्ण को कभी यह पता नहीं था कि बच्चे को खोने का दर्द कैसा होता है।
और महारोगों द्वारा पकड़े जाने पर वह पूरी तरह से भयभीत हो गया, उसका शरीर सुन्न पड़ गया। वह पलटवार करना चाहता था, लेकिन वह कमजोर और डरपोक था।
वह चिल्लाया, “नहीं!”

लेकिन तब तक उन्हें एक पंक्ति में खड़ा कर दिया गया था—कर्ण, शनाया, सत्यसेना और तृप्ति, जबकि वृषकेतु के शरीर को महारोग घसीटकर ले जा रहे थे।
महारोगों ने अपने धनुष उन पर ताने हुए थे, हमले के लिए तैयार थे।
“तो बस यही है,” कर्ण ने कहा, “हम इसी तरह मरते हैं। हारते हुए, और फिर और भी हारते हुए।”
शनाया और सत्यसेना चुप थे, तृप्ति ने भी कुछ नहीं कहा।
कर्ण ने अपनी आँखें बंद कर लीं और कई दिनों में पहली बार भगवान सूर्य से प्रार्थना की। उसने मन ही मन कहा, "यदि मैं आपका पुत्र होता, तो मुझे इस भयानक भाग्य से बचा लीजिए। मेरी रक्षा कीजिए, ताकि मैं अपने पुत्र की मृत्यु का बदला ले सकूँ।"
तीर चलाया गया।
लेकिन इससे उसे लगने के बजाय, महारोगों को चोट लगी।
कर्ण ने आंखें खोलीं तो देखा कि उन पर और भी तीर बरस रहे हैं। वे सब घबराए हुए थे, तभी पहाड़ियों से घोड़े बड़े-बड़े झंडों के साथ निकले, एक विशाल घुड़सवार सेना और उनके पीछे-पीछे तीरंदाज आ गए। अचानक हुए इस हमले के कारण सभी महारोग और नाग तितर-बितर होने लगे थे। सूरज तेज चमक रहा था और तीर लगातार उन पर बरस रहे थे।
कर्ण तुरंत अपने पैरों पर खड़ा हुआ और जमीन पर पड़ी तलवार की ओर दौड़ा, जल्दी से अपनी रस्सियां काटीं और फिर दूसरों की भी मदद की।
सेना पहाड़ियों से ऐसे प्रकट हुई मानो वहाँ छुपी हुई हो, आक्रमण करने की प्रतीक्षा में, भगवान सूर्य के आदेश की प्रतीक्षा में। महारोगियों ने वहाँ से जाना शुरू कर दिया और शिविर अचानक लगभग खाली हो गया।
“मैं वृषकेतु का शव लेने जा रही हूँ,” शनाया चिल्लाई और वे तीनों दौड़ पड़े।
"जी हां, मैं इस बीच इसका हल निकाल लेता हूं।"
कर्ण ने सेनापति को देखा और सोचने लगा कि आखिर कौन उसे बचाने आया है।
हालांकि इस दल के सैनिकों ने अधिकांश शत्रुओं को नष्ट कर दिया था, कर्ण को कोई चोट नहीं आई थी। जब वह सेनापति के सामने आया, तो उस व्यक्ति ने अपना परिचय दिया और उसकी ओर हाथ बढ़ाया।

“नमस्कार, मेरे प्रिय मित्र।” वह मुस्कुराते हुए उसे अपने घोड़े पर पीछे बैठने के लिए कहने लगा। “मैंने तुमसे कहा था कि जब तुम संकट में होगे, मैं तुम्हारे पास आऊंगा।”
कर्ण को विश्वास नहीं हुआ, लेकिन वह कोई और नहीं बल्कि उसका दोस्त था... Suyodhan.

70

वे घने, विशाल रेगिस्तान से होकर गुजरे, उनके पीछे कोई नहीं था, और वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे।
"हम कहाँ जा रहे हैं?"
“राज्य के गुप्त प्रवेश द्वार की ओर।”
"बस एक बात का ध्यान रखें—अब से इस तरह की प्रविष्टियाँ न बनाएँ, ये आपके लिए बहुत हानिकारक हो सकती हैं।"
"इसने मेरी पत्नी और बेटे की जान बचाई।"
“खैर, कभी-कभी यह आपके लिए वाकई बुरा हो सकता है।” वह हँस पड़ा।
कर्ण उसके पीछे था, घोड़े की पीठ पकड़े हुए। "तुम्हें कैसे पता चला कि मैं मुसीबत में हूँ?"
“मुझे पहले से ही आभास था। भीम द्वारा सत्ता हथियाने की खबर सुनकर मुझे कुछ करना ही था। मैंने अपने पिता को इसके बारे में बताया, जो हमेशा की तरह उदासीन थे। इसलिए मैंने अपने कुछ वफादारों को साथ लिया और उनसे कहा, मैं शिकार पर जा रहा हूँ। और मैं यहाँ आ गया। मैं खोजबीन कर रहा था, तभी मेरी नज़र आप पर पड़ी और जब आप मृत्यु के करीब थे, तब मुझे पता चल गया कि मुझे अब हमला करना होगा।” उन्होंने समझाया। “वृषकेतु के लिए मैं बहुत देर हो चुका था, और मुझे इसका खेद है। काश मैं जल्दी आ पाता।”
“तुम आए और यही मायने रखता है, भाई,” कर्ण ने कहा।
"आप क्या करने वाले हैं?"
हमें बहुत कुछ करना बाकी है। अभी मुझे एक जहरीले सांप को मारना है। सुयोधन ने मुंह बनाया। "ये हमेशा ही सिरदर्द होते हैं।"
मुझे लगा था कि मेरे आपके साथ न आने पर आप नाराज होंगे।
उन्होंने कहा, “परिवार के साथ रहना समझदारी की बात है। अब जब भानुमती के साथ मेरा एक परिवार है, तो मुझे इसका असली मतलब समझ में आया है। अगली बार जब आप आएं, तो मेरा सुझाव है कि आप उनके साथ आएं।”

क्या आपने अब तक पासे का खेल खेला है?
मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ, मेरे मित्र।
पेड़ों के पास पहुँचते ही कर्ण ने देखा कि बाहर महारोग प्रवेश द्वार की रक्षा कर रहे हैं। उसे राज्य के भीतर से तेज़ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, और वह समझ गया कि हमला होने ही वाला है। धमाके हो रहे थे, और कर्ण ने महारोगियों को भीम और उसकी सेना को डराने के लिए तेल और आग का इस्तेमाल करने को कहा था। उसने महारोगियों को भीम की सभी कमज़ोरियों, छिपने की जगहों और हमला करने की जगहों के बारे में बताया था। लेकिन उसने एक बात नहीं कही थी।
कर्ण की कमजोरी।
“मुझे यहीं उतार दो,” कर्ण ने कहा, और सुयोधन ने घोड़े से उतरते हुए उसे रोक दिया। “धन्यवाद, मैं यहाँ से चला जाऊँगा।”
“मैं तुम्हें जानता हूँ, मेरे मित्र, और प्रवेश द्वार पर तुम्हारा इंतज़ार कर रहे उन जीवों को भी, ये कोई अच्छा दृश्य नहीं है। मेरा सुझाव है, मुझे तुम्हारे लिए ये काम करने दो, आखिरी बार।” वह मुस्कुराया।
कर्ण मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। "धन्यवाद।"
“इसके अलावा, आपको इसकी भी आवश्यकता है।” उसने अपने पीछे लटके हुए थैले से धनुष और तरकश निकाला, जिसमें तीर भी थे। “आप निहत्थे प्रतीत होते हैं, और हमें इसे बदलना होगा।”
उसने कुछ समय से धनुष का सही ढंग से इस्तेमाल नहीं किया था, और उसे ऐसा करने में थोड़ा डर भी लग रहा था।
"हाँ।"
“इसका इस्तेमाल करो और जल्द ही मुझसे मिलो। हमें बहुत काम करना है।”
यह कहते हुए, वह अपने हाथों में गदा लिए आगे बढ़ा और महारोगों पर एकतरफा हमला करते हुए उन्हें गदा से प्रहार करने लगा।
जब कर्ण उनसे निपट रहा था, तभी उसने देखा कि गुप्त प्रवेश द्वार पर कोई पहरा नहीं है, और वह उसकी ओर छलांग लगा गया।

वृकोदरा महल की लंबी सीढ़ी पर था, जहाँ उसे महारोगों से छुटकारा पाना था। अपने गदा के एक ही वार से उसने उनमें से एक को मार गिराया, और दूसरे वार से दूसरे को चकनाचूर कर दिया, तभी उसे एक और धमाके की आवाज़ सुनाई दी। कहीं और कोई मर रहा था। और कहीं और कोई गिर रहा था। उन पर अचानक हुआ यह हमला अप्रत्याशित था, लेकिन हुआ ज़रूर। और अब उसे इसके परिणामों का सामना करना था।
संगमरमर की सीढ़ियाँ खून से लथपथ थीं।
जो कभी सफेद थे, अब चिकने और कीचड़ से सने हुए थे।
वृकोदरा ने देखा कि महारोग उन्माद में थे और उन्हें दर्द की कोई परवाह नहीं थी। वे लगातार हिलते-डुलते और उन पर कूदते रहे, अपने हाथों में किसी शीशी से कुछ पीते रहे, उनकी आँखें लाल थीं और कानों से खून बह रहा था। वृकोदरा पर हमला करते समय वे मरे हुए लग रहे थे, हालाँकि वृकोदरा देख और महसूस कर सकता था कि वे कोई ऐसा तरल पदार्थ पी रहे थे जिससे एड्रेनालाईन बढ़ रहा था और इसी वजह से उनका यह हाल हो गया था।
वृकोदरा ने उनसे एक-एक करके युद्ध किया, और कई लोग उसे छू भी नहीं सके, जब तक कि उसकी नजर मुख्य दुश्मन पर नहीं पड़ी।
वह संगमरमर की सीढ़ियों पर अकेले चल रहा था, उसके हाथ में उसकी लंबी तलवार थी और उसके शरीर पर टैटू बने हुए थे।
उसने शीशी उठाई, उसे अपने गले से फाड़कर उसके अंदर की एक-एक बूंद पी ली।
अचानक उसे एक तीव्र इच्छा हुई और उसने तुरंत खुद को आगे बढ़ा दिया।
सहस्र एक शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी प्रतीत होता था। जैसे ही वृकोदरा ने अपनी गदा आगे बढ़ाई, सहस्र पलटकर उसके पीछे गया और उसे वार कर दिया।
उसने उसे दोबारा मारने की कोशिश की, लेकिन उसने तेज़ी से वार को रोक दिया। वह फुर्तीला और तेज़ था, और बेहद तेज़ गति से आगे बढ़ रहा था। सहस्रा ने अपनी तलवार का इस्तेमाल करके उसके गदा के हमलों को रोका और फिर उसे लात मारी, जिससे वह सीढ़ियों से नीचे गिर गया और जमीन पर जा टकराया।
उस समय वह केवल हिदाम्बी के बारे में सोच रहा था, जो एक कमरे में बंद थी और पहरेदारों द्वारा उसकी सुरक्षा की जा रही थी।
वृकोदरा को अपने भीतर कुछ अजीब सी ताकत मिली, लेकिन तब तक सहस्र ने उसके चेहरे पर लात मारकर उसे खून से लथपथ कर दिया और उसे एक कोने में फेंक दिया।

एक विस्फोट हुआ, लेकिन सहस्र को कोई चोट नहीं आई। मलबा गिरने लगा, लेकिन सहस्र ने वृकोदरा को घूंसा मारा, और वृकोदरा ने उसे तब तक घूंसा मारा जब तक उसके मुंह से खून नहीं बहने लगा।
“महान भीम नाग से पराजित हो गए। यह हमारे इतिहास की किताबों में दर्ज होगा। हम राज करेंगे!”
फिर उसने उसे दोबारा घूंसा मारा, तभी कहीं से एक तीर आया और उसके हाथ में घुस गया। वह तुरंत दर्द से चीख उठा और घबराकर पीछे मुड़ा यह देखने के लिए कि यह किसने किया।
यह कर्ण था!!!
एक और तीर चलाया गया जो सहस्रा के चेहरे को भेद गया, जिसे उसने खींचकर निकाला और उसे बहुत दर्द हुआ।
“तुम! तुम!” उसने कर्कश स्वर में कहा। “तुम मर क्यों नहीं जाते?”
वह कर्ण की ओर बढ़ा और अपनी तलवार आगे बढ़ाई, जिसे कर्ण ने अपने धनुष से रोक दिया और लुढ़कते हुए उसकी गर्दन में वार कर दिया। कर्ण ने तलवार वापस निकाल ली।
“ये तीर मेरे लिए कुछ भी मायने नहीं रखते! मैं अजेय हूँ! क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है?”
और उसने लंबी तलवार का इस्तेमाल किया, जिससे कर्ण का पैर लगभग कट गया था, लेकिन कर्ण किसी तरह तलवार वापस खींचने में कामयाब रहा।
तब तक वृकोदरा उठ चुका था और उसने हाथ में गदा लेकर सीढ़ियों के ऊपर से छलांग लगा दी, नाग सरदार के सिर पर प्रहार करने के लिए, जबकि कर्ण ने नीचे से तीन बाण लिए और उन्हें एक कड़क पर चढ़ा दिया...
और सीधे सहस्रा के दिल, चेहरे और कमर की ओर निशाना साधते हुए।
गदा नाग सरदार के सिर पर लगी और तीर धड़कते हुए उसके शरीर में धंस गए।
सहस्र मलबे पर गिर पड़ा, पत्थर की तरह लुढ़कता हुआ कर्ण और वृकोदरा की ओर बढ़ा।
वृकोदरा बीच में आ गया…कर्ण ने अपनी प्रबल शक्ति से पत्थर को थामे रखा।
वह रुका और पीछे मुड़कर अपने शत्रु को देखा, जो जमीन पर पड़ा था।
“क्या तुम ठीक हो?” उसने पूछा।
“हां,” कर्ण ने कहा।

जब कर्ण एक तरफ हटे तो उन्होंने पत्थर छोड़ दिया और वह नीचे गिर गया, जिससे बचे हुए महारोगों में से एक को चोट लगी। वृकोदर ने हाथ बढ़ाकर कर्ण को उठाया।
“धन्यवाद,” कर्ण ने कहा।
"नहीं, धन्यवाद, आपने मेरी जान बचाई।"
वे दोनों रोते-बिलखते सहस्र को देख रहे थे, जो अब भी घिसटते हुए उनकी ओर आने की कोशिश कर रहा था। वह अपनी लंबी तलवार की ओर बढ़ रहा था, जो पूरी तरह से चकनाचूर और खून से लथपथ थी, जिसमें उसकी हड्डियाँ दिखाई दे रही थीं। कर्ण और वृकोदरा उसके ऊपर खड़े थे, एक ने अपना पैर उसके हाथ पर रखा हुआ था जबकि दूसरे ने अपना हाथ उसकी घायल पीठ पर रखा हुआ था। बाण उसकी ओर ताना हुआ था और गदा भी वार करने के लिए तैयार थी।
“आपके बाद?” वृकोदरा ने पूछा।
"आप के बाद।"
और उन्होंने लंबे समय से प्रतीक्षित घिनौने काम को अंजाम दिया।

71

कुछ दिनों के बाद…
कर्ण अपने सामने जलती हुई चिता को देख रहा था। यह उसके पुत्र की चिता थी, जिसने अपने परिवार की रक्षा करते हुए बलिदान दिया था।
अजीब बात यह थी कि सत्यसेना उसके साथ था, और शनाया और तृप्ति एक-दूसरे को पकड़े हुए गले लगा रही थीं, जबकि और कोई अंदर नहीं आया था। सुयोधन अंगा के बाहर की सेना पर हमला करने के कारणों के बारे में बहाने बनाने में व्यस्त था।
कर्ण ने सहस्र की मृत्यु के बाद बीते दिनों का वर्णन करना शुरू किया। वृकोदरा ने शांतिपूर्वक राज्य त्याग दिया था, लेकिन बदले में उसकी पत्नी को बचाना आवश्यक था। तक्षक ने उसे स्वस्थ कर दिया, और इसके बदले में उसे अंग में अपने और अपने लोगों के लिए एक बहुत बड़ा भूभाग दिया गया। संयोगवश, वृकोदरा ने उस छोटे बौने को पकड़ लिया था, जो तक्षक द्वारा बनाए गए औषधि के प्रतिरोधन के बारे में जानकर भाग गया था।
और जहां तक कर्ण को पता था, वृकडोरा ने यह सुनिश्चित किया कि बौना उसके पिछले हिस्से के अंदरूनी भाग को देख ले, इसके लिए उसने उसके शरीर को एक चूर्णित मिश्रण में बदल दिया।
अंग अब राजशाही नहीं रहा, बल्कि मंत्रियों द्वारा चलाया जाता था, और वहाँ कोई राजा या रानी नहीं थी। तो फिर यह किसका था? यह एक ऐसा प्रश्न था जिसका उत्तर केवल कुछ ही लोग दे सकते थे, पर किसी को परवाह नहीं थी। राक्षसों और नागों ने अपने लिए व्यवस्था कर ली थी, और कर्ण ने विशेष रूप से निर्देश दिया था कि सभी बाहरी और बहिष्कृत लोगों का इस भूमि पर बिना किसी संकोच के स्वागत किया जाए। और सभी को रहने के लिए जगह दी जाएगी। अगर वह ऐसा बदलाव ला सकता है, तो दूसरे भी ला सकते हैं, ऐसा उसने सोचा।
वृकोदरा ने जाने से पहले कर्ण को धन्यवाद दिया और कहा, “जब युद्ध होगा, और मैं जानता हूँ कि ऐसा युद्ध अवश्य होगा जब दोनों झंडे आपस में लड़ेंगे,

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपको नहीं मारूंगा। आपने मेरे और मेरे परिवार के लिए जो कुछ किया है, उसे मैं हमेशा याद रखूंगा। हमारे रक्त संबंध हमें अलग करते हैं, लेकिन हमारे इरादे नहीं। मैं युद्ध के मैदान में उपस्थित रहूंगा, लेकिन हम आपस में नहीं लड़ेंगे, और यह मेरा वादा है जिसे मैं निभाऊंगा।”
कर्ण ने इस बात पर सहमति जताते हुए हाथ मिलाया, और उसे यह एहसास हुआ कि विचित्र रूप से सभी भाइयों में सबसे बुद्धिमान वही था जिसे क्रूर कहा जाता था। क्योंकि वह कृतज्ञता का महत्व समझता था, और उसे यह अहसास था कि युद्ध से नायक या खलनायक नहीं बनते। इससे केवल मृत्यु होती है, और बुराई की पवित्रता हमेशा जीवित रहती है।
जैसे ही अनुष्ठान पूरे हुए, कर्ण ने तृप्ति से पूछा, "आप हमारे साथ शामिल हो सकती हैं।"
"नहीं।"
शनाया ने नम आंखों से पूछा, "फिर आप क्या करने की योजना बना रहे हैं?" “शायद उत्तर की ओर जाऊंगी। मैं शायद आगे बढ़ जाऊंगी। मुझे एहसास हो गया है कि मैंने इतने लंबे समय तक बदला लेने की कोशिश की है, अब मेरे लिए इसका कोई महत्व नहीं है, क्योंकि मेरे लिए इसका कोई मूल्य नहीं है। जब आप अपने करीबी लोगों को अपने मनचाहे बदले के लिए खो देते हैं, तो आप सोचने लगते हैं कि आखिर इन सब का क्या मतलब था?” वह मुस्कुराई। “मुझे यकीन है कि हमारी मुलाकात फिर होगी।”
उसने अपने प्रिय व्यक्ति की जलती हुई चिता को देखा और घोड़े को पकड़कर एक बेहतर भविष्य की ओर निकल पड़ी।
कर्ण का रथ उनके पीछे था, और वे सभी एक-दूसरे के करीब और शांत भाव से चलने लगे।
“क्या योजना है पिताजी?” सत्यसेना ने पूछा।
“मुझे हस्तिनापुर जाना होगा। सुयोधन को अब पहले से कहीं अधिक मेरी आवश्यकता है। युधिष्ठिर ने हमारे जीवन को जो क्षति पहुंचाई है, हमें उसे पुनः प्राप्त करना होगा, और मुझे इसमें उनकी मदद करनी होगी,” उन्होंने कहा।
शनाया और सत्यसेना ने उदासी से सिर हिलाया।
लेकिन तुम दोनों भी आ रहे हो।

“तुम्हारा क्या मतलब है?” उन्होंने एक साथ पूछा।
“हमें पांडवों को हराना है। आप दोनों की मदद के बिना हम यह कैसे कर सकते हैं? जब मैं सबके सिर में कीलें ठोकूँगा, तब मुझे आप दोनों की ज़रूरत होगी।” कर्ण मुस्कुराया। उसने देखा कि उसका हाथ अभी भी काँप रहा है, लेकिन तक्षक ने उसे नियमित रूप से लगाने के लिए कुछ दवा दी थी। “हस्तिनापुर…मुझे नहीं पता क्या होगा,” शनाया ने अनिश्चितता से कहा।
वे रथ पर बैठ गए, और कर्ण ने रथ चलाना शुरू कर दिया। वह एक सारथी की तरह आगे बैठा था, अपने पिता को याद करते हुए, जो लंबे समय तक हस्तिनापुर के राजा के सारथी रहे थे। और अब वह अपने परिवार के लिए सारथी बनने वाला था। यह सब सार्थक था, उसे इसका गहरा एहसास था।
“अभी और भी बहुत कुछ होना बाकी है। और मैं जानती हूँ कि सब कुछ हमारे पक्ष में नहीं होगा, और ज़रूरी भी नहीं है। लेकिन हमें वृषकेतु की स्मृति को अपने हृदय में संजोकर रखना होगा और यह तय करना होगा कि वे क्या चाहते थे। उन्होंने अपनी अंतिम साँस तक धर्म के लिए संघर्ष किया, और मेरा दृढ़ विश्वास है कि धर्म का अर्थ है वह परिवार जिसे आप चुनते हैं, और हमने हर स्तर पर एक-दूसरे को चुना है। और जो कुछ होने वाला है, उसके लिए मुझे लगता है कि हमें गांधार राज्य के शकुनी नामक व्यक्ति से मिलना होगा। वह एक दिलचस्प व्यक्ति प्रतीत होता है।”
और वे उगते सूरज की ओर बढ़ने लगे, जो क्षितिज से मिल रहा था और अप्रत्याशित की उम्मीद कर रहा था, जिसने उसे भगवान सूर्य की बहुत याद दिलाई, और यह भी कि उसने अपने जीवन में किसी न किसी तरह कितना जोखिम उठाया था।
सूर्य का पुत्र होने के लिए उसे अष्टार के लिए वह सब कुछ करने की आवश्यकता नहीं थी जो उसने किया।
वह उनमें से एक था।
वह जन्म से ही ऐसा था।
क्योंकि यह मायने नहीं रखता कि आप किसकी पूजा करते हैं, बल्कि आपके कर्म ही यह तय करते हैं कि आप वास्तव में कौन हैं।

***** समाप्त *****

[illegible]...

पुस्तक **3**

कर्ण

मौत के बाद

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

भारत में पहली बार साइमन एंड शूस्टर इंडिया द्वारा 2024 में प्रकाशित।
कॉपीराइट © केविन मिसल, 2024
यह संस्करण 2024 में प्रकाशित हुआ। केविन मिसल ने कॉपीराइट अधिनियम, 1957 की धारा 57 के तहत इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के अपने अधिकार का दावा किया है।
1 3 5 7 9 10 8 6 4 2
साइमन एंड शूस्टर इंडिया
818, Indraprakash Building,
21, बरखंबा रोड,
नई दिल्ली 110001
www.simonandschuster.co.in
पेपरबैक आईएसबीएन: 978-81-974895-3-2
ईबुक ISBN: 978-81-974895-1-8
सूर्या, नई दिल्ली द्वारा भारत में टाइपसेट किया गया रेप्लिका प्रेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा भारत में मुद्रित और जिल्दबंद।

यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, संगठन, स्थान, घटनाएँ और प्रसंग या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त किए गए हैं। साइमन एंड शूस्टर इंडिया टिकाऊ वनों में उगाई गई लकड़ी से बने कागज का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है और अग्रणी अंतरराष्ट्रीय वन प्रमाणन संगठन, फॉरेस्ट स्टीवर्डशिप काउंसिल (FSC) का समर्थन करता है। हमारी जिन पुस्तकों पर FSC लोगो लगा होता है, वे FSC प्रमाणित कागज पर मुद्रित होती हैं। प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुन: प्रस्तुत, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है। यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है।